



आत्मकाव्यमयं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ
 नमो भगवते
 वासुदेवाय
 नमो

श्री
 ॐ
 नमो

माइका बाल्लारी
 लक्ष्मण वसुधेय

श्रीगुरुगुरु

मैं, गिन्यूटे, सैन्मट और उसकी स्त्री बीपा का पुत्र, इस पुस्तक को अपनी इच्छा से लिखता हूँ। मैं इसे कर्म-देम के देवताओं की स्तुति में नहीं लिखता क्योंकि मैं देवताओं से ऊब चुका हूँ। और न मैं इसे क़राओं की स्तुति में लिखता हूँ क्योंकि मैं उनके बायों से परेशान हो गया हूँ। न मुझे भविष्य की कोई आशा रह गई है क्योंकि अपने जीवन-काल में मैंने इतना सब पाकर खो दिया है कि अब और पाने का प्रश्न ही नहीं उठता। भविष्य भी मेरे लिए उतनी ही ऊबने वाली बात लगती है जितने कि देवता और राजा लोग लगते हैं। मैं यह पुस्तक केवल अपने सतोष के हेतु ही लिखता हूँ, केवल अपने लिए...

पूर्वी समुद्र के तीर पर, इस निर्वासित काल के तीसरे वर्ष मैंने यह पुस्तक आरम्भ की है। यही से जहाज़ पुत देश को जाते हैं जो मरुभूमि के पाम है और जहाँ के पहाड़ों के पत्थरों से ही सज्जाटों की मूर्तियाँ गड़ी गई हैं। अब मेरी जिह्वा को मंदिरों की ऊष्मा रुचिकर तथा प्रिय नहीं लगती, मुझे स्त्रियों का सग नहीं भाता, उद्यानों की सैर, मछलियों भरे कुंड, यह सब भी मेरे हृदय में सतोष पैदा नहीं करते और इसीलिए मैं यह पुस्तक लिखता हूँ। मैंने अपने साथी गायकों को भगा दिया है क्योंकि संगीत भी अब मेरे कानों को नहीं भाता। पर मेरे पास अब भी अपार धन है, परन्तु वह सब मेरे लिए व्यर्थ है क्योंकि मैं उसका उपयोग नहीं कर सकता। मेरे सोने के प्याले, मेरे हाथीदाँत, मेरे आबनूस और मेरे हव...आह ! यह सभी मेरे लिए व्यर्थ हो गए हैं। सभी कुछ मेरे पास है। दास अब भी मेरे दृष्ट से भयभीत रहते हैं। सैनिक अब भी मेरे सामने सिर झुकाकर घुटनों की सीध में हाथ फैला देते हैं—परन्तु मेरे चारों ओर रेखा खिंची हुई है जिसे

मैं पार नहीं कर सकता...कोई भी जहाज मेरे इस तीर पर नहीं रुक सकता। अब मैं जीवन में कभी उस काली भूमि की सुगन्धित रात्रि के सुहावने अवसान में नहीं मूँघ सकूँगा।

किसी समय फराओ की स्वर्ण-पुस्तक में मेरा नाम भी लिखा रहता था...मैं फराओं का दायीं हाथ माना जाता था और बड़े-बड़े सामन्त मेरी नेवा में उपहार भेजने थे, कैंस के देश में मेरे बोल बहुत महंगे होते और मेरी ग्रीवा में सुवर्ण के हार पड़े रहते। मेरे पास मनुष्य की तमाम इच्छित वस्तुएँ मौजूद थी परन्तु फिर भी मनुष्य होने के नाते मैंने और की चाहना की और नतीजे में मैं ऐसा हो गया जैसा कि मैं अब हूँ। फराओ हौरेमहेब के राज्यकाल के छठवें वर्ष में मैं धीवीज से यहाँ भगा दिया गया कि यदि मैं लौटकर वहाँ जाऊँ तो कुत्ते की भाँति पीट-पीटकर मार डाला जाऊँ, कि यदि मैं इस परिधि के बाहर पैर रखने का साहस करूँ जो मेरे लिए निर्धारित कर दी गई है तो दो पत्थरों के बीच में डक की भाँति कुचल दिया जाऊँ। यह फराओ की आज्ञा है—सम्राट की आज्ञा है वह जो कभी मेरा मित्र था।

नील नदी का जल जिसने एक बार भी पीया है, वह जीवन-भर कहीं और अपनी प्यास नहीं बुझा पाना। कैंस देश की धूलि में कोई मुझे फिर से चलने दे तो मैं अपना मोने का प्याला उसके निट्टी के पात्र से बदल लूँ—अपने सुन्दर भूनी वस्त्र एक दाम की चमड़े की पोशाक से बदल लूँ। यदि एक ही बार फिर मुझे नील के प्रवाह का कम्कल नाद सुनाई दे सके।

मेरे जीवन का जल कितना पवित्र था और मेरी मूर्खता कितनी सुन्दर थी! आयु की मदिरा कितनी कड़वी है, और उत्तम में उत्तम शहद भी मेरी उम्र दरिद्रता की रुखी रोटी की बराबरी नहीं कर सकता।

आह! जीवन एक बार फिर पलटा सा जाये! अम्मन! स्वर्ग में होकर पश्चिम से पूर्व की ओर चले! और मेरा वह जीवन—वह निश्चल जीवन—वह दरिद्रता का गुलाम मुझे फिर एक बार दे दे! आह मेरी कठोर लेखनी! ओ मेरे नष्ट ताड़पत्र मुझे मेरे वह भोले नाममग्न दिन फिर एक दे दे!

और हम पुस्तक को लिखने के पहले मैं, मिन्युटे एक बार जी भरकर

रो लूँ, क्योंकि निर्बामित व्यक्ति ऐसे ही रोना है जब उसका हृदय दुःख में भारी हो जाना है !

सेन्सट जिससे मैं अपना पिता कहता था, बीबीज में गरीबों का बैग था और बीपा उसकी स्त्री थी । जब मैं उन्हें मिला तब वह बूढ़ हो चुके थे । उनका अपना कोई बच्चा नहीं था अतएव मुझे उन्होंने अपना पिया और अपने भोतंगन में मुझे देवनाभी की कृपा से मिला हुआ माना । बीपा ने मेरा नाम मिन्यूहे रखा क्योंकि वह कहानियों की बड़ी शौकीन थी और किसी कहानी में उसे मिन्यूहे नाम पाद रह गया था । बीपा को मेरा आना ऐसा लगा जैसे मैं आपत्तियों से बचकर उसके पास पहुँचा था ठीक उसी प्रकार जैसे किसी कहानी में कोई मिन्यूहे फराओ के यहाँ किसी भयानक रजस्य को अचानक मुन लेने के बाद अपना जीवन लेकर दूर-दूर, बहुत-से देशों को, भाग गया था । वह समझती थी कि मैं भी जीवन-भर आपत्तियों में बचकर ही रहूँगा और कभी अपने पास 'दुर्भाग्य' नाम की कोई बन्धु नहीं रहने दूँगा ।

परन्तु मेरे नाम से यदि मेरे जीवन का सम्बन्ध नहीं था तो अपने नाम से बाढ़ के पुत्र हैब का तो निश्चित रूप से था ही क्योंकि वह उत्तर और दक्षिण के साघराओं का साघरा बन गया और पास और गर्जद झुबुड धारण करके हीरेमहेव बन गया । और मैं ?

महान् साघरा एमन होर्टेप तृतीय के राज्यकाल में मेरा जन्म हुआ, उसी वर्ष जिस वर्ष वह पैदा हुआ जिसका नाम अभिगण है, अतएव मैं उसे नहीं सोहराता । और जब वह पैदा हुआ तो महान् मे आनन्द का सौग टगा हावार्कि बार्मि कभी तक साघराजी 'नाया' के कोई पुत्र नहीं हुआ था । और जब बड़ी जिसका नाम अभिगण है पुत्रराज घोषित कर दिया गया । महो-लख मनाया गया, और पुत्रारियों ने उसका स्नाना कर दिया । वह बीज बोने के समय पैदा हुआ था और धेरी जन्मतिथि मुझे सामूझ नहीं है क्योंकि मैं तो बीज की टोहरी में बीजद के बीज मौम में रहता हुआ बीपा को तब दिया था, जब मैं उसके घर के सामने ही बिजारे में आ गया था ।

वही उम टोकरी को देवताओं की देन समझकर उठा मार दी थी। मेरी प्यासी माँ भी बह बीपा। उम समय बिहियाई अपने घोंगलों को मीट चुर्बा थी और मैं इतना निश्चेष्ट रहा था कि बह मरती, मैं मर चुका था। बह मुझे अपने घर में आई थी और मुझे बोलने की आग में गर्म किया था और मेरे मुँह में उमने इतनी गींग फूँकी थी कि मैं रो उठा था ! !

जब मैग्मट घर आया तो मेरा रोना सुनकर यह समझने लगा कि बीपा ने कोई बिम्बी का बच्चा पाव लिया था, वह उसे डाँटने ही वाला था कि बह बोली, “वह बिम्बी नहीं मेरा सदका है।” मैग्मट, मेरे पति ! आनन्द मनाओ कि हमारे पुत्र उत्पन्न हुआ है।”

मेरा पिता सुनकर बोला, “तुम मूर्ख हो,” और उमने नागुश भी हुआ, परन्तु जब उमने मुझे सावर उमे दियाया, तो मेरी वह अमहाया-बम्पा देवकर उमे दया आ गई और तब उमने भी मुझे अपना पुत्र मान लिया। फिर तो उमने पड़ोसियों से भी कहा कि मैं बीपा का ही पुत्र था और अपना सबसे अच्छा लाभपात्र लेकर वह मंदिर में जाकर वहाँ भी मेरा नाम लिखा आया। और मेरी माता बीपा ने वह काम की टोकरी मेरे पालने के ऊपर ही टाँग दी जो बालानर में धुआँ सग-लगकर बानी हो गई। परन्तु एक काम मेरे पिता ने स्वयं किया और वह यह कि मेरा मतना उसने स्वयं किया। उमे भय था कि मन्दिर के पुजारियों के गन्दे चाकू से मेरा घाव सड़ जायेगा। वह स्वयं वैद्य था अतएव उमने ऐसा करना खुद ही ठीक समझा। इसके अतिरिक्त गरीबों का वैद्य, मन्दिर के पुजारियों को, इस कार्य के हेतु गहरी रकम देने के लिए वहाँ से लाता।

यह सब बातें मेरे माता-पिता ने मुझे इतनी बार बतलाई थी कि वह सब मुझे याद हो गई है। यह है निश्चय सत्य, क्योंकि भला वह मुझसे क्यों झूठ बोलने...? वह जो जीवन-भर इतने सीधे-साधे रहे ! परन्तु यह कि मैं मैग्मट का पुत्र नहीं था, मुझे उन्होंने सब तक नहीं बताया, जब तक कि मैं जवान नहीं हो गया।

लेकिन मैं था कौन ? किसीने मुझे नहीं बतलाया पर मैंने वास्तविकता जाँच ली। कैसे ? यह मैं बतलाऊँगा। मेरा विचार है कि मैं इस रहस्य को जान गया हूँ।

एक बाल लो कम से कम मर्य है ही, और वह यह कि बांग की टोचनी में बहा दिया गया जिम्मे धरनेवा में ही नहीं था। धीधीज जिसमें अर्धगण विमान महान नया मंदिर थे, एक बहुत बड़ा मगर था और वहाँ उन महलों के बाहर बरखी झोपटियों की भी बची नहीं थी। महान पराओं लोगों के राज्यमान में राज्य पर राज्य जीने गए और उस जीने के साथ ही साथमिश्र में स्थान-स्थान की मध्यमार्त्त आने लगी और वहाँ के व्यापारीगण भी आने लगे। मन्दिरों और महलों का वैभव जिननामहान् या उनकी ही निर्माह वह असंख्य झोपटियाँ थी। बहुत-से मरीह जहाँ आने बरखी का लायन-लायन करने में असमर्थ होकर उन्हें छोड़ देते थे, दैने ही बहुत-से, धनिबो की सिद्धा, जिनके पनि लम्बी यात्राओं पर गए होते, अपने पाद के पत्तों को छिपाने के लिए मदी में टोचनियाँ बहावा करती थी। जायद में भी किसी मसूद-बाफी की बरी और भीरिया के किसी व्यापारी का पुत्र था और बघोकि मेरा मरना नहीं हुआ था, अनएव यह लो निश्चित था ही कि मैं किसी परदेसी की मलान था।

बीता है अब मेरे मृत्युपन के बेग और छोटे जुने सुधे लकड़ों के महुक को लोचकर दिखात और मुझे उस पुरे के बाभी हुई टोचनी का छंद बनाया, उनी समय मेरे बाल-हृदय पर पढ़ना आया हुआ था - एनना मुझे याद है, बघोकि अब मेरी मने भीग चुकी थी।

बीता हुआ बाल विनना मृगत लकड़ा है और विदेदकर दीवज के आह्वान के उन दिनों की याद हृदय में बघोटे बीदा कर देती है। मेरा दिना मेमेट मंदिर के पक्कोटे के बाहर मदी के तुलर की ओर एक बरखल पर पढ़ना था जहाँ बरखी कोनाहल चढ़ना था। बरी लकड़े बने पक्को में जहाइ बीह जाने और लायान उपाया जाना। आह्वान बरखी के महुक और लकड़े-दीव की दुबाने थी जहाँ बरखी-बरखी लकी लकीर की अरकी बुगियो पर बीहकर (दायो द्वारा दाते लकड़ा कर) आने थे। हमाते दायेली कर बरखल करने जाने, लकड़ा जहाइ के बाय बरखल कर लोके लुई के लोप के लकड़ा बहा बुय पक्को कोली के दुबारी की रात करने थे। एक

वातावरण में मेरे पिता के समान वह लोग भी सम्मानित व्यक्ति माने जाते थे, जिस प्रकार जल में खड़ी दीवार जल से ऊँची मानी जाती है।

हमारा घर भी औरो के मुकाबले में बड़ा था। सामने एक छोटा-सा बगीचा हमारे यहाँ था, जहाँ मेरे पिता ने एक 'साईकोमोर' का पौधा लगाया था। सड़क की तरफ हमारे बगीचे में 'एकेशिया' की झाड़ियाँ लगी हुई थी और तालाब के स्थान पर हमारे पास एक पत्थर का हीज था जो बाढ़ के समय भर जाता था।

हमारे घर में चार कमरे थे, जिनमें से एक में, मेरी माता कीपा खाना बनाया करती थी, जिसे हम पिता के दवाखाने के सामने के तिवारे में बैठकर खाया करते थे। मेरी माता सफाई बहुत पसन्द करती थी—हफ्ते में दो दिन एक स्त्री आकर घर की सफाई कराती और हफ्ते में एक दिन एक घोबिन आकर हमारे कपड़े ले जाती, जिन्हें वह सामने ही नदी में धोया करती थी।

इस कोलाहल में पूर्ण वस्ती में मेरा पिता और हमारे पड़ोसी प्राचीन रिवाजों को बनाए रखने में गर्व का अनुभव करते क्योंकि जो बहुत-से परदेशी हमारे यहाँ आते उनके बीच अपनी सम्प्रदाय का इस प्रकार प्रदर्शन ही उन्हें अपना अस्तित्व देता था। जबकि सम्पूर्ण मिस्र में रईसों के यहाँ भी पुराने रिवाजों को छोड़ दिया गया था, वहाँ हमारे यहाँ प्राचीन रीतियों और देवताओं के प्रति श्रद्धा पहले की ही भाँति रखी जाती थी। ऐसा लगता था जैसे वे लोग अन्य लोगों के साथ रहकर भी उनसे भिन्न बन-बर रहना चाहते थे।

परन्तु इन बातों को भला मैं तब समझ ही कैसे सकता था? उन दिनों तो तेज धूप में बचने के लिए कभी मैं उस साईकोमोर की छाया में बैठा रहता तो कभी अपने सड़क के मगर के साथ मूँह में रस्सी बाँधे पक्की सड़क पर उभे साँचा करना था। मेरे पड़ोसियों के बच्चे जितनी उत्सुकता से मुझे तब देखा करते थे! मुझे वे लोग कितनी ही बार शहद की मिठाइयाँ, काँच की गोमियाँ, ताँबे के तार इत्यादि देने कि मैं उन्हें वह मगर सड़क पर लीचने के लिए दे दूँ। बाल्य में वह रईस लोगों के बच्चों का निचोला था, परन्तु मेरे पास वह इस कारण आया था कि उसे महल के

एक बड़ई ने मेरे पिता को उपहारस्वरूप दिया था, क्योंकि उसने कभी उसका इलाज किया था ।

नित्य प्रातःकाल मुझे मेरी माता जब सक्की खरीदने जाती, साथ ले जाती । वह कभी अधिक वस्तुएँ नहीं खरीदती थी परन्तु प्याजों का एक गुच्छा मोल लेने में ही वह काफी समय लगा देती थी । यदि कभी कोई नया जूता मोल लेना होता तो कीपा कम से कम एक सप्ताह तक छान-बीन करने के बाद ही उसे खरीदती थी । वह अपने मन को तथा मुझको समझाया करती कि "सोना-चाँदी रखने वाला व्यक्ति वास्तवमें रईस नहीं होना, बल्कि रईस वह होता है जो थोड़े में ही सतोष कर लेता है ।" परन्तु उसकी आँखें कितनी ललचाई दृष्टि से सिद्धान और बिबलीस से आये हुए रंग-बिरंगे ऊनी वस्त्रों पर टिकी रहती, कितनी उत्कटा से वह शतुर्भुज के परो पर तथा चिकने हाथीदाँत के बने खिलौनों पर हाथ फेरती, यह मैं उस समय देखकर भी नहीं पहचान पाता था । परन्तु मेरा बाल-मस्तिष्क उस समय उस शातिपाठ से विद्रोह कर उठता और मैं उन सुन्दर खिलौनों और उन सुन्दर पखो वाली बिड़ियो को, जो सीरिया के ब मिस्र के गोल गाती, पाने के लिए हठ करने लगता था । मुझे यह क्या मालूम था कि कीपा स्वयं उन सबको पाने तथा धनी बनने को कितनी लालायित थी ।

परन्तु वह एक गरीब वैद्य की स्त्री थी और वह अपनी इच्छाओं को केवल कहानियाँ कह-मुनकर ही ज्ञात कर लेती थी । हर रात वह मुझे धीरे-धीरे कहानियाँ सुनाया करती । उसने मुझे सिन्धूहं की तथा उस जहाजी की कथा सुनाई थी जिसका जहाज डूब गया था और जो सपों के राजा से मिलकर असह्य धनराशि लेकर लौटा था । उसने मुझे जादू की, फ़राऊन लोगों की, भूतों की अनेकानेक कथाएँ सुनाई थी । मेरा पिता अक्सर बड़-बड़ाया करता कि वह मेरा दिमाग खराब करती थी, परन्तु जब शाम को ही वह खुरटि लेने सपना तो निश्चिन्त होकर वह मुझे तथा अपने-आपको कहानियों से बहलाया करती थी । आह ! उन दिनों उन कहानियों को सुनकर मैं कितना बेमुग्न हो जाता था !

मैं अपनी उस गरीब वस्ती की उस सुगन्ध को भना कैसे भूल सकता

हैं—वह जिसे फिर से पाने के लिए मैं अपना सर्वस्व भी निछावर करने को तैयार हूँ। उन दिनों जब अम्मन की मोने की नाव नदी की छानी पर शाम के वक्त डोलती तो हमारी उम बस्ती में से मछलियाँ भ्रूने में उठी मुगन्ध ताजा सिकी हुई रोटियों की गंध से मिलकर, एक विचित्र बाला-वरण पैदा कर देती थी। बन्दरगाह से मुगन्धित तैलों की तथा इत्रों की महक उड़ती और जब कोई धनिक स्त्री अपनी मुखपंखचिन कुर्मी पर बैठी उधर से निकल जाती तो उसके शरीर से उठी हुई मुगन्ध मुखकों के हृदयों में हूक-सी पैदा कर देती थी।

उस तिवारे में ही, मेरी सबसे पहली शिक्षा भोजन करते समय हुई थी। जब मेरा पिता थका-माँसा अपने दवाखाने से भोजन करने के लिए घर आता तो उसके वस्त्रों पर तब भी मरहम इत्यादि औषधियों के दाग लगे रहते और एक विचित्र प्रकार की तीव्र गंध उनमें से निकलती रहती थी। मेरी माता उठकर तब उसके हाथ धुलवाती और फिर हम तीनों चौकियों पर बैठकर भोजन किया करते थे। कभी-कभी सड़क पर मल्लाह गाली-गलौज करते हुए शराब के नशे में निकलते और हमारी एकेशिया की झाड़ियों के बाहर पेशाब करने रुक जाते। मेरा पिता उनसे कुछ नहीं कहता, परन्तु उनके जाने के बाद वह मुझसे कहता : “सड़क पर इस तरह पेशाब केवल हब्शी या गन्दा सीरियन ही कर सकता है, मिस्त्री नहीं करता, वह तो दो दीवारों के बीच करता है।” या फिर कभी-कभी वह कहता : “उचित मात्रा में मदिरा एक ईश्वरीय देन है जिससे हृदय पुलकित हो उठता है, एक गिलास से मनुष्य आनन्द अनुभव करता है, परन्तु उसके दो गिलास मनुष्य की जिह्वा को बेकाबू बना देने है। और जो व्यक्ति इसे पात्र भरकर पीता है वह जब होश में आता है तो अपने-आपको नाती में पड़ा हुआ पाता है—लुटा हुआ, पिटा हुआ।” और इसी प्रकार मेरा पिता मुझे उपदेश दिया करता था। और जब कभी कोई सुन्दर युवनी अपने झीने वस्त्रों में से अपना शरीर दिखाती हुई, गालों और होठों को रंगे तीखे कटाक्ष करती हुई सड़क से निकलती और मैं उसकी ओर अपसक्त देखता रह जाता तो मेरा पिता मुझसे गम्भीर स्वर में कहने लगता, “उस सुन्दरी स्त्री से बचने रहो, जो तुम्हें सुन्दर कहकर फँसाना चाहे। क्योंकि

उमका हृदय एक जाल के समान होता है, जिसमें भोलें-भातें लोग फँसकर तड़पा कर रहे हैं। उसका शरीर आग की तरह जलता करता है।" और ऐसे उपदेशों में मेरे हृदय में मदिरा और सुदरी स्त्री के प्रति भय रहने लगा हो तो क्या आश्चर्य था ? और बाद में यही दोनी चीजें मेरे जीवन में मुझे सबसे अधिक मरने लगी, बदाचिन्त इसलिए कि छुटपन में वह मेरे लिए अज्ञान थीं।

मुझे छुटपन में ही मेरे पिता ने अपने दवाखाने में ले जाकर अपनी समस्त दवाइयाँ मरने पीरने-फाड़ने के अस्त्र दिखाए थे। जब वह अपने रोगियों की देखना तो मुझे उसके बगल में पानी का पात्र लेकर तैयार रखा रहना पड़ता था। उमकी आवश्यकतानुसार उसे मदिरा, औषधि, मारुत या पट्टी उठाकर देनी होती थी। जब वह चाकू लेकर किसीका फोड़ा या पाव बाटता तो मेरे लिए वह दृश्य रोमांचकारी न होता क्योंकि उन्हें देखने का तो मैं जैसे आदी हो गया था। परन्तु जब मैं उसका वर्णन अपने मापियों से करता तो जैसे वह मेरे सामने भय और आदर में झुक जाते थे। मेरा पिता अपने हर रोगी की गम्भीरतापूर्वक जाँच करता और था तो यह बट्टर कि "तुम्हारा रोग अच्छा हो जाएगा," उन्हें दवा देना फिर ताइपन पर 'जीवनगृह' लिखकर उन्हें देना कि वहाँ जाकर वह अपना दवाव करावें। जब ऐसा कोई रोगी उस नाइपन को लेकर मदि चला जाता तो वह मिर हिलाकर दीर्घ निश्वास छोड़ता और कह उठता "बेचारा !"

परन्तु उसके पाग मर ही निर्धन रोगी नहीं आते थे। कभी-कभी आमनाम की रगमापाजो में मैं लोग वहाँ आते जो एक-दुसरे में लड़ने, घावम हो आते या कभी मीठिया के बहावों के मालिश भी आते जिनका तो कोई फोड़ा होता या दाँत में दर्द होता। उनके वस्त्र उत्तम नहीं मर के बने होते थे। एक बार एक पत्नी मराने बाने की स्त्री आई। वह अपने पागे व हाथों में बहुतसारे नगी में जैसे आभूषण पहने हुए थी और बराहने हुए अपने अपने रोगों को देर तक मेरे पिता से कहो-या-हूँ मेरे बह उबड़पाव देकर उस समय निम्ना आश्चर्य हुआ था। पर जब मेरे पिता ने तब कुछ मुँह पर ताइपन पर लिखना आरम्भ किया

न जाने क्यों मुझे दुःख हुआ था और मेरे मुँह से चुपचाप 'बिचारी' शब्द निकल गया था। वह धबरा गई और उसने मेरे पिता की ओर देखा। उसने एक पत्ते पर पुराने अक्षरों में कुछ लिखा फिर तैल और मदिरा को मिलाकर हिलाया और उस सूँधे पत्ते पर उसको डाल दिया। जब स्याही को मदिरा ने मिटा दिया तब उसने उस धोल को एक मिट्टी के पात्र में एकत्रित करके रोहिणी को दे दिया और कहा, "जब कभी सिर अथवा पेट में पीड़ा उठे तो इसमें से थोड़ा-थोड़ा करके पी लेना," स्त्री जब चली गई तो मैंने अपने पिता की ओर देखा, जो परेशान-सा दिखाई देता था। वह एक-आध बार गीगकर बोला, "कई रोग उस स्याही से ही दूर हो जाते हैं, त्रिगमे शक्तिशाली मन्त्र लिखे जाते हैं।" इसमें आगे वह स्पष्ट कुछ भी नहीं बोला। मैंने मुना कि वह बड़बड़ाया था और उसने स्वतः कहा था, "बम में बम इसमें उगे हानि तो कुछ भी नहीं होगी।"

जब मैं मान वर्ष का हुआ तो मुझे लड़कों के पहनने का कटिवस्त्र मिल गया और तब मेरी माता मुझे लेकर मन्दिर में बलि देवने गई। उन दिनों सम्पूर्ण मिय देश में थोबीज के अम्भन का मन्दिर सबसे बड़ा माना जाता था। नगर के मध्य में होता हुआ एक चौड़ा मार्ग चन्द्रमा की देवी के मन्दिर तथा कुण्ड में चलकर यहाँ आता था, त्रिगके दोनों ओर पत्थर में खुदे हुए अगणिन मीनों के गिर बाले मिह बने हुए थे। मन्दिर का प्राकार विज्ञान था जो पक्की ईंटों का बना हुआ था। उसके अन्दर की गगनचुम्बी अट्टानिवाहू नगर के अन्दर बने हुए नगर का भ्रम देती थी, उनवी ऊँची छतारियों पर रंग-बिरंगे जगड़े फहराने रहते और दीर्घ ताम्र मिह द्वारों के दोनों ओर मञ्जाटों की विज्ञान शनिमाहू लड़ी देवता का पहरा दिया बरनी थी।

जब हम मुख्य द्वार में होकर अन्दर चले तो 'मरे हुए लोगों' की बिनाबों के बेचने वाले ने बीजा के कपड़ों का पहनकर गीचा और उगे वह बिनाबों बेचनी चाली। वह मुझे मन्दिर के बड़ई की दुकान पर ले गई जहाँ लकड़ी के बड़े दान तथा अनुचर रहे हुए थे। त्रिग्वे अपने शक्ति की बिना होनी तथा आ दुनरी दुनिया में दाम-दामियों में मँजित रहना चाहत वह उन सिनोनों को लगीदकर पुत्रारियों द्वारा उन्हें अभिमन्त्रित करा

वे देवता घर गये

लेने थे।

मेरी माता ने दण्डको का गुल्फ भर दिया और तब मैंने देवों वस्त्र धारी और कठोर हाथों वाले उन पुजारियों को देखा, जो एक ही हाथी बैल का सिर काट डालने थे। बैल के सींगों के बीच एक लाठपन बंधा हुआ होता जिसपर मुहर लगी हुई होती, जो इस बान का प्रतीक होता था। बैल हर प्रकार से बलि देने योग्य था तथा उसके शरीर में एक भी काँच वाला नहीं था। पुजारी लोण मोटे और पवित्र होते थे और उनके घुटे हुए निराल से चमका करने थे। उस उत्सव को देखने के लिए लगभग 4 व्यक्ति एकत्रित हुए थे परन्तु पुजारियों ने उनकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया था। आपस में वह एक-दूसरे से पूरे समय तक अपने ही विषय पर बातें करते रहते थे। मैं दीवारों पर बनी मुद्रा-सम्बन्धी तस्वीरों को देख रहा था और उन विज्ञात स्तम्भों को देखकर आश्चर्य कर रहा था, अब तब मुझे तनिक भी ज्ञात नहीं था कि मेरी माता यह सब देखकर कितना भावुक हो उठी थी। परन्तु जब आँखों में आँसू भरे हुए मेरा हाथ पकड़े मुझे घर वापस ले चली, तो मेरा मन अधीर हो गया था। घर आ उठने मेरे बचपन के जूते उतारकर मुझे नए जूते पहनाए। यह मेरे मे लगने थे और इनमें मेरे छाले पड़ गए, परन्तु समय ने उन्हें पुराना और मेरा पैर तब उन्हींका आदी हो गया।

भोजन के उपरान्त मेरे पिता ने सम्भीर मुद्रा में मेरे सिर पर रखकर प्यार से पूछा था, "अब तो मिन्यूहे, तुम सात वर्ष के हो गए अब बनताओ तुम जीवन में क्या बनना चाहते हो?"

"एक सैनिक!" मैंने एकदम उत्तर दिया, पर जब मैंने उसके मुँह यह सुनकर निराशा देखी तो मैं परेशान हो गया। उन दिनों जो भी लड़क पर लड़की द्वारा खेले जाने वह सब सैनिकों के ही होते थे और अनिच्छित मैंने सैनिकों को कुत्ती लड़कें और गिरहवाणों में घर लगाकर भी निकलते देखा था, बिनके पहिले जब राजपथ पर चलते तो वही भाँति चलते करते थे। वह सब मुझे अत्यन्त प्रभावित किए हुए थे इसी कारण मैंने भी सैनिक बनने की इच्छा प्रगट की थी। सबसे बड़ा यह था कि सैनिक को पढ़ने-लिखने की आवश्यकता नहीं थी और सि-

पढ़ाई में मैं उतनी ही अरुचि रखता था जितना उस समय मेरी उम्र का कोई भी लड़का रखता था। मैंने सुना था कि अध्यापक लोग बड़ी बेदर्दी से छात्रों को मारते थे; खासकर जब उनके हाथों से कोई मिट्टी की तख्ती या वास की कलम टूट जाती थी। मैंने सुना था कि वे लोग लड़कों के सिर के बालों को पकड़कर खूब झोटा देते थे जिससे आँखों में से पानी बहने लग जाता था। मन्दिर के पुजारी तो जिसमें बहुत ही कठोर होते थे।

मेरे पिता ने मेरा उत्तर सुनकर थोड़ी देर बँठकर कुछ सोचा फिर मेरी माता से एक पात्र माँगा और उसमें सस्ती शराब भरकर वह मुझसे बोला, “सिन्धूहे चलो।” और मैं उसके साथ हो लिया।

नदी किनारे हम लोग जा रहे थे। एक स्थान पर जहाज से माल उतारा जा रहा था। बड़े-बड़े बक्सों और गाँठों को मजदूर अपनी सारी शक्ति लगाकर लुढ़का रहे थे। उनके शरीरों पर पसीना बह रहा था जो उनके भेल से मिलकर बहुत ही धूमिल लग रहा था। आकाश में सूर्य डूब रहा था जिसके धूमिल प्रकाश में वह दृश्य बहुत ही बुरा लग रहा था। दूर पहाड़ों के पीछे ‘मृतको का नगर’ था जिसके पीछे सूर्य धीरे-धीरे उतर रहा था। मजदूर हाँफ रहे थे और उनमें से जब धक्कर कोई साँस लेने को तनिक ठहरता तो कामदार का लम्बा कोड़ा उसकी नग्न पीठ पर बेदर्दी से आ पड़ता और काम फिर चालू हो जाता था।

मेरे पिता ने हठात् उनकी ओर इशारा करते हुए मुझसे पूछा, “ऐसा बनना चाहोगे सिन्धूहे?”

मुझे उसका प्रश्न ही बेजा लगा क्योंकि भला वैसा मजदूर कौन बनना चाहता था? मैंने कोई उत्तर नहीं दिया।

मैन्मट फिर बहने लगा, “यह लोग भोर से रात तक कठोर परिश्रम करते हैं, इनकी खाल मगर की खाल जैसी कड़ी पड़ गई है और इनके पजे और पैर जैसे मगर के ही पजे हैं। जब अँधेरा फैल जाता है तभी इन्हें अपनी बच्ची और बदनूदार झोपड़ियों में जाने की आज्ञा मिल पाती है, जहाँ यह सूखी रोटी, प्याज और बेहद कड़वी मदिरा पीते हैं। मजदूरों, किसानों और हाथ से परिश्रम करने वालों का यही जीवन है, क्या इन्हें

देगकर भी बोईं ऐसी कर सकता है ?”

मैंने सिर हिलाकर मना किया। परन्तु मैं अब भी आश्चर्य में उगे देग रहा था। मैंने कहा, “पिता ! मैंने तो मैनिश बनना चाहा था न कि मङ्ग-दूर या किमान या पानी भरने वाला। मैनिश तो पक्की इमारतों में रहता है और अच्छा खाना खाता है। माघकास के समय वह अच्छी मदिरा पीता। स्त्रियों के साथ रणमालाओं में हँसता-बोलता है। उनके मरदाग मरे। सोने की उड़ीयें पहनने हैं हालाँकि वह विधवा-पड़ना नहीं जानते। पुनः से लौटकर वह इनका लूट का सामान और इतने दाम माग्न लाते हैं कि मेघ जीवन वह ठाट से रहते हैं। दास उनके लिए मंथन करते हैं और उनके व्यापार में उन्हें सहायता देने हैं। यदि मैंने ऐसी मूल में मैनिश बनना चाहा है तो बीन-भा बुरा काम कर दिया ?”

मेरे पिता ने कोई उत्तर नहीं दिया और तब वह मीघनापूर्वक पा ही बने हुए एक मिट्टी के डेर पर चढ़ गया जहाँ कुछ-करकट इनका अडि पड़ा था कि वही पक्षियों के हृद भिनभिन्ना रहीं थी और बंदू आ र थी। उसपर चढ़कर उमने मुँहकर पीछे बनी हुई एक बरफी शोपची तरफ देखकर आवाज लगाई :

“इतब, मेरे मित्र ! क्या तुम घर में हो ?”

उस दउवे में से एक बूढ़ रोगकर बाहर निकला। उसके हाथ में लकड़ी थी। उसका दाहिना हाथ कंधे के नीचे से बटा हुआ था। उसका कटिबन्ध मँल में बड़ा हो गया था। उसके मुँह पर आवु की ग छाप थी और मुँह में एक भी दाँत नहीं था।

“यह... यह इ तब है ?” मैंने आश्चर्य से मुँह खोल दिया। और बूढ़ की ओर भय से देखने लगा। इतब तो वह प्रसिद्ध सेनानी या फ़राऊनों में सर्वश्रेष्ठ और महान् माने जाने वाले टोथेमिन तृतीय के र काल में हुए सीरिया के युद्ध में अद्भुत वीरता के साथ लड़ा था। शौर्य और शक्ति की क्यारें अब भी लोगों में प्रचलित थी। फ़राऊ अपने हाथ से उसे पारितोषक दिए थे।

बूढ़ ने सैनिक तरीके से हाथ उठाकर अभिवादन किया और पिता ने वह मदिरा का पात्र उसे दे दिया। फिर हम सब वहीं रुक

बैठ गए क्योंकि वहाँ एक पत्थर की चौकी भी नहीं थी। इतब ने मदिरा का पात्र उठाकर मुँह से लगा लिया। वह उसकी एक बूँद भी नहीं फैलाना चाहता था। मतर्कता में उसके बूँद हाथ बाँप रहे थे।

“इतब, मेरे मित्र !” मेरे पिता ने मृस्कराकर कहना शुरू किया, “मेरा पुत्र सैनिक बनना चाहता है, और क्योंकि गुटों के बीच तुम प्रचंड बीरता में लड़े हो और सैनिक जीवन में पूर्णरूप में अवगत हो अतएव, इसे मैं तुम्हारे पास लाया हूँ कि सैनिकों की टाटदार दिनचर्या और उनके रोब-दोब का तुम पूर्ण विवरण इसे सुनाओ।”

बूँद हँसा फिर लाँसकर उसने मेरी ओर घूरकर देखा, फिर बोला, “सेट, बाल और तमाम शैतानों की-कसम ! क्या यह लड़का पागल है ?”

मैं डर गया और अपने पिता के पीछे हो गया और मैंने उसकी बांह पकड़ ली। इतब बोला :

“लडके, लडके सुन ! सैनिक बनने के दुर्भाग्य को जितनी बार मैंने कोसा है, जितनी बार उसके लिए मैंने अफसोस की साँसें ली हैं यदि उतनी ही बार मुझे मदिरा की एक-एक घूँट मिल जाती तो—तो निश्चय जान कि क्राराऊन ने जो सील अपनी बुडिया के नाम पर बनाई है उसे मैं उस मदिरा से भर देता। इतनी अफसोस की साँसें ली है मैंने !”

वह फिर पीने लगा। मुझमें साहस का स्फुरण हुआ और मैंने बाँपती आवाज में कहा, “परन्तु सैनिक का जीवन तो बहुत सम्मानित माना जाता है।”

“सम्मान ! क्याति ! यह सब मक्खियों की भिनभिनाहट है। क्याति के लिए कौन झूठ नहीं बोलता। और फिर मदिरा का प्याला पाने के लिए न जाने मैंने कितने झूठ बोले हैं। परन्तु तुम्हारा पिता सोचा-सादा आदमी है और इसे मैं धोखा नहीं देता। अतएव मेरे बेटे ! मैं तुमसे यह कहता हूँ कि सब धंधों में सैनिक का धंधा सबसे नीचा है—यह बहुत ही घटिया और गिरा हुआ है।”

मदिरा में आँखें चमकने लग गई थी। उसने अपनी गर्दन पर हाथ रखकर फिर कहा, “इस प्रीवा को देखो ! इसमें किनी समय क्राराऊन ने अपने हाथों में पेंचलड़ी सोने की खंजीर लटकाई थी। उसके शिविर के

सामने शत्रुओं के हाथ काट-काटकर जो डेर मैंने लगाया था वैंमा कौन भगा सकता है ? कौन था वह पहला व्यक्ति जिसने बादेशकी ऊँची दीवार लौंपी थी और कौन था वह बीर जो चिंघाड़ते हुए हाथी के समान शत्रु की सेना में घुस गया था ? वह मैं—मैं इतब था—जो मुझ में प्रचंड वीर माना जाता था । परन्तु अब मुझे कौन इन सब बातों के लिए धन्यवाद देने आता है ? मेरा सोना जैने आया था वैंमें ही चला गया और दाम या तो मर गए या भान गए । मेरा दायाँ हाथ मितल्ली के देश में रह गया और अब यदि मेरे पड़ोसी उदारतापूर्वक खाने को सूखी मछलियाँ और पीने को मदिरा न देते तो निश्चय ही मैं भूखो मर जाता । मेरा पौवन, मेरी शक्ति, सब रेगिस्तान में समाप्त हो गई और मैं आपसियों को सहन करने-करने ऐसा टूट गया हूँ । और मैं फिर भी हूँ इतब—मुझ का विजेता इतब, जो पड़ोसियों की दया का पात्र बना हुआ हूँ । जब मेरा हाथ काटा गया था तो मुझे चितनी पीड़ा हुई थी, यह मैं उन्हें कौन-से शब्दों में बनावूँ... मैंन्वट, तुम शत्रुमुख बितने अच्छे आदमी हो, परन्तु मदिरा तो समाप्त हो गई...” और वह लामोस हो गया । उसकी साँस चलने लगी । उमने वह मिट्टी का पात्र दो-बार बार उपटा-मीटा बिचा और फिर उसे रस दिया । उसकी आँगे आग के मोलों की तरह सात हो उठी थी और मैंने देखा कि वह एक बार फिर बहो दुःखी बूझ हो गया था ।

“परन्तु मैत्रिक के लिए मिखना-गढ़ना तो आवश्यक नहीं है ।” मैंने पुनःपुनःबार बरते-बरते कहा ।

“हूँ ।” यह सुनकर वह बोला और उमने मेरे गिला की ओर देखा जिसमें जल्दी से एक लंबी की बूड़ी अपनी बाँह में उतारकर उमे दे दी । इतब ने जोर से आवाज लगाई और एक गदा वाला लड़का भागकर सामने आ गया । इतब ने उस बूड़ी को तथा उस मिट्टी के पात्र को लेकर वह लम्बूगलाने में मदिरा खाने बना गया । इतब पीछे में चिल्लाया, “मन्पी लाना जो बापी आह... बीमारी न लाना ।” फिर मेरी ओर देखकर बोला, “यह सत्य है कि मैत्रिक बाजे तो न पड़े और बेचन लहे । परन्तु यदि वह विर-वह सकता है तो पराश्रितारी बन जाता है और सब उसके नीचे कई बीर दाम करने हैं, उसकी आज्ञा का पालन करने हैं । उन्हें बही मुझ में

अपनी आज्ञा से भेजता है। जो लिप्त-पड़ नहीं सकता वह आज्ञा दे नहीं सकता, कभी नहीं। गले में सोने की जूरीयें पहनने में भी क्या मजा है, जबकि दूसरा व्यक्ति हाथ में लाल कलम लेकर आज्ञा प्रदान किया करता है ? अतएव सड़के ! पट्टी, बिना पड़े सेना में भी सम्मान प्राप्त नहीं होता। यदि पड़ गए तो सेना में भी दास तुम्हें कुर्सी पर बिठाकर बुद्धभूमि में आज्ञा प्रदान करने ले जाएंगे अन्यथा तुम्हें कोई कही नहीं पूछेगा।”

इंतव की मदिरा आ गई थी। जब मैं अपने पिता के साथ सौटा, मेरी सैनिक बनने की इच्छा गायब हो चुकी थी।

मेरा पिता मुझे मंदिर की महेंगी पाठशाला में भेजने में असमर्थ था जहाँ रईसों के, सामन्तों के तथा पुजारियों के लड़के, और कभी-कभी लड़कियाँ भी पढ़ने जाया करती थीं। मैं ‘ओनेह’ के पास पढ़ने जाने लगा, जिसका घर हमारे घर के पास ही था। वह अपने टूटे हुए तिवारे में हमें, कईयों को बिठाकर पढ़ाया करता था। इस पाठशाला में कारीगरों, सौदागरों, जहाजी मल्लाहों और नीचे पदाधिकारियों के बच्चे ही पढ़ते थे, जिनका सबसे बड़ा उद्देश्य अपने पुत्रों को लेखक बनाने का होता। उसका खर्चा भी बहुत कम था। विद्यार्थियों को ही उसका पूरा खर्च चलाना पड़ता था। अनाज वाले का पुत्र उसके लिए आटा ला देता, तो कोयले वाले का पुत्र कोयला ला देता। इसी प्रकार हर एक कुछ न कुछ उसे देता और वह हमें पढ़ाता। इस प्रकार की संकड़ों पाठशालाएँ उन दिनों थीबीज में चलती थीं। हमारा गुरु ओनेह पहले मन्दिर में गौकर था और प्रारंभिक शिक्षा देने के लिए पूर्ण योग्य था। सभीकी भाँति मेरा पिता उसका मुफ्त इसाज करता और उसे अच्छी और पौष्टिक औषधियाँ दिया करता था।

हमारा यह गुरु हमें गलतियों पर कभी न मारता। यदि कोई शराब वाले का लड़का किसी दिन अपनी पट्टी पर सोता रह जाता तो उसे दूसरी सुबह ओनेह के लिए एक पात्र मदिरा लानी होती। इसी प्रकार हर कोई उसे कुछ न कुछ देकर खुश रखता था। और मदिरा पीकर जब वह बूढ़

हमें ममार की और मृष्टि की विचित्र कथाएँ सुनाने लगता तो हम सभी अपने अरविबर पाठ को भूलकर एकाग्र चित्त में उसकी बातें सुनने लगने। वह हमें ससार की गतिविधि बताना, 'प्याह' तथा उसके मायी देवताओं का वर्णन करता और बताता कि किस प्रकार सभी लोगों को आगिर में ओगिरिस के ऊँचे सिंहासन के सम्मुख न्याय के हेतु जाना पड़ता है। जो व्यक्ति गीदहमुखी देवता के न्याय में दोषी ठहरता था वह 'साने बाने देवता' के सामने पेंक दिया जाता था। यह देवता जो एक ही साथ मगर और समुद्री घोड़े जैसे रूप का होता था, उसे मा जाना था। और जब मनुष्य मृत्यु के उपरान्त उन देवी क्षेत्रों में जाने लगता तो बीच में उसे एक नदी मिलती जिसका जल बाला होता था। उसमें केवल एक ही नाव होती थी जिसका मल्लाह उल्टी धारा देखकर नाव सेता। नील में जिस प्रकार नाविक मीथ देखकर नाव चलाता है वह उस प्रकार नहीं सेता। और सबसे बड़ी बात तो यह कि वह छोटी से छोटी गलती भी पकड़ सेता है। उसमें बचकर कोई नहीं निबल सकता। और गलती पकड़ जाने पर वह बुरी मौत मार देता है। उन दिनों हम समझने में कि वह मदिरा के नशे में बहककर ऐसी बाने किया करता था, परन्तु बाद में पता चता कि वह कितना चतुर अध्यापक था जिसने उस छुटपन में ही हमें देश की तमाम सृष्टि से, यों कहानियाँ सुनाकर ही, अवगत कर दिया। मैंने कुछ वर्षों तक उस पाठशाला में विद्याध्ययन किया। वहाँ मेरा सबसे गहरा दोस्त 'टीधिमीथ' था, जो मुझमें एक-आध साल बड़ा था, परन्तु छुटपन से ही उसने घोड़े की सवारी सीख रखी थी। उसका पिता रपखाने के एक रिसाले में तबि के तारो से मड़ी हुई चावुक धारण करने वाला हाकिम था और वह चाहता था कि उसका पुत्र ऊँचा पदाधिकारी बने। इसीलिए उसने उसे पढ़ने बिठाया था। परन्तु उसके 'नाम' से उसका भविष्य भिन्न था। जब उसे अक्षर ज्ञान हो गया तो भाला फेंकना, घुड़सवारी करना तथा रथ दौड़ाना—इन सब बातों में उसकी रुचि बिल्कुल नहीं रही। वह अपनी मिट्टी की सख्ती पर चित्र बनाने लगा। बड़ी आसानी से वह रथ, घोड़े, खड़े हुए सैनिकों के दृश्य बना लेता था। वह पाठशाला में अपने साथ मिट्टी सानकर लाता और जबकि 'ओनेह' नशे में खुर होकर कहानियाँ

अपनी आज्ञा से भेजता है। जो लिख-पढ़ नहीं सकता वह आज्ञा दे नहीं सकता, कभी नहीं। गले में सोने की जड़ीरें पहनने में भी क्या मजा है, जबकि दूमरा व्यक्ति हाथ में लाल कलम लेकर आज्ञा प्रदान किया करता है? अतएव लड़के। पढ़ो, बिना पढ़े सेना में भी सम्मान प्राप्त नहीं होता। यदि पढ़ गए तो सेना में भी दास तुम्हें कुर्मी पर बिठाकर मुड़भूमि में आज्ञा प्रदान करने लें जाएंगे अन्यथा तुम्हें कोई बही नहीं पूछेगा।”

इतब की मदिरा आ गई थी। जब मैं अपने पिता के साथ लौटा, मेरी मैनिक बनने की इच्छा गायब हो चुकी थी।

मेरा पिता मुझे मंदिर की महेंगी पाठशाला में भेजने में असमर्थ था जहाँ रईसों के, सामन्तों के तथा पुजारियों के लड़के, और कभी-कभी लड़कियाँ भी पढ़ने जाया करती थी। मैं 'ओनेह' के पास पढ़ने जाने लगा, जिसका घर हमारे घर के पास ही था। वह अपने टूटे हुए तिवारे में हमें, कईयों को बिठाकर पढ़ाया करता था। इस पाठशाला में कारीगरों, सौदागरों, जहाजी मल्लाहों और नीचे पदाधिकारियों के बच्चे ही पढ़ते थे, जिनका सबसे बड़ा उद्देश्य अपने पुत्रों को लेखक बनाने का होता। उसका खर्चा भी बहुत कम था। विद्यार्थियों को ही उसका पूरा खर्च चलाना पड़ता था। अनाज वाले का पुत्र उसके लिए आटा ला देता, तो कौयल वाले का पुत्र कौयला ला देता। इसी प्रकार हर एक कुछ न कुछ उसे देता और वह हमें पढ़ाता। इस प्रकार की सैकड़ों पाठशालाएँ उन दिनों थीबीज में चलती थी। हमारा गुरु ओनेह पहले मन्दिर में नौकर था और प्रारम्भिक शिक्षा देने के लिए पूर्ण योग्य था। सभीकी भाँति मेरा पिता उसका मुफ्त इलाज करता और उसे अच्छी और पौष्टिक औषधियाँ दिया करता था।

हमारा यह गुरु हमें गलतियों पर कभी न मारता। यदि कोई शराब वाले का लड़का किसी दिन अपनी पट्टी पर सोता रह जाता तो उसे दूसरी सुबह ओनेह के लिए एक पात्र मदिरा लानी होती। इसी प्रकार हर कोई उसे कुछ न कुछ देकर खुश रखता था। और मदिरा पीकर जब वह बुद्ध

हमें मसार की ओर मृष्टि की विचित्र कथाएँ सुनाने लगता तो हम सभी अपने अरुचिकर पाठ को भूलकर एकाग्र चित्त से उसकी बातें सुनने लगते। वह हमें संसार की गतिविधि बताता, 'प्ताह' तथा उसके साथी देवताओं का वर्णन करता और बताता कि किस प्रकार सभी लोगों को आखिर में ओमिरिस के ऊँचे सिंहासन के सम्मुख न्याय के हेतु जाना पड़ता है। जो ध्यक्षि गीदडमुखी देवता के न्याय में दोषी ठहरता था वह 'खाने वाले देवता' के सामने फँक दिया जाता था। यह देवता जो एक ही साथ मगर और समुद्री घोड़े जैसे रूप का होता था, उसे खा जाता था। और जब मनुष्य मृत्यु के उपरांत उन दैवी क्षेत्रों में जाने लगता तो बीच में उसे एक नदी मिलती जिसका जल काला होता था। उसमें केवल एक ही नाव होती थी जिसका मल्लाह उल्टी धारा देखकर नाव सेता। नील में जिस प्रकार नाविक सीधे देखकर नाव चलाता है वह उस प्रकार नहीं सेता। और सबसे बड़ी बात तो यह कि वह छोटी में छोटी गलती भी पकड़ सेता है। उसमें बचकर कोई नहीं निकल सकता। और गलती पकड़ जाने पर वह चुरी मौत मार देता है। उन दिनों हम समझते थे कि वह मदिरा के नशे में बहककर ऐसी बातें किया करता था, परन्तु बाद में पता चला कि वह किनता शत्रु अध्यापक था जिसने उस छुटपन में ही हमें देश की तमाम सभ्यता से, यो कहानियाँ सुनाकर ही, अवगत कर दिया। मैंने कुछ वर्षों तक उस पाठशाला में विद्याध्ययन किया। वहाँ मेरा सबसे गहरा दोस्त 'टोधिमीड' था, जो मुझमें एक-आध साल बड़ा था, परन्तु छुटपन से ही उसने घोड़े की सवारी सीख रखी थी। उसका पिता रमखाने के एक रिजाल में तबिके के तारों से मड़ी हुई चायुक धारण करने वाला हाकिम था और वह चाहता था कि उसका पुत्र ऊँचा पदाधिकारी बने। इसीलिए उसने उसे पढ़ने बिठाया था। परन्तु उसने 'नाम' से उसका भविष्य भिन्न था। जब उसे अक्षर ज्ञान हो गया तो अला फेरना, घुड़सवारी करना तथा रथ दौड़ाना—इन सब बातों में उसकी रचि बिलुप्त नहीं रही। वह अपनी मिट्टी की तली पर चित्र बनाने लगा। बड़ी आसानी से वह रथ, घोड़े, सड़ने हुए सैनिकों के दृश्य बना लेता था। वह पाठशाला में अपने साथ मिट्टी सानकर लाता और जबकि 'ओनेह' नशे में चूर होकर कहानियाँ

मुनाता तो वह उस मिट्टी में उमका रूप गढ़ता। एक बार उसने उसे ऐसा बनाया कि उसे 'खाने वाला देवता' निगल रहा था। परन्तु हमारे गुरु ने उसे देखकर भी उसपर क्रोध नहीं किया। 'टोयिमीज' में वास्तव में कोई भी गुस्सा नहीं हो सकता था। उसके हँसमुख चेहरे को देखकर सभी प्रसन्न हो उठते थे।

तीन साल के अन्दर मैं पुस्तकें पढ़ने लायक हो गया और हिन्जे भी ठीक कर लेता था। और तब मैंने अनुभव किया कि मैं और लड़कों में शरीर में कितना भिन्न था। मेरे हाथ-पाँव पतले और सुडौल नर्म थे और मेरा चेहरा भी मुना हुआ था। मेरा रंग गोरा था और मैं रईमों के लड़कों में केवल वस्त्र देखकर ही अलग पहचाना जा सकता था। एक अनाज बेचने वाले के लड़के ने मेरे गले में एक दिन हाथ डालकर कहा था कि मैं लड़की जैसा लगता था और तब मुझे उसे अपनी लकड़ी से मारना पड़ा था। उसके शरीर की बदबू भी मुझे पसन्द नहीं थी। परन्तु टोयिमीज मुझे बहुत अच्छा लगता जो मुझे कभी न छूता। उसने एक दिन जमति हुए मुझसे कहा, "अगर तुम बैठकर मुझे मूर्ति बनाने दो तो मैं तुम्हारी मूर्ति बना दूँगा।"

मैं उसे अपने घर लिवा ले गया और साईकोमोर के पेड़ के नीचे बैठकर मैंने उसे मूर्ति बनाने दी। जब वह मूर्ति बना चुका तो उसने मूर्तिके नीचे मेरा नाम भी गोद दिया। मेरी माता हमारे लिए रोटियाँ सँककर जब बाहर आई तो उसने उसे देखकर भयभीत स्वर में कहा : "यह जादूगरी है!" परन्तु पिता ने आकर उसकी तारीफ की और कहा : "अगर यह मन्दिर की पाठशाला में पढ़ जायें तो निश्चय ही राजघराने में कलाकार नियुक्त हो जायें," और तब मैंने उपहास में अपने घुटनों की सीध में हाथ फँसाकर उमका अभिवादन किया था जैसे मैं किसी बहुत ही बड़े आदमी का अभिवादन कर रहा था। एक बार उसके नेत्रों में चमक आ गई, पर फिर वह निराश होकर बोला : "ऐसा शायद कभी नहीं हो सकेगा। मेरे पिता मुझे रथवानों की विद्या सीखने मेला में भेजना चाहते हैं।" पिता के चले जाने के बाद मेरी माता बड़बड़ाती हुई रसोईपर में चली गई और सब हम उन चिकनी और अच्छी स्वादिष्ट रोटियों को खाने लगे।

बे देवना मर गये

मैं तब भी कितना मुसी पर

६९४९

और एक दिन मेरा पिता अपनी मक्कने अच्छी पोशाक पहनकर मन्दिर गया। वैसे वह मन्दिर और पुजारियों के प्रति खड़ा रखने वाले मनुष्यों में नहीं था; परन्तु उन दिनों सम्पूर्ण मिश्र में मन्दिर के पुजारियों के बिना कुछ हो ही नहीं सकता था। सारी नौकरियाँ, सारी सम्पत्ति वही में चलती थी। ऐसा अधिकार था उनका कि यदि कोई साहसी व्यक्ति, जिसके विरुद्ध स्वयं फराऊन के दरबार में कोई फैसला दिया गया हो, उनसे मिलकर, या उनके यहाँ पुनः न्याय माँगकर, छुट सकता था। पुजारी लोग नदी की वाड़ के बारे में भविष्यवाणी किया करने, और उसीके अनुसार आने वाली फसल पर खगोल बाँध दिया जाता था। मेरा पिता मेरी उन्नति के लिए ही वहाँ मुझे लेकर गया था। वह और निर्धन व्यक्तियों की भाँति राज्य विधान-बद्ध के बाहर प्रतीक्षा में खड़ा था। वहाँ दूर-दूर से लोग अपनी रोटियाँ साथ बाँध कर लाये थे और उन मोटे और मैल में चिक्ने पुजारियों में एक क्षण मिलने के लिए बाहर पड़े थे। वहाँ दरवानों, भुगियों इत्यादि को रिश्वतें देते कि वह उन्हें किसी भी भाँति उन पवित्र पुजारियों के समक्ष आने का अवसर प्रदान कर दें। और जब वह पुजारी के सामने खड़े होकर गिड़गिड़ाते तो वह उनके शरीर की गंध में नाक सिकोड़ता और उन्हें फटकार लगाता। अम्न की भक्ति दिनोंदिन बढ़ती जाती थी और साथ ही साथ वहाँ नौकरों की अधिक से अधिक आवश्यकता होती। मेरा पिता मेरे लिए उस तमाम अवमान को पीकर प्रतीक्षा में खड़ा था। परन्तु वह था भाग्यवान क्योंकि दोपहर तक प्रतीक्षा करने के उपरान्त उसे उसका पुराना सहपाठी 'प्लैहर' वहाँ मिल गया, जो फराऊन के राजघराने में 'भिर पोलने वाला जर्जर' बन गया था। उसके वहाँ खड़े ठाढ़ थे। मेरे पिता ने साहस करके उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। वह उसे देखकर खुश हुआ और उसने मेरे घर आकर हमें सम्मानित करने का वचन दिया।

निश्चिन दिन मेरा पिता एक बहिया बगम लाया और उसने उस दिन

उत्तम मदिरा भी खरीदी। मेरी माता ने वह बनस अत्यन्त सावधानी से मकान में भूनकर, बनाई और वह रोटियाँ सेकने लगी। जब बनस बचरी की मुगन्ध सड़क पर फैली तो भिलारी हमारे द्वार पर एकत्रि होकर गाना गाने लगे और दाखल में मे अपना हिस्सा मागने लगे। तब मेरी माता क्रुद्ध हो उठी और उसने रोटी में वह चर्बी लगाकर एक-एक टुकड़ा उन सबकी देकर उन्हें भगाया। टोपिमोज और मैंने घर में बाहर ता सड़क भी भाड़ू में गाफ कर दी थी। मेरे पिता ने टोपिमोजसे कहा था कि वह भी हमारे बट्टी ही रह जाये, क्योंकि जो सम्मानित व्यक्ति आने वाल था, सामद वह उगवर भी मेहरबान हो उठे और उसका भविष्य उज्ज्वल बना दे। उस समय बैसे तो हम सड़के ही थे, पर कमरे में पिता द्वारा जलाए हुए गन्धाधार में उड़ते हुए धुएँ की देलकर हमारे हृदयों में एक प्रकार का भय समा गया था जैसे हम किसी मन्दिर में लड़े थे। मुवागित जन और उस शुभ चाहर पर मे हम मस्तिष्क उड़ा रहे थे, जिन्हें वास्तव में मेरी माता ने अपनी मृत्यु के उपरान्त अपने कष्ट के लिए रखा छोड़ा था, इस समय वह प्लाहीर के तीर्थों के काम के लिए रखा गया था।

हमे बहुत देर प्रतीक्षा करनी पड़ी। गूरत्र छिन गया और हवा गर्द हो गई। द्वार पर मे अगन्धूम सब उठ गया और बनस टगरी हो गई। मुझे भूल लगने लगी और बीरा का मंत्र सम्बा हो गया। पिता बिना बोले हुए प्रन्धवार में ही बैठा रहा। हम सब एक-दूसरे की दृष्टि बचाए चुपचाप बैठे रहे और तब मुझे अनुभव हुआ कि धनवान और जन्मिशापी लोग अपनी लालचकारी में निधनों के लिए बिलनी निराशा और चिन्ता दु ग दुःखान्तर कर सकते हैं।

अन्तिमवार सड़क पर दूर मलाल चबरी और उसके प्रभाव में हमने देखा कि कोई कुम्भी पर बैठा था रखा था। पिता सड़ककर मोड़ पर मे गया। और बट्टी में जलवां हुई सबकी लाकर उसने दोनों दीप जलाए। मैंने कल्पे हने से जल का दाव उठाया और टोपिमोज ने गहका स्वागत किया।

अन्तिम दिवस सारे तरिके से आया। उगरी कुम्भी की दो हर्षी दाल उठाकर सगा और उसके आगे-आगे एक मोटा बालमी मल्ल मेकर आया था जो बट्टी के नद में बुर था। जब वह गान-दा-दा का

रह कुर्सी में उतरा तो उसने खुशी से चिल्लाकर मेरे पिता से प्रेम का दर्शन किया। मेरे पिता ने घुटनों की सौघ में हाथ फैलाकर और गिर जाकर उसका अभिवादन किया। प्लाहौर ने उसके कंधों पर हाथ रख दिये कि वह शिष्टाचार को मित्र के घर में ध्येय समझना था। उसने बैसे ही मेरे पिता के कंधों पर हाथ रखे हुए उस भगलबी के एक लान मारी और समेत बोला, "चल, उस साईकोमोर के नीचे तो जा।" हस्त्रियों ने आज्ञा की निष्ठा न करते हुए ही कुर्सी को एकेग्रियर के पास पटक दिया और वह मर्म पर बैठ गए। जब वह अन्दर आया तो मैंने उसके हाथ धुलवाये और फिर उनके कहने पर उन्हें पोंछ भी दिया। मुझे देखकर उमने कहा, "कितना सुन्दर लड़का है।" जब कमरे के अन्दर पीछदार कुर्सी पर, जिसे खाना ने एक परचूनिसे से उधार ले लिया था, वह टिक गया। उसने चारों ओर देखकर कहा, "यात्रा से मेरा कण्ठ सूख गया है, कृपया मुझे कुछ पीने दो..." इनने मे ही मेरे पिता ने एकदम उठकर खुशी-खुशी मदिरा का पात्र उठाया गिलास उसके सामने रख दिये। फिर बड़े अदब के साथ उसका गोपाल भर दिया। उसने वह मदिरा घटिया जानकर पहले सशक्त होकर थोड़ी-सी चखी फिर जब उसे अच्छा पाया तो वह निश्चिन्त होकर पीने लगा।

वह छोटे कद का दुबला-पतला सिर मुड़ा हुआ आदमी था। जिसका जेबला हुआ पेट और घँसा हुआ सीना उसके महीन वस्त्रों में से बेडोल होकर चमक रहा था। उसके गले में जो जडाऊ पट्टा था वह भी और वस्त्रों की भाँति अब सिकुड़ गया था। उसके शरीर से स्वेद, मदिरा और तैल की गंध आ रही थी।

कीपा ने उसके सामने छोटी-छोटी रोटियाँ, और तैल में तली हुई मछलियाँ, फल और भुनी हुई वह बतख रख दी। उसने बहुत ही विनम्र भाव से उन्हें खाया। गोकि ऐसा साफ लग रहा था कि वह खाना खाकर ही थापा था क्योंकि उसने अधिक कुछ नहीं खाया। परन्तु उसने एक-एक चीज की तारीफ की और कीपा उस प्रशंसा को सुनकर बहुत खुश हुई। उसके कहने पर उन हृष्णी दासों के लिए मैं मदिरा और मात लेकर बाहर गया परन्तु उन्होंने उसका उत्तर गालियों से देकर चिल्लाकर कहा,

उत्तम मदिरा भी खरीदी । मेरी
 भक्तन में भूनकर, बनाई औः
 चर्वी की सुगन्ध सड़क पर फैल
 होकर गाना गाने लगे और दाद
 माता क्रुद्ध हो उठी और उसने
 उन सबको देकर उन्हें भगाय
 सड़क भी झाड़ू से साफ कर
 वह भी हमारे वहाँ ही रुक
 था, शायद वह उसपर भी
 बना दे । उस समय वैसे तो
 हुए गन्धाधार से उड़ते हुए
 भय समा गया था जैसे हम
 उस शुभ्र चादर पर से हम
 माना ने अपनी मृत्यु के
 समय वह प्लाहोर

हमें बहुत दे
 गई । द्वार पर
 भूख लगने
 अन्धकार
 बैठे रहे

एक रोगी टीक भी कर दिया," हँसकर प्लाहीर ने बाबय जोड़ा, "तो लोग मेरी तारीफ करने लगने हैं। वह यह भूल जाते हैं कि मेरे हाथों उनकी मृत्यु निश्चिन्त होनी है... कोई एक फराउन भी मेरे द्वारा मिर मोलने के बाद तीन दिन नहीं जिया। मेरे हाथ मनुष्य की पीड़ा का अन्त कर देते हैं क्योंकि सब मनुष्य बाकी ही नहीं रहना—बढ़ मर जाना है। लोग समझते हैं मैं बड़ा जानी हूँ, और मुझमें भय रहने है, मेरे विरुद्ध बोलने का साहस नहीं करने, परन्तु मैं जानता हूँ कि इस दबोसले के पीछे कितना दुःख है, कितनी असह्य पीड़ा है।" और प्लाहीर भावुकता में रोने लगा। उसने देर तक रोने के उपरान्त कीपा के कफन के लिए रमे गए उस कपड़े से नाक साफ कर दी। फिर वह बोला

"सैन्मट, मेरे मित्र! तुम सच्चे आदमी हो, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, और मैं... मैं सड़ा हुआ हूँ... घृणित व्यक्ति... बिल का गोबर! और कुछ नहीं।"

और फिर वह लोग गाना गाने लगे। प्लाहीर ने मस्ती में झूमकर मंदिरा अपने ऊपर उठेल ली। कीपा रमोईघर में जोर से रोने लगी और उसने राख अपने मिर पर डाल ली। हम दोनों ने तब उन दोनों को उठाकर पर्वग घर डाल दिया जहाँ वह एक-दूसरे में लिपटकर अमन्त बाल तक मैत्री की प्रपथ लेने हुए सो गए।

अब टोधिमीड़ और मैं सोये तो वह, क्योंकि थोड़ी मदिरा पी गया था, पुबनियों की बात करने लगा। परन्तु क्योंकि मैं उसमें छोटा था और समझना भी नहीं था, उस विषय में कुछ आनन्द न ले सका। हथी गान्धी-गन्धी करके कुर्मी उठाकर भाग गए थे। मंगालची नीचे खुरटि भर रहा था।

भोर में बगल के कमरे में जब सटपट झुंझ हुई तो मैंने जाकर देखा। प्लाहीर भूमि पर मिर पकड़े बैठा था। शायद रात वह पर्वग से नीचे गिर गया था और वही सो गया था। मेरा पिता अब भी सो रहा था। प्लाहीर ने कराहकर पूछा—“मैं कहाँ हूँ?” मैंने मुस्कराकर अदब के साथ कहा, “श्रीमान् आप सैन्मट बँध के घर पर हैं।” सुनकर जैसे उसे इतमीनान हो गया। उसने थोड़ी मदिरा माँगी और तब मैंने उसमें कहा कि सम्पूर्ण पात्र

हे युवक ! जीवन में भोज उड़ा
क्योंकि बुढ़ापे में तो गला राख से भर जाता है
जो शरीर मसाले लगाकर कब्र में रखा रहता है
वह उस अन्धकार में नहीं मुस्कराता ।'

मैंने उस कविता को हर तरह के गये और पुराने अक्षरों में लिखा और फिर चित्रकारी करके उस कविता के भाव को दर्शाया । जब मैंने अपनी तस्वीर प्लाहौर को दिखाई तो उसमें वह एक भी गलती नहीं निकाल सका । मैंने देखा मेरा पिना गर्व में फूला नहीं समा रहा था ।

"और दूसरा लड़का ?" प्लाहौर बोला, पर टोथिमीड ने अपनी पट्टी दिखाने में आनाकानी की । परन्तु दो-एक बार कहने पर उसे दिखाना पड़ा । उसमें एक तरफ प्लाहौर को अपने गले का पट्टा मेरे पिता के गले में बाँधता हुआ दिखाया गया था, बीच में प्लाहौर अपने ऊपर मदिरा उँडेल रहा था और तीसरी तस्वीर में प्लाहौर और सैन्मट गले में हाथ डाले गाना गा रहे थे । देखकर मुझे जोर की हँसी छूटी, परन्तु भय में मैंने उसे रोक लिया ।

प्लाहौर उन चित्रों को देर तक देखता रहा । फिर उसने ध्यानपूर्वक मेरे मित्र को देखा । टोथिमीड धवरा गया था और अपनी धवराहट को पजों के बल सड़े होकर छिपाने की कोशिश कर रहा था । अन्त में प्लाहौर ने पूछा :

"इन चित्रों का क्या मूल्य लोगे ?"

टोथिमीड का मुख लाल हो उठा और उसने उत्तर दिया . "यह बिकाऊ नहीं है, परन्तु इन्हे मैं वैसे ही अपने मित्र को दे सकता हूँ ।" सुनकर प्लाहौर हँसा और बोला : "अच्छा तो हम-नुम मित्र हैं और अब यह चित्र मेरे हो गए ।" और उसने उन्हे एक बार फिर गौर से देखने के बाद भूमि पर दे मारा और उस निट्टी की तस्वीर को चूर-चूर कर दिया । हम सब चौंक उठे और टोथिमीड ने कहा . "थोमान् यदि आप इसमें बुरा मान गए हो तो क्षमा करें ।"

हँसकर प्लाहौर ने उत्तर दिया : "पानी में अपनी परछाईं देखकर मैं पानी पर तो क्रुद्ध नहीं होता, और यह मैं जानता हूँ कि बसावार के हाथ

इस सम्बन्ध में पानी से भी तेज होते हैं। अब मुझे यह तो पता चल गया है कि कल मैं कैसा लग रहा था...परन्तु मैं यह नहीं चाहता कि लोग मेरा यह रूप देखें, इसीलिए इसे मैंने तोड़ दिया है निश्चय ही तुम अच्छे बलाकार हो।”

टोचिमोज़ गुनकर खुशी से उछल पड़ा।

प्लाहोर ने हँसकर मेरी ओर इंगित करके कहा, “मैं इसका इलाज करूँगा।”

और फिर टोचिमोज़ की ओर इशारा करके कहा “इसके लिए मैं जो कुछ कर सकता हूँ, करूँगा।” और फिर वह अपने पेशे की बातें करने लगे और देर तक हँसते रहे। फिर मेरे पिता ने मुझमें मेरे सिर पर हाथ रख-कर पूछा - “मिन्चूहे, मेरे बेटे ! क्या तुम मेरी तरह बैद्य बनना चाहोगे ?”

मेरी आँसों में आँसू भर आये, मेरा गला भर आया यहाँ तक कि मुझमें बोला भी नहीं गया। लेकिन उमने अपना सिर हिला दिया। मैंने आँसू फिराकर मार्दकोमोर का पेट, पत्थर का हौज और अपना बाग देखा और मुझे वह उस समय कितने अधिक प्रिय लगे।

मेरा पिता कहता गया : “मिन्चूहे, मेरे पुत्र ! क्या तुम मुझमें भी थड़ा बैद्य बनना चाहोगे—जो मृत्युञ्जय बन सके, जो अमीर और ग़राबों का भेद न करने हुए, वैद्यक रोगों की परिचर्या कर सके।”

“न मेरा जैसा और न मैंमट जैसा।” प्लाहोर बोल उठा “बल्कि चाम्पविज बैद्य जो मदमं महान् होता है। क्योंकि उसके सम्मुख कराऊन भी नगा पड़ा रहता है, उसकी दृष्टि में अमीर और भिखारी सब एक होते हैं।”

मैंने श्मति हुए उत्तर दिया “मैं चाम्पविज बनना चाहता हूँ।” उस समय जीवन की निराशा और विस्मेशासियों को ज़्यादा मैं क्या समझता था !

टोचिमोज़ को प्लाहोर ने अपनी अंगूठी दिखाकर कहा : “इसे पाँ।”

उमने पिछा था, “अगर प्यासा हृदय में उम्माग भर देता है” टोचिमोज़ उसे पकड़कर हँस पड़ा।

“इसमें हँसने की कौन-सी बात है अदमाश ?” प्लाहोर सम्भीरता से

दोला : “इससे और मदिरा से कोई सम्बन्ध नहीं है—इसका तो अर्थ यह है कि अपनी इच्छा के प्याले को कभी खाली न रहने दो और जो कुछ और तुममें कहें उसे सुनकर चुप रह जाओ। अपनी साफ आँखों से देखकर विश्वास करना सीखो। वही हृदय का उल्लास है।”

फिर प्लाहौर ने सैन्मट से कहा : “शीघ्र ही तुम्हारा पुत्र मंदिर के ‘जीवन-गृह’ में भर्ती कर लिया जायेगा और रहा यह दूसरा, मैं इसे प्लाह के कला-मंदिर में भर्ती कराने का प्रयत्न करूँगा।”

थोड़ी देर चुप रहने के उपरान्त वह हम दोनों से कहने लगा

“परन्तु वही जाने से पहले एक बात ध्यान से सुन लो, और कुछ नहीं तो इसी लिहाज से कि कराऊन के धराने का सिर खोलने वाला वैद्य उनसे कुछ कह गया था। मिन्यूहे ! तुम अब पुजारियों के हाथ में पड़ जाओगे और बाद में तो खैर तुम स्वयं ही पुजारी बन जाओगे। परन्तु जब तक तुम उनके नीचे रहो, जब तक तुम्हारा काम पूरा नहीं हो तब तक मियार और सर्प की भाँति चालाकी से रहना, परन्तु प्रत्यक्ष में बपोल की भाँति भोले बने रहना सवरदार ! क्योंकि मन्दिर बड़ी सावधानी का स्थान है।”

जब प्लाहौर का अनुचर दूसरी कुर्सी लेकर लौटा तो वह उसमें बैठकर धरा गया। जाते-जाते उसने सैन्मट से मैत्री हमेशा कायम रखने का वचन दिया।

परन्तु दूसरे दिन प्लाहौर ने कीपा के लिए एक कीमती पत्थर में सुदा हुआ एक पवित्र मंत्र भेजा कि वह उसे मरने समय अपनी बक में रखे। उसे पाकर कीपा प्रमत्त हो गई और उसने उसे दामा कर दिया।

धीबीड़ मंडल। इन्द्र उच्च विद्या प्राप्त करने का एक मुख्य स्थान अम्मत का मन्दिर था। जब तक वहाँ से सुदा नहीं मिल जाता, किसी भी उच्च विद्या का ज्ञान असम्भव था। शाश्वत काल से, जैसा किसीको भी विदित

मुझे अद्भुत सात्वता देने हुए समझाया कि यदि मेरी नींव पक्की होगी तो आगे चलकर मुझे विद्याध्ययन में सहाय भी करना ही पड़ेगा । बाल्य में हुआ भी ऐसा, क्योंकि मेरे आचरणों और मेरी कुशलता से प्रसन्न होकर ही मेरे गुरुओं ने धर्म की परीक्षा लेनी चाही थी ।

आखिरकार बहुत दिन भी आ गया जब मुझे मन्दिर में घूमने की आज्ञा प्रदान कर दी गई । आत्मा की श्रद्धा के हेतु मुझे उपवास करना पड़ा और फिर एक सप्ताह तक मन्दिर के अन्दर ही रहना पड़ा जहाँ से बाहर आना मेरे लिए वर्जित था । मेरे पिता ने मेरे सिर के बाल खुशी-खुशी काट डाले और मेरे जीवन में पदार्पण करने की खुशी में पड़ोसियों को बुलाकर दावत दी ।

और उसी रात बीपा ने और मैमेट ने मुझे यह बतलाया कि मैं उनका अमली पुत्र नहीं था—

दूसरी सुबह मैं बीपा के हाथों में बनी पोशाक पहनकर मन्दिर गया तो मेरा हृदय दुःख में परिपूर्ण था ।

वहाँ हम पक्षीम थे । जब हमने मन्दिर के कुंड में स्नान कर लिया तो हमारे गिरी पर उम्बरा फेर दिया गया और हमें मोटे बगरे पहनादे गए । रीति के अनुसार तो हमें बहुत-सी उपहारान्वित स्थिति में होकर निकलना था, परन्तु हमारे ऊपर निपुक्त पुजारी को हमने विशेष रस नहीं था । और फिर हममें से कई धनिकों के पुत्र थे और कई पूरे आदमी थे जो न्याय की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर अम्मन की सेवा में हमलिए आये थे कि उनका भविष्य और अधिक उत्थान बन सके । वे सब पुशागियों के लिए मुक्त और मदिरा पर्याप्त मात्रा में लाकर देने थे और हमलिए उनपर विशेष प्रतिक्रिया नहीं था । मदिरा का सेवन तो वे वहाँ करने ही थे, परन्तु उनमें से कई तो रमणमात्रों में भी हो आते थे । उनपर जैसे कोई प्रतिक्रिया ही नहीं था । मैं शूरी रोटी और जल पीकर अपने दिन निकाल रहा था, क्योंकि मैं गरीब था और फिर मैं मान्यम क्यों मेरे उस बाल-हृदय में उस समय अम्मन के प्रति इतनी घटा थी कि मैं समझता था कि एक

“मिन्गूहे ।” उसने दोहराया । “तब तो यदि कोई रहस्य तुम्हें बता-
याया जाये तो तुम डरकर अवश्य भाग जाने होगे ।”

मिन्गूहे की कहानी में मिन्गूहे की यह आदत मुझे अब तक कई बार
मुननीपड़ी थी और मैं उससे ऊब गया था । पाठशाला में इस तरह की चिढ़ा-
वट बटून काफी हो चुकी थी । मैंने सीधे हाँकर उमकी आँखों को देखा, पर
उमकी मुझे अनुभव हुआ कि उमकी आँखें इतनी माफ और सुभावनी तथा
विभिन्न थी कि मैं उनमें खो गया और मेरे गारे शरीर में मिहरन-सी दोड़
आई और मुझ आरक्त हो उठा । परन्तु फिर भी मैंने कहा ।

“मैं भला क्यों डरने लगा ? एक शिक्षा पाने वाले बँस को रहस्यों से
डर क्यों लग सकता है ?”

“ओह !” वही अदा के साथ यह बहुर बह मुस्कराई फिर बोली
“अरे से बाहर निकलने के पहले ही मुर्गी का बच्चा बोलने लगा । ... हाँ
यह तो बताओ कि क्या तुम्हारे साथ मिन्गूफर नामक कोई युवक पढ़ता
है ? वह फराऊन के गर्वधेष्ठ मिस्त्री का बेटा है ।”

मैं उसे जानता था क्योंकि यह वही युवक था जिसने पुजारी को गुवर्ण
का वस्त्र दिया था तथा उसे भर-भरकर मदिरा पिलाया करता था । मेरे
हृदय में एक टीस-सी पचने लगी जब मैंने उससे कहा कि मैं उसे मुला-
माऊँगा । फिर मुझे हटाना हुआ कि हो सकता है यह उमकी बहिन
या अन्य कोई सम्बन्धिनी स्त्री हो । और तब मैं उमकी ओर देगवर
माहमगूर्वक मुस्करा दिया । मैंने उसके सुन्दरमुख पर आँखें मरा कर कहा
“परन्तु जब तक मैं तुम्हारे बारे में कुछ न जान लूँगा, तो उमसे बड़गा
क्या ? कि बौन उसे बुला रही है ?”

“बह जानता है,” स्त्री ने उत्तर दिया । वह उपावलेपन में अपने उपा-
मह बँसे सुन्दर घूमि-रहित वीर को, जिसकी उँगलियों में दहावर लता
हुआ था, उस पक्की भूमि पर बार-बार पटक रही थी, फिर वह बोली
“बह जानता है कि बौन उसे बुला रही है । जायद बह मुझे कुछ देगा ।...
मेरा पति ओ पाचा पर बाहर गया है... और मैं मिन्गूफर की प्रार्थना कर
रही हूँ कि वह मेरे दुःख में मुझे माँखता दे ।”

बह विचारिता है सुनकर एक बार फिर मेरा दिल बैठने लगा,

परन्तु मैंने शीघ्र उत्तर दिया था : "बहुत अच्छा अज्ञात सुन्दरी ! मैं उसे बुलाकर ले आऊंगा । मैं उससे जाकर कहूँगा कि उसे चन्द्रमा की देवी से भी सुन्दर और जवान, कोई स्त्री बुला रही है । और तब वह समझ आयेगा ; क्योंकि जिस किसीने तुम्हें एक बार देखा होगा वह निश्चय ही तुम्हें कभी न भूल सकेगा !"

अपने विचारों में अपने-आप डरते हुए मैं मुड़कर चलने को हुआ, लेकिन उसने मुझे पकड़कर रोक लिया, फिर बोली .

"क्यों, इतनी जल्दी क्या है ? रुको न अभी... शायद हमें एब-नूमरें से और कुछ कहना हो !"

उसने मुझे ध्यान से ऊपर से नीचे तक एक बार फिर देखा और मुझे ऐसा लगने लगा कि मेरा सीना पिघल गया था और मेरा पेट मेरे घुटनों के नीचे उतर गया था । उसने अपना मुखर्ण बलवित कोमल गोरा हाथ बढ़ाकर अँगूठियों से लदी हुई उँगलियाँ मेरे घुटे हुए सिर पर रखते हुए नम्रता से कहा :

"इस सुन्दर घुटे हुए सिर में ठड नहीं लगनी ?" फिर फुसफुसाकर कहा "क्या तुम सब कह रहे थे ? मैं क्या सबकुछ ही सुन्दरी हूँ ? मुझे और पाम से देखो न ।"

वह मेरे और पाम निमक आई । और तब उसके मादक सौंदर्य और लज्ज जीवन में मैं मदहोश हो गया और मैंने देखा कि वह सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी थी—ऐसी जैसी मैंने तब तक कोई नहीं देखी थी । उसे देखकर उम क्षण मैं अपने हृदय की पीड़ा को, अम्भन को और उम जीवन-गूह—सबको भूल गया । उसके शरीर की निश्चयता से ही मेरा शरीर लपने लग गया ।

"तुम तो बोलने ही मही हो," उसने मान करते हुए कहा । फिर वह मधुर बरस करती हुई बोली : "गुहारी इन गुन्दग्नम आँसों में मैं बुझा दियाई दे रही हूँ... अब तुम जाओ और मित्रों को बुला लाओ और मुझे छोड़ो..."

अब मेरी वह दशा थी कि न बोल पाता था न जा ही सकता था हाँकि मैं समझ रहा था कि वह केवल बिड़ा रही थी । मन्दिर के दीर्घ के बीच उम प्राकार में अँदोरा था । वही दूर से हल्का प्रकाश

आकर उनके सुन्दर चेहरे में एक विविध समक भर रहा था, हम दोनों के अनिश्चित बहरी बोई लगी था।

"अब तुम उठो मन बुराओ," वह मुन्कराकर मोहिनीबनकर बोली।
"तुम स्वयं मुझे आनन्द देकर मुझमें आनन्द प्राण भर सकते हो। तुम्हारे अनिश्चित में किसीकी नहीं चाहती.. "

और जब मुझे बीधा के बीच एवढम घाव आ गए। उसने कहा था कि "सुन्दर महर्षी को कुछ गिरवा आल में पैसा दिया करनी है।" और मैं पश्चात्तर एव पण पीछे हट गया।

"बधा मैं पहल ही नहीं कहती थी कि किन्तु दे देर आयेगा ?" बह-
बह बह मेरे पास आ गई, पर मैंने हाथ उठाकर उठे रोखने हुए उसी समक
कहा "मैं समझ गया हूँ कि तुम बीमारी नहीं हो। तुम्हारा पति बाहर गया
है और तुम्हारा हृदय आल की भर्त्ति है। तुम्हारा शरीर आल के अधिक
रहता है।"

लेकिन इनका कहकर भी मैं उसमें कुछ नहीं हट गया। मुन्कर बह
बोला बीमारी परन्तु फिर मेरे पास आ गई।

"बधा तुम्हारा ऐसा बिकाम है ?" बह मधुर स्वर में मुझमें लगी
"पारंगु दा गन्ध नहीं है। मेरा शरीर अग्नि की भर्त्ति नहीं बनता...
बीमारी दा गन्ध नहीं है कि मेरे पास की दृष्टा देमने बापों से प्रसन्न
हो उठती है.. आओ तुम देख लो।"

और उसने मेरा बीमारी हाथ उठाकर अपने पैर पर लगा दिया।
उसने लीने बापों से होकर बीमारी उठाकर बीमारी मेरे हाथ में आने लगा हो
और मैंने उठा और मेरा मुन्कर आकर हो उठा।

"तुम्हें अब भी बिकाम नहीं होगा ?" बह कुछ दयावही निगम
दिलाने हुए बोली, "मेरे हाथ बीमारी में आ गया है... अन्तः उठने की दृष्टि
हाथ में दिलायी है" और जब उसने अपने हाथ को उठाकर मेरा हाथ
अपने पैर और दमकल बनने पर पण दिया। वह स्पष्ट बिजया मुन्कर
और बोधक था।

बिना वह मुन्कराकर कहा लगी, "आओ किन्तु ?" अन्तः एक रत्न-
माला के बलकल दिलाया किन्तु और फिर अन्तः बोले।

“मैं मंदिर की सीमा में बाहर नहीं जा सकता।” मैंने कहा। उस समय अपनी कायरता पर मैं स्वयं सन्निहित था। उसे मैं जितना अधिक चाह रहा था, उतना ही उसने भयभीत भी हो उठा था; इतना भयभीत जैसे मृत्यु में हो गया होऊँ। फिर हिचककर मैंने कहा: “तब तक मैं अपनी जिज्ञा पूर्ण रूप से प्राप्त न कर लूँ, तब तक मैं चलकित नहीं हो सकता, अन्यथा मुझे मारकर यही इस जीवनगृह से निकाल दिया जाएगा...और फिर मैं यहाँ कभी नहीं आ सकूँगा...मेरे ऊपर दया करो।”

मैंने यह बात कही अवश्य थी, परन्तु यह मैं जानता था कि यदि हमने मुझे एक बार और बुलाया तो मुझे उसके साथ जाना पड़ेगा...तब मैं मरना नहीं कर सकूँगा। परन्तु वह दुनियादारी जानने वाली स्त्री थी और मेरी परेशानी जानती थी। उसने एक बार अपने चारों ओर देखा। हम अकेले थे, परन्तु दूर लोग चलने-फिरने दिखाई दे रहे थे। वह बोली:

“सिन्धूहे! तुम बहुत ही शर्मिल युवक हो।” वह हाथ बढ़ाकर कहने लगी, “धनी और महान् व्यक्ति जब मेरे पास आते हैं तो उन्हें मुक्ति भेंट करना होता है...परन्तु तुम अकलकित ही रहोगे।”

“तो मैं मितूफर को बुला लाऊँ?” मैंने हताश होकर पूछा। मैं जानता था कि रात होने पर मितूफर मन्दिर से भागकर इसके पास पहुँचने में कभी न चूकेगा। वह फराऊन के सर्वश्रेष्ठ कारीगर का पुत्र था...वह ऐसा कर सकता था...परन्तु मैं उसे उसके बदले में मार डालना चाहता था।

“अब मैं मितूफर से मिलना नहीं चाहती,” वह स्तिर हिलाकर बोली, “सिन्धूहे! अब तो हम ही दोनों मित्र बन जाएँ। अतएव मैं तुम्हें अपना नाम बतला दूँगी। मेरा नाम ‘नेफर नेफर नेफर’ है। वैसे मेरा असली नाम नेफर है परन्तु क्योंकि मैं सुन्दरी कही जाती हूँ और जो कोई मेरा नाम एक बार कहता है वह कम से कम दो-तीन बार उसे कहने से नहीं रुकता। अतएव अब मेरा नाम नेफरनेफर नेफर होगया है। रिखाऊ यह है कि बिछुड़ते हुए मित्र एव-दूसरे को कुछ उपहार दें, मुझे तुम कोई चीज भेंट दो।”

एक बार फिर मैं आकाश से भूमि पर आ गिरा। मुझे मेरी दरिद्रता उस समय कितनी अव्यरी! उसे देने के लिए मेरे पास उस समय कुछ भी

तो नहीं था। गर्भ से मेरा सिर झुक गया।

वह समझ गई और फिर बोली, "तो मेरे हृदय की इच्छा तो पूरी कर दो।" और उसने अपनी उंगली से मेरी ठोड़ी ऊँची कर दी। मैं उसका आशय समझ गया। उसने हल्की उसाँस भरी और हम दोनों आलिंगन-वद्ध हो गए और होठ से होठ मिल गए।

थोड़ी देर बाद जब हम अलग हुए तो वह बोली, "घन्यवाद सिन्धूहे ! तुम्हारा उपहार वास्तव में अत्यन्त सुन्दर था...मैं इसे कभी न भूलूँगी... परन्तु निश्चय ही तुम किसी दूर देश के रहने वाले हो, जो बुभुवन लेना भी नहीं जानते। अन्यथा खीबीर की युवतिर्या यदि तुम यही के होने तो तुम्हारे जीवन को देखकर कभी की तुम्हे इस कार्य में दक्ष बना देती।"

उसने अपने हाथ के अँगूठे में से एक अँगूठी निकाली जो सोने और चाँदी की बनी हुई थी और जिसमें दिना खुदा हुआ एक बड़ा-सा पत्थर जड़ा हुआ था। उसे मेरे हाथ में रखकर वह कहने लगी, "सिन्धूहे ! मैं भी तुम्हें एक भेंट देती हूँ जिससे तुम मुझे न भूलो। और इसलिए भी कि दसमें जड़ा हुआ पत्थर हरा है...और मेरी अखिं भी सौम्य ऋतु में नील के जल की भाँति हरी चमका करती हैं !"

"नहीं, नहीं नेफर...नेफर...नेफर मैं यह भना किस प्रकार ले सकता हूँ...पर वैसे मैं तुम्हे भूल कभी नहीं सकूँगा।"

"पागल लडके ! अँगूठी को अपने पास रखो। यही मेरी इच्छा है... कुछ नहीं तो मेरी सनक की ही खातिर इसे रख लो...शायद इससे किसी दिन मुझे भूद भी मिल सके !" फिर मुड़कर बोली, "और हाँ, अग्ने से भी तेज दहकने शरीरी वाली... जो रहना।" और मेरे मुख के सामने उँगली उठाकर अपने मुँह आने के लिए गीत गाते हुए बोली, "पर बैठकर वह चली... माना साफ बर दिया... रहे थे। सौम्य-वाय अग्न-... जो मे उसे देख रहे थे। एकाकीपन ने धेर लिया—

ऐसा लगने लगा जैसे मैं सिर के बल किसी गहन सागर में गिर पड़ा था।

बहुत दिनों बाद एक दिन मितूफर ने उस अँगूठी को देखकर चौंकर पूछा, “ओसिरिस के चालीसों बदरों की कसम ! नेफरनेफरनेफर... है न ?” और उसने मेरी ओर आदरसूचक भाव से देखा हालाँकि पुजारियों को भेंट न दे सकने के कारण उस समय मैं भूमि को पानी से रगड़-रगड़कर धो रहा था। मुझसे अकसर ऐसे ही नीच काम कराए जाते थे।

मितूफर के प्रति मेरे हृदय में घृणा भर गई, इतनी, जिसका वर्णन नहीं हो सकता। कई बार उममें नेफर नेफर नेफर के बारे में पूछने की मेरी सालसा हुई परन्तु मैंने उसके सामने झुकना स्वीकार नहीं किया। मैंने अपना भेद अपने हृदय में ही छिपा लिया। क्योंकि झूठ अक्सर सच से अच्छा लगता है, और स्वप्न वास्तविकता से बही अधिक सुसंकर होना है। मुझे उमकी वह हरी गहरी आँखें, उसकी सुन्दर उँगलियाँ, उसके पीन उन्नत स्तन, उसका मुखद मामल स्पर्श हमेशा याद आता रहा। अम्मन के ऊपर मे तब मेरा विश्वास उठ चुका था।

उसकी याद जब मुझे हो आती तो मेरे गान गान हो उठते और मेरे होठों से पुमपुमाहट निकल जाती, “मेरी वहन !” इससे मेरे हृदय को सान्त्वना मिलती क्योंकि शाश्वत काल में इसका अर्थ ‘मेरी प्यारी’ होता आता था और शायद हमेशा रहेगा भी।

चौथी रात को अम्मन की शानि की देवदत्त का दृष्टिमा मेरे ऊपर आया। हम गान नरक थे—माटा, घोंडा, बक, मिग्युफर, नेफर अहमांड और मैं। इनमें से घोंडा और बक जीवनमृत्यु के थे, उन्हें मैं जालना था, बाकी मेरे लिए नये थे।

उपवास और प्रतीक्षा के कारण मैं दुर्बल हो रहा था। हम लोग जिना हूँ, पवित्र भावनाएँ लिये पुजारी के—उमका नाम हमेशा-हमेशा के लिए माँ आण्—पीछे-पीछे मंदिर के भीतरी हिस्से में जा रहे थे। अम्मन का जहाज पवित्र की पराईयों के पीछे चला गया था और चौबी-दार ने खोटी की तुम्ही खूब की थी। मंदिर के दीर्घ द्वार बन्द कर दिने

गए थे। जो पुजारी हमारे आगे-आगे चल रहा था उसने उस दिन अधिक मात्रा में मांस और भक्ष्य का सेवन किया था और उसके सिर और मुँह पर तेल चिपचिपा रहा था। उसने हँसते हुए पर्दा उठाया और हमें 'पवित्रों में भी सबसे पवित्र' के सामने पहुँचा दिया। अपने घेरे में, जो एक बड़े पत्थर में से छाँटा गया था, अम्मन खड़ा था। पवित्र दीपों के प्रकाश में उसके मुकुट और कटहार में लाल, नीले, हरे पत्थर सचमुच की आँखों की भाँति चमचमा रहे थे। प्रत्येक दिन भोर में उसे नये वस्त्र पहनाये जाते थे। वैसे मैंने उसे पतझड़ के दिनों में होने वाले उत्सव में भी देखा था जब वह अपनी सोने की पालकी में बाहरी प्रांगण में आता था और तभी सभी लोग उसके सामने पृथ्वी पर औंधे बैठकर उसे प्रणाम करते थे और तब भी देखा था जब बाढ़ में, नदी के पवित्र जल पर, वह सिंघार की लकड़ी के धने अपने जहाज में बैठकर बाहर निकलता था, परन्तु तब वह मेरे लिए दूर के मामले होते थे। अब जो इतने पास से उसके लाल वस्त्र देखे तो मेरे ऊपर उसका बड़ा प्रभाव पड़ा—क्योंकि लाल वस्त्र अति पवित्र माना जाता था जिसे केवल अम्मन अथवा पराऊल ही पहन सकते थे। उस समय मुझे ऐसा लगा जैसे वहाँ का प्रत्येक पत्थर मेरे मीने पर ही रखा था।

“दुष्ट के सम्मुख प्रार्थना करो” नये में चूर पुजारी बोला, “शायद वह तुम्हें बुलावे। यह इसकी रीति है कि यह नये विद्याधियों के नाम लेकर कभी-कभी पुकारता है और उनसे बोलता है—पर तभी, जब वह उन्हें उस योग्य समझता है।” और उसने जल्दी से पर्दा खींच दिया। फिर वह मंदिर के भीतरी प्रांगण की ओर चला गया।

उसके जाते ही मोख एक दीप उठा लाया और ओहमोख ने अम्मन के सामने से 'पवित्र अग्नि' लाकर उसे जला दिया। वह बोले : “कौन अन्धकार में बँडे ? हम कोई मूर्ख हैं ? फिर उन्होंने अपने वस्त्रों में से रोटी, मांस इत्यादि निकाले। मुझे आश्चर्य हुआ क्योंकि हम सभी को उपवास रखने को कहा गया था। खा-पीकर वह लोग चौपड़ सेवन लगे और फिर एक-दूसरेसे लिपटकर सो गए। माटा, सिनूकर, नेकरू सब सो गए।

मैं गबने छोटा था, और रातभर जागना हुआ उम अद्भुत देवी मूर्ति की प्रतीक्षा करना रहा।

यंग मुझे पुजारी के लौटकर अचानक हमारी गतिविधि की जाँच करने का तनिक् भी धोगा नहीं था क्योंकि यह मैं ही क्या सभी जानने थे कि वह मितूकर की दो हुई मदिरा पीकर आगम से मो रहा होगा। सारी रात मैं अम्मन की अद्भुत सीता देखने के लिए जागना बैठा रहा और मेरे साथी सोते रहे। अम्मन चुपचाप गड़ा रहा। कुछ नहीं हुआ। भोर में उमके पदें तनिक हिले। मैंने चौककर देखा, परन्तु वह केवल प्रान्काल की हवा थी।

बाहर जब सैनिकों ने चांदी में मड़े सींग फूँके तो मैं समझ गया मोर हो गई थी और अब पहरा बदला जा रहा था। मैंने भारी हृदय लिये हुए दीप बुझा दिये। दूर से आदमियों की चुहल और गुनगुनाहट सुनाई देने लगी थी।

जब पुजारी मितूकर के साथ लौटा तो दोनों के शरीरों, मुँहों और वस्त्रों से मदिरा की तीव्र गंध आ रही थी। उसने आगे ही अम्मन के पवित्र मंत्र जल्दी-जल्दी बोले फिर पूछा :

“नवीन विद्यार्थियो ! माटा, मोड, बेक, सिन्यूकर, नेकरू, सहमोड और सिन्यूहे ! क्या तुमने आज्ञा के अनुसार सारी रात जागकर प्रार्थना की है कि तुम्हें वह सर्वश्रेष्ठ अपना सके ?”

“हमने आज्ञा का पालन किया है,” सभी ने एक स्वर से उत्तर दिया।

पुजारी ने आँखें मिचकाकर होंठ बिचकाये और फिर सिर हिलाया... फिर पूछा : “वह दिखाई दिया ?”

“हाँ दिया... मुझे दिखाई दिया।” माटा बोला।

“अवश्य” अहमोड ने और भी निर्भीक होकर पुजारी की आँखों में आँखें डालकर कहा।

‘अवश्य’, ‘अवश्य’ सभी ने स्वीकृति दे दी। केवल मैं रह गया। अपने साथियों का इनका बड़ा झूठ सुनकर मैं हैरान रह गया। मेरा कंठ अवदड था—ऐसा लगता था जैसे किसी ने उसे भीतर ही भीतर दबा रखा हो।

फिर मितूफर ने कहा : "सारी रात मैं भी अम्मन की प्रार्थना करता रहा...और फिर वह आया... और उसने मुझे दर्शन ही नहीं दिये, बल्कि सारी रात वह मेरे साथ रहा...वह सर्वशक्तिमान है। हर रूप में दिखाई देता है। मुझे वह एक बहुत बड़े मदिरापात्र के रूप में दिखाई दिया और उसने मुझसे बहुत-सी बातें की, जो बहुत ही पवित्र थी...उन्हे मैं यहाँ सबके बीच कैसे कह सकता हूँ...परन्तु वह थी ऐसी बातें कि जवान आदमी उन्हे अधिक से अधिक सुनना चाहेगा।"

और फिर तो सभी ने अपने-अपने अनुभव बतलाये, मोज को वह 'होरस' के रूप में दिखाई दिया तो किसी को बाज के रूप में, इत्यादि। पुजारी सिर हिलाता जाता था और हँसता जाता था।

अब बस मैं रह गया। पुजारी ने अपनी भौंहे मिलाकर मुझसे कड़े स्वर में पूछा : "और तुम सिन्पूहे ! क्या तुम इस योग्य नहीं निकले कि वह तुम्हे दिखाई देता ? अम्मन ने तुम्हारे ऊपर क्या चुहे के रूप में प्रगट होकर भी कृपा नहीं की ? क्योंकि वह तो हर रूप में प्रगट हुआ करता है !"

जीवनगृह में मेरे प्रवेश का प्रश्न दाँव पर रखा था, यह बात मेरे मस्तिष्क में बिद्युत् की भाँति फैल गई और मैंने साहस करके उत्तर दिया : "भोर में मैंने पवित्र पर्दे को थोड़ा हिलने देखा था। इसके अतिरिक्त मुझे कुछ भी नहीं दिखा, और अम्मन ने मुझसे बातचीत नहीं की।

सभी सुनकर हँस पड़े। मितूफर ने हँसकर अपने घुटने हथेलियों से बजाये और फिर उसने पुजारी से कहा : "यह सीधा-सादा है।" फिर मेरी तरफ दृष्टि गड़ाये हुए उसने उसके कान में कुछ कहा।

पुजारी ने मेरी ओर कठोर दृष्टि से देखकर कहा : "अगर तुमने अम्मन की बोली नहीं सुनी, तो तुमको दीक्षा नहीं दी जा सकती। परन्तु फिर भी उपाय किया जा सकता है क्योंकि मैं देखना हूँ कि तुम सीधे-सादे युवक हो और तुम्हारे कर्तव्यों में सचाई है।" और पुजारी मंदिर के अंदर चला गया। मितूफर मेरे पास आया और मेरे उदास चेहरे को देखकर बोला : "धवराओ नहीं सिन्पूहे !"

और सभी हम सब चौक उठे। उस घेअरे अंतराल में एक विचित्र जंतु

के रँवने की बड़े जोर की आवाज आने लगी। गंगा लगा कि वह आवाज हर स्थान से निकल रही थी, छतों, दीवारों और तलों सभी में से निकल रही थी। गम्भीर गर्जन हो रहा था कि हमने मुता वह आवाज कहने लगी :

“सिन्धूहे ! सिन्धूहे ! ओ आत्मपीतू कहाँ है ? जल्दी से आकर मेरे सामने झुक जा क्योंकि तेरी प्रतीक्षा में मैं सारा दिन व्यर्थ नहीं गँवा सकता ।”

मित्तूफर ने जल्दी से उस पवित्रों में भी पवित्र के सामने बा पदाँ हटा दिया और मेरी गर्दन पकड़कर मुझे अम्मन के सम्मुख झुका दिया। और मैंने साफ़ मुता कि पुजारी अम्मन के अन्दर घुसकर आवाज बिगाड़कर कह रहा था : “सिन्धूहे ! सिन्धूहे ! तू पूरा मूर्ख है ! जब मैं आया था, तब तू क्या रहा था मूर्ख ? तेरा दब तो यह है कि तुझे गन्दे हाँव में डाल दिया जाये, जहाँ कि रात और दिन की चड़ छाया करे। परन्तु तेरी ज़बानी देखकर मुझे कुछ पर दया आती है और इसलिए कि तू मेरा भक्त है, तेरा विश्वास तुझे बचा रहा है। जो उसे नहीं रखने वह मृत्यु के साम्राज्य के धँपेरे गड्ढों में सदा के लिए डाल दिये जाते हैं ।”

जब पुजारी ने मेरे बगल में खड़े होकर मेरे लान दी तब मुझे ध्यान हुआ। मैं उठ खड़ा हुआ और तब मेरे साथी अम्मन को नहलाने, गंध जलाने और वस्त्रादिक पहनाने में जल्दी से लग गए, और मैं बाहर के प्रांगण से ‘पवित्र’ जल लाने उदास मन चला गया। जब मैं लौटा तो मैंने देखा कि पुजारी अम्मन के मूँह पर झुककर उसे अपने मैली बाँह से रगड़ रहा था और मित्तूफर हँसते हुए उस पवित्र तैल को, जो उसका था, अपने व पुजारी के सिरों पर डालकर रगड़ रहा था।

जब मूर्ति नहलाकर सजा दी गई तो पुजारी ने उसके उतरे हुए वस्त्र और स्नान किया हुआ जल लेकर शीघ्रता से बाहरी प्रांगण की ओर प्रस्थान किया जहाँ धनी व्यक्ति ऊँचे दामो में उन्हें निश्चय खरीद लेने थे। उस जल से त्वचा की तमाम बीमारियाँ दूर हो जाती थीं।

और मेरे लिए अब जीवनमृदु का प्रवेश-द्वार खुल गया था क्योंकि अम्मन ने मुझसे बातचीत कर ली थी।

जीवनगृह में, जो कि अम्मन के मन्दिर का एक भाग था, पड़ाई की देखरेख का भार, अपने-अपने विभाग में, राज्य-बैठों का था; परन्तु वह केवल मामलात्र को ही वहाँ आने थे। उनकी अपनी चिकित्सा का व्यापार बहुत फैला हुआ था, वह लोग धनिकों द्वारा बहुमूल्य उपहार और सुवर्ण पात्रों से और नगर के बाहर विशाल भवनों में रहने थे। परन्तु यदि जीवन-गृह में कोई विभिन्न और जटिल रोगी आ जाता और वहाँ के मामूली वैद्य उनका इलाज न कर सकते या उनकी परिचर्या करने से चबरा जाते तो राजवैद्य अपना कौशल दिखाने वहाँ आते। और इस तरह अम्मन के साम्राज्य में नरीकों को भी कभी-कभी राज्य-बैठों का उपचार मिल जाता था।

औषधियाँ बनाने की बिछा सीखने में वहाँ बहुत समय लगता। जब और किस सीमा में कौन-सी जड़ी-बूटी मिलती है, उसे किस प्रकार एखिन करके गुथाना चाहिए, फिर कूट-बीसबर छानना चाहिए, नाना प्रकार की बोन-बोनसी दवाइयाँ सही मात्राओं में मिलाकर तैयार करनी चाहिए, इत्यादि में हमें काफी समय लगता था। हम अक्सर बड़बड़ाया करते थे कि जब औषधियाँ बनी-बनाई जीवनगृह में मिल जाती थी और केवल एक मृत्ता लिमने से ही प्राप्त हो जाती थी तो फिर उन्हें अपने हाथ से बनाने की मुश्किल घल्ला क्यों मुसली आये, परन्तु वहाँ का मिड्रांत यही था कि हर वैद्य को स्वयं पूर्ण होना चाहिए। मुझे बाद में पता चला कि यह सब वैद्य के लिए चिन्ता बण्डा था। मुझे जीवन में जब इसका अनुभव हुआ तभी मैंने वहाँ की इस रीति को सचमुच ही बहुत अच्छा समझा।

शरीर के भी हर अंग का काम तथा उसके काम हम याद करने पड़ते थे। चाफू हाव में लेकर थिमटी में शरीर के पाच कूरेदना, सड़े हुए हिस्से बाट डालना तथा रोग को देखकर और लम्बा की औषध करके पहचानना इत्यादि हमें सिखाया गया। हमें बच्चापाने की तमाम विधियाँ, रबी के सर्वायन का ज्ञान, बर्षों के जन्म के बाद रबी की मृत्युवा की आराधना तथा मरु मरु जानना बहरी था। रोगी के झूठ में शपथ को अलग करके उसकी औषध करना भी हमारा ही काम था।

इसी सबसे मुझे काफी समय लग गया। कई बरों के उपरांत बड़

समय भी आ गया जब मन्दिर की पवित्र रीतियों के अनुसार मुझे उपवास इत्यादिक करके इतने सम्प्रधारण किए हुए जीवनगृह के स्वागत-वन्द में रोगियों के दांत उखाड़ने पड़े, उनके फोंडों को काटना तथा उनमें चीरा लगाना पड़ा और टूटी हुई हड्डियों को जोड़कर उनपर बाँध लगाकर पट्टी बाँधनी पड़ी। मेरी गतिविधि कार्य में इतनी अच्छी थी कि गोघ्न ही मुझे अपने माधियों का मिश्रक नियुक्त कर दिया गया। और तब मुझे भी कभी-कभी रोगियों से तथा उनके सम्बन्धियों से उपहार प्राप्त होने लगे। मैंने अपनी अँगूठी के हरे पत्थर पर जो मुझे नेफर नेफर नेफर ने दी थी, अपना नाम खुदवा लिया कि मैं उसे मुहर की जगह काम में ला सकूँ।

इससे भी अधिक डिम्पेदागी के कार्य मुझे करने पड़े। मुझे उन बच्चों में भेजा गया जहाँ लाइलाज रोगी रमे जाते थे। जहाँ दस में से नौ का मरना अवश्यभावी था। यहाँ मैंने मृत्यु देखी और धीरे-धीरे यह भी सीखा कि बच्चों को उससे नहीं डरना चाहिए। साथ ही यह भी कि वह असाध्य रोगी को दयालु मित्र की भाँति समेटकर ले जाती है।

परन्तु फिर भी मैं अन्धा ही था; क्योंकि मेरे ज्ञान के चक्षु अभी तक बन्द थे। और हठात् एक दिन मैं सोच में पड़ गया और मेरे नेत्र खुल गए और मेरे मन में प्रश्न उठा, “क्यों?” और इस “क्यों?” को मैंने अपने अध्यापकों से पूछा तो सबने मेरी ओर आश्चर्य से देखा जैसे वह चौंक उठे हों। परन्तु यह ‘क्यों’ का प्रश्न मेरे मन में इतनी गहराई से उतर गया जैसे उसे पत्थर की भाँति किसी ने काटकर अन्दर घुसा दिया हो।

उसका वृत्तांत मैं अब लिख रहा हूँ।

ऐसा हुआ कि एक दिन मेरे पास एक स्त्री आई जिसके कोई बच्चा नहीं हुआ था और वह अपने-आपको वाँझ समझने लगी थी; क्योंकि वह चालीस साल की हो चुकी थी। परन्तु उसका मासिक धर्म रुक गया था, जिससे उसे पीडा होती थी। वह जीवनगृह में इसलिए आई थी कि उसको ऐसा विश्वास बैठ गया था कि किसी भूत या प्रेत ने उसके शरीर में घुसकर उसमें विष फैला दिया था। ऐसे मामलों में, जैसाकि पुस्तकों में लिखा हुआ था, मैंने कुछ अनाज के दाने एक पात्र में मिट्टी भर कर उसमें बो दिए और उसमें से आधे को नील के जल से और बाकी आधे को उस स्त्री

भूष से सीचा। फिर उस पात्र को घूष में रख दिया। और उस स्त्री दो दिन बाद आने को कह दिया। जब वह सभय पर आई तो मैंने देखा नील के जल से सिंचित दाने हलके उगे थे और उसके भूष से सिंचित वे बड़े और मजबूती के साथ उग आए थे। जो कुछ लिखा था वह सत्य ना जाना था और मैंने उस चर्चित स्त्री से कहा, “लुशियाँ मनाओ क्यों-अम्मन ने तुम्हारे गर्भाशय पर कृपा की है। अन्य स्त्रियों की भाँति तुम गर्भ धारण करोगी।”

वह गरीब यह सुनकर खुशी से रोने लग गई। उसने मुझे अपने हाथ उतारकर एक चाँदी की चूड़ी दी जो तौल में दो ‘दवन’ थी। अब उसकी मुसता बड़ी क्योंकि वह तो एक अर्से से आशा छोड़ बैठी थी। उसने ग, “लडका होगा?” वह मुझे सर्वशक्तिमान समझने लगी थी। मैंने हम बटोरकर सीने उसके नेत्रों में देखा और स्थिरता से कहा, “लडका।” वे गुनकर खुशी से बिह्वल हो उठी और उसने मुझे अपने दूसरे हाथ से तारकर एक और वैसे ही चाँदी की चूड़ी दे दी।

परन्तु जब वह चली गई तो मैंने अपने-आपसे पूछा कि भला अनाज दानों में दग स्त्री के गर्भाशय का क्या सम्बन्ध हो सकता था? और मैं दग ‘क्यों’ का उत्तर न पा सका तो मैंने अपने मुख से पूछा। उसने मेरी र देखा जैसे मैं पागल था और केवल इतना कहा, “ऐसा ही लिखा है।” न्यु यह तो कोई उत्तर नहीं था!

फिर मैंने माहम बटोरा और एक दिन यही बात जच्चाखाने के राज्य-विलक से पूछी। उसने कहा, “अम्मन सभी देवताओं में धेरेठ है। शिष्य में बीज आने ही वह उसे देव लेता है। यदि वह वहाँ उभे बड़ने है तो उमी स्त्री के जल से सिंचित अनाज को क्यों नहीं बड़ने है? यह तो स्पष्ट है कि वही सब कुछ करने वाला है।” उसने भी मुझे ही देखा जैसे मैं पागल था। परन्तु यह भी कोई उत्तर नहीं था।

और तब मैंने देखा कि जीवन-मूह के बीच केवल उतना ही जानने थे जना पुस्तकों में लिखा हुआ था। उससे आगे जानने का वहाँ प्रश्न ही। उटना था। जहाँ-जहाँ बार बार बीर-प्राद करे, थाहे सैकड़ों बार ने का शरीर खोलकर ही दे पर वह उतना ही बरेगा जितना पुस्तकों में

लिखा है। वस। रोगी अच्छा हो जाए तो अम्मन की कृपा और यदि मर जाए तो अम्मन का कोप। ऐसा ही होता आया है और ऐसा ही होगा। दुर्बल रोगी को, कच्छा कलेजा, जो मन्दिर में बलि पशुओं के शरीरों में से बटकर महंगा बेचा जाता था, गुणकारी बताया जाता था, परन्तु 'क्यों' का प्रश्न वहाँ भी नहीं उठ सकता था क्योंकि वह आज तक किसी ने सोचा ही नहीं था।

मैंने धीमे जान लिया कि बहुत-से प्रश्न करना ठीक नहीं था। मैंने अपना स्वेत वस्त्र और अपनी कमाई हुई चार दबन की चाँदी की झुड़ियाँ सँभालीं और जीवनगृह से बाहर आ गया। अब मैं पूर्ण वैद्य हो चुका था।

जब मैं मन्दिर के परबोटे से बाहर निकला तो मैंने देखा कि धीवीड, जो मैंने कुछ वर्षों पहले छोड़ा था अब वैसा नहीं रह गया था। इन दिनों मैं कभी बाहर नहीं निकला था। मैंडों वाले राजगण पर होकर जब मैं आया तो मुझे वह अन्तर दिखाई दिया। लोगों की योगाओं इतनी भड़कीली और महंगी हो गई थी कि उनके गिरों के कपड़ों और गरारों को देखकर कोई पुरुष और स्त्री में भेद नहीं बनता सकता था। मन्दिर की दुकानों और रगशालाओं में से सीरिया का तीखा सगीन मुनाई देना और सीरिया के सोग और मामदार हड्डी सोग अब बेगड़क मिश्रियों में बघा भिडाकर बचने थे। मिश्र की सगति और भक्ति अपार थी। सँबडों सालों से कभी कोई शत्रु वहाँ के नगरों में नहीं घुसे थे और ऐमे-ऐसे सोग वहाँ मौजूद थे जो प्रौढ़ हो पने थे और युद्ध के बारे में गर्वशा अनभिज्ञ थे। परन्तु न जाने क्यों फिर भी सोग मनोषयुक्त दिखाई नहीं देने थे। ऐसा लगता था, जैसे वह किसी भावी आपत्ति की सम्भावना में चिन्तित हों, और उनकी आँखें अत्यन्त खराब रहती थीं।

एक पट्टेबन्ध मैंने देखा कि मेरा पिता सैम्यट मृदु हों गया था और कमर में सूँघ गया था। वह अब पड़ नहीं सकता था, मेरी माता बीता भी कुत्तारे से डर गई थी और अब निवास अपनी बड़ के और कोई बात ही नहीं करती थी। मेरे पिता ने अपनी अल्प वयस में 'मृन्मयी के नगर में' को

जि नदी के पश्चिमी किनारे पर था, एक बड़ा अम्यन के पुजारियों को बीमन देकर लगीद ली थी। मैंने वह देखी भी थी। वह एक सुन्दर ईंटों की बनी हुई बड़ थी जिग पर प्रगतिन शब्द और चित्र खुदे हुए थे।

माता ने मुझे घाना लिखाया और पिता ने मेरी पढ़ाई के बारे में पूछा। हमने आगे हमारे पास बात करने को और कुछ नहीं था। मुझे वह अपना घर, वह सुख्खा और बर्ती के लोग सब नये-नये से लग रहे थे। मेरा मन उदास हो गया और सब मुझे 'प्लाह' के मंदिर में टोपिमीड की याद हो आई बर ओ मेरा परम मित्र था। और माता-पिता से यह कहकर कि मुझे जीवन मूह में खीटना था, मैं दिन छिपने-पिछने 'प्लाह' के मंदिर में पहुँच गया। बर्ती गुहने पर मुझे मालूम हुआ कि टोपिमीड तो जाने बब बा बनी से बाहर निजाल दिया गया था। बर्ती के बिछावियों ने उनका नाम लेकर घुमा से बूब दिया, बयोकि सामने उनका अध्यापक बैठा था। परन्तु जब वह खना गया तो उन्होंने मुझे बताया कि वह 'मिरिदन-नाच' नामक तदूर-घर में मिलेगा।

जब मैं उन रात पर पहुँचा जोकि मरीचो और अभीरो के मुहल्लों के बीच लडा था तो मैंने देखा कि बर्ती द्वार पर ही, अन्दर बिजने वाली मंदिरा की सज्जा बने-बने अलमारी में मिली है— कि वह मंदिरा अम्यन के बागों में बने अगुओं में बनी थी इत्यादि, अन्दर गुरुवी पर ईंट-ईंट-बनाकार उदास मन में बिच बना रहे थे।

“बुध्ताओ के बागों की कदम ? मिन्युदे !” बोर्ड बिन्नाया और मैंने जो बुरबुर देना ला सामने टोपिमीड लडा था। उसके बागों का वरच मडा था और उसके बेब लाल हो रहे थे। उसके माथे पर एक बड़ा-या गुम्फर रखर आया था। वह कुछ बुझा और आद-लाल प्रतीत होता था। उसके हल के दोहो और देलाल मिच दई की पर उसके उन बेगों में बर्ती प्यार, लाली और बदन की ओ मन को लुभा लेती थी। वह मुझे आ मिना और उदास लाल के लाल ले लु मडा। मुझे बहुत लगीर हुआ बयोकि मुझे अगुधर हुआ कि एक अब भी बैते ही बिच थे। मैंने कहा, “मया मन उदास है। मैं मुझे इस गरी था कि एक दोनो एक साथ अपने-आपको मंदिरा में पूजा दे... वह कि बाई की कैरे 'बनो' के उदास का उदास लगी देना।

टोथिमीज ने अपने वस्त्र झाड़कर दिखाया कि उसके पास कुछ भी नहीं था। मैंने फिर कहा, “मेरे पास धार दघन चाँदी है” फिर उगने मेरे घुटे सिर की ओर उँगली उठाई, जो यह बता रहा था कि मैं प्रथम श्रेणी का पुजारी था.. परन्तु मैंने व्यथित होकर उत्तर दिया, “मैं वैद्य हूँ, पुजारी नहीं... चलो।”

जब हम मदिरा की दुकान में जाकर बैठे तो एक दाम ने हमारे हाथ धुलाये और स्वयं मालिक ने रंगीन गिलासों में हमें मदिरा लाकर दी। एक और दास भुने हुए कमल के बीज खाने के लिए हमारे सामने रख गया। टोथिमीज ने एक बूंद उठाकर पृथ्वी पर डाली और कहा, “उस देवी कुम्हार के नाम पर ! कला-मंदिर और उसके अध्यापकों को महामारी ले जाये !” और वह गिन-गिनकर उनके नाम लेकर उन्हें शाप देने लगा।

मैंने भी अपना गिलास उठाया और भूमि पर एक बूंद मदिरा डालकर कहा, “अम्मन के नाम पर ! उसकी नाव अनन्त काल तक चूती रहे पुजारियों के पेट फट जायें और जीवनगृह के अनभिज्ञ और मूर्ख अध्यापकों को सड़-सड़कर मरना पड़े।” परन्तु मैंने यह सब धीरे से कहा और बहकर चारों ओर मुड़कर देखा कि कोई मुन तो नहीं रहा था।

“डरो मत” टोथिमीज बोला, “इस तदूरखाने में अम्मनो की इतनी पिटाई की गई है कि यहाँ छिपकर आने का उनका अब साहस नहीं होता...” फिर कुछ रुककर कहा, “यदि अमीरो के वच्चों के लिए चित्र बनाने की दुकान मुझे नहीं सूझती तो निश्चय ही भुलों भर जाना।”

उसने मुझे लिपटी हुई तस्वीरें दिखाई जिन्हें देखकर मुझे हैसी आ गई एक किले के द्वार पर एक बहुत बड़ी भयभीत दिल्ली खड़ी उसकी रक्षा कर रही थी और सामने अगणित चूहे मिलकर उसे डरा रहे थे। एक वृद्ध की ऊपरी टहनी पर एक दरियाई घोड़ा बैठा गाना गा रहा था और एक बबूतर घड़ी कठिनाई के साथ सीढ़ी लगाकर पेड़ पर चढ़ने का उपक्रम कर रहा था। उसने कागज और खोलकर दिखाया। अगले चित्र में एक छोटा-सा पुजारी एक बड़े से फराऊन को रस्सी पर चलाकर ले जा रहा था जैसे कि वह कोई बलिपशु हो। एक चित्र में एक छोटा-सा फराऊन अम्मन की एक दीर्घ प्रतिमा के सामने झुका खड़ा था। मैंने आश्चर्य से टोथिमीज की

और देवा तो उमने गम्भीरतापूर्वक कहा : "तुमने देवा ? यह सब अनहोनी बातें हैं और इसीलिए समझदार लोग इन्हें देखकर ख़ुश होते हैं और जब तक वह इन्हें देखकर ख़ुश होते रहेगे, मेरी रोटी मुझे मिलनी रहेगी जब तक कि किसी दिन पुजारी लोग मुझे बाजार में मुगदरो में पिटवा-पिटवाकर न मरवा देंगे...ऐसा यही हो चुका है।"

"बियो मित्र ! " मैंने उसका ध्यान बँटाया फिर थोड़ी देर बाद मैंने पूछा, "बयो का प्रश्न उठाना क्या गलत है ? " मेरा मन अब भी उदास था।

"निश्चय ही गलत है," वह बोला. "बयोबि दगने पूछने वाले का बीम के देश में बही टिकाना नहीं है, सब कुछ बीमा ही होता चाहिए जैसे होता आया है।..." वह ख़ुप हो गया। गहरी उदासी छाई रही। हम मंदिरा पीने रहे। फिर हटाना वह बोला, "जब कला-मंदिर में छेनी-हथोड़ी पकड़ना सीखने के बाद मेरी इच्छा हुई कि मैं पथर पर अपना हृदय अंकित करूँ तो वही नियम के अनुसार मुझसे कहा गया कि औरो को सातबर मिट्टी दो।...नियम जो ऐसा ही था भला वह कैसे तोड़ा जा सकता था ? सब बिजो के रूप पहले से ही निर्धारित है...सबकुछ आदमी बिम मुझ में बनाया जाएगा...बैठे हुए बी मुझ का होगी, थोड़ा अपना पैर बीमे उठाएगा। बीम कैसे बैठेगा...यह सब पहले से ही निश्चित है। जो इसे नहीं मानेगा उसे मन्दिर से बाहर मारकर निजाल दिया जाएगा और हथोड़ी-छेनी पर उसका कोई अधिकार नहीं रह पाएगा।...ओ मित्र ! " वह सँग सँग बोला, "मैंने भी 'बयो' बहुत बार बी पी...और मेरे माथे पर मुग्गड़ बन गए। " उसने अपना मुग्गड़ छुबर बनाया।

मेरा हृदय मानो गिरा गया जैसे थोड़ा फूट गया हो...उसका गुरुल मवाद भर निजला हो।...मन हल्का हो गया। और जब हम मंदिरा में आनन्द लेने लगे।

"मित्र ! हम बिचित्र परिवर्तन काल में पैदा हुए हैं। सब चीजें बदल रही हैं, दुनिया बदल रही है। रीति-रिवाज, योजनाएँ, बोली-मन बदल रही हैं—लोग अब देवताओं को नहीं मानते, अब वह बेचम भय के कारण उन्हें मानने हैं। शायद हम दुनिया का अन्त देगने के लिए ही पैदा हुए हैं;

क्योंकि यह दुनिया बहुत ही पुरानी हो गई है। पिरामिड बने हुए बारह सौ साल बीत चुके हैं ! ओफ ! जब मैं यह सोच लेता हूँ तो बच्चों की भाँति हथेली में मुँह छिपाकर रोने की इच्छा प्रबल हो उठती है," परंतु वह रोया नहीं।

टोपिमिड के कहने से जब हम यहाँ से उठे तो रगशालाओं की ओर चले। अग्निकार फैल चुका था। परन्तु धीवीज प्रकाश से चमक रहा था। चारों ओर अगंध्य मशालें जल रही थी, भीड़ से उठा हुआ हुआ शोर आकाश तक काँप रहा था। दासों के बादशाह धनिकों की कुतियाँ उठाए यहाँ-वहाँ भागे जा रहे थे। रगशालाओं में से समीत-महरियाँ निकलकर मनुष्यों के उस प्रवाह पर मानों मोहिनी फैला रही थी।

मैं आज तक कभी रगशालाओं में नहीं गया था। 'बिस्ती और अंगूर' नामक वेदयागृह में हम गए, जहाँ कई युवतियाँ मुनहरे दीपों को जलाये बैठी थीं। जब हम नर्म गद्दों पर बैठ गए तो युवतियाँ हमारे सामने आ गईं। उन्होंने मुझसे मदिरा पीने को माँगी, क्योंकि उन्होंने कहा कि उनके कंठ चटक रहे थे। फिर दो नगी युवतियों ने हमारे सम्मुख नृत्य किया। उनके हाव-भाव और अगवानन इत्यादि सचमुच ही अद्भुत और कठिन थे। मैंने बैठ होने के नाते पहले भी कई बार नग्न स्त्रियाँ देख रहीं थी, परन्तु ऐसा हाव-भाव, स्तनों और जघाओं का हिमाता और पीन निगम्बों का मटकाना कभी नहीं देखा था। मुझे वह सब बहुत अच्छा लगा। परन्तु समीत सुनकर मैं फिर उदाम हो उठा, एक सुन्दरी सुकनी ने आकर मेरा हाथ पकड़ लिया और धरती बगल मेरी बगल में दबाने लगी और मुझसे कहा कि मेरे नेत्र सुन्दर और बुद्धिमानों जैसे लगने थे। मैंने उसके नेत्रों में शक्ति देना... वह धीरे-धीरे मेरी नील के जल की भाँति हरे नहीं थे, मैंने उसके नग्न स्तन देखे पर उन पर राजसी आँखें बरस नहीं थे। मेरा मन उखाट हो गया और मैंने फिर उसकी ओर नहीं देखा। मैं उससे 'मेरी बहन' कहने की ही मेरी इच्छा हुई। फिर मुझे अपनी याद है कि एक भीमकाय हथेली मुझे साज देकर वहाँ से निकाल रहा था, मैं बीड़ियों में भींचे गए गया था। मेरा मुँहा हुआ निरदुल रह गया। टोपिमिड घबरे बचिष्ट कभी का मटारा देकर मुझे नील के किनारे ले गया जहाँ मैंने श्री आकर पानी

पिया और सिर धोया, पैर धोये और हाथ धोये, मुझे बीपा के बोल याद आ रहे थे। उगने कहा था, “नाली में बड़ा रहता है... वाम में एक तीब्रे का टुकड़ा भी नहीं रहता।”

भोर में जब मैं जीवनगृह गया तो मैंने भीड़ ही जैसे बपड़े उतारकर शुद्ध श्वेत वस्त्र पहने और गूंगो-बहुरों के लिए बने हुए चिबित्तागृह में बांध करने खला गया। मेरे सिर पर गुम्फ उछल रहे थे, आँखें सूनी लाल हो रही थी; मार्ग में मुझे प्रधान बैद्य मिला। देखने ही बोला-

“तुम्हारा क्या होगा यदि रात्रि के समय तुम प्याली का हिसाब न रखने हुए पीने चले जाओगे? तुम्हारा क्या होगा यदि तुम अपना धन नर्सरियों के यहाँ नष्ट करोगे और भले में चूर होकर मदिरा के पात्रों को तोड़ोगे और भले नागरिकों को भयभीत करोगे? तुम्हारा क्या होगा यदि तुम रक्तपात करोगे और चौबीदार से भागोगे?” यह साहना के बही मन्त्र थे जो ऐसे समय उच्चारण करने के लिए पुस्तक में लिखे थे और जिन्हें मैं जानना था—जो मुझे याद थे। परन्तु वह चुबने के बाद वह मुस्कराया और मुझे अपने कमरे में लेजाकर उसने पेट साफ करने के लिए ओषधि दी। मैंने अनुभव किया कि जीवनगृह में मदिरा और रोगनामाएँ भी साम्य थी यदि कोई ‘कधी’ के प्रश्न को न उठाए।

और बीबीज का सुतार मुझ पर भी चढ़ बैठा। रातें दिन से अच्छी लगनी और मसालों का प्रबाल गूर्य से अच्छा लगना। रोगियों की कराँठ से तीरिया का संगीत मधुरतर लगता। और पुराने दवाओं की गोला-बाँधी से सुबतियों की पुमपुमाहट अच्छी लगनी। परन्तु जब तक जीवनगृह में काम करना होता, अपने परीक्षकों को खूब खाना और खपना हाथ माघ रखता। इन सब बातों के बारे में मुझमें पूछने वाला कोई पैदा भी नहीं हुआ था। परन्तु फिर भी अभी मैं बिभी रबी के गणर्ष में मरी आया था, हात्तीबि अब मैं जान गया था कि उनके गरीर अग्नि से तेज नहीं बनते थे।

उन दिनों बीबीज में गहरी अन्धगति चँसी हुई थी बच्चेबि बराऊन

जब मैंने पहले रोगी का सिर उस्तरे से सावधानी से मूढ़ दिया और उसे साफ कर दिया तो पवित्र अग्नि में पवित्र किए हुए औजारों को लेकर प्लाहोर उसके पास आया और उसने उस सिर पर एक विशेष मुन्ल करने का मरहम लगाया फिर थाबू से उसकी सोपड़ी में एक छेद किया और अगलों की हड्डियों को दबाया । रक्त बुरी तरह बहने लगा पर उसने कोई चिन्ता नहीं की । फिर एक गोल नली को ठोककर उसने एक छेद बनाया और तब रोगी कराहने लगा । प्लाहोर तब बोला :

“इस रोगी के सिर में मैं कोई विशेषता नहीं देखता,” और उसने वही गोल हड्डी वही फिर से बँटाकर उसका सिर मी दिया । पर इतने में वह आदमी मर गया ।

“मेरे हाथ कुछ बाँपने से मामूम होते हैं,” प्लाहोर बोला । फिर मुबक विद्याधियों की ओर देखकर उसने कहा, “मुझे यदि थोड़ी मदिरा मिल जाए तो ठीक रहेगा ।”

देखने वालों में जीवन-गृह के अध्यापक गण तथा नये विद्यार्थी भी थे, उन्होंने भीष्ट उसे मदिरा साकर पिला दी ।

दूसरा रोगी एक अल्पिष्ट हस्ती या जो झीनझील में भी बहुत बड़ा था । प्लाहोर उसे देखकर बोला, “इसे कई आदमी मिलकर दन्ती खोर में बाँध दो कि इसका सिर कोई दानव भी नहीं हिला सके ।” जीवन-गृह में एक रक्त रोकने वाला मनुष्य भी अक्षम रहा करता था । उसमें कुछ देवी शक्ति होती थी कि उसके सामने रहने में रक्त एक जाता था । उम विशेष गुण का कारण वह स्वयं भी नहीं जानता था फिर भी वह उम गुण से रोगियों के लिए बहुत बाम का होता । जब प्लाहोर ने उमहस्ती के सिर में छेद किया तो जो रक्त के पम्पारे छूटे उन्हें शास मरहम लगाकर रोका गया । जो तब भी न रक्त । उम उम रक्त रोकने वाले में आकर केवल अपनी उपस्थिति में ही रोक दिया ।

भीष्ट हो हस्ती के सिर पर में ह्पेली के बराबर की एक हस्ती निष्ठा दी गई । अदर रक्त जमा हुआ मिला और एव हस्ती का टुकड़ा भेजे की मक्की में देठा होकर जंगा हुआ मिला । अन्त मावधानी में प्लाहोर ने वह रक्त पीया और उम हस्ती के टुकड़े को भीष्ट मिला । माटे

सुवर्ण-गृह के परकोटे के बाहर लोगों की भीड़ जमा थी। लोग उन स्थानों और नदी-किनारों में भी ठठाकर समा गए थे, जहाँ उनको जाने या खड़े रहने की आज्ञा नहीं थी। जल में भी भीड़ नावों पर खड़ी थी, घनी लोग अपनी काठ की नौकाओं में, तो निर्धन बौंस के बजरो पर। जब उन्होंने हमें देखा तो सनसनी दौड़ गई कि राजवंश—सिर खोलने वाला—आ रहा था। तब लोगों में दुःख में अपने हाथ ऊपर उठाये और फिर जब हम आगे बढ़े तो पीछे से रोने-धींसने की आवाजें आने लगी। सभी जानते थे कि सिर खुलने के बाद कोई फराऊन तीन दिन से अधिक नहीं जीवित रहता था।

‘कमल द्वार’ से हम अन्दर ले जाये गए। दरबारी लोग हमारे सामने घुटनों की सीध में हाथ फैलाकर झुक गए क्योंकि हम मृत्यु को अपने साथ लाए थे। फराऊन के अपने बैठ से कुछ बातचीत करने के बाद प्लाहोरे ने आकाश की ओर हाथ उठाया और फिर औजारों को पवित्र अग्नि में शुद्ध करने लगा। फिर कई अद्भुत रूप से सजे हुए बड़े-बड़े कमरों में होकर हम फराऊन के शयनकक्ष की ओर चले।

महान् फराऊन एक सुनहरी शिलाफ के नीचे एक विशाल पर्लंग पर पड़ा था। पर्लंग के पावों की जगह सुवर्ण के सिंह बने हुए थे। उसका मूजा हुआ शरीर भग्न था—उस पर राजसी चिह्न उस समय एक भी नहीं था। वह बेहोश था और उसका वृद्धत्व से पीड़ित सिर एक ओर मुड़ा हुआ था। वह एक-एक कर गहरे श्वास ले रहा था और उसके मुँह के कोरों से पूरु वह रहा था। उसकी उम्र समन की दमनीय अवस्था को देखकर उसे जीवन-गृह में उसी अवस्था में पड़े हुए किसी सामान्य रोगी से भिन्न बना कौन कह सकता था? परन्तु दीवारों पर उसे तगड़े घोड़ों के रथ की मँभा-लने हुए वह सिंहों का शिंजार खेलने हुए दिखाया गया था। घोड़ों के गिरों पर बहुमूल्य पर लगे हुए थे और उसकी बलिष्ठ भुजाओं में धनुष पूरा बिधा हुआ था। सिंह उसके चरणों पर उसके तीरों से छिदे पड़े थे।

हम दोनों ने उसके सामने सेटकर उसका अभिवादन किया। सभी

जानने थे कि प्लाहौर की चिकित्सा उसके लिए व्यर्थ थी, परन्तु सनातन में यही रीति चली आई थी कि यदि प्राकृतिक रूप से मृत्यु नहीं आती थी तो सिर खोलकर उसका आवाहन किया जाता था। मैंने बकम में से बाहु, चिमटी, नखी इत्यादि निकालकर एक बार फिर उन्हें अग्नि में झुड़ दिया। राजवंश ने मरने हुए मन्नाट् का सिर उस्तरे से पहने ही साफ कर दिया था। प्लाहौर ने रक्त रोकने वाले को आज्ञा दी कि वह पर्जन्य पर आकर बैठ जाए और राजा के सिर को अपने हाथों में ले ले।

खून बहेगा इत्यादि, फिर भी वह न मानी और वह जैषा के किनारे बैठ गई और उसने अपने मरते हुए पति के सिर को धीरे से उठाकर अपनी गोदी में रख लिया और इस बात की तनिक भी चिन्ता नहीं की कि उसके मुँह से थूक उसकी गोद में गिरने लगा था ।

“यह मेरा है, उसने कहा “और इसे कोई नहीं छूएगा”, यह मेरे ही हाथों में से होकर मृत्यु के साम्राज्य में जायेगा ।

“यह अपने पिता सूर्य के जहाज में चढ़कर जायेंगे ” प्लाहोर ने जोड़ा और चाकू से सिर में छेद किया और कहता गया, “सूर्य ने ही इन्हे उत्पन्न किया था और सूर्य में ही यह लौट जायेंगे और सब लोग शाश्वत काल तक उनका नाम याद करने वापस हो लेंगे—संत आदि तमाम ईशानों के नाम पर यह रक्त बन्द करने वाला बहो चला गया ?” वह कुशल वैद्य की भाँति काम भी करता जाता था और सात्वता के तथा प्रशसा के मन्द भी कहता जाता था । जब मिर में छेद कर लिया गया और रक्त बुरी तरह बहने लगा तो उसने रक्त बन्द करने वाले की याद की ।

अब तक साम्राज्यी ताया की गोद रक्त से लाल हो चुकी थी । अन्दर से जमा हुआ खून निकलकर गिर गया था । मुनने ही वह व्यक्ति आगे बढ़ा और उमने कराऊन के मुख को देखकर हाथ आगे कर दिये, खून एकदम से बन्द हो गया । मैंने आश्चर्य से उस सिर को साफ कर दिया ।

“क्षमा करें देवि !” प्लाहोर कहता गया और उमने नली मेरे हाथ से ले ली । “वह सीधे...हाँ सीधे सूर्य के युवर्णमय जहाज में...हाँ...जहाज में जायेंगे...अम्मन की कृपा इनके साथ हो,” और उसने मिर में हृद्दी के बीच वह नली उतार दी, वह विद्युत्-गति में दशहस्तों से काम कर रहा था । युवराज ने तद्वा से जागकर आगे बढ़म रखा और वह बोला, “उन्हे अम्मन नहीं बल्कि ‘रा-हैराबटे’ एटोन के रूप में आलीक़ा दे देगा...उनकी मंगल कामना करेगा ।” उसका मुँह बोलने समय बंद रहता था ।

“ओह ! हाँ, एटोन ! ...प्लाहोर ने मड बात बदलकर कहा, “हाँ, एटोन...जरा मुँह से छलनी से निकल गया ।” ओह ! उमने आश्चर्य की मुँठ बाने हथौड़े से छेदी मिर में हल्के-हल्के हाथों से टोपी, फिर कहा, “मुझे याद है अपने देवी ज्ञान से इन्होंने एटोन का एक मन्दिर भी बनवाया

था। वह निश्चय ही तब बना था "जब युवराज पैदा हो गए थे...टीक है टीक है...है न देवि ताया ? ...अभी..." और उसने रक्कर युवराज की पी ओर देखकर कहा, "मदिरा की एक घूंट मेरे हाथों में स्थिरता उत्पन्न कर देगी और इससे युवराज का बिगड़ेगा भी नहीं..."

मैंने उसे चीमटी दे दी और उमने भेजे मे से एक हड्डी का टुकड़ा खरं-खरं खींचते हुए निवास दिया। फिर वह उम तीव्र प्रवाग में, जो वहाँ मशालों से हो रहा था; फराऊन के भूरे-नीले भेजे को ध्यान से देखने लगा जो हिस रहा था। प्लाहौर बोला, "अब जो हो गया सो हो गया। अब उसका एटौन उसको शक्ति प्रदान करेगा क्योंकि यह तो मामला ही देवताओं का है, इसमें हम मानव भला करें भी तो क्या?"

फिर उसने हल्के हाथ से, अत्यन्त सावधानी से ऊपर की हड्डी वहीं बँठा दी और घाव के किनारोंको दबाकर ऊपरसे पट्टी बाँध दी। साम्राज्ञी ने उसका सिर एक अमूल्य सकड़ी के बने हुए तखियों के सहारे रख दिया और प्लाहौर की ओर देखा। उसके ऊपर रक्त सूख गया था पर जैसे उसे उसकी परवाह नहीं थी। प्लाहौर ने उसकी आँखों में बिना डरे, बिना झुके देखा, और धीमे से कहा, "इनके देवता चाहेंगे तो यह भोर तक जीवित रहेगे।" और उसने हमदर्दी में हाथ ऊपर उठा दिये।

"तुम्हे बहुत इनाम मिलेगा," साम्राज्ञी ने कहा और फिर जाने को कह दिया।

एक और कक्ष में हमारे लिए भोजन तैयार किया गया था, जहाँ नाना प्रकार के मांस रखे थे और अनेक प्रकार की मदिरा बड़े-बड़े पात्रों में रखी थी, जिन्हें देखते ही प्लाहौर की बाँछें खिल उठी। वह उनमें से छाँटने लगा। एक दास ने हमारे हाथों पर पानी डाला।

जब हम अकेले रह गए और प्लाहौर ने मदिरा के गिलास पर गिलास पी लिये तो कहने लगा :

"कहने हैं कि सिंहासन का अधिकारी एटौन का दैवी पुत्र है। स्वप्न में साम्राज्ञी ने 'रा-हैराबटे' के मंदिर को देखा था और उसके बाद ही उसके गर्भ में यह पुत्र आया था। वहाँ से उसने एक उच्चाभितापी पुजारी, जिसका नाम 'आई' था साथ ले लिया था। आई की स्त्री अपने ही स्तनों

वे देवता मर गये

से इस पुत्र और अपनी पुत्री नेफरतीती को दूध पिलाती थी। नेफरतीती और राजकुमार हिल-मिल गए और भाई-बहन की भाँति महल में खेलते रहे। अब तुम्हीं सोचो इसका क्या नतीजा होने वाला है ?" और वह देर तक पीछा रहा और बबलू रहा। मैंने कहा :

"फाहीर ! जब धीवीज का प्रकाश रात्रि में आकाश की ओर उठता है तो मेरे हृदय में प्यार की हूक-सी उठने लगती है।"

मुनकर वह तनिक हँसा, फिर बोला : "प्यार-व्यार कुछ नहीं होता। आदमी बिना औरत के उदास रहता है। और औरत एक बार मिल गई तो उसे और पाने के लिए और ज्यादा उदास रहता है। ऐसा ही होता आया है, ऐसा ही होगा...प्यार की बातें मुझसे व्यर्थ मत करो वरना वही मुझे तुम्हारा सिर न खोलना पड़ जाये। हाँ... हाँ तुम्हारा सिर मैं बिना कुछ लिये ही खोल दूँगा।"

जब वह बहुत बहकने लगा तो मैंने उसे शीया पर मुला दिया। धीवीज में रातें ठंडी होती है। मैंने उसे नमं झालें ओढ़ा दीं।

मैं खुसी छत पर निकलकर बाहर उद्यान में फूलों के बीच निपल गया। नीचे नील बह रही थी। मुझे प्रीत्य जल में नील के जल की भाँति दोहरी भाँसें याद हो आई और मैं विह्वल हो उठा।

तभी मेरे पास कोई आया। उसने अधिकार के स्वर में पूछा : 'क्या वह एकाकी है ?' मैंने पहचाना। वह सिंहासन का अधिकारी, होनेवाला करारुज था। मैं उसके सामने सेट गया और बोलने का मेरा साहस नहीं हुआ।

"गढ़ा हो मूर्ख !" वह बोला : "यहाँ हमें देखने वाला कोई नहीं है फिर स्पर्श क्यों झुकता है ? यह सब मेरे पिता एडोन के लिए सुरक्षित रख, क्योंकि असली देवता वही है, और मैं उसका पुत्र हूँ। बाकी सब झूठे हैं... अम्मन भी झूठा देवता है !"

मैंने विरोध करने की सी मुद्रा बनाई और कहा, "ओह !" जैसे मैं अम्मन के विरुद्ध वही शब्दों से भयभीत हो गया था।

"फाहीर तो बुद्धा बदर है...यदि तुम्हें महल से बाहर जाने से पहले मरना ही होगा तो तुम्हारा भी नया नाम रखा जाएगा...एकाकी...!"

प्लाहौर ने कहा था कि यदि कराऊन मर गया तो हम तीनों—वह, मैं और उस रक्त रोकने वाले को मरना होगा। अब यह भी कह रहा था। मेरे रोम-रोम भय से खड़े हो गए। उफ! मैं मरना नहीं चाहता था। क्यों लाया प्लाहौर—वह बुद्धि बंदर—मुझे अपने साथ!

युवराज हाँफ रहा था, वह कहने लगा, “बेचैनी...हाँ बेचैनी बनी रहेगी...मुझे कहीं दूसरी जगह जाना होगा—मेरा देवता प्रत्यक्ष आ रहा है...मेरे साथ रहो एकाकी। देखो वह मेरे शरीर को दबा रहा है—मेरी जिह्वा कैसे भिच गई है...”

मैं भय से काँप रहा था। मैंने उसे बेहोशी में बोलते हुए समझा, परंतु वह हुक्म देता हुआ बोला “चलो!” और मैं उसके पीछे हो लिया। वह उद्यान से निकलकर कराऊन की भील के पास पहुँच गया। दीवारों के बाहर हमदर्दों की आँहें मुनाई पड़ रही थी। मुझे बहुत भय लगा। प्लाहौर ने कहा था कि जब तक सम्राट् न मर जाये हमें महल से बाहर न जाना था, परन्तु युवराज की आज्ञा का उल्लंघन भला मैं कैसे कर सकता था?

नदी किनारे पहुँचकर उसने वहाँ बँधी एक नौका खोल दी। अब हम उसे खेने हुए आगे बढ़ने लगे। किमी ने हमें नहीं टोका। रात निम्नगंध थी। दूर धीवीड़ का सान्प्रकाश चमक रहा था। दूसरी पार जाकर वह नाव से नीचे बूढ़ पड़ा। वहाँ और भी बहुत से लोग थे क्योंकि धीवीड़ में यह बात सभी जानने थे कि उस रात सम्राट् मरने वाला था। परन्तु किसी ने हमें नहीं टोका।

आकाश में तारे खल रहे थे। रात गहरी और सदाँ थी। वह तेज़ी से चला जा रहा था। उसके पीछे मैं भागरहा था और स्वेद मेरी पीठ पर बह रहा था। वह पहाड़ियों की छाटियों में चला आ रहा था। धीवीड़ पीछे रह गया। पूर्व की तीनों पहाड़ियाँ ओतमर के प्रहरियों की जगह मानी जाती थी अब हमारे सामने आकाश की कृष्टभूमि में काली दीर्घाबाध बनकर खड़ी थी।

युवराज नेत्र में चमने-खमने हुईने लग गया और फिर गिर गया। वह धीमे शब्दों में बोला: “मिस्त्रे! मेरे हाथों को मान लो, क्योंकि यह काँपते हैं...मेरा हृदय मेरी कमनियों में टकरा रहा है...दुनिया बीगन हो

गई है...हम दोनों अकेले हैं, जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम मेरे साथ चल नहीं सकते—और मैं अकेला रहना नहीं चाहता !”

मैंने उसकी कलाईयाँ पकड़ ली। वह स्वेद से भीग गया था। ससार वास्तव में बीरान लग रहा था। दूर गीदड़ चिल्ला रहे थे, मानो मृत्यु का संदेश जा रहे हों। और धीरे-धीरे तारों की चमक मद्धिम होती गई। और वह उठकर मेरे हाथ झटककर खड़ा हो गया। मेघ फटने लगे थे और लज्जाई फैलकर अलौकिक सौंदर्य बिखेरने लगी थी। वह पूर्व की ओर, पर्वत की ओर, मुख करके खड़ा हो गया और उसने धीरे से कहा :

“वह देखो, देवता आ रहा है...देवता आ रहा है !” उसका मुख भय और चिंता से पीला पड़ रहा था।

एक जन्मुक्त होकर बढ़ने लगा, सामने की पहाड़ियाँ सुवर्णमय हो गईं और उनके पीछे से सूर्य आकाश में चढ़ आया। युवराज ने और भी धीरे फुसफुसाया, “देवता आ रहा है...” और वह पृथ्वी पर गिरकर मूर्छित हो गया। परन्तु अब मैं नहीं डरा। जीवन-गृह में अनेकों बार मैंने ऐसे मरीज देखे थे। उसके दाँतो के बीच देने के लिए लकड़ी के अभाव में मैंने अपना उत्तरीय फाड़कर उसकी गोली बनाई और वह उसके मुँह में दाँतो के बीच दे दी और तब उसके हाथ-पैर मलने लगा। मैंने मुड़कर देखा कि वहाँ से मदद मिल सके पर भीबीज तो वहाँ से बहुत दूर था। पास में गरीब से गरीब आदमी की भी फुटिया नहीं थी।

और सभी हमारे ऊपर से एक बाज चीखता हुआ उड़ा। वह जैसे सूर्य की किरणों में से उत्पन्न हो गया था। उसने एक गोल चक्कर लगाया फिर वह नीचे आया जैसे युवराज के सिर पर बैठ जाना चाहता हो और फिर ऊपर उड़ गया। फिर जब वह चक्कर देकर नीचे आने लगा तो मैंने भय से आँखें भीचकर अम्मन को याद किया और उसके पवित्र इशारे हाथ से किये। शायद युवराज ने मूर्छित होने से पहले सूर्यपुत्र होरस को ही याद किया था। जब मैंने आँखें खोली तो सामने एक आदमी खड़ा था। शायद वह बाज ही अब आदमी के रूप में बदल गया था। वह देवता की भाँति हृष्ट-मुष्ट और जवान था, सूर्य की किरणों की भाँति सुन्दर था। वह गरीब की भाँति एक मोटा कपड़ा ओढ़े हुए था और उसके हाथ में एक

भाला था। हालाँकि मैं देवताओं में विश्वास नहीं करता था फिर भी समय देखकर सुरक्षा के विचार से मैंने उसको दबवत कर दी।

“यह क्या है?” उसने उत्तरी साम्राज्य की भाषा में पूछा : “क्या यह लड़का बीमार है?”

अपनी हरकत पर लजाते हुए और अपने-आपको अत्यन्त मूर्ख समझते हुए मैं उठ खड़ा हुआ। और फिर मैंने साधारणतया उसका अभिवादन करते हुए कहा : “यदि तुम डाकू हो तो हमारे पास से तुम्हें कुछ भी नहीं मिलेगा। यहाँ एक युवक बीमार है और यदि तुम सहायता करोगे तो देवता तुम्हारा भला करेंगे।”

वह बाज की भाँति तीखी आवाज में चिल्लाया और आकाश से वह पक्षी उतरकर उसके कंधे पर आ बैठा। वह गर्व से बोला :

“मैं बाज का बेटा होरेमहैव हूँ” खरकर गभीर स्वर से वह फिर कहने लगा : “मेरे माता-पिता साधारण मिठाई बनाने वाले हैं परन्तु मेरे जन्म पर ज्योतिषियों ने कहा था कि मैं बहुतो पर हुकूमत करूँगा। बाज मेरे आगे-आगे उड़ा और मैंने उसका अनुसरण किया। रात्रि में मुझे नगर में कोई स्थान रुकने को नहीं मिला क्योंकि धीवीज अधकार होने पर भातों से डरता है। परन्तु मैं फराऊन के यहाँ सैनिक बनना चाहता हूँ। लोग कहते हैं कि वह बीमार है। अतएव उसे निश्चय ही अपना साम्राज्य कायम रखने के लिए खलिष्ठ भुजाओं की आवश्यकता पड़ेगी।”

मैंने युवराज के मुँह से वह वपड़ा निकाल दिया और मैं चाहता था कि यदि जल मिल जाता तो मैं उसे होश में ला सकता, कि उसने कराहा।

“क्या यह मर रहा है?” होरेमहैव ने पूछा।

“नहीं, इसपर पवित्र रोग चढ़ गया है... देवी शक्ति का प्रकोप है।”

होरेमहैव ने अपना भाला मजबूती से पकड़कर मुझसे कहा :

“मुझसे घृणा करने की आवश्यकता नहीं है, केवल इसलिए कि मैं नगे चरू हूँ और गरीब हूँ। मैं वैसे कामचलाऊ तौर पर लिख-पढ़ भी सकता हूँ। मैं कद्यों पर हुकूमत करने के योग्य हूँ।... किस देवता का असर है इस पर?”

सोच समझते थे कि देवता मनुष्य के शरीर में बैठकर बोल्ते थे।

मैंने कहा : "इसका अपना अलग देवता है...मेरा विचार है कि इसके दिमाग में कुछ विचित्रता है।"

"यह ठंडा पड़ रहा है," कहते हुए उसने अपना उत्तरीय उतारकर युवराज को उड़ा दिया। फिर बोला : "पीपील की धोर ठंडी होती है...और फिर यह तो गोरा है...अवश्य ही किसी धनी का पुत्र है। यह नाबुक है। मैं तो होरस का पुत्र हूँ। मेरा रक्त गर्म है। मैं तो कठिनाई और ठंड सब झेल सकता हूँ।...और तुम कौन हो?"

"बैस पीपील में अम्मन के मंदिर का प्रथम श्रेणी का पुजारी।" मैंने कहा। तभी युवराज उठ बैठा। घबराकर उसने चारों ओर देखा फिर कराहकर बोलने लगा। उसके दाँत लज रहे थे : "मैंने उसे देख लिया। वह अपने सहस्रो हाथों से मेरी रक्षा करने लगा था...क्या अब भी मैं उस पर अविश्वास करूँ?" फिर होरेमहैब को देखकर उसकी मुस मुन्दर और उद्दीप्त हो उठा। उसने पूछा : "क्या तुम्हीं को एटोन ने भेजा है?"

"बाद उड़ा और मैंने उसका पीछा किया और मैं यहाँ आ गया इससे अधिक और मैं कुछ भी नहीं जानता।"

युवराज ने उसके भाते को देखकर भीं सिकोड़कर डाँटते हुए कहा : "तुम भाला लेकर चलते हो?"

होरेमहैब ने उसे आगे कर दिया और उत्तर दिया :

"बेहतरोन लकड़ी का इसका डंडा है...इसका तात्पर्य फल फराऊन शत्रुओं के रक्त का प्यासा है। यह प्यासा है और इसका नाम 'विदीर्णक' है।"

"नहीं-नहीं" युवराज ने जोर देकर कहा : "एटोन के साम्राज्य में यह बहाना सबसे बड़ा अपराध है...रक्तपात धूषित कार्य है!"

"रक्त मनुष्यों को शुद्ध करता है और उन्हें शक्ति प्रदान करता है। इससे देवता मोटे होते हैं। जब तक युद्ध होने रहेंगे तब तक यह होगा।"

"युद्ध अब कभी न होंगे।" युवराज ने आज्ञा दी और होरेमहैब मुँह कर हँसा।

बोला 'सड़का पागल है। युद्ध सदा से होने आये हैं और सदा होंगे; क्योंकि यदि साम्राज्यों को जीवित रहना है तो शक्ति की परख का

होगी ही।”

“सब लोग उमी की सन्तान है—काले-गोरे सब—समाम भापाएँ, बानी भूमि और सान भूमि सब उसी की है” युवराज सीधा सूर्य की ओर देख रहा था। मैं हर देश में उसके सम्मान में उसका एक मंदिर बनवाऊँगा और वहाँ के शासकों के पास नये जीवन का एक चिह्न भेजूँगा।... क्योंकि मैंने उसे देण लिया है... उमी मे मे मैं पैदा हुआ हूँ और उमी के पास मैं नोट जाऊँगा।”

“यह पागल भगना है,” होरेमदैय ने मुझसे कहा “इसे वैद्य की आवश्यकता है।”

देर तक युवराज सूर्य को देखता रहा। आखिरकार हम उसे नगर की ओर लाने लगे। खेतों के आगे हमने देखा कि एक मोटा-ताड़ा गुन्दर मुन बाना और घुटे मिर बाना। युवराज गँवनों और दामों सहित वहाँ प्रतीक्षा कर रहा था। वह आइं था। जब उसने घुटनों के सामने हाथ फैलाकर युवराज का अभिवादन किया तो बान गाफ हो गई कि एमेनहोटा गुनीय मर चुका था और वह नये फराऊन का अभिवादन कर रहा था। शीघ्र ही नये फराऊन को शुद्ध किया गया और उसके अग में सुगंधित रेशम बना गया फिर राजसी महीन वस्त्र पहनाये गए और मिर पर राजमुकुट रण दिया गया। नये फराऊन को राजसी कुर्सी पर बिठाये अगनिन दाग उठाये सुवर्ण-गृह की ओर लाने दिये।

राजमण्डल में लाहौर आरकन नेत्रों में चिड़चिड़ा होकर बैठी प्रतीक्षा कर रहा था। मुझे हमने ही बड़ बरम पड़ा “तुम फराऊन की मृत्यु के समय न जान बूझी जाते गए थे और इतर में भी तुम्हारी मीठा के पास नहीं रह सका। फराऊन की अन्त्या बिड़िया का अग मेहर तुम्हारी माक म मे बिड़िया और मीठी सूर्य की ओर उड़कर उमने मया गई।”

मैंने उसे सारी बातें बताईं। मुनकर बड़ आश्चर्य बिड़िन हाकर बोला “अम्बर क्या करे ! सब जो मया फराऊन बाबाय है !”

और वह बिड़िया बोले लख ।

थोड़ी देर बाद हमें सैनिक एक दरे में ले गए जहाँ हमें मरना था। राजमुहर रखने वाले उच्चाधिकारी ने चर्म-पत्र खोलकर राजाज्ञा प्लाहीर को दिखाई जिसे देखकर वह मुस्करा दिया। मैं भय-मिश्रित आश्चर्य में डूबा हुआ था।

“सबसे पहले खून रोकने वाले को जाने दो !” प्लाहीर ने कहा।

वधिक ने खड्ग उठाया, हवा में घुमाया और घुटनों के बल बैठे हुए उस व्यक्ति की गर्दन तक खड्ग को लाकर रोक दिया। बहुत ही हल्का स्पर्श हुआ। वह व्यक्ति लुढ़ककर गिर गया। दूसरी बायीं मेरी थी। प्लाहीर ने खड़े ही खड़े मरना स्वीकार कर लिया। और हम विधि और नियमों के अनुसार मर गए थे। फिर हमें नये नाम मिल गए। अब हम अपने पुराने नाम काम में नहीं ला सकते थे। हमें भारी सोने की अँगूठियों पर अपने नये नाम खुदे मिले। प्लाहीर की अँगूठी में खुदा था “वह जो बंदर जैसा है” मेरी में लिखा था “वह जो एकाकी है।” हमें सुवर्ण तोलकर इनाम में दिया गया और नये राजसी वस्त्र पहनाये गए। मैंने अपने जीवन में पहली बार कलफ किये हुए राजसी वस्त्र पहने थे जिनमें गले के चारों ओर के पट्टे में चाँदी भड़ी थी और जिसमें भूल्यवान पत्थर जड़े हुए थे। जब चौकरी ने उस रक्त रोकने वाले को उठाया तो देखा कि वह मुर्दा हो गया था। शायद घबराकर ही वह मर गया था।

दरबार में अब मेरा नाम “सिन्दूदे जो एकाकी है” हो गया था।

जब मैं उन वस्त्रों को और आभूषणों को पहनकर जीवन-मूह गया तो मेरे अध्यापकों ने झुककर मेरा अभिवादन किया। फिर भी मैं छात्र ही माना गया और कुराऊन की मृत्यु का पूरा विवरण मुझे ही लिखना पड़ा, जिसके अन्त में उसके प्राणों को मैंने प्लाहीर के बड़े अनुसार बिड़िया बनाकर नाक से निकालकर सूर्य की ओर उड़ा दिया था। यह वृत्तांत पूरे सत्तर दिनों तक, जब तक कि उसका शरीर मगाले लगाकर अमरता के लिए तैयार किया जाना रहा, प्रजा के बीच पड़कर सुनाया गया और इस पूरे समय बीचोबीच के बाजार बंद रहे और इस बीच मंदिर

प्राप्त करने तथा बेश्याओं के पास जाने के लिए पिछले द्वार चुपचाप खुले रहते थे।

शीवीज-ज्वर मुझ पर जोरों से चढ़ा हुआ था। मैं घन और यज्ञ प्राप्त करना चाहता था। मैंने उस सोने से एक मकान और एक काना दास खरीदा। मकान नये अच्छे मकानों वाली सड़क पर था और उसे मैंने जितना मुझसे हो सका उतना सजाया। काने दास का नाम कप्ताह था। उसका कहना था कि उसकी कान्नी आँख मेरी बहुत मदद करेगी। वह लोगों से कहेगा कि पहले वह बिल्कुल अंधा था और कि उसे मैंने इलाज के द्वारा एक आँख दे दी थी। स्वागत-कक्ष की भीतों पर मैंने अपने मित्र टोथमीज से चित्र लिचवाये थे हालाँकि वह प्लाह के मंदिर की किताब में लिखे कलाकारों में से एक नहीं था। एक चित्र में बुद्धिमान इन्होटप—जो बैलों का देवता था—मुझे सीख दे रहा था। उसका चित्र बड़ा था और मेरा उससे बहुत छोटा जैसा कि उन दिनों चित्रकारी का नियम था। चित्र के नीचे लिखा था :

“तुम्हारे शिष्यों में से सबसे अधिक बुद्धिमान और चतुर सिन्धूहे है। सैन्मट का बेटा, वह जो एकाकी है।”

एक और चित्र में मैं अम्भन के सम्मुख बलि दे रहा था। इसे देखकर मेरे रोगी लोगों का विश्वास मुझमें बढ़ता था। तीसरे चित्र में फ़राऊन महान् स्वर्ग से मुझे चिड़िया बनकर देख रहा था और उसके अनुचर लोग मुझे सुवर्ण तौलकर दे रहे थे तथा मुझे राजसी वस्त्रों से सजा रहे थे।

उसी शाम हम दोनों मित्र एक मंदिरालय में बैठे मदिरा पीकर आनंद ले रहे थे और नाचती हुई युवतियों के यौवन को देख रहे थे। अभी तक मेरे पास फ़राऊन का दिया हुआ सोना बच रहा था।

राजा की मुहर रखने वाले बूढ़े ने जैसा कहा था ठीक वैसा ही हुआ। जब फ़राऊन का शरीर सम्राटों की घाटी में रख दिया गया और बर्र के द्वार पर मुहर लगा दी गई तो राजमाता सिहामन पर बैठी और उसने अपने हाथों में राजदंड और बाज्र ले लिया। उसकी ठोड़ी पर राज्य की दाढ़ी बँधी रहती और कमर से मिह की दुम बँधी सटका करती थी। सुब-राज अभी सिंहासन पर नहीं बैठा था। उसका कहना था कि उसे अभी

अपने-आपको पवित्र करना था। राजमाता ने सिंहासन पर बैठने के बाद ही बुद्ध राजमुहर रखने वाले को हटा दिया और उसके स्थान पर 'आई' को नियुक्त कर दिया। वह जो साधारण पुजारी था अब सम्पूर्ण कैम के देश में सबसे बड़ा पदाधिकारी बन गया। अम्मन के मंदिर में अमन्तोष की महूर ढीढ़ गई। अब वह भक्तियों की सी उस निरन्तर भनमनाहट से गुँज उठा। और तब राज-बलियो में और स्वप्नों में पुजारियों को अपगकुन दिखाई पड़ने लग गए। कभी नगर के बाहर के तालाबों का जल रक्वमय हो जाना तो कभी अकाल वर्षा होनी।

परन्तु सैन्य बलों में कैम के लोग, सीरिया के लोग हूम्मी और सरदारान लोग खुश थे क्योंकि साम्राज्ञी ने उन्हें बहुमूल्य उपहार व इनाम बँटवाए थे। कैम के देश की शक्ति अद्वितीय थी। सीरिया में—मिस्री सेना ने, वहाँ घाक जमा रखी थी। और बेबीलोन; स्मर्ना, सिडोन और गाडा के शासक लोगों ने, जो छुटपन में फराऊन के चरणों में सुवर्ण-गूह में ही पले थे, मातम मनाया जैसे फराऊन उनका अपना ही पिता था और साम्राज्ञी को उन्होंने पत्र लिखे जिनमें यह ऐनान किया कि वे उसके (रानी के) चरणों की धूमि के बराबर भी नहीं थे।

मितन्नी के शासक ने महारानी से अपनी पुत्री तादू सीया को बहु-मूल्य रत्नाभूषणों तथा अनेकानेक दासों के साथ मये फराऊन की सेवा में भेज दिया कि वह उसे विवाह में स्वीकार करे। वह उस समय केवल छ साल की बच्ची थी। फुरराऊ ने उससे विवाह कर लिया क्योंकि सीरिया और उसकी साम्राज्य के बीच मितन्नी का राज्य एक भोन की भूमि था वहाँ से होकर कारवान समुद्र तट तक पहुँच पाते थे।

अम्मन की दैवी पुत्री सैलमट के मंदिर में उत्सव बन्द हो गए थे और उसके मंदिर के दीर्घ द्वारों की खुर्शों पर जग बड़ गया था।

इन्हीं सब दिनों पर, टोबिमीड और मैं बैठे-बैठे बातें कर रहे थे और परिगपान करते पाते थे। जित्त मोर में मेरा बाना दास मुझे नमक लगी बछनी लाने को देता और विमास भरकर हल्की मदिरा विमाठा—किर भूह-हाथ छोकर मैं मरीचों की बाट बोहता रहता।

बाइ का समय था। नदी का जल ऊपर उठकर मन्दिर के प्राकार में जा लगा था। एक दिन हठान् मेरे पाग होरेमहैब आया। वह राजमी महीन वस्त्र पहने था और उगके गने में गाने की ज़ज़ीर मटक रही थी। अब वह फराऊन के यहाँ एक पदाधिकारी हो गया था। उसके हाथ में उसके पद का प्रतीक—एक धाबुक थी। अब वह भाला नहीं रखता था। वह मौर्य में देवतुल्य लग रहा था।

उसने मुझे बातों ही बातों में बतलाया कि वह पदाधिकारी बन जाने पर भी दुःखी था। उसने कहा : “यीवीज में पौरय का कोई मूल्य नहीं है। मेरे साथ के पदाधिकारी केवल दम-दम सास के सहारे हैं। केवल वह उच्च वंश और बड़े सामन्तों के पुत्र हैं। दरबार की स्त्रियाँ अब उन पुरखों को पसन्द करती हैं जो उन्हीं की भाँति कोमल और भीरु होते हैं। वह चाँदी-सोने की छोटी-छोटी-सी तलवारों को खिलौने की भाँति पकड़ते हैं। सैनिकों में अनुशासन नहीं है। वह मदिरा पीकर राजघराने की दासियों के साथ पड़े रहते हैं। शत्रु के रक्त की प्यास तो जैसे किसी में है ही नहीं। ...सोने की ज़ज़ीरें इनाम में मिलती हैं। क्या भड़ा है इन्हें पहनने में जब तक यह शत्रु को मारकर न प्राप्त की जायें। साम्राज्यी मुँह पर दाढ़ी बाँधकर राज चलाती है। परन्तु भला एक योद्धा किस प्रकार एक स्त्री को अपना नायक मान सकता है...”

वह कहता रहा : “मेरे बाप की शपथ ! सैनिक तो मुझ-भूमि में बनता है और कहीं नहीं...मेरे पौरय को देखो। मैं दो जवानों को भीचकर मार सकता हूँ...परन्तु स्त्रियाँ मुझसे दूर रहती हैं। उन्हें बिना छाती पर वालों वाले मुक्क पसन्द हैं जो मुँह, होंठ और गाल स्त्रियों की भाँति ही रंगते हैं। ...सिग्यूहे ! तुम एकाकी हो, मैं भी एकाकी ही हूँ। यह मैं जानता हूँ कि मैं शासन करने के लिए पैदा हुआ हूँ और कि दोनों साम्राज्यों को एक दिन मेरी आवश्यकता पड़ेगी, फिर भी मेरी यहाँ रुकने की अब इच्छा नहीं होती...यीवीज से मुझे घृणा है...यहाँ की मस्त्रियाँ मुझे परेशान करती हैं।”

फिर उसने बहुत धुमा-फिराकर यह बतलाया कि वह सुवर्णमूह में एक स्त्री से प्रेम करने लगा था, परन्तु वह भी कि उसकी ओर कभी देखती

भी न थी।

“कौन है वह ?” मैंने साधारणतया पूछा।

वह धीरे से बोला, “वह एक पवित्र कुमारी है... रासजी वस्त्रों से आच्छादित बहुमूल्य रत्नजडित आभूषणों को पहनने वाली... फराऊन की वहिन बंकेटा मोल !”

मुझे ही मेरे पैरों के नीचे की धरती सरक गई। भुके हौरेमहेब का सिर उसके घड़ से अलग प्रतीत होने लगा, फिर मैंने कहा, “मित्र हौरेमहेब! थोड़ीज छोड़ जाओ, तुम्हारे लिए यही भला है। कोई भी मानव उस देवी को छूने का भी साहस नहीं कर सकता। आगसेनखेलो... उसे भूल जाओ; वह तुम्हारी पकड़ से बहुत आगे है। सावधान ! यदि वह कभी विवाह करेगी भी तो अपने भाई फराऊन से ही करेगी क्योंकि उसके अतिरिक्त उसके योग्य वर और है ही कहाँ ?”

सायंकाल को उसने मुझे रंगशाला चलने को मजबूर किया। कप्ताह हमारे लिए एक कुर्सी ले आया। बास्त के मन्दिर के पास जब हम उतरकर एक मशालो से उद्दीप्त, घर में, घुसने लगे, तो कुर्सी वालों ने अधिक किराया पाने के लिए शगडना शुरू किया। परन्तु जब हौरेमहेब ने उन पर चाबुक फटकारा तो सब भाग गए।

जब हम अन्दर घुसे तो जो स्त्री हमारा स्वागत करने की आगे आई, उस पर मेरी निगाहें ठहरी की ठहरी रह गई। वह राजसी झीने वस्त्र पहने हुई थी, जिनमें से उसकी बांहें किसी देवी की भुजाओं की भाँति दमक रही थीं। उसके सिर पर नीली कृत्रिम केश-राशि थी और वह बहुत-से मानिक जड़े स्वर्णमूयण पहने हुई थी। उसकी आँखों के नीचे हरा रंग लगा था परन्तु सब हरे रंगों से भी गहरी हरी उसकी आँखें थीं जैसे प्रीष्म अस्तु में नील का जल हो जाता है। मेरा हृदय उसी में खो गया क्योंकि वह मेरी वही नेफर नेफर नेफर थी जो मुझे एक बार अम्मन के विशाल मन्दिर के एक प्राकार में मिली थी। उसने मुझे नहीं पहचाना। वह हौरेमहेब की देखकर मुस्कराई, जिसने अपने पद का चाबुक उठाकर उसे उत्तर दिया। वहाँ खीट का कपना भी मिल गया जो दौड़कर हौरेमहेब से लिपट गया और उसने उसे मित्र बहकर सम्बोधित किया।

किसी ने भी मेरी परवाह नहीं की और मैं आराम से अपनी बहन को देखा किया। वह पहले से बड़ी हो गई थी। उसके नेत्रों में वह चमक नहीं थी। नेत्र मानो दोहरे पत्थर के टुकड़े थे, वह हौरमहेब के गले की जंजीर पर टिके हुए थे। उसके होंठ मुस्करा रहे थे।

सौरिया का तेज संगीत जारी था। वाद्य इतनी जोर से बजाये जा रहे थे कि वहाँ संभाषण करना भी कठिन हो रहा था। साथ ही वहाँ हल्ला-गुल्ला, अट्टहास, मदिरा के पात्र उड़ेलना, फूल फेंकना इत्यादिबुरी तरह चल रहा था। यह प्रत्यक्ष था कि वहाँ लोग देर से मदिरा पी रहे थे क्योंकि एक स्त्री ने वहाँ के कर दी थी। दास ने उसे पात्र बहुत देर में दिया था और उसने अपने वस्त्र बिगाड़ लिये थे। लोग हँस रहे थे।

ब्रीट के कपना ने मेरा आतिथ्य कर लिया और मेरे मुँह पर अपना रंग लगा दिया और फिर वह मुझे मित्र कहने लगा।

नेफ़र नेफ़र नेफ़र ने मेरी ओर देखकर कहा, “सिन्धूहे ! हाँ... मैं किसी समय एक सिन्धूहे को जानती थी... वह भी बँध होने वाला था... उन दिनों पड़ रहा था।”

“मैं वही सिन्धूहे हूँ” मैंने उसकी आँखों में दृष्टि गड़ाकर कांपते हुए कहा।

“नहीं... नहीं, तुम वह सिन्धूहे नहीं हो।” वह सिर हिलाकर बोली, “वह सिन्धूहे तो हिरनी की सी आँखों वाला सड़का था और तुम तो अन्य पुरषों की भाँति ही एक हो। तुम्हारी भौंहों के बीच दो सफ़े बन् हैं—उस सिन्धूहे के समान तुम्हारा मुख स्थिग्ध भी नहीं है।”

मैंने जब उसे उसकी ही हुई अँगूठी दिखाकर विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया तो वह सिर हिलाकर तनिक परेशानी की सी मुद्रा बनाती हुई बोली, “तब तो मैं किसी डाकू का स्वागत कर रही हूँ जिसने मेरे उस प्यारे सिन्धूहे की हत्या करके उसकी अँगूठी और उसका नाम भी चुरा लिया है।” उसने हाथ उठा दिये जैसे वह दुस्मित्र हो गई थी। मैंने उसकी अँगूठी उतारकर उसकी ओर बढ़ा दी और बाउर स्वर में कहा, “तो तुम अपनी अँगूठी वापस ले लो... मैं चला जाऊँगा और तुम्हें फिर कभी परेशान नहीं करूँगा।”

परन्तु उसने अपना हाथ मेरी बांह पर हल्के से रखकर कहा, "जाओ मत...जाओ मत !"

और मैं रुक गया। दास मदिरा पिलाने लगे। मुझे उस समय जो रुचि मदिरा में लगी, कभी न लगी थी।

जो स्त्री कैं से बिगड़ गई थी उसने मदिरा से कुत्सा किया और मदिरा पी, फिर उसने अपने तमाम बिगड़े हुए कपड़े उतार फेंके। अब वह पूर्णतया नग्न हो गई। अपने हाथोंसे उसने स्तनों को बगलों से भीचकर मिला लिया और दासों से कहा कि बीच, उनके बीच में धे मदिरा डालें। फिर उसने हर किसी को उस स्तनों के गड्ढे मेंसे मदिरा पीने की छुट्टी दे दी। फिर वह नगी ही उस कक्ष में खोर-खोर से हँसती हुई खुदकने लगी। यौवन, सौन्दर्य और मदहोशी बिखेरती हुई उस स्त्री ने स्तनों के बीच मदिरा भरकर हौरेमहेव के मुँह के पाम स्तनों का वह कटोरा लगा दिया। उसने सिर झुकाया और उस मदिरा को पी लिया। फिर उसने उन्मत्त होकर उस नग्न स्त्री को भुजाओं में लिपटा लिया। सब हँसने लगे और वह स्त्री स्वयं भी हँसने लगी। मीरिया के वाद्य तीखी ध्वनि फैलाते हुए बज रहे थे।

"क्या यह तुम्हारा घर है ?" मैंने अपने पास बैठी हुई नैफर नैफर नैफर से पूछा।

"हाँ...और यह सब मेरे अतिथि हैं। रोड शाम मेरे पास अतिथि आते हैं क्योंकि मैं अकेली रहना पसन्द नहीं करती।"

"और मितूफर ?" मैंने पूछा।

उसने जैसे स्मृति को दौड़ाया फिर बोली, "हाँ...मितूफर ! वह तो मर गया.. वह कराऊन का घन चुराकर भागा...इसलिए मारा गया... उसका पिता भी अब राजा का काशीगर नहीं रहा है।"

"तब तो उसे अम्मन ने पूरा दण्ड दिया।" मैंने हँसकर कहा और फिर उसे वह सारी कथा वह सुनाई जब मितूफर और उस पुजारी ने अम्मन की प्रतिमा पर वह एक राइडकर उसका मुगधित तबिय तैज अपने सिरों पर चेंडेन लिया था। वह मुस्कराई पर उसकी आँखों में एक कठोर और जैसे

बहुत दूर किसी बम्बु को देखने वाली दृष्टि थी। फटाफट मुँह मुँह मुँह बोली, "तब जब मैंने तुम्हें बुलाया था तुम क्यों नहीं आते वे मिन्यूटे? अगर तब तुम मुझे ईशने तो अवश्य पाते। तुमने मेरे पाग न आकर और मेरी अँगूठी पहनकर अन्य स्त्रियों के पाग आकर अच्छा नहीं किया।"

"तब मैं मरवा ही तो था और तुमने इन्ना था—परन्तु मेरे स्वप्नों में तुम मेरी बहन थी। नेकर नेकर नेकर, और बाहे तुम मुझपर हँस सो परन्तु अभी तब मैं किसी स्त्री के गपक में नहीं आया हूँ। मैं तो तुम्हें ही पाने की प्रतीक्षा देना रहा था।"

वह मुनकर मुँहहीमी। फिर अविश्राम से फिर हिलाने हुए बोली, "तुम निश्चय ही झूठ बोल रहे हो। तुम्हारी निगाहों में मैं बुझी और कुत्त सग रही हूँ तभी मेरा उपहास कर रहे हो।" उसकी आँखों में अब वही चमक आ गई थी जो पहले उस दिन मन्दिर में थी, और अब वह अपनी आयु से इतनी छोटी लग रही थी कि मेरा हृदय उसे देखकर फूट उठा और दर्द करने लगा।

"यह तो सत्य है कि मैंने आज तक किसी स्त्री को नहीं छुआ," मैंने कहा, "और यह झूठ हो सकता है कि मैंने तुम्हारी प्रतीक्षा की है। मेरे समक्ष हर तरह की अनेकानेक युवतियाँ और तरुणियाँ आई हैं। मैंने उन्हें नम्रतावस्था में भी देखा है परन्तु उन्हें देखकर कभी मेरे मन में हूक नहीं उठी क्योंकि वह रोमिणी होती और मैं वैद्य। आज मेरा हृदय अत्यंत प्रसन्न है... मैं कह नहीं कह सकता कि ऐसा क्यों है।"

"मुनकर हँसी आती है।" वह सहज स्वर से बोली फिर मुँह बनाकर बोली, "वह शायद इसलिए कि तुम छुटपन में किसी गाड़ी से सिर के बल गिर गए होगे।" और वह हँस दी और उसने मुझे अपनी कोमल उँगलियों से छू दिया। मेरे शरीर में सनसनी दोड़ गई क्योंकि मुझे अभी तक किसीने इस तरह छुआ ही नहीं था। और फिर उसके कहने पर हम मदिरा पीने लगे। देर तक हम पीने रहे। दासों ने अब नशे में चूर उन अतिथियों को उठा-उठाकर उनकी कुर्सियों पर रख दिया जहाँ से कुर्सी वाले दास उन्हें उठाकर ले गए। हीरेमहेब ने उस युवती के गले में हाथ डाल दिए और उसे अपनी सोने की जंजीर पहनानी चाही, तो वह बनावटी क्रोध दिखाकर

बोली, “मैं एक शरीफ औरत हूँ कोई वेश्या थोड़े ही हूँ ?” और वह उठकर जैसे उसका अपमान हो गया हो, द्वार की ओर चली, बिघर और कक्ष थे। परन्तु द्वार पर पहुँचकर उसने मुड़कर हीरेमहेब को इशारे से बुलाया और वह उठकर उसके पीछे चला गया।

जो चाकी के लोग अब भी पी रहे थे, दोनों हाथों से सुवर्ण बिखेर रहे थे। वह कभी एक-दूसरे को भिन्न कहते तो कभी लड़ते और चिल्लाने लगते थे। नशर मुझपर भी पूरा चढ़ चुका था। मदिरा का कम और नेफर नेफर नेफर की निकटता का अधिक। मैं उसे चिपटा लेना चाहता था। परन्तु उसने कहा, “अभी नहीं, अभी नौकर-चाकर सब देख रहे हैं... मैं अकेली रहती अवश्य हूँ परन्तु घृणा के योग्य नहीं हूँ।”

वह मुझे अपने उद्यान में ले गई जहाँ कुड में स्वच्छ जल भरा था। फूल खिले हुए थे और कमल जल में लहरा रहे थे। दासों ने हमारे हाथ धुलाये और हमारे लिए भुनी हुई बत्तख और शहद में डूबे फल काट कर लाये।

रात्रि के अवसान में जब मेरी उत्तेजना बहुत बढ़ गई तो उसने अपने सम्पूर्ण वस्त्र उतारकर मुझे अपने पास अपनी आवनुस और हाथीदाँत की बनी शय्या पर घसीट लिया। जब मैं वहाँ से धर लौटा तो मेरे रोम-रोम में नेफर नेफर नेफर समाई हुई थी। उसने मुझसे अपने यौवन का कुछ भी मूल्य नहीं माँगा था।

दूसरे दिन सुबह ही मैंने कप्ताह से कहा कि वह तमाम मरीजों को भगा दे। नाई बुलाकर मैंने हजामत कराई फिर नहाकर सुगंधित तैलों से मालिश कराई और वस्त्र पहनकर एक कुर्सी में बैठी। कप्ताह चितित होकर मेरी ओर देखने लगा क्योंकि कभी दोपहर पहले ओर काम छोड़कर मैं घर के बाहर नहीं निकलता था। और मुझे जल्दी पड़ रही थी कि मेरे वस्त्र और पैर धूल में न हो जाएँ और मैं, स्वच्छ, उसी हालत में, नेफर नेफर नेफर के पास पहुँच जाना चाहता था।

जब मुझे एक दास उस सुंदरी के पास ले गया तो उस समय वह दर्पण

के सम्मुख बैठकर शृंगार कर रही थी। उसने मेरी ओर कड़ी और विमुख दृष्टि से देखकर पूछा !

‘तुम क्या चाहते हो सिन्यूहे ? तुम तो मुझे परेशान करते हो।’

“तुम तो जानती ही हो मैं क्या चाहता हूँ।” मैंने कहा और उसे भुजाओं में लपेट लेना चाहा, परन्तु उसने मुझे रखाई से रोक दिया। वह गम्भीर स्वर से बोली, “यह क्या भ्रूषता है कि इस समय आये हो ! सिडौन से एक व्यापारी आया है। उसके पास एक मणि है जो कभी किसी रानी की थी। माथे पर लटकाने की है वह, और कब्र में से निकाली गई है। मैंने हमेशा से चाहा है कि मुझे एक ऐसा रत्न मिले, जैसा किसी और के पास न हो। अतएव मैं शृंगार कर रही हूँ कि मैं अधिक से अधिक सुन्दर लगूँ। और मेरे अनुचर मेरे अंग-अंग में सुगन्धित तैल लगायेंगे।”

उसका आशय था कि मैं चला जाऊँ परन्तु जब मैं नहीं उठा तो उसने बिना किसी हिचकिचाहट या लज्जा के अपने सारे वस्त्र उतार दिये और वह नग्न होकर शय्या पर सीधी लेट गई। एक दासी युवती उसके हाथ-पैरों में तैल लगाने लगी। उसे देखकर मेरा हृदय मेरे कंठ में आ गया और उस नग्न सौन्दर्य को देखकर मेरे हाथ पसीज उठे।

मुझ पर मदहोशी-सी छाने लगी और मैं उस पर सपका पर उमने डाँटकर मुझे ऐसे रोक दिया कि मैं खड़ा का खड़ा रह गया, और भूख खड़ा हुआ और वहाँ से सगा। मेरी हूक बढ़ती जा रही थी। अन्त में मैंने कहा : “अगर मैं तुम्हारे लिए यह रत्न खरीद सकता तो अवश्य खरीद देता... तुम यह बात जानती हो... परन्तु तुम्हारे शरीर को कोई और मेरे रहते नहीं छू सकता... अन्यथा मैं मर जाऊँगा।”

“ओह !” वह आगे नेत्र मूंदे बोली, “तो तुम किसी को मेरा शरीर छूने की आज्ञा नहीं दे सकते ? और अगर आज का दिन मैं तुम्हीं को दे दूँ, अर्थात् तुम्हारे ही साथ खाऊँ-पिऊँ, सेलूँ और आनन्द भोगूँ, क्योंकि वह जो मला बौन जाने क्या होगा। तो तुम मुझे क्या दोगे ?”

उसने अपना नग्न शरीर शय्या पर फैला दिया जिसमें उगने गेट में गड़ड़ा पड़ गया और मग्न उभर उठे। उसके मागूर्म शरीर और मिर पर एक भी बाध नहीं था। मैंने अचल नेत्रों से उसे देखते हुए कहा :

“तुम्हें देने के लिए सबकुछ ही मेरे पास कुछ नहीं है,” फिर मैं भूमि की ओर देखने लगा। फर्श धारीदार सगमरमर का बना हुआ था जिसमें स्थान-स्थान पर रत्न जड़े थे और कई सोने के प्याले इधर-उधर रखे थे। मैंने फिर कहा : “मेरे पास तुम्हें देने के लिए निश्चय ही कुछ नहीं है।” और मैं घूमकर बाहर जाने की मुड़ा परन्तु तभी उसने मुझे रोककर नम्र स्वर में कहा : “सित्यूहे ! मुझे तुम्हारे लिए दुःख है।” यह कहकर उसने अपना शरीर फिर फैला दिया; फिर कहा : “तुम्हारे पास जो कुछ देने योग्य था वह तुम मुझे पहले ही दे चुके हो...वैसे मेरे विचार से उसका इतना मूल्य नहीं है जितना तुमने उसे समझ रखा हो। लेकिन तुम बिल्कुल ही गरीब तो नहीं हो। तुम्हारे पास मकान है, बपड़े हैं और बैलों के लिए जरूरी तमाम आगुध हैं।”

फिर से धीरे तक काँपकर मैंने उत्तर दिया : “वह सब तुम्हारा है नेफर नेफर नेफर ! यदि तुम चाहो। मकान वैसे कम कीमत का अवश्य है पर जीवन-गृह से निबले हुए किसी भी वंश के लिए वह सब तरह से पूर्ण है यदि वह उसे सहीद सके तो।”

“अच्छा !” उसने कहा और वह उल्टी हो गई और दर्पण में अपने सौंदर्य को देखकर अपनी लंबी जैंगलियों को अपनी भौंहों पर फेरने लगी। फिर बोली : “अच्छा तो तुम इस जायदाद को मेरे नाम कर दो। प्रमाण-पत्र किसी लेखक से लिखाकर ले आओ। मैं अकेली रहती अवश्य हूँ परन्तु पृथा की पाली नहीं हूँ। मुझे भविष्य के उस समय के लिए अभी से प्रबन्ध कर लेना है जब तुम सित्यूहे मुझे बुझिया समझकर दुत्कार दोगे।”

मैंने उसके मन सौन्दर्य को देखा। मेरे मुँह में मेरी जिह्वा जैसे छोट्टी हो गई थी और हृदय इतनी जोर से धड़कने लगा कि मैं तीव्र मुड़कर बाहर चला आया। मैंने एक न्याय के ज्ञाता लेखक में जागृता तैयार कराने और उन पर राजसी मुहर लगवाकर जब मैं जागृता लेखक सीटा तो नेफर नेफर नेफर बस्तादिक पहनकर तैयार हो गई थी। वह अग पर राजसी शोने बस्त पहने थी और गिर पर उसने मुनहरी सात इत्रिम के-पाणि पहनी थी। पीथा, बस्तादिया, टखने इत्यादि बहुमूल्य रत्नामरनों से सजे थे। द्वार पर एक सुन्दर नकशागी बानी कुर्मी जायद उगी थी

प्रीति में गरी भी ।

उगे वह बाग़ देखा मैंने कहा "ओ कुछ मेरा या अब तुम्हारा हो गया है नेत्र मेरा मेकर । अब आओ हम आनन्द भोगें गायें-सीनें, खेनें . . . क्योंकि वन की रिमनें खानी है ।"

उगने वह बाग़ गायरवाही के साथ मेहर एक आबनूग की मंदूफ़ी में डाल दिया और कहा "मुझे मोद है मिन्यूटे पर आत्र अभी थोड़ी देर पहले में मुझे मामिक पमं शुरू हो गया है आएव हम समय मैं कुछ नहीं कर सकती । जब मैं गुड हो आईगी तब समय निरिपन करेंगे... किसी और दिन आना और तब तुम्हारी इच्छा पूरी की जाएगी ।"

मैंने मृत्यु की विभीषिका मोने में दबाये उसे देगा और बोन न सका । उमने जल्दी में पैर पटकने हुए कहा "अब जाओ... मुझे जन्दी है ।"

जब मैंने उगे छूना चाहा तो वह निनकर मुंह बिगाड़कर बोली : "मेरे मुग पर के रंगों को खराब मत करो ।"

मैं घर चला आया । आज मैं सब कुछ हार चुका था, फिर भी उम नागिन की ओर खिंचा चला जा रहा था । मैंने अपने मामानो को ठीक करके रखा कि वह सब नये मालिक के काम आ सकें । मेरा काना दास मुंह बाये यह सब देख रहा था । मैंने उससे कहा : "मेरे पीछे-पीछे मत घूमो ... अब अपने नये मालिक की सेवा करना क्योंकि यह मकान, यह सामान और तुम्हें मैं किसी को बेच चुका हूँ । और हाँ—उसके यहाँ चोरी मत करना जैसी मेरे यहाँ करने रहे हो क्योंकि शायद उसका डडा मेरे डडे से पयादा मजबूत हो ।"

गुनकर वह पृथ्वी पर औघा लेट गया और धिधियाकर कहने लगा कि मैं उसे न छोड़ूँ अन्यथा वह मर जायेगा और कि अब तक वह सभी स्थानों पर कहता रहा है कि मैं बहुत ही अच्छा बैच था, इत्यादि ।

वह कहने लगा : "आज का दिन खराब है...आह ! अब न जाने मुझे गया मालिक कितने दुख देगा...तुम जैसा उदार स्वामी तो मुझे निश्चय ही नहीं मिल सकेगा । तुम जवान हो फिर भी कमाल के बैच हो ।" फिर सोचकर उसने कहा : "क्यों न हम दोनों इस देश से भाग जायें । कीमती सामान मैं सब एकत्रित किये लेता हूँ । हम साल भूमि वाले देश

को भाग चलेंगे जहाँ तुम्हें कोई नहीं जानता या फिर किसी समुद्र के द्वीप में बने चलेंगे जहाँ मदिरा और युवतियों के बीच तुम आनन्द कर सकोगे ...मिननी और बेबीलोन में भी किसी बैचों की बड़ी पूछ है और वहाँ तुम अत्यन्त धनी बन सकोगे। अतएव मेरे मालिक ! जल्दी करो जिससे हम भरेरा होने से पहले ही भाग निकलें।"

"कप्ताह ! कप्ताह ! हम व्यर्थ की बातों से मेरा दिमाग मत खाओ। बीबीज़ में कभी न छोड़ सकूँगा...यहाँ तो जैसे मैं लोहे की ज़रीरो से बंधा हुआ हूँ।" फिर जब उसने बहुत रोने-धोने के बाद पूछा कि नया मालिक कौन था तो मैंने कहा : "वह एक स्त्री है।"

मुनकर वह सिर धुनने लगा। वह बोला : "तब तो वह कोई अल्पत कर स्त्री होगी जो उसने तुम्हारे साथ ऐसा छल किया है," सारी रात वह बरना रहा और उगकी बड़बड़ाहट मेरे लिए मक्कियों की भिनभिनाहट से कोई ज्यादा मूल्य की नहीं लग रही थी।



भोर में मैं नेकर नेकर नेकर के सहो गया। वह सो रही थी। जब मैंने नौकरो को जगमगा तो वह गानियाँ देने लगे और उन्होंने मुझ पर बूझ फेंका। अतएव द्वार पर भित्तारी की भाँति बैठे रहने के विषय मेरे पास और कोई चारा नहीं था। जब पर में चहन-चहन शुरू हुई तो मैं फिर उठा।

नेकर नेकर नेकर अस्त-व्यस्त सौँप्या पर पड़ी थी। उसका मुँह छोटा और सफेद लग रहा था और उगकी हरी आँखों में ऐसा लगना था जैसे उगने का काशी मदिग पी थी। मुझे देगकर वह उकनाहट के स्वर में बोली :

"तुम मुझे परेशान करने हो — क्या चाहने हो तुम ?"

"तुम्हारे साथ गा-दीकर मौज करना...जैसा कि तुमने बचन दिया

था।" मैंने भारी स्वर में कहा।

वह गुनगुन मुसकाना बोली, "मेजिन वह तो बच की बात थी, आज तो गया दिन है!"

एक दागी ने आकर उमंगे बन्ध उगाकर उमरी देह में लैन माना शुरू कर दिया। मेजर ने अपने-आपको दर्शक में देना फिर सेटे ही सेटे उमने मुर्ख में मोतियों और माना प्रकार के रत्नों में जटे एक अमूल्य आभूषण को लकिया के नीचे में उठाकर अपने माथे पर मटकाया और कहा:

"है न सुन्दर? ... दमनी कीमत देने में मैं रात-भर थक डर गई क्योंकि उमने तो मधमूच ही मुझे झरोटा डाला... पर चीख बंमे है बड़ी सुन्दर।"

"तो तुम बस शाम मुझसे झूठ बोली थी कि मुझे मार्गिक धर्म पापु हो गया था..." मैंने कहा।

"मेरा सवाल था कि ऐसा हो गया है क्योंकि समय हो गया था..." और फिर वह ताना मारती हुई दुड़नापूवंक हंसी और बोली: "असल में तुमने गड़बड़ कर दी है मेरे साथ सित्यूहे! तुम्हारे पाग में मैं डीनी पड़ी थी और तुम थे कि अपना प्रबल पौरुष दिखा रहे थे... मुझे डर है क्योंकि मैं गर्भवती हो गई हूँ शायद!"

वह मेरा उपहास कर रही थी और अत्यन्त नितर्ज्जतापूवंक, परन्तु मैं बघा हो रहा था। फिर भी मैंने कहा:

"तुम्हारे रत्न तो किसी वस्त्र में से आ रहे थे न? यही तो शायद तुमने कल मुझसे कहा था?"

उसने मेरी बात का कोई उत्तर नहीं दिया फिर कहा: "सूअर की तरह मोटा था कमबख्त वह सीरिया का ध्यापारी। उसमें से प्याज की बदबू आ रहा थी... पर इससे तुम परेशान क्यों होने हो!"

और उसने तमाम आभूषण ओड़नी इत्यादि नीचे सरका दिये। अब वह फिर पूर्णतया नग्न होकर शैय्या पर पड़ी थी। फिर वह हथेली बांधकर, उसका तकिया लगाकर सांस भरकर मचलती हुई आँसु चलाकर कहने लगी: "सित्यूहे! मैं तो थक गई हूँ और तुम हो कि मुझे घूरे आ रहे

हो और खासकर तब जब मैं तुम्हे रोक नहीं पाऊँगी। तुम तो जानते हो कि मैं अकेली रहती हूँ फिर भी घृणा की पात्री तो नहीं हूँ।”

“तुम तो जानती ही हो कि अब तुम्हे देने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है” मैंने भारी मन लिये कहा।

उसने अपना सारा शरीर हिलाया और जघाएँ फैलाकर हँसते हुए कहा : “पुरुष चित्तने छलिया होते हैं। सिन्धूदे तुम भी मुझसे झूठ बोलते हो और मेरा यह हाल है कि तुम्हे जब देखती हूँ दुर्बल हो जाती हूँ।”

मैंने बड़कर उसे बाहुओं में समेट लेना चाहा, तो उसने मुझे हटा दिया और कहने लगी : “दुर्बल और अकेली मैं अवश्य हूँ, परन्तु घोखेवालों से वास्ता नहीं रख सकती। तुमने मुझसे कभी नहीं कहा कि तुम्हारे पिता सैन्यभट का गरीबों की बस्ती में एक मकान है। मकान जरूर छोटा है पर जिस भूमि पर वह खड़ा है वह अवश्य कुछ रकम दे सकती है क्योंकि वह नदी तट पर स्थित है। उसे मुझे दे दो, तो मैं उम्हारे साथ आज...”

“परन्तु मेरे पिता की जामदाद मेरी तो नहीं है,” मैं बीच ही में बोल उठा।

अपनी हरी आँखें मुझ पर घुमाकर उसने कहा : “क्यों नहीं है ? तुम्हीं तो अपने पिता के न्याययुक्त उत्तराधिकारी हो !”

मैं सुनकर घुप हो गया क्योंकि यह ध्रुव सत्य था। मेरा हृदय आत-नित हो उठा। भला मैं अपने माता-पिता से छल कैसे कर सकता था ? उफ ! उन्होंने मुझ पर चित्तना अटूट विश्वास करके मुझे पाला-पोसा, लिखाया-पढ़ाया और अब मुझे हाल ही में अपना उत्तराधिकारी बनाया था ! तभी वह बोली : “मेरे सिर को अपनी हथेलियों के बीच लेकर मेरे स्तनों पर अपने हाँड धरो। तुम्हारे मामले में इतनी कमजोर हो जाती हूँ कि अपना कायदा भी भूल जाती हूँ। यदि तुमने अपने पिता की जामदाद मेरे नाम कर दी तो...”

मैंने उसका सिर हाथों में ले लिया और उसके स्तनों का चुबन लिया। मुझ पर उसकी वासना बुरी तरह फिर चढ़ गई और मैंने कहा :

“देसा ही हो”

परन्तु जब मैं उसकी ओर बढ़ा तो मुझे रोकते हुए वह बोली : “पुरुष

वचन के बच्चे होने हैं। पहले जायदाद मेरे नाम कर दो।”

और फिर पहले की भांति जब मैं प्रमाणपत्र पर राज्य की मुहर लगाकर उसके पास पहुँचा तो वह सो रही थी। मुझे सायंकाल तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। आनिरकार वह जागी और मुझे देखकर बोली :

“तुम तो सिन्धूदे बड़े ज़िद्दी आदमी हो पर मैं... मैं वचन की पक्की हूँ... आओ।”

और वह शय्या पर सेट गई और उसने मेरे लिए आनिरगन सोच दिया। परन्तु उसने कोई रुचि नहीं ली। उसने अपना सिर बगल की तरफ फेर लिया और दर्शन में मुल देखती रही और हाथ लगाकर जम्हाइयाँ लेती रही। मेरा सारा उत्साह और आनन्द क्षाक बन गया।

जब मैं उठा तो उसने मुझसे कहा : “तुम सचमुच बहुत परेगान करने हो। अब जाओ और फिर कभी आना। अब तो तुम्हारे मन की हो गई न ?”

बड़े के छिपने की तरह अस्तित्वहीन होकर मैं घर मोटा। मैं ज़ी भरकर रोना चाह रहा था कि घर के बराड़े में ही मुझे एक अजनबी बैठा मिला जो सौरिया के लोगो की बहुरंगी पोशाक पहने था और बैमा ही बगला गिर पर ओढ़े था। उसने मेरी ओर देखकर गर्वसे अभिवादन किया और कहा कि वह मुझसे पैर की मूत्रम का इलाज कराने आया था।

“मैं अब यहाँ इलाज नहीं करता,” मैंने कहा, “क्योंकि दहमजान अब मेरा नहीं रहा है।”

पर वह न माना। बोला : “तुम्हारे दाग कप्लाह के कहने में मैं आशा हूँ त्रिमके पैर तुमने ठीक कर दिये थे। मेरे पैरों का दर्द मुझसे सजा नहीं जाना... दण्ड तो तुम्हें देखना ही पड़ेगा... कृपया ..” उसकी बोली मित्रियन जैसी थी।

आनिरकार उसे मुझे देखना ही पड़ा। मैं उसे बगले के अन्दर में गया और मैंने कप्लाह की आवाज दी कि वह गर्म पानी लाकर मेरे हाथ धुावाये। कोई उत्तर नहीं आया। मुझे सब कुछ अमानियत का जना ही न। जब तक कि मैंने उस व्यक्ति के पैर देखकर उसे नहीं पहचाना क्योंकि स्वयं कप्लाह ही था त्रिमने कीर्तियन का ज्ञेय बना रखा था। मेरा ब्रह्म

“आज उसरी गाझाज्य से जो महान् व्यक्ति मेरे पास आने वाला है उसके पास मौ दबन के तीन का एक मुवर्ग का प्याना है। वह बूढ़ है और आज रात उसकी हड्डियाँ, क्योंकि वह बहुत ही दुबला बतलाया जाता है, मेरे शरीर में चुभेंगी अवश्य, पर कल भोर में वह प्याना मेरे घर की शोभा बढ़ायेगा... मैं अकेली अवश्य रहती हूँ पर घुणा के योग्य तो नहीं हूँ !”

जब मैंने उससे कहा, “अब तो मैंने तुम्हें अपने माना-पिता की बत्ती भी दे दी है... अब तो आओ !” और उसे आलिंगन में लेना चाहा तो वह मुझे रोककर बोली, “पहले मदिरा तो पी लो, पीछे तुमसे मैं ‘भाई’ बूँगी। और उसने मुझे प्याले पर प्याले डालकर पिलाये। फिर वह बोली, “अब जाओ... फिर आना।”

“क्यों ?” मैंने विरोध किया।

सुनकर वह हँसी फिर बोली, “मुझे बाहर जाना है और तुम जाकर अपने लिए गहरे से गहरा कुआँ या बिना पैदे का गड्ढा ढूँढ़ लो... यह तो तुम्हारा ही काम है।”

मैं उसे लिपटाने को जब बढ़ा तो वह बल खाकर मेरी पकड़ से निकल गई और तेज आवाज में हँसकर उसने अपने अनुचरों को बुलाकर कहा, “यह भिखमगा मेरे मकान में कैसे आ गया ? इसे बाहर निकाल दो और फिर कभी अन्दर मेरे पास मत आने दो। अगर यह न माने तो मारो इसे अच्छी तरह।”

और उन अनुचरों ने मुझे ढड़ों से मार-मारकर बाहर निकाल दिया। जब मैंने गरजकर उनका विरोध किया तो उन्होंने मुझे और मारा... इतना मारा कि मैं मूर्छित होकर धूल में गिर गया। जहाँ लोगों ने मुझ पर थूका और कुत्तों ने मुझ पर पेशाब किया।

सारी रात मैं वही पड़ा रहा क्योंकि अश्वकार में ही पापी चैन पाता है, क्योंकि प्रकाश में वह मुँह दिखाने के योग्य नहीं होता। भोर में उठकर लुटा-पिटा मैं शहर के बाहर बाँस के जंगल में छिप गया जहाँ मैं तीन दिन, तीन रात भूखा-प्यासा पड़ा रहा। शायद मैं बिल्सा उठता—अपनी करली के भय से ही मर जाता, यदि वहाँ कोई भुजसे मेरा कुशलसोम पूछ बैठता।

मेरे सीने पर पत्थर रखा था फिर भी मेरा दिमाग दुखस्त था। मैंने कप्ताह से कहा, “अपना सब चाँदी और ताँबा मुझे दे दो कप्ताह ! मायद जीवन में कभी न लौटा सकूँ, पर तुम्हें देवता इस भलाईका बहुत बड़ा फल दूँगे...”

और उस पवित्रात्मा ने दास होकर भी जो कुछ उसने पृथ्वी में गाड़ रखा था, पूरा का पूरा दे दिया। देने समय अपने जीवन-भर की वचन के वियोग में उसके नेत्र भर आये, परन्तु उसने मुझे अपना सब कुछ उस समय दे दिया। अतएव वह शाश्वत काल तक महान् बना रहेगा।

पिता और माता उस घर में घुटकर मरे पाये, पड़ोसियों ने मुझे देखकर घृणा से मुँह फेर लिए। उन्हें एक गधे पर सादकर मैं मृतक-गृह में गया, परन्तु वहाँ उन लोगों ने उन्हें लेने से इकार कर दिया क्योंकि मेरे पास उन्हें देने के लिए पर्याप्त चाँदी नहीं थी। वह मस्ते से सरती विधि से भी उन्हें मसाले लगाकर अमर बनाने की राजी नहीं हुए। और तब मैंने नाश होने वालों में दया के लिए भीषण माँगने हुए कहा, “मैं गैम्बट का पुत्र मिंग्यूहे हूँ और मेरा नाम जीवन-गृह की पुस्तक में लिखा है। मेरे माय के बुरे पौर में इस समय मेरे पास पर्याप्त धन नहीं है, अतएव मैं, आम्न के नाम पर और तमाम सैन्य देश में माने जाने वाले देवताओं के नाम पर तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम मेरे माता-पिता के शरीरों पर मगाना लगाओ और इसके बदले में मैं तुम्हारी भगवत् सेवा करूँगा—पूरे उस समय तक जब तक कि इनके शरीर तैयार न हो जाएँ।”

मुनकर उन्होंने गावियाँ दीं, मूँह बनाए, मुकुर गए, परन्तु जब मैं अड़ा ही रहा तो अन्न में एक बिगड़े बेहरे वाता, तिमका बेहरे बेचक में बिगड़ हो गया था, आगे आया और उसने मेरे पिता और माता की टाँडियों में चाँदा जमाकर उन्हें बहुत बड़े होठ में फेंक दिया। वहाँ ऐसे तीस होठ थे। रोब एक मात्र होता था और फिर गया मरा जाता था। इस भीषण मरीचों की माँगें पूरे तीस दिनों तक नमक के गहरे घोल में पड़ी रहती थी। उनके चित्त इसमें अधिक और कुछ भी नहीं दिया जाता था, जो बहुत बान मैं उस समय नहीं जानता था। जब मैं वहाँ से आने लगा तो वही व्यक्ति बोला : “यदि जब तुम समय में हो न लौट आओ तो यह दोनों माँगें तुम्हें दे

लिए बाहर फेंक दी जाएंगी।”

ऐसा था वह कठिन समय कि वह शायद समझ रहे थे कि मैं को झूठा था।

अब मैं पिता के उस मकान को लौटा तो मुझे द्वार पर ही एक गरीब प्रमाण-लेखक मिला। उसने कहा :

“सैन्मट ओ अच्छा आदमी था—क्या तुम उसीके पुत्र सिन्धूहे हो?”

“मैं ही हूँ” मैंने उत्तर दिया।

तब उसने मुझे एक पत्र दिया, बोला : “इस पर सैन्मट के हस्ताक्षर नहीं है क्योंकि वह अन्धा था और रोने से उसके नेत्र भीग गए थे। उसने मुझसे यह लिखाया था। उसके पास मुझे देने के लिए एक तबिये का टुकड़ा भी नहीं था। परन्तु वह अच्छा आदमी था—मैंने इसलिए इसे उसके कहने से लिख दिया। मैं शपथपूर्वक कहता हूँ कि यह उसीने लिखाया।” मैं धरती पर बैठ गया। वह पढ़ने लगा :

‘मैं सैन्मट, जिसका नाम जीवन-गृह की पुस्तक में लिखा है, और मेरी स्त्री बीपा अपने पुत्र सिन्धूहे को, जिसे फराऊन के गृह में एकाकी का नाम मिला था, आशीर्वाद देने हैं, सम्पूर्ण आनन्द हमें तुम्हारे कारण प्राप्त हुए हैं, जब से तुम हमारे पास आए, हमारे हृदय सुख पाते रहे हैं, देवताओं ने तुम्हें हमारे पास भेजा था और तुम हमारे लिए सदा गौरव का विषय बने रहे रहे हो...जीवन की दिन कठिनाइयों के कारण तुम्हें ऐसा करना पड़ा उनके लिए दुःख न करना। हमारे लिए सब भी न रही तो क्या हुआ? सभी कुछ तो नाश होना है। फिर हमारा अस्तित्व ही क्या है? परन्तु न्याय के अधिकारी जल्दी मर रहे हैं अतएव हमें शीघ्र मरना पड़ रहा है। मैं तुम्हें बुझने गया भी था। तुम्हारी माता बीपा मुझे खे गई थी क्योंकि मेरे बेटे! तुम तो जानते हो, मैं अन्धा हो गया हूँ। परन्तु तुम नहीं मरने। अवश्य ही किसी जरूरी कार्य के हेतु गए होंगे। न्याय के अधिकारियों ने तुम्हारी प्रीक्षा करने का समय नहीं छोड़ा। मृत्यु हमारे लिए सुगमय आनिर्णय है जैसे हारे-धके के लिए नींद।...

हम तुम्हें आशीर्वाद देने हैं...जैसे भी हो मुसी रहो। हम तुम्हारे
१५६ क्योंकि तुमने हमें मृत्यु में मिलने में सहायता दी है और मृत्यु

के पश्चात् पश्चिमी देग की यात्रा से बचा दिया है। जाने वह कितनी कठिन होती !

कैम देश के तमाम देवता तुम्हारी रक्षा करें। तुम्हें कभी दुःख न अनुभव हो। और तुम्हें भी तुम्हारी सन्तान ऐसा ही सुख दे जैसे तुमने हमें दिया है। तुम जब हमें मिले थे तब हम दोनों बूढ़ हो चुके थे। तुम्हारे आगमन से हमारा घर प्रकाश से उद्दीप्त हो उठा था... खुश रहो मेरे बेटे... तुम्हारी माता भी तुम्हें प्यार भेजती है... यही हम दोनों का अंतिम सन्देश है कि हमारी मृत्यु पर दुःख न करना... विश्वास कर लो कि हम बहुत ही आराम से मरे थे।'

पत्र उसने मुझे दिखाया जिस पर धब्बे थे। उसने कहा कि वह कीपा के आँसू थे। मैंने लेखक को अपना उत्तरीय दे दिया। जिसे लेकर वह सौन्दर्य और कीपा की प्रशंसा करता हुआ चला गया।

मेरे हृदय का पत्थर पिघल गया था और मैं वही पृथ्वी पर सोटकर रोने लगा। आँसू उमड़े चले आते थे। मैं कितना चाह रहा था कि मर जाऊँ और कुत्ते मेरा शरीर नोच-नोचकर खा जाएँ।

फिर जब मैं उठा तो दासों की भाँति केवल कटिवस्त्र पहने मृतक-गृह में तीस दिन तीस रात लाश घोने वालों की सेवा करने चल दिया।

बैद्य होने के नाते मैं समझता था कि मृत्यु की विभीषिका से पूर्ण रूप से मैं परिचित था, परन्तु यहाँ आकर पता चला कि मैं अभी बच्चा था। और मृत्यु से सर्वथा अनभिज्ञ था। गरीब तो हमें थोड़ी ही दिक्कत देने पर उन्हें भी नमक के धोल में पूरे एक मास पटककर रखना पड़ता था। मुझे शीघ्र इनमें काँटा फँसाना आ गया। घनिकों के शरीरों पर मेहनत अधिक करनी होती और उनको तैल में भिगोकर बड़े पात्रों में सुलाना पड़ता था। सबसे बड़ी लूट अम्मन की होती जो जीवितों से अधिक मृतकों को लूटता। मसाले लगाने की अलग-अलग कीमत होती और वहाँ के लोग भूठ बोलते कि रईस मर्दों के शरीरों में उन्होंने सुवासित तैल और इत्र लगाए थे, कीमती मरहम लगाए थे इत्यादि, परन्तु वास्तव में सभी को वही शीशम

का सैल लगाया जाता था। अत्यन्त घनिकों के शरीर सास परवाह से बनाये जाते, बाकी सबके शरीरों में बन्दूआ सैल मरा जाता जो अन्दर ही अन्दर मौत व जर्मी को घोल देता। फिर अन्दर बाँस लगाकर कपड़े से सपेट दिये जाते। शरीरों के लिए यह भी नहीं किया जाता था। उन्हें तीसवें दिन ममक के घोल से निहालकर गुसा दिया जाता और उनके सम्बन्धियों को दे दिया जाता था।

मृतक-गृह का निरीक्षण अम्मन के पुत्रारी लोग करते थे। फिर भी भाग छोने वाले बेहद खोपी करते। देवताओं द्वारा निष्कामिन तथा बड़े अपराधी ही यही काम करने के लिए भेजे जाते थे। उनकी यह सास ममक की बदबू दूर ले बतला देती थी कि वह भाग छोने वाले लोग थे। लोग उनसे पूछा करते थे। उनकी बेईमानी और छोखेबाजी की हद नहीं थी। अगर कोई पश्चिमी देश है जहाँ मृतकों को यात्रा करनी होती है, तो निश्चय ही कई छनी मुई आदम्ये करते होगे कि क्या इतना छन देकर भी उनके शरीरों में से अग के अग गायब हो जाते थे। साथ छोने वाले मृतकों के अंग-अंग तक बाहर बाहूगर्भियों को देच देते थे।

परन्तु मृतक-गृह से सबसे अधिक लुगी तब बनाई जाती थी जब वहाँ किसी अज्ञान औरत की लाग पट्टेबाई जाती। चाहे वह सुन्दरी हो और चाहे न हो फिर भी वह उनके लिए अपार अन्तोष का विषय बन जाती थी। उसे एकदम हीरु में नहीं डाला जाता था। बल्कि एक रात वह उसे लेकर सोने में। उसे साथ गुलामे के लिए वह आपन में लड़ते और फिर मोतिया डालते थे। गारी रात वह भाग कईसों के पास से होकर निहामी जाती। वह लोग इनमें प्रचित्त माने जाते थे कि नीबी से नीबी बेपरा थी उन्हें अपने पास नहीं जाने देनी थी; यहाँ तक कि बरसूरत हम्मिन भी उनसे दूर भागती थी, चाहे वह उसे मोना देने को तैयार रहते।

एक बार जब कोई वही काम करने आ जाता तो फिर हायर ही वह बाहर जाता था क्योंकि फिर वह इतना पिण्डूआ बना जाता था कि कोई उसे बिलाने को तैयार नहीं होता था।

शूक-शूक में ली ये उन्हें केचव वाली बरने वाले और खोर ही बयझा रहा, परन्तु बाद में पता चला कि इनमें हुमर माने लोग भी थे। हरएक

ने विविध विषयों में दक्षता प्राप्त की थी। जैसे जीवन-मूह में अलग-अलग विषय थे, यहाँ भी सिर, पेट, हृदय, फेफड़े, हाथ-पैर इत्यादिको मसाले लगाकर अलग-अलग विधियों से बनाने के कायदे थे। यही लोग शरीर को अनेक काल तक रखे रहने योग्य बना देते थे।

एक उनमें प्रौढ़ व्यक्ति था—रैमोड—जिसका काम सबसे कठिन था। वह नाक के रास्ते चिमटियों से सिर में से भेजा बाहर निकालता और फिर सिर में शुद्ध करने वाले तैल भरता। उसने मेरे हाथों की सफाई जो देखी तो दंग रह गया और फिर मुझे वह अपना काम सिखाने लगा। पन्द्रह दिनों के अन्दर ही मैं उसका सहायक बन गया और अब उस बदबूदार जीवन में भी मुझे जीने का सहारा मिल गया। यह बाकी सारे कामों से शुद्ध था और मृतक-मूह में सबसे बड़ा काम माना जाता था। उसका सहायक बनने से अन्य लोगों ने मेरा उपहास करना, मुझको गाली देना, सड़े मांस इत्यादि मुझपर फेंकना बन्द कर दिया। ऐसा था उसका प्रभाव हालाँकि वह कभी खोर से बोलता भी नहीं सुना गया था।

अब मैंने देखा कि यहाँ चोरी करना आवश्यक था कि अमुक शरीर अच्छी तरह से पकाया जा सके तो मैंने भी अच्छे-अच्छे मगाने इत्यादि अपने पिना-माना के लिए धुराने प्रारम्भ कर दिये। क्योंकि जो पाप मैं उनके प्रति उनके जीवन में कर चुका था उसमें तो इन्हे कम ही समझता था। यदि मृत्यु के बाद भी पश्चिम के देशों में मनुष्य को जाना पड़ता था तो मैं चाहता था कि वह वहाँ पूर्ण अंग लेकर जायें। मुझे यही समझ था कि मैं किसी भी प्रकार क्यों न सही पर उन्हें अमरता प्राप्त कराने में सफल हो रहा था। मैंने रैमोड की सहायता से उन्हें अच्छी से अच्छी तरह मगाने लगाकर मुखाया और उनकी सांठें तैयार कीं। मुझे डग चोरी करने की क्षातिर, कि बड़िया औषधियाँ, मुवागिन तैय, मरहूम उनके विष्मिन् जायें, वहाँ दस दिन और रहना पड़ा।

अब सांठें तैयार हो गईं तो मेरे सामने आपत्ति आई कि मेरे पास उनके लिए बक नहीं थी...यहाँ तक कि एक सड़ती का बकन भी न था। मैंने उन्हें एकमात्र एक बैन की सूखी साज में रखकर मी दिया।

अब मैं उन्हें लेकर जवा लो मृतक-मूह के लोग मुझे मार्ग देते जाते,

इसलिए नहीं कि वह मुझसे नासुख थे बल्कि इसलिए कि मांसी देना उनकी आदत थी ।

रात के अँधेरे में मैंने एब बाँस की नाव चुराई और उसपर उन शरीरों को लेकर मैं मृतकों के नगर की ओर चल दिया । दिन के उजाले में किसी नाव वाले ने मुझे पार लगाने से इकार कर दिया था ।

मृतकों के नगर में दिन और रात कड़ा पहरा रहता और मुझे एक भी कब्र ऐसी नहीं मिल सकी जिसमें मैं अपने माता-पिता को गाढ़कर निश्चिन्त हो जाता, कि जो बँट धनिकों की कब्रों पर चढ़ाई जाती उन्हें वह भी माँग लेने । अतएव मैं उन्हें लेकर उस रात्रि के अवसान में मरुभूमि की ओर बढ़ा । सारी रात मैं चलता रहा और मेरे पैरों के पास साँप—विषधर साँप फुकारते रहे पर मैं रुका नहीं । अन्त में मैं पहाड़ की जड़ में जा पहुँचा । यहाँ केवल ढाकू लोग ही निर्भय होकर जा सकते थे—जो कि मनुष्य मात्र के लिए जाने के लिए बर्जित थी । क्योंकि वहाँ फ़राऊन लोगों की ही केवल अपनी कब्रें थीं ।

गर्म पत्थरों पर बिच्छू चल रहे थे और दूर-दूर तक गीदड़ हूँक रहे थे । मुझे भय नहीं लगा क्योंकि मेरा हृदय पत्थर का हो चुका था । उस समय यदि मृत्यु साकार बनकर मेरे पास आती तो मैं सहर्ष उससे लिपट जाता । जीवन में मेरे लिए शर्म के अतिरिक्त क्या ही क्या था ? परन्तु तब मुझे मालूम नहीं था कि मृत्यु भी उनके पास नहीं जाती जो उसे बुलाते हैं । साँप मेरे रास्ते से हट गए, बिच्छुओं ने मुझे नहीं काटा, रेगिस्तान की गर्मी में मैं नहीं झुलमा । पहरेंदारी ने मुझे नहीं देखा, अन्यथा वह मुझे वहीं मार डालते ।

और मैं चलता चला गया । पहाड़ के पत्थर मेरे पाँवों के नीचे से मुड़कने लगे । मैंने एक स्थान पर नये फ़राऊन की कब्र के पास एक गड्ढा खोदा और उसमें अपने माता-पिता को गाढ़ दिया । शायद अभी अम्मन अपनी नौका में चढ़ाकर पश्चिमी देश को नहीं ले गया था क्योंकि उसकी विगास कब्र पर अब भी ताजा सामग्री रखी थी जो शायद वहाँ नित्य चढ़ाई

जानी थी। मुझे विश्वास हो गया कि गो उनका नाम पुजारियों की मृतकों की सूची में नहीं लिखा था, फिर भी अब उन्हें ओमिरिस की तराजू पर नहीं चढ़ना पड़ेगा और जब फ़राऊन को अम्मन नाव पर चढ़ाएगा तो वह भी उस पर चढ़कर यात्रा कर सकेंगे और इस बीच फ़राऊन की भेंटों में मे अपना भाग लेते रहेंगे।

मुझे उस समय कितना रातोप हुआ यह मैं कैसे लिखूँ ! कब खोदने में मुझे एक साल पत्थर का टुकड़ा मिला। ख़दमा के प्रकाश में मैंने देखा कि वह एक पवित्र पत्थर था जिस पर धार्मिक चिह्न अंकित थे और उनमें गहने रत्नों से नेत्र बने हुए थे। मेरे नेत्रों से आँसू बहने लगे क्योंकि तब मुझे विश्वास हो गया कि मेरे माता-पिता सुप्त हो गए थे। मैंने यही विश्वास कर लिया क्योंकि इसीमें मुझे शान्ति मिली। वैसे मैं जानता था कि वह फ़राऊन की कब्र में से एक वस्तु थी जो भूल-चूक में इधर-उधर सरककर गिर गई थी और फिर रेत में दब गई थी। मैंने अंतिम बार अपने माता-पिता को सिर झुकाया और प्रार्थना की, “इनके शरीर शाश्वत काल तक बने रहें—और पश्चिमी देश की यात्रा में यह प्रसन्न रहें।” उन्हीं की खातिर मैंने पश्चिमी देश की कल्पना को भी स्वीकार कर लिया। वैसे मुझे अब उस सबमें विश्वास नहीं रहा था।

और मैं नील के तट पर लौट आया। नील का जल मैंने जी भरकर पिया और मैं बाँस के घने में छिपकर लेट गया। मेरे हाथ-पैर कई जगह कट गए थे, उनमें से रक्त बह रहा था। रेगिस्तान ने मेरे नेत्र धुँधले कर दिये थे, मेरे शरीर पर छाले पड़ गए थे। मैं झुलस गया था। मुझे पता नहीं मैं कब सो गया।

भोर में वतखें बोलने लगी और मैं जाग उठा। अम्मन आकाश के समुद्र में अपने सुवर्ण के जहाज में तैरकर ऊपर उठ आया था। दूर पीवीब नगर की मर्मर सुनाई पड़ रही थी। नदी में नौबाएँ चल रही थी और घाटों पर घोड़ों के कपड़े धो रही थी।

तभी मेरे पाग से एक सरसराहट हुई और मैंने तुरन्त जान लिया कि

मैं वहाँ अकेला नहीं था। मैंने मुड़कर जो देखा तो हैरान हो गया क्योंकि जो कुछ दिख रहा था वह मनुष्य-सा नहीं लग रहा था। नाक की जगह उसके एक बड़ा गड़ढ़ाया और कान फटे थे। उसका सारा शरीर बुरी तरह विकृत हो रहा था। परन्तु उसके हाथ बड़े और शरीर गर्दित था। उसने मुझे देखकर पूछा :

“तुम्हारे हाथ में क्या है जो तुम इतनी मजबूती से पकड़ रहे हो ?” मैंने मुट्ठी खोलकर फराऊन का वह अभिमन्त्रित पत्थर दिखा दिया।

“यह मुझे दे दो क्योंकि शायद यह मेरा भाग्य जगा दे—मैं एक गरीब आदमी हूँ।” वह बोला।

“मैं भी तो बेहूद गरीब हूँ।” मैंने विरोध किया।

“चाहे मैं कितना ही गरीब क्यों न होऊँ पर तुम्हें इसके बदले में चाँदी का एक सिक्का दूंगा।” और उसने अपनी कमर में से सचमुच ही एक सिक्का निकालकर मेरी ओर बढ़ाया। परन्तु जब मैंने फिर भी उस पत्थर को नहीं दिया तो वह गुस्सा होकर बोला :

“मैं सोते में ही तुम्हें मार डालता तो ठीक रहता।... मुझे क्या मालूम था कि तुम इतने नीच हो !”

“तुमने मुझे मार डाला होता तो अवश्य मैं तुम्हारा आभारी होता क्योंकि जीवन में मेरे लिए अब कोई रस नहीं रहा है। वैसे मैं यह समझ गया हूँ कि तुम पत्थर की खानों से भागे हुए गुलाम हो। तुम्हारे बड़े नाक-कान बता रहे हैं कि तुम अपराधी थे।” मैंने बड़े ही बड़े उत्तर दिया। फिर कहा, “अच्छा होगा अगर तुम यहाँ से भाग जाओ, अन्यथा कहीं सैनिकों के हाथ लग गए तो उलटे लटका दिये जाओगे, या फिर पकड़कर वहीं भेज दिये जाओगे जहाँ से भागकर आये हो।”

गुनकर वह बुरा मानते हुए बोला, “तुम शायद धीवीज के लिए अजनबी हो जो राजाज्ञा से भी अनभिज्ञ हो। क्या तुम्हें नहीं मालूम कि नये फराऊन की आज्ञानुसार तमाम दास और अपराधी लोग मुक्त कर दिये गए हैं ? अब जो खानों में काम करते हैं वह स्वतन्त्र नागरिक हैं और उन्हें मजदूरी मिलती है ?”

मुझे तब पता चल गया कि मुबराज सिंहासनारुढ़ हो गया था। वह

फिर होगा और कहने लगा :

“अब कई सगड़े-सगड़े अपराधी टाठ से सड़कों पर घूमने हैं। उन्हें रोकने वाला कोई नहीं है। मृतकों के नगर में बर्रों में से नित्य मंदिरा, सामथी और धन चुराने हैं और मौज उड़ाने हैं। वह देवताओं की भी परवाह नहीं करते।...और फ़राऊन का नया देवता भी खूब है जिसने उसे पागल बना दिया है। अब खानें खाली पड़ी रहती हैं क्योंकि अपनी इच्छा से भला कौन वहाँ मरने जाएगा ? मैं अवश्य भोला था और मुझपर अपराध जबरदस्ती लादा गया था परन्तु मेरे साथ न जाने कितने चोर-बदमाश भी छूट गए। हुआ तो यह ठीक नहीं है परन्तु इसमें भला मेरा क्या संबंध ? यह तो फ़राऊन का काम है कि रोये क्योंकि जब खानें ठंडी पड़ी हैं तो उसी का सोना तो कम हो गया है।”

फिर उसने स्नेहवश मेरे हाथ-पैरों में तैल लगाया। न जाने वह वहाँ से तैल ले आया था। मैंने उसमें उसकी कथा पूछी तो उसने कहा :

“कभी मेरे पास भी थोड़ी-सी भूमि थी और एक झोंपड़ी थी और मैं स्वतन्त्र नागरिक था। मेरे पड़ोस में अनूकिस नाम का एक धनी-भानी व्यक्ति भी रहता था। उसके पास अगणित मवेशी थे; इतने जितने रेगिस्तान में रेत के कण होते हैं; और जब वह रँभाते तो ऐसा लगता कि समुद्र गरज रहा है। फिर भी उसकी निगाहे मेरी भूमि पर लगी रहतीं। हर बार जब बाढ़ उतरती तो वह सीमा का पत्थर सरकवा देता और मेरी थोड़ी-थोड़ी भूमि दवा लेता। मेरी कोई सुनवाई नहीं होती क्योंकि सरकारी लोग उसकी सुनने, मेरी नहीं सुनते थे। वह उन्हें सुन्दर उपहार देता।

फिर भी गुज़र हो ही रही थी परन्तु अन्त में मेरी ही संतान मुझे से बैठी। मेरे पाँच पुत्र और तीन पुत्रियाँ थी। एक पुत्र को छुटपन में एक सीरियन व्यापारी ने चुरा लिया था। उसका मुझे बड़ा दुःख था। मेरी सब से छोटी लड़की अत्यन्त रूपवती थी और उसपर मुझे बड़ा गर्व था। मुझे क्या मालूम था कि अनूकिस की बुरी निगाहे उसपर पड़ चुकी थी। उसने मेरे १५ दिन उसे माँगा परन्तु मैंने उससे इंकार कर दिया क्योंकि मेरी लड़की थी और वह प्रौढ़त्व को पार कर चुका था। मैं अपनी बेटी को तब तक नहीं देना चाहता था जो बृद्धावस्था में मेरी सेवा भी कर

और अपनी पैदावार का पाँचवाँ भाग मन्दिर में चढ़ाया। नील की मुद्रापर असीम कृपा रही और मेरी भूमि में होकर कोई भूसा नहीं गया। न मेरा कोई पड़ोसी भूसा रहा क्योंकि मैंने उनके खेतों में पानी दिया और अकाल में उन्हें अपना धान्य खाने को दिया। बिना माँ-बाप के बच्चों के मैंने आँसू पोछे और बेवाओं के कर्ज माफ़ कर दिए। सम्पूर्ण भूमि पर लोग मेरी इच्छा करते थे और मेरा यश उज्ज्वल था। जिसका बैल बीच फसल मर जाता उसे मैं, अनूकिस, नया बैल देता था। कभी मैंने सीमा के पत्थर नहीं हटवाए और कभी पड़ोसी के खेतों में जाने हुए पानी को नहीं रोका। मेरे सत्कर्मों से प्रसन्न होकर देवता मेरी पश्चिमी देश की यात्रा को सुलभ बनायें यही मेरी प्रार्थना है।”

नकटे ने सब सिर झुकाकर सुना फिर आँसू बहाते हुए बह बहने लगा, “किसी को कभी सत्य का पता ही न चलेगा। जो लिखा है उसे ही भविष्य में लोग पढ़ेंगे और अनूकिस सदा ही अच्छा आदमी रहलाएगा...यह संसार...ओह! यह सब झूठ है!” और उसने अपना सिर पीट लिया। फिर उसने एकदम मदिरा-पात्र का ढाट तोड़ दिया और मुँह लगाकर पीने लगा।

उसी रात जब हम दोनों डटकर मदिरा पी चुके तो हमने मिलकर अनूकिस की कब्र खोली और उसमें से सुवर्ण के प्याले, रत्नादिक जो हमसे चले, उन्हें लेकर हम भाग आये। उसी रात क्रराऊन के सैनिक नावों में बैठकर झुट्ट होकर भूतकों के नगर में आये और उन्होंने कब्रें खूब लूटीं क्योंकि रीति के अनुसार सिंहासनारूढ़ होने पर नये क्रराऊन ने उन्हें इनाम नहीं बाँटे थे।

भार में सीरियन व्यापारीगण पहले से लूट का माल सस्ते मोलों पर खरीदने नदी तट पर खड़े हुए मिले, हमने अपने सामान दो सौ सोने के दबन के बेचे और फिर आधी-आधी रकम बाँट ली।

“इससे अच्छा काम कोई भी नहीं है,” नकटा बोला, “इसमें बोझा नहीं डोना पड़ता, मेहनत नहीं करनी पड़ती।” और फिर बह चला गया।

उस पूरे दिन भूतकों के नगर से भीग बजते हुए और अस्त्र-शस्त्रों की आवाजें सुनाई देती रही। क्रराऊन की नयी सेना मुंदेरो का ध्वंस कर रही

थी। कब्रों के बीच रथों के पहिये गजंन कर रहे थे। भाले फिक रहे थे, मृत्यु चीख रही थी। सायंकाल में नगर की दीवार से अगणित बिड़ोही छलटे लटका दिये गए थे। सर्वत्र शान्ति एक बार फिर स्थापित हो गई थी।

नगर में जाकर मैंने कपड़े धोये और साना लाया और मदिरा पी। उस रात मैं एक सराय में सोया। दूसरी सुबह जाकर मैं कप्ताह से मिला। मुझे मिलकर वह रो पड़ा। बोला, "मेरे स्वामी! तुम लौट आये! मैं तो समझा था कि तुम मर गए थे! क्योंकि जब तुम लौटकर फिर कुछ माँगने नहीं आये तो मैंने समझा तुम मर गए होगे। मैंने वैसे इस नये मालिक के पास से तुम्हें देने के लिए चाँदी चुरा रखी थी। यह देखो कल ही उसने मुझे मारा है—और इसकी भाँ, वह बुढ़ी मगरनी, वह सड़कर धर जाए—बहती है कि वह मुझे बेच डालेगी। मुझे अब यहाँ बहुत भय लगता है... अब यहाँ से भाग जाना चाहता हूँ... चलो स्वामी हम दोनों भाग चलें।"

मैंने कुछ हिचकिचाहट दिखाई तो उसने मुझे गलत समझने हुए कहा, "मैंने बाँधी चाँदी चुरा रखी है, चिन्ता मत करो। हम भाग कर सकेंगे फिर इसके बीच जाने पर मैं मेहनत करके तुम्हारा पालन करूँगा... सिर्फ मुझे यहाँ से ले चलो।"

"मैं तो तुम्हारा भ्रष्ट चुकाने आया था कप्ताह!" मैंने कहा और मैं उसके हाथ में उसके दिये धन से कई गुना धन सोने-चाँदी में रख दिया कि कहा, "तुम चाहो तो मैं तुम्हें मुक्त कर सकता हूँ... मैं तुम्हारे मालिक बनूँगा अभी तुम्हारा मूल्य चुका सकता हूँ।"

"और अगर मैं स्वतन्त्र हो भी गया तो जाऊँगा कहाँ? सारे जीवन मैंने दासत्व बिया है। तुम्हारे बिना मैं अधी बिल्सी की भाँति हो जाऊँगा। और फिर मेरे पीछे इतना मोना सुदाना डीक भी नहीं है—क्योंकि जो वे ही अतृप्त है उसे धरीदने की क्या आवश्यकता है?" उसने अपनी एक आँख मिचकाई और फिर कहा, "एक बड़ा जहाज समर्पित जा रहा है। देवताओं की बलि देकर हम चल पड़ें तो बड़ा अच्छा हो। मुझे खेद है कि मुझे अम्पन, जिसे मैंने छोड़ दिया है, के अतिरिक्त अभी तक कोई मणि

शाली देवता मिला ही नहीं है जिसपर थड़ा रस सकूँ...”

मुझे वह अभिमज्जित पत्थर याद हो आया। वह मैंने कप्ताह को देकर कहा, “यह तो...यह छोटा-सा देवता है, पर है बड़ा प्रभावशाली। इसी की कृपा से मेरा बटुआ आज सोने में भरा है। यह निश्चय ही हमारे लिए भाग्योदय का कारण होगा...अपने-आपको सीरियन की भाँति सजा लो; पर दंगो यदि तुम पकड़े जाओ तो मुझे दोष न देना...मैं तो अब धीबीर में मूँह दिगाने योग्य नहीं रहा हूँ अतएव मेरा तो यहाँ लौटने का प्रयत्न ही नहीं उठता...जल्दी करो।”

“गपय न सो।” वह बोला “क्योंकि बल की कोई नहीं जानता। जिस जिसने एक बार नील का जल पिया है उसकी प्यास कहीं नहीं बुझ पाती। पुरष का दोष भील में परपर से उत्पन्न हुए शक्कर के समान होता है जो क्षणिक होता है। मनुष्य की याद भी बहने पानी की भाँति होती है...बल गुजर जाने के बाद घाव भर जाता है...अतएव क्यों व्यर्थ गपय लेते हो!”

और तभी उसकी मातृजिन ने उसे तीसी आवाज में पुकारा। मैं सड़क के मोड़ पर जाकर रुका हूँ गया। थोड़ी देर में वह एक इमिया में कुछ तड़िके के मिक्के उछालता हुआ आया और बोला, “मारे मगरों की माँ ने मुझे बाजार सामान माने भेजा है...चलो यह मिक्के भी पाया के काम आचेंगे...स्मर्ता तो यहाँ में बहुत दूर है!”

नदी तट पर जाकर जब वह लौटा तो बिन्दुल सीरियन बनकर आया। मैंने उसके लिए एक बड़ा मोल दे दिया--ऐंगा जैगा बड़े पंगे के लौकर सेकर चलने से।

ब्रह्म का कप्तान सीरियन था और दृष्टि जानकर कि मैं बैठ था वह बहुत मुँह हुआ और उसने हमसे किराया भी नहीं लिया। कप्तान ने उसी क्षण से उस ‘पन्थर’ पर अपनी थड़ा रसा ली। जब मैं वह निम्न उस पर बैठ बैठा तो उसे मरीन कक्ष में लगेदर करने लगा।

और ब्रह्म का जगज टट बना और दाम झूठ-झूठकर पूरी तर्जि मगने कीज बनाने लगे। अठारह दिन बाद हम दोनों साधारणों के सदस्य पर जा पहुँचे। और दो दिन बाद हम बहुत से सा सादृशिकता की छोर

दिखाई नहीं देता था।

मार्ग में कप्ताह बीमार पड़ गया। उसने कै कर दी और उसे एक विचित्र व्याधि ने आ घेरा। वह उल्टा पड़ा हुआ कराहा करता। स्वयं मुझे मिचली आने लगी थी। कप्ताह ने भोजन करना छोड़ दिया था। वह समझ बैठा था कि समुद्र के बीच ही मर जायेगा।

और दिन पर दिन निकलते चले गए। बहुत से यात्री कप्ताह की भाँति ही बीमार थे और मैं सभी का इलाज कर रहा था। सभी मृतप्राय पड़े थे परन्तु मरता कोई भी नहीं था। कप्ताह उसी पत्थर की पूजा किया करता था।

आखिरकार रमना दिखाई देने लगा। कप्तान ने देवताओं को यथेष्ट बलि दी। दूसरे दिन जब जहाज हल्के पानी में तैरने लगा तो सभी की जान में जान आ गई। कप्ताह ने खड़े होकर उस पत्थर की साँगन्ध लाई कि अब कभी किसी जहाज पर कदम नहीं रहेगा।

सीरिया और उन नगरों की, जहाँ मैं घूमा, भूमि ताल है। वहाँ मित्र से सभी थोड़े भिन्न है। नील के स्नान पर आकाश से जल बरसता है। घाटियों में आबादी है और हर घाटी में एक शासक है जो मित्र के फ़राऊन को कर भेजता है। यहाँ लोग रंग-बिरंगे उत्तम बुने हुए ऊनी कपड़े पहनते हैं क्योंकि यहाँ मित्र से ठंड अधिक पड़ती है। वैसे भी यह लोग अंगों के प्रदर्शन को निर्वन्धना मानते हैं। शौच को अवश्य सुने में जाने हैं जो मित्र में बुरी बात मानी जाती है। इन लोगों के सिरों पर लम्बे बाल होते हैं और यह किसी सोपों की भाँति सिर नहीं घुँटाने। दाढ़ियाँ भी लम्बी होती हैं और अपने देवताओं के सम्मुख मनुष्यों की बलि देने हैं। हर नगर में भिन्न-भिन्न देवता है। यहाँ रहनेवाले मित्रों को फ़राऊन की ओर से उच्च पदों पर नियुक्त किये गए हैं और कर इत्यादि बसूल करते हैं, वह सारे मुख रहने

पर भी दुःखी रहते हैं। यह लोग व्यापारियों की कर बचाने की अनेक चालों और झूठों से परेशान रहते हैं।

मैं स्मर्त्ता में दो साल रहा और इस बीच मैंने बेबीलोन की म लिखना-पढ़ना—दोनों, सीख ली क्योंकि इस भाषा का जानने वाला संसार के सभी लोगों द्वारा समझा जा सकता था—लोग ऐसा कहते बादशाहों के आपस के पत्र कागज की बजाय मिट्टी की तख्तियों पर हुए अक्षरों द्वारा चलते थे। यह शायद इसलिए कि ग्रासक लोग आपस की हुई संधियों को शीघ्र न भूल सकें।

सीरिया में एक और भिन्न बात यह है कि वहाँ वैद्य के यहाँ जा रोगी इलाज नहीं कराने, बल्कि देवताओं की कृपा के भरोसे घर ही रहते हैं कि वही वैद्य आकर उन्हें देखे और उनका इलाज करे। एक बात यह कि वैद्य की घंट इलाज से पहले ही कर देते हैं। इससे वैद्य बड़ा फायदा होता है, क्योंकि रोगी अच्छा होने पर अक्सर वैद्य को मर जाया करते हैं।

वैसे मेरा विचार यह था कि हर काम वहाँ मामूली तरीके से चल परन्तु कप्ताह के कुछ और ही विचार थे। उसने मुझसे कहा कि हर समय घर से बाहर निकलते समय मैं राजसी वस्त्र धारण करूँ और हरबा द्वारा यह कहलाना शुरू कर दिया कि मैं अबदस्त वैद्य था और कि मैं स्व किसी रोगी को देखने उसके घर जाने का आदी नहीं था। जिस किसी की आवश्यकता हो वह मुझसे मेरे घर आकर मिले और साथ कम से कम एक सुवर्ण का सिक्का लेता आये। मैंने कप्ताह से मना भी किया कि यह काल भूमि का देश नहीं था जहाँ की रीतियाँ यहाँ भी लागू की जा सकें, परन्तु वह तो गधे की भाँति हठ पकड़ गया था।

उसने मुझे वहाँ के प्रसिद्ध वैद्यों के पास भेजकर बहसाया :

“मैं, सिन्यूहे, मिस्र देश का माना हुआ वैद्य हूँ जिसे फ़राऊन ने ‘एकाकी’ की उपाधि दी है। मैं मुर्दे को जिन्दा कर देता हूँ और अन्धे को आँखें देता हूँ। मेरे पास एक छोटा-सा, पर अबदस्त देवता है और उसी ने मुझे यह अद्भुत शक्ति प्रदान की है। हर नगर में रोग भी भिन्न होते हैं अतएव मैं यहाँ नया ज्ञान प्राप्त करने आया हूँ।

“मेरा विचार आप लोगों की आमदनी में घाटा लाने का नहीं है क्योंकि भला आप लोगों के बीच में बोलने वाला मैं होता ही कौन हूँ ? अतएव मेरी आपसे यह प्रार्थना है कि जिस रोगी पर आपके देवतागण क्रुद्ध हो जाएँ और आप उनका इलाज न कर सकें, उन्हें आप मेरे पास भेज दें। शायद मेरे देवता उस पर कृपा कर सकें। यदि ऐसे रोगी ठीक हो गए तो उससे प्राप्त हुई रकम में से आधा मैं आप लोगों को दे दूँगा और अगर वह ठीक न हुआ तो उसके दिये हुए पूरे धन के साथ मैं उसे आपके पास वापस भेज दूँगा।”

वैद्यों से, जो बाजार तथा अन्य स्थानों में अपने मरीजों को देखने जाने होते, जब मैं यह कहता तो वह अपने लबादे फटकारकर दाढ़ी खूँज-लाने हुए कहते :

“तुम खवान तो हो, पर बुद्धिमान मालूम होते हो। सुवर्ण और उप-हारों की बाबत भी तुम ठीक कहते हो क्योंकि हम जानते हैं कि तुम्हें अपने धातू पर विश्वास है। हम लोग चीरा-फादी नहीं करते। हम तुमसे इस विषय में कम जानते हैं। पर एक बात कहते हैं वह सुनो—तुम कभी जादू-टोना न करने लगना क्योंकि हमारे देश में यह बहुत अधिक प्रचलित है। इसने तुम हमसे नहीं जीत सकोगे।”

और यह सच था कि सड़को पर बहुत से बिना पड़े-लिखे लोग जादू-टोने द्वारा लोगों को बहुकाते फिरते थे।

और स्मर्ता में मेरी दुकान चल निकली। मैंने कद्दों की आँखें ठीक कर दी, और कद्दों के सिर सौलकर उन्हें स्वस्थ कर दिया। गो बाद में उनमें से कद्दों की दृष्टि फिर जाती रही और सिर खुले बाद कई लोग मर भी गए फिर भी मेरा उसमें कोई दोष नहीं माना गया क्योंकि अक्सर ऐसा कई दिनों बाद होता।

स्मर्ता के घनी व्यापारीगण यों ही पड़े रहते और ऐश का जीवन व्यतीत करते थे। वह मिलियों से कहीं अधिक मोटे थे और उन्हें हाँकने और पेट की शिकायत रहती थी। उनपर मैंने धातू आज़माया और उनके शरीरों में से ऐसे रक्त निकलता जैसे मोटे सूअर के शरीर में से निकलता है।

कप्ताह भित्तिारियों और कहानी कहने वालों को खाना दिया करता और वह दूर-दूर तक मेरा यश गान करते थे ।

और मेरे पास काफी सोना इकट्ठा हो गया । मैंने उसमें से काफी धन को वहाँ के व्यापारियों के द्वारा व्यापार में लगा दिया । वहाँ यह प्रथा थी कि जब जहाज सामानों से भरकर दूर देश जाने को होता तो उसमें लोग हिस्से खरीद लेते और लागात लगा देते थे । जहाज सुदूर भिन्न, हट्टी इत्यादि स्थानों से जब लौटता तो अटूट धन समेटकर लाता और तब वह लागात के अनुसार बाँट लिया जाता । वहाँ गरीब भी कई मिलकर एक हजारवाँ या पाँच सौवाँ भाग खरीदलेते और यह व्यापार करते थे । कभी-कभी चौगुना, अठगुना धन वापस आ गया तो कभी जहाज लौटकर ही नहीं आता था । परन्तु अधिकतर लाभ ही होता था । धन भी घर नहीं खाना होता था । मिट्टी की तख्तियों पर व्यापारमंडल की मुहर लगवा ली जाती कि इतना धन अमुक व्यक्ति का वहाँ जमा है । मैं जब कभी दूसरे नगरों को इलाज करने जाता तो इन्हीं तख्तियों को ले जाता जिन्हें दिखाकर वहाँ भी धन प्राप्त किया जा सकता था । बेबिलोन, सिडोन, इत्यादि सभी जगहों में यही रीति काम में लाई जाती थी । अपने घर सोना रखकर चोर-डाकुओं से धोखा खाने की कोई आवश्यकता नहीं होती थी ।

सब ठीक चल रहा था—मैं धनवान बन गया था और कप्ताह मोटा हो गया था । वह सुगन्धित तैल की मालिश करता और बहुमूल्य वस्त्र पहनता था । बदतमीज तो वह बहुत हो गया था और कभी-कभी मनबूर होकर मुझे उसकी टुकाई भी करनी होती थी ।

फिर भी मेरा जीवन एकाकी ही बना रहा । मुझे मदिरा में भी आनंद नहीं मिलता था क्योंकि उसे पीने के बाद मैं और अधिक उदास हो उठता था । अतएव मैं अधिक से अधिक अपने काम में लगा रहता और अपना ज्ञान बढ़ाया करता था ।

मैंने जब यहाँ के देवताओं की जानकारी हासिल की तो उन्हें मिस के देवताओं से भिन्न पाया । इनका सबसे बड़ा देवता 'बाल' या ओमनुष्य-बनि

लेता था। उसके पुजारी हिचड़े बना दिये जाते थे। उसके यहाँ बच्चों की भी बलि दी जाती थी।

व्यापारियों को, जब वह जहाज समुद्र में भेजते तो, बाल को बलि देनी होती थी क्योंकि वह अपने माल का खेम चाहते थे। अतएव जहाँ भी उन्हें लैंगड़ा-लूला, काना या ऐसा ही सस्ता दास दिखाई देता, वह उसे हाट भोल ले आते और बलि में दे देते थे। इसी भाँति यदि कोई गरीब मछली चुराता पकड़ा जाता तो उसे बलि दिया जाता। नगर मङ्गल की ओर से भी इसी प्रकार सस्ती बलि दी जाती थी। मोटे-मोटे व्यापारीगण अक्सर छाती बजा-बजाकर हँसा करते कि किस प्रकार चालाकी से वह अपने देवता 'बाल' को धोखा दिया करते थे।

अतएव हाट में, एक भी सस्ता दास दिखाई नहीं पड़ता था। वैसे स्वस्थ सुन्दर दासों की कमी नहीं होती। दासियाँ मनपसन्द मिल जाती थीं क्योंकि जहाज प्रायः हर रोज बाहर से नया माल लाया करते थे। गोरी, लाल, काली, मोटी, मासल, दुबली हर प्रकार की दासियाँ मिलती थी।

उनकी देवी एस्टार्ट थी जिसे इषतर भी कहा जाता था। निनर्वह की इषतर की भाँति इसके भी कई स्तन होते थे और उसे निश्चय नये स्त्रीने वस्त्रों और जवाहरातों से सजाया जाता था। वहाँ पुजारिणें होती जो कुमारियाँ कहलाती थी, गो वह वास्तव में ऐसी न होती। उल्टे, दर्शक उनसे सभोग करते थे। यही वहाँ की रीति थी जिसे उनकी देवी चाहती थी। वह स्त्रियाँ सभोग की अद्भुत विधियाँ जानती थी और जितना अधिक आनन्द दर्शक को मिलता उतना ही अधिक सोना-चाँदी वह मंदिर पर चढ़ा लाया।

मैं भी बाल के मन्दिर में गया, परन्तु मनुष्य-बलि के स्थान पर मैंने सोना भेंट में चढ़ाया। कभी-कभी मैं एस्टार्ट के मंदिर में भी चला जाता था जो सायंकाल के समय खुलता था। वहाँ वह स्त्रियाँ नग्न होकर कासो-सोजक नृत्य करती और उसके पश्चात् भक्तों को आसिगनों में भरकर अपने-अपने नशों में लेकर चली जाती थी, मैं भी कई बार उन स्त्रियों के साथ रहा परन्तु मुझे उन सबमें कोई आनन्द नहीं आया।

और कप्ताह एक दिन मेरे लिए हाट से एक दासी खरीद लाया क्योंकि मेरा सारा धन उसी के पास रहता और घर का प्रबन्ध सब वही करता

था। वह अपनी पसन्द के अनुसार उसे लाया था। उसने उसे नहूपा-धुना-कर तैल लगाकर स्वच्छ वस्त्र पहनाकर एक रात मेरी सौम्या पर मुझे भेंट किया।

वह किसी समुद्री टापू से नार्द गई थी और मामल, गोरी और सुन्दर थी। उसके दाँत मोती जैसे मन्त्रे थे और उसकी आँखें बड़ी और हिरनी की आँखों जैसी बाली और मोनी-भाली थीं। कप्ताह ने उसके रूप की इतनी प्रशंसा की कि उसे प्रमत्त करने के लिए मैंने उसे स्वीकार कर लिया। परन्तु फिर भी न जाने क्यों मैं उसमें 'बहिन' न कह सका।

उस पर दिया दिव्यतर मैंने गमनी की क्योंकि थोड़े ही दिनों में वह बीट हो गई और मुझे निम्न नये वस्त्रों और जवाहरातों, आभूषणों इत्यादि के लिए तय करने लग गई। सबसे बुरी बात तो यह थी कि उसे मेरी चाह हमेशा मानी रहती। मैं दूर-दूर के नगरों की खोज जाता, समुद्र-तट पर घूमता रहता कि सौन्दर्य पर वह मोती मिले, परन्तु वह आँखों में आँसू भरे सौम्या पर बैठी मिलती और बड़ी चाह उसकी बनी रहती। मैंने उसे भारा-पीटा भी, परन्तु इसमें उसकी वासना और अधिक बढ़क उठी थी। और मैं परेशान हो गया।

परन्तु उस अभिमन्त्रित तप्या ने फिर मुझे बचा लिया। एक दिन मेरे पास अम्बुक के भोगी मुँह का राजा अजीक आया। मैंने उसका एक दीर्घ हाथीदाँत का बनाया जो मुझ में एक बार टूट गया था और बाकी जो दिव्य तप्य से उन्हें सोने में बद दिया। जब तक कि वह नगर में शासकीय कार्यालयों में उच्चवायिदायियों में मिलना रहा, वह निम्न मेरे पास भी आता रहा। उसने इतनी बीध मेरी इस दामी को, जिसका नाम मैंने बीकू रख दिया था, देखा और वह उस पर आक्रमण हो गया। अजीक मोरा और लीन की तरह लपका था। उसकी दाढ़ी मोपी और चमकदार थी और उसकी आँखों में बड़ादुरी और हिम्मत जैसे बूट-बूट कर मगी हुई थी। बीकू ने उसे जलचार्द दृष्टि में देखा क्योंकि भी बड़ी-बड़ी स्त्रियाँ तो मई-वस्तु की ओर लंबे-लम्बे आकर्षित होती हैं। अजीक उसके सामने अजीब वस्त्र और फिर वह कम-वस्त्र वस्त्र भी दुनानी और वह इतने कम परन्तु की देवता उसका मोहन पटा पड़ता था। अजीक के देह में फिर से वीर लक्ष्मि

बैकी होतीं और ऐसा नग्न प्रदर्शन उसे अत्यधिक उत्तेजित करने लगा ।

आखिरकार एक दिन अपने को रोकने में असमर्थ होकर उसने गहरा श्वास लेकर मुझसे कहा : "सिन्धूहे—मिली ! तुम वास्तव में मेरे मित्र हो और तुमने मेरे मुँह में चमचमाता हुआ सोना लगाकर मुझे जैवा दिया है । इससे निश्चय ही मेरे देश में मेरा सम्मान बढ़ जायेगा । मैं तुम्हें इसके बदले में ऐसे उपहार दूँगा कि आश्चर्य से तुम्हारे दोनों हाथ ऊपर उठ जायेंगे । फिर भी आज मैं तुम्हें एक कष्ट देना चाहता हूँ ।"

मैं चुप रहा । तो वह फिर बोला :

"तुम्हारे घर में रहने वाली इस स्त्री को मैंने जब से देखा है मैं बेहाल हो गया हूँ । इसकी चाह मुझमें इतनी अधिक हो गई है जैसे कोई बिल्ली मुझमें घुस कर मुझे कुरेद रही हो । ऐसी सुन्दरी आज तक मैंने कहीं नहीं देखी है और मैं समझ सकता हूँ कि तुम इसे कितना अधिक चाहते होगे...

"फिर भी मैं चाहता हूँ कि तुम इसे मुझे दे दो...मैं इसे अपनी रानी बनाऊँगा । तुम समझदार आदमी हो और मैं तुमसे इसे माँगता हूँ और मैं इसका मूल्य तुम्हें दे दूँगा.. परन्तु यदि तुम राज़ी से नहीं दोने तो मैं एक दिन इसे बलपूर्वक उठा ले जाऊँगा ।"

सुनकर खुशी से मैंने दोनों हाथ उठाये ही थे कि कप्ताह ने अपने बाल मोच ढाले और बड़बड़ाने लगा : "आज का दिन कितना खराब है कि मेरे मालिक की चहेती स्त्री को तुम से जाना चाहते हो...इसे देकर तो इसका रिक्त स्थान अतुल धन से भी पूरा नहीं किया जा सकता...इसका पेट कितना सुन्दर है ! उसे तो देखकर ही तुम्हें पता चलेगा कि यह कितनी सुन्दर है ।"

और वह बड़बड़ाता रहा । स्मर्त्ता आकर उसे व्यापार की सब चालें पता चल गई थी । वह उसका अधिक से अधिक मूल्य वसूल करना चाहता था ।

कीफतू ने उसे रोते देखा तो स्वयं भी रोने लगी और बहने लगी, "नहीं मैं कहीं नहीं जाऊँगी," पर मुँह पर हाथ लगाकर उँगलियों में से अजीब को ललचाई दृष्टि से देखती भी जाती थी ।

मैंने हाथ उठाकर दोनों की चुप किया फिर गंभीर मुद्रा में बोला :

“अम्भुरु के राजा अजीरु ! तुम मेरे मित्र हो। यह सच है कि यह स्त्री मुझे बहुत प्यारी है और मैं इससे ‘बहिन’ कहता हूँ। परन्तु तुम्हारी मित्रता का मूल्य मेरी निगाहों में सबसे ऊँचा है। इस मित्रता के नाने मैं यह स्त्री तुम्हें बिना मूल्य लिये ही उपहार में दूंगा। तुम इसे ले जाओ। मैं अपने-आपको धोखा नहीं देना चाहता क्योंकि इसकी निगाहों से भी जान गया हूँ कि यह तुम्हें चाहने लगी है। यदि तुम्हारे शरीर में एक जंगली बिल्ली है तो निश्चय ही जानना कि इसके शरीर में जाने कितनी जंगली बिल्लियाँ उछला करती हैं। तुम इसके साथ जैसा चाहे करो—यह आज से तुम्हारी है।”

अजीरु मुनकर खुशी से चिल्ला उठा। वह बोला : “सिन्धूहे ! तुम मित्री अवश्य हो और यह भी सच है कि सारी बुराइयाँ मित्र से ही संसार में फैलती हैं; परन्तु तुम उदार हृदय वाले अच्छे आदमी हो। आज से तुम मेरे भाई हो। अम्भुरु के सारे देश में तुम्हारा नाम यश को प्राप्त होगा। मेरे बगल में मेरे सिंहासन पर तुम मेरे अतिथि बनकर बैठोगे...तुम मेरे लिए अन्य राजाओं से भी बढ़कर रहोगे...यह मैं शपथपूर्वक कहता हूँ।”

उसने हँसकर कीफतू की ओर देखा। वह उस समय गहरे रंगीन वस्त्र पहने हुई थी जिनमें से उसका गोरा शरीर दमक रहा था। उसकी ग्रीवा डँकी हुई थी, पर स्तन नग्न थे। अजीरु ने गहरा श्वास छोड़ा और उसका हाथ पकड़कर खींचा और तब उसके स्तन डोल उठे। उसने एक ही शब्द के में उसे ऐसे उठा लिया जैसे उसमें कोई बोझ ही नहीं था और वह उसे लेकर बाहर अपनी कुर्सी में बिठाकर ले गया।

तीन दिन तीन रात स्मर्ना में उसे किसी ने बाहर नहीं देखा। वह मेरे पास भी नहीं आया। उसने अपने-आपको अपने घर में कीफतू के साथ बंद कर लिया था।

कप्ताह और मैंने उससे पीछा छूटने पर खुशी मनाई।

परन्तु उसने मुझसे कीफतू का मूल्य न लेने के सिलसिले में काफी कहा-सुनी की।

परन्तु मैंने उत्तर दिया : “उसे यह युवती भेंट में देकर मैंने उससे मित्रता बढ़ा ली है। आखिर तो वह राजा ही है हालाँकि उसका मौजूदा

राज मवेशियों के लिए छोड़े हुए चारागाह से बड़ा नहीं है। फिर भी कल भी कौन कह सकता है कि क्या होगा? राजा की दोस्ती भी लाभदायक हो सकती है... शायद सोने से ज्यादा यह कभी काम आये।”

अपने देश लौटने से पूर्व अजीरु फिर मेरे पास एक बार आया और बोला : “ओ कुछ तुमने मुझे दिया है उसका मूल्य तो मैं निश्चय ही नहीं दे सकता, सिन्धूदे क्योंकि भला उसकी बराबरी कौन-सा उपहार कर सकेगा? यह सचकी तो इतने गजब की है कि इतना तो मैं अदाय भी नहीं लगा सका था। उसकी आँखें बिना पेदे के घुंघुं की भाँति गहरी है... और हालाँकि उसने मुझसे से मेरा पौरुष, खँतून के बीच में से खँस की भाँति निचोड़ लिया है फिर भी मैं किन शब्दों में वर्णन करूँ कि उसे मैं कितना चाहने लगा हूँ। आज तो मैं मरीब हूँ क्योंकि मेरा राज्य छोटा-सा है, पर किसी दिन मैं तुम्हें निहाल कर दूँगा। तुम जब कभी किसी प्रकार की सहायता के लिए कहोगे, वही होगा। अगर तुम्हारा कोई अपमान करे अथवा हानि पहुँचाये तो मुझसे कहना और मेरे आदमी उस व्यक्ति का वध कर देंगे चाहे वह कहीं क्यों न छिप जाये और तुम्हारा नाम भी बीच में नहीं आयेगा।”

उसने मेरी गर्दन में अपने गले से मोने की खड़ीर उतारकर पहना दी। पर ऐसा करने समय उसके मुँह से आह-भी निकल गई। मैंने तुरन्त अपने गले में उतनी ही मोटी सोने की खड़ीर उतारकर उसके गले में डाल कर मित्रता का दावा भर दिया। वह प्रसन्न हो गया और उसकी निगाहों में मैं बेहद खड़े गया। मुझसे गले मिलकर वह फिर पला गया।

हर साल के मुनाबिह अब की बार फिर खड़ीरी लोगों ने सीरिया की सीमाओं पर हमला कर दिया। मैं अब जब उम औरत से छुटकारा पा गया था तो स्मर्ना से बाहर जाने की इच्छा मुझे होने लगी। जैसे भी स्मर्ना में आजकल और सालों से अधिक हलचल मची हुई थी, क्योंकि अब की बार खड़ीरी लोगों ने बटना नगर में मिखी मीनिबो को तथा वहाँ के कामक को मार डाला था। वह लोग इस बार बेदर्दी से औरत-बच्चे सब को मार रहे

थे और लूट में कसर नहीं छोड़ रहे थे। परन्तु फराऊन की सेनाएँ भी उन्हें दवाने सेनाइ के रेगिस्तान में होकर टँसिस आ गई थीं।

सीरिया में युद्ध छिड़ गया था और मैंने कभी युद्ध देखा नहीं था। मैं भी उसका अनुभव करना चाहता था और सासवर जब मैंने सुना कि मिस्त्री सेना का नायक बनकर होरेमहेब आ रहा था तो मेरी उससे मित्रता की सालगा उग्र हो उठी। अपने एकाकी जीवन में पुराने मित्र से मिल सेने को मैं बेचैन हो उठा और मैं चल दिया। समुद्र तट के सहारे-नाहारे हम एक मान सादने वाले जहाज में चले। हम एक कोटसिधे नगर में पहुँचे, जिसका नाम जेरूसलम था और जो पहाड़ों के ऊपर बसा हुआ था। यहाँ मिस्त्री सेना लैनाथ थी और होरेमहेब ने यहीं पहाव डाला था।

जब मैं उससे मिला तो उसने मुझे मेरी सीरियन पोशाक में नहीं पहचाना। वह बोला, "मैं एक गिन्गूहे को जानता था जो अच्छा वैद्य था। वह मेरा मित्र था।"

परन्तु जब उसने मुझे पहचान लिया तो मेरा हृदय में स्वागत किया। उसने मुझे युद्ध में भाग लेने के लिए आमन्त्रित भी किया। उसने कहा, "अम्मन की कसम! तुम सिन्गूहे! मेरे मित्र मुझे यहाँ इस गन्दे शहर में खूब मिलें!" और फिर सब लोगों को भगाकर मेरे लिए मंदिरा भेगाई। पीने-पीने हम पुरानी बानें करत रहे। फिर वह बोला-

'तब जब मैं पहले तुमसे मिला था, मैं भूख था पर तुम बुद्धिमान थे और तुमने मुझे नेक सलाह दी थी। परन्तु अब देखो मैंने यह लुब्धकी की श्रावुक अपनी बुद्धिमत्ता से ही पाई है।

"जब खड़ी की लोगों ने हमला किया तो मैंने फराऊन के सम्मुख श्रावना की कि वह मुझे इन्हीं दवाने यहाँ भेजे। कोई ऐसा दस मासों में श्रावुन्दी नहीं बना क्योंकि युद्ध में उन लोगों को आराम नहीं मिल पाता? हमारे अतिरिक्त खड़ीगियों के पास वीने आने हैं और उनकी जो बिज्जुत और जो शीत-सुखर युद्ध में होती है— वह बहुत ही भयानक लगती है—यह मैं अपनी तरह जानता हूँ।

"परन्तु फराऊन जेरूसलम में अपने देवता का मंदिर बनाया था— वह और दूसरा बाकी बानों में तीन कोई बान्ना ही नहीं है। वह बान्ना है

कि बिना खून-खराबा हुए खचीरी दवा दिये जायें । ”

और वह ठहाका लगाकर हँसा । फिर कहने लगा :

“सिन्धूहे ! असली बात यह है कि फराऊन के इस विचित्र देवता ने तो मुझे परेजान कर दिया है । उसका रूप घाली की तरह है और वह अपने हजार-हजार हाथों से जीवन मोटा करता है । फराऊन का कहना है कि सभी बराबर हैं—मालिक दास सभी । क्या दिमाग है फराऊन का ? मेरे विचार से वह पागल है... भला कभी हो सकता है कि खचीरी बिना खून-खराबा के भगा दिये जाएँ —हूँअ ! ”

वह फिर मदिरा पीने लगा । फिर बोला :

“मेरा अपना देवता तो होरस है और वैसे मैं अम्मन के विरुद्ध भी नहीं हूँ । परन्तु अम्मन के पुजारियों की शक्ति इतनी अधिक बढ़ गई है कि उन्हें रोकने के लिए फराऊन के नये देवता—इस एटोन की भी आवश्यकता है । यहाँ तक तो सब ठीक है और एटोन के मंदिर इत्यादि के निर्माण भी सब ठीक है परन्तु इससे आगे सचाई को दूबने का प्रयास भयानक है क्योंकि सत्य तो उस लेड चाकू के समान है जो किसी बच्चे के हाथ में हो । चाकू को तो ध्यान में रखना चाहिए और सभी काम में लाना चाहिए जब उसकी आवश्यकता हो । अतएव शासक के लिए सत्य बहुत ही हानिकारक है । ”

उसने फिर घूट लिया फिर कहा :

“मेरे बाब की बसम ! सीबीड छोड़कर आने पर मुझे बड़ी खुशी हुई क्योंकि वहाँ देवताओं की सफाई हो रही है । अम्मन के पुजारियों ने फराऊन के बारे में अनेक कहानियाँ गढ़कर प्रचलित कर दी हैं कि उसकी वैशाखा सच्ची नहीं है इत्यादि । और फिर वह जो मित्रली की सड़की थी न ! वह जो साम्राज्ञी बनाई गई थी, इतने में मर गई । और अब आई की पुत्री नेफरतीनी साम्राज्ञी बन गई है । है तो यह भी मुन्दर पर है वह अपने बाप की मसवी बेटी —बड़ी चालाक—बड़ी मक्कार ! ”

मेरी आँखों के सामने मित्रली की उस बच्ची राजकुमारी का मायूम चेहरा घूम गया—वह जो निमीनों से लेना चाली थी ।

“वह बच्ची कैसे मर गई ? ” मैंने पूछा ।

“बैद्य कहते हैं कि मिस्र की आबोहवा उसे माफ़िक नहीं आई थी, पर यह सब झूठ है क्योंकि मिस्र के बराबर अच्छी जगह कोई है भी नहीं ! बेहतर यही है कि हम न बोलें । पर यदि मैं अपराधी को दूँदने निकलूँ तो अपना रथ आई के घर के सामने रोक दूँ ।”

रात में हम सो गए । भोर में जब उठे तो बाहर सेना में खडबड़ हो रही थी । शीघ्र ही सींग फूँके जाने लगे और सैनिक पकितबद्ध होकर सज-कर खड़े होने लगे । उनके नायक भाग-भागकर ठीक खड़े होने की आज्ञा देने और गलती करने वालों पर चाबुक फटकारते थे । जब सब ठीक हो गया और सेना सन्नद्ध हो गई तो हौरेमहेव अपने मिट्टी के बने गन्दे डेरे से बाहर निकला । उसके हाथ में उसकी सोने की चाबुक थी और एक दास उस पर छाता लगा रहा था । तो एक ओर उस पर से मक्खियाँ उड़ रही थी । वह चिल्लाकर बोला :

“मिस्र देश के सैनिकों ! आज मैं तुम्हें युद्ध में लेकर जाऊँगा . क्योंकि जामूसो ने अभी सूचना दी है कि पहाड़ के दूसरी तरफ खबीरी आ गए हैं । वह कितने हैं यह पता नहीं चला है . क्योंकि जामूस डरकर भाग आए थे । परन्तु मेरे विचार से इतने तो होंगे ही कि तुम सबको खरम कर सकें और तब मुझे तुम्हारी यह मनहूस सूरतें देखनी नहीं पड़ेंगी । और तब मैं मिस्र लौट आऊँगा और फिर एक असली वीरों की सेना लेकर लौटूँगा ।”

उसने खतरनाक निगाहों से सैनिकों को घूरा । किसी का साहस नहीं हुआ कि बोल सके । वह फिर बोला :

“मैं तुम्हें युद्ध में ले जाऊँगा—मैं सबसे आगे जाऊँगा और चाहे तुम मेरे पीछे न भी आओ तो भी मैं तो बाज का पुत्र हूँ । मैं झकेला ही खबीरियों का नाश कर दूँगा...फिर भी कान खोलकर सुन लो...जो मेरे पीछे नहीं आया उसे मैं चुन-चुनकर चाबुक से छील दूँगा । मेरी चाबुक से खून बहेगा । खबीरियों के भावों से मेरी चाबुक ज्यादा खतरनाक है । खबीरियों में कुछ भी भयानक बात नहीं है । केवल उनकी चिल्लाहट ही भयानक होती है । यदि उससे भय लगे तो अपने कानों में मिट्टी भर लो पर बुद्धियों की भाँति वहाँ डरने ए न जाओ...जीनकर तुम उनकी मवेशियों बाँट लेना—उनकी स्त्रियाँ सुदरी हैं और वह वीरों को बहुत पसन्द करती

हैं...बहुत सब तुम्हारी होगी।"

सैनिकों ने एक साथ हल्सा किया और अपने भालों से डालें बजाई।
होरेमहेब ने चाबुक फटकारी और मुस्कराकर फिर कहा :

"तुम्हारा जोग देखकर मैं खुश हूँ...परन्तु पहले हमे फराऊन के मंदिर में जाकर एटोन को सिर नवाना है।"

और तब सेना अलग-अलग इकाइयों में तरह-तरह के अडे लिए अत्यन्त बेकायदे से चलती हुई नगर से बाहर निकली, पीछे-पीछे उच्च पदाधिकारी और सबके पीछे अपने अंगरक्षकों के साथ होरेमहेब चला। मुझे उसने अपने ही साथ रखा। नगर के बाहर लकड़ी का बना हुआ एटोन का मंदिर खड़ा था। अन्य मंदिरों से यह भिन्न था क्योंकि बीच में यह खुला हुआ था जहाँ बेदी बनी हुई थी। वहाँ किसी देवता की मूर्ति नहीं थी जिसे न पाकर सैनिक परेशान हो गए। होरेमहेब ने कहा :

"देवता घाली के रूप का है अतएव आकाश में तपते हुए सूर्य को देखो...देखो जब तक तुम उस पर दृष्टि लगा सको, वह अपने हथार-हथार हाथों से आगीवादि देता है...परन्तु आज मुड़भूमि में शायद वह तुम्हारी पीठ पर साल मूँड़ियों की भाँति घुमे।"

सैनिक बड़बड़ाये कि फराऊन का देवता बहुत दूर था—एतना दूर कि वह उसके सामने सेटकर अभिवादन भी नहीं कर सकने थे।

मंदिर में पुजारी ने, जो एक युवक था, प्रार्थना की। उसके सिर पर केज थे और कंधों पर स्वेत वस्त्र था। देर तक वह सूर्य और एटोन की स्तुति करता रहा और सैनिक परेशान होकर रैन में घेर मगलने रहे। जब प्रार्थना समाप्त हुई तो उन्होंने घेत की गीम ली और फराऊन का जय-जयकार किया।

सैनिक चले दिये। उनके पीछे बैसगाड़ियों में और गधों पर सामान था। होरेमहेब सबसे आगे अपने रथ की भगाटा हुआ चला और दाहिने के ऊँचे पदाधिकारी अपनी कुमियों पर बैठकर गर्मी की गिरावट करने हुए चले। एसद इत्यादि के अधिकारी के साथ मैं गधे पर बैठकर चला।

मेरे साथ मेरी दवादारू का बक्म था।

सेना सायंकाल तक चलती रही। बीच में थोड़ी-सी देर के लिए उन लोगों ने खाना खाया। लोग चलते-चलते गिर जाते थे, कइयों के पैरों में छाले पड़ गए थे। नायकों की चाबुक खाकर भी गिरे हुए उठकर खड़े न हो पाते थे। जब कभी बगल के पहाड़ों में से कोई तीर चला देता, जो किसी सैनिक के शरीर में चुभ जाता, और वह कराह कर गिर पड़ता था।

हुल्के रथों के आगे का मार्ग साफ कर दिया था। रास्ते के सहारे कई खबीरी चियडों में लिपटे हुए मरे पड़े थे।

और हम पहाड़ी पार कर गए। आगे एक बहुत बड़ा खुला मैदान था जहाँ खबीरी लोगों का पड़ाव पड़ा हुआ था। होरेमहेब ने सींगी फूंकने की आज्ञा दी और सेना को आक्रमण करने के लिए सन्नद्ध किया। सामने बेगुमार खबीरी पड़े हुए थे और उनकी चिल्लाहट से आकाश मूँज रहा था। होरेमहेब ने पुकारकर कहा :

“नीच मेंढको ! घुटने मजबूत कर लो। लड़ने वाले शत्रु बहुत थोड़े हैं, बाकी यह भीड़ सब भेड़ है।...मवेशी, औरतें और बच्चे ! जोर लगा दो और यह सब तुम्हारे हो जायेंगे।”

खबीरी चड़े आ रहे थे। वह हमसे बहुत ज्यादा थे। उनके भाले चम-चमा रहे थे। उन्हें देखकर हमारे सैनिकों का धैर्य छूट रहा था परन्तु वह भागने लायक भी नहीं रह गए थे। नायक चाबुक फटकार रहे थे और सैनिक सन्नद्ध हो गए। तीरन्दाजों ने घुटने गाड़कर घनुष खींचे और एक साथ हजारों तीर ‘बजट’ ‘बजट’ करके छूट गए। और युद्ध छिड़ गया। भयानक कोलाहल फैल गया। खबीरियों की चिल्लाहट और उनके नारे विकराल थे इसमें तनिक भी संदेह नहीं था। उन्हें सुनकर रोम-रोम भय से खड़ा हो जाता था।

होरेमहेब चिल्लाया : “बड़े जलो ! गंदे कुत्तो !”

और भारी रथ बेग से भागे। घूल से आकाश भर गया। कुछ भी दिखाई नहीं देता था। होरेमहेब के शिरस्त्राण में सगा हुआ पर फरफरा रहा था। खबीरी बहानुरी से सड़ रहे थे। उन्होंने अनेक मिथी सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। पृथ्वी खून से भीग गई। सभी ओर भयानक

कोलाहल हो रहा था, अस्त्र-शस्त्र खड़खड़ा रहे थे। तीर छूट रहे थे, गालियाँ सुनाई दे रही थी और सबके ऊपर मरते हुआँ का दारुण चीत्कार फैल जाता था। मेरा गधा बहुत रोकने पर भी मुझे युद्ध के मध्य में ले गया। वह न रुका। आकाश में गिद्ध चक्कर लगाने लगे।

तभी हौरेमहेव के सैनिकों ने खबीरियों के पड़ाव के पिछले हिस्से पर प्रहार किया जहाँ उनकी स्त्रियाँ थी और वहाँ आग लगा दी। खबीरियों ने घबराकर उधर देखा। अपनी स्त्रियों को खतरे में देखकर वह उधर लौटे और हमारे सैनिकों का उत्साह दूना हो गया। वह समझे कि शत्रु भाग रहा था। वस फिर क्या था। वह टूट पड़े। दारुण हत्या प्रारंभ हो गई। पृथ्वी खबीरियों की लाशों से पाट दी गई। इस आकस्मिक आक्रमण से खबीरी घबरा गए और भागने लगे। परन्तु वह धेर लिए गए थे। उन्होंने हथियार डाल दिये और घुटनों के बल बैठ गए। परन्तु वह समय दया करने का नहीं था। बच्चे बूढ़े सबके भेजे मुगदरो से खोल दिये गए। हौरेमहेव की आज्ञा से सौगे फिर फूँक दिये गए। पूर्ण विजय प्राप्त हो चुकी थी।

परन्तु मेरा गधा फिर भी युद्ध के मैदान में उछल रहा था। वह रोके रुकता ही नहीं था। मैं उस पर लाश की तरह सदा हुआ था। सैनिक उस स्थिति में मुझे देखकर हँसे। आखिरकार एक सैनिक ने उसकी नाक पर डहा मारा, तब कही वह रुका। और तब से सैनिकों ने मेरा नाम 'जगली गधे का बेटा' रखा दिया।

अब कैदियों को धेरा गया। उनकी मवेशियाँ अगणित थी। हौरेमहेव ने जब गर्भ से सेना के बीच शेर के सिर वाली देवी सैलमट की मूर्ति पेटी खोलकर स्थापित की तो सैनिकों ने चिल्लाकर उसका वयज्यकार किया और उसपर खून छिटका। वह पीन स्तनों को उन्नत किये हुए अत्यन्त प्रसन्न प्रतीत हो रही थी।

सारी रात सैनिक खबीरियों की स्त्रियों से वलात्कार करते रहे और मैं मरीचों की मरहमपट्टी करता रहा। खबीरी वास्तव में अत्यंत निर्धन लोग थे जो मवेशियों की चराकर बड़ी कठिनाई से अपना और स्त्री और बच्चों का पालन करते थे। जैसे वह मानी भी थे। मैंने उनसे

भी कइयों के घाव सी दिये थे परन्तु जब उन्होंने अपनी स्त्रियों की चिल्लाहट सुनी तो अपने टाँके फाड़े और खून बहाकर मर गए।

मेरे हृदय में यह जीत, जीत की तरह नहीं जम पाई गो हौरमहेव ने मेरे साहस की अत्यन्त सराहना की। जब मैंने उससे पूछा कि सबसे आगे रहने पर भी उसके कोई चोट या घाव क्यों नहीं लगा तो वह कहने लगा :

“मैं बाज का पुत्र हूँ और संसार में बड़े कार्य करने के लिए उत्पन्न हुआ हूँ। फ़राऊन के पास मुझे मेरा बाज ही लाया था। यह सच है कि जब मैं फ़राऊन के महल में आ गया तो उसे वह स्थान रुचिकर नहीं लगा और वह उड़ गया और फिर कभी नहीं लौटा। लेकिन जब मैं सेना के साथ सेनाई के रेगिस्तान को पार कर रहा था तो बड़ी कठिनाइयों का मुझे सामना करना पड़ा। भूख और प्यास से मेरा बुरा हाल हो गया था। और तभी एक दिन जब मैं रेगिस्तान में शिकार के लिए गया तो मैंने देसी एक अग्नि देवी जो कुछ दूर पर जल रही थी...वह ऐसी थी जो कभी नहीं बुझती थी...निरन्तर जलती रहती थी.. इससे मेरी हिम्मत बढ़ी। और किसी को वह दिखाई नहीं दी थी। उसे केवल मैंने और मेरे रथवान ने देखा था...तुम उसे बुलाकर पूछ सकते हो। तभी से मुझे विश्वास हो गया कि मेरे निश्चित समय से पहले कोई अस्त्र मेरे शरीर को नहीं छुएगा।”

तीसरे दिन हौरमहेव ने अपनी सेना को तीन भागों में बाँटा। कुछ के साथ उसने लूट का माल जैस्सेलम भेजा कि वह वहाँ उसे बेच आवे क्योंकि उस रेगिस्तान में कोई सौदागर उन्हें मोल लेने नहीं आया जैसे कि और स्थानों में लोग आ जाया करते थे। एक और जत्था, मवेशियों को चराने चल दिया और कुछ को लेकर वह स्वयं सखीरियों के पीछे चला क्योंकि उसने सुन लिया था कि वह लोग छिपकर अपने देवता को उठाकर ले जाने के प्रयास में थे।

मुझे मेरी इच्छा के विरुद्ध हौरमहेव अपने रथ में चढ़ाकर ले गया। उसने कहा : “तुम्हें युद्ध का आनन्द दिखाऊँगा...चलो !” और मैं उसकी

... उस रथ में सड़ा हो गया। रथ को वह पागलों की भाँति ... ले जा रहा था। बड़े-बड़े पत्थरों पर से, वह भड़ाभड़ करता हुआ

मुन्हेम से जा रहा था। मैं हर क्षण मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगा था कि
 तब पर अब रथ लौटा, अब लौटा। शरीर झँझोड़ ठाला था उस रथ ने,
 र में शिथिल हो चुका था।

और फिर रथ खबीरियों पर तूफान की तरह बरसा। फिर सैकड़ों
 र भागने लगे और उनके नीचे खबीरियों के बच्चे, बूढ़े और स्त्रियाँ
 चल दी गईं। पुरखों के तनो में भाते छेद दिने गए। उनके डेरो में आग
 गा दी गई। मैंने देखा...वह युद्ध नहीं था...खबीरी लड़ नहीं रहे थे...
 ह हत्या थी—निर्मम हत्या!

परन्तु खबीरी लोग इससे सीख गए कि उनके लिए रेगिस्तान में भूखो
 र जाना अच्छा था, बनिस्वत सीरिया पर हमला करने के। खबीरी के
 नाज से घेद भरने और सीरिया के तैलों से अपनी फटी त्वचा को मलने
 बजाय, अब उन्होंने रेगिस्तान में तड़प-तड़पकर मर जाना ही उत्तम है,
 ह बात समझ ली।

और मैंने युद्ध के आनन्द देख लिये। होरेमहेब ने एक बार फिर सीमा
 परपरो को गढ़वा दिया जो खबीरियों ने उखाड़ दिये थे। खबीरियों के
 वता के टुकड़े-टुकड़े करने के उपरान्त उसे सैलमट की मूर्ति के सम्मुख
 ता दिया गया। इस देवता का नाम 'जह्वैह' था। बचे हुए खबीरी घने
 जंगलों में भाग गए। अब वह खजूर के पत्ते हिला-हिलाकर गाता गाता
 जा गए थे।

होरेमहेब ने जेरसेलम लौटकर सीमाप्रांत के लुटे हुए नागरिकों को
 ली का अनाज और उन्हीं के पात्र बेच दिये। उन्होंने क्रुद्ध होकर
 पने वस्त्र फाड़ डाले और बह बिल्लाये: "अरे यह लुटेरे तो खबीरियों
 भी बदतर हैं," परन्तु उनके पास धन की कमी नहीं थी क्योंकि उन्होंने
 पने मन्दिर, व्यापारीगण और घर-बस्तान करने वालों से श्रृण लिये थे।
 र होरेमहेब ने इस भाँति तमाम लूट के सामान को सुवर्ण और चाँदी में
 र्णित कर लिया और सैनिकों में उसे बाँट दिया। अब खबीरी समझ में
 ला कि पावन इतनी शांति में कैसे मर गए थे, जब मैंने उनके पात्र

साफ करके सी दिये थे और औपघियाँ भी लगा दी थी। अधिक लोगों के बीच लूट का सामान बँटने से हिस्सा कम मिलता, अतएव पायलों को रात में औरों ने मार डाला था।

सायंकाल के समय उम कच्ची शोपठी में जहाँ हीरेमहेव ठहरा हुआ था मैं और वह बातें करते हुए मदिरा पी रहे थे। मैंने कहा :

“मित्र की शक्ति महान् है। कोई अब उसका सामना करने की क्षमता नहीं रखेगा। खबीरी भी समाप्त हो चुके हैं। फिर अब तुम अपनी सेना को छुट्टी क्यों नहीं दे देते... उनके डेरे से बदबू आती है और वह वात-वात में हिंसा पर उतर आते हैं।”

“तुम नहीं जानते कि तुम क्या कह रहे हो,” वह काँख सुजाते हुए बोला। क्योंकि सेनापति के डेरे में जूँ की कमी नहीं थी। वह कहने लगा : “मित्र की यह धारणा ही गलत है कि उसके सामने खड़े होने का किसी को साहस नहीं है। दुनिया बहुत बड़ी है और छिपे हुए स्थानों में वह बीज बोये जा रहे हैं जिनमें से विनाशकारी अग्नि चारों ओर फूट निकलेगी। उदाहरणार्थ अम्मुर्ग के शासक को ले लो, जो दिनोदिन घोड़े और रथ एकत्रित कर रहा है। उसकी दावतो में उच्चपदाधिकारी उससे कहते-संगे हैं कि उसके पूर्वज ही पहले सारे संसार के शासक थे, और है भी यह बात सच; क्योंकि ‘हाईक्संस’ के अन्तिम वंशधर आजकल वही रहने हैं।”

“अम्मुर्ग का राजा अबीरु तो मेरा मित्र है।” मैंने कहा, “मैंने उसके दाँत बनाये थे। उसके पास एक स्त्री भी है जो उसकी रानों में से उसकी शक्ति खींचा करती है।”

“तुम बहुत-सी बातें जानने हो।” मुझे गौर से देखते हुए उसने कहा, “तुम स्वतन्त्र मनुष्य हो और मन चाहे जहाँ जा सकते हो। तुम्हें अनेकानेक भेद मालूम हो सकते हैं जो हर किसी के लिए दुर्लभ हैं। अगर मैं तुम्हारी तरह स्वतन्त्र होता तो मैं स्थान-स्थान जाकर वहाँ की बातें सीखता। मैं मिनन्नी और बेबीलोस जाना और इस बात की जानकारी प्राप्त करता कि हितैषी लोग आजकल कैसे रथ-वाम में सजते हैं और किस भाँति उनकी सेनाएँ वरिष्ठ करती हैं। समुद्री टापुओं में जाकर यह जानने की कोशिश करता कि उनके जहाज कैसे होते हैं जिनकी आजकल बड़ी जर्वा है। परन्तु

तुम सिन्धूदे ! तुम तो सीरियन वस्त्र पहने हुए सीरियन भाषा बोलते हुए
 नहीं मेमिल-जुलूसकने हो । और फिर तुम ठहरे वैद्य जिसका सभी से संपर्क
 होता है और तुम यदि ऐसी जानकारी प्राप्त करने की चेष्टा भी करो तो
 किसी को तुम पर शक नहीं होगा । इन बातों के अतिरिक्त तुम्हारा
 भाषण सादा और दृष्टि स्नेहभरी है और लोग समझने हैं कि तुम बड़े
 व्यक्ति हो । फिर भी मैं जानता हूँ कि तुम्हारा हृदय बन्द है जिसमें
 गहरे भेद और गहरी ही बातें छिपाए सोवते हो । है न यही बात ?”

“शायद ! पर तुम चाहते क्या हो ?”

“यदि मैं तुम्हें काफ़ी सोना देकर इन देशों को भेजूँ कि वहाँ जाकर
 किसी हिकमत और अपना नाम रोशन करो तो कैसा रहेगा ? माल-
 और और बा-असर लोग, यहाँ तक कि राजा लोग भी तुम्हें बुलाएँगे कि
 उनका इलाज करो और तब तुम मेरी आँखों से उन्हें देखकर, और मेरे
 नो से उनकी बातें सुनकर जब मित्र लौटो, मुझे वह सारे भेद बतला
 जो बैसे अप्राप्य हैं । क्यों ?”

“मेरा मित्र लौटकर जाने का कोई विचार नहीं है । और फिर इस
 काम में सतरे बहुत अधिक हैं । मैं उलटा सटकाया जाना पसन्द नहीं
 करता” मैंने बेहमी से उत्तर दिया ।

मुनकर उमने कहा, “कल भी कौन जानता है सिन्धूदे ! कि क्या होगा
 मेरा सवाल है कि तुम मिया अवश्य लौटोगे क्योंकि जिस किसी ने
 बार भी नील का पानी पिया है उसकी प्यास संसार भर में नहीं नहीं
 पानी । यहाँ तक कि बिड़ियाएँ और सारस भी वहाँ जाइँगे मे लौट आने
 मेरे लिए सोना धूल के समान है । काम, इससे मैं ज्ञान प्राप्त कर सकता,
 तक तुम यह उससे सटकने वाली बात कहते हो यह बात तो मैं जान
 मन्दिरो की भनभनाहट के समान ही समझता हूँ । मैंने तुमसे उन देशों
 कीजियाँ तोड़ने या किसी के साथ कोई बुराई करने के लिए नहीं कहा
 बड़े-बड़े मगरों में मन्दिरो में राहगीरों को क्या-क्या करके नहीं मुभाया
 ? सोने की बर्तन नहीं है ? फिर तुम्हारा हुनर तो तुम्हें हर जगह
 मकता है और सामकर उन मुन्को में तो बहुत ही ज्यादा जहाँ लोग

अपने वृद्धों को कुल्हाड़ी से मार डालते हैं और रोगियों को मरुभूमि में मारने के लिए छोड़ आते हैं। बादशाह लोग अपने शक्ति-प्रदर्शन करने के लिए अपनी सेनाओं को सजाकर बाहर निकालते हैं। वसा वहीं यदि तुम उनकी विशेषताओं को, उनके अस्त्र-शस्त्रों को ध्यान से देखा तो और उनके माना प्रकार के रथों और अन्दाजन मैनिशों को गिन तो तो भना किसी को तुम पर गव क्यों होने लगा ? कहते हैं हिन्दी लोगों ने किसी ऐसी धातु का आविष्कार कर लिया है जो बहुत मजबूत है और हमारे साम्राज्य को बाट डालती है। सब-भूट की तो पना नहीं पर यदि यह बात सच है तो मूचना भयानक अवश्य है। फिर यह भी जाँच करो कि वहाँ के मैनिश तीन सगे, साथे-साथे, तगड़े हैं अथवा मेरे इन चूहों जैसी हैं।... इन मधमे बड़-बड़ मुझे एक जानकारी और चाहिए — वह यह कि इन सभी साम्राज्यों के हृदय में क्या है... मरी और देना। "

मैंने उसकी ओर देखा और मुझे लगा वह गुन्दर, देवता के समान बलिष्ठ व्यक्ति शरीर में बड़ा रहा था। उसके तबों में मेरे अग्नि की लौटें बिखर रही थीं। उन्हें देखकर मेरा दिल दहल उठा। मैंने उसके सामने फिर भूषा दिया और कहा

"तुम महान हो।"

"तुम अब दिव्यताम क्या हो कि मैं अज्ञात करने के लिए ही उभरि हुआ हूँ ?" उसने मद्ध स्वर में पूछा।

"मेरा हृदय मुझमें बहता है कि तुम मुझे आज्ञा दे सकत हो परन्तु ऐसा क्यों होगा है, मैं कह नहीं सकता।" मैंने उत्तर दिया। मेरे मुँह में मेरी बुझान मोटी हो गई थी। फिर भी मैंने कहा: "तुम निश्चय ही शक्तिशाली हो... और जो काम तुमने मेरे लिए निर्धारित किया है वह पूर्णतः मेरे द्वारा किया जायेगा। मेरी आँखें और कान सुझाए होंगे। यह मैं नहीं कह सकता कि जो तुमने मेरे मुँह में कहा था उसे सुनकर बल्ल्याई उनसे मेरे हिन्दी सुझाए सम्भव की दिक्कत; क्योंकि मैं इस सम्झना में पूर्ण हो हूँ। फिर जो या कुछ जानूँगा वह अज्ञान सुझाए बल्ल्याई... सुझाए मान के लिए बड़े, बड़े सुझाए निश्चय के लिए... और दूसरे, कि दरवाजा की

शायद ऐसी ही इच्छा है अगर सचमुच ही देवता होते भी हैं तो !”

“मेरे सपना से तुम्हें पछलाना नहीं पड़ेगा कि तुमने मिथता की ! तुम्हें मैं अतुलित सुवर्ण दूंगा.. यह जानकारी मेरे लिए जरूरी है क्योंकि प्राचीन क्राकन लोग इसी भाँति स्थान-स्थान से बातों की जानकारी रखा करते थे ।” उसने कहा । फिर जब हम बिछुड़ने लगे तो उसने अपनी मर्यादा की परवाह न करते हुए मेरे गाल छुए और मेरे कन्धों को अपने चेहरे से छुआ और कहा : “तुम्हारे जाने से सिन्धूह ! मेरा मन उदास है... तुम अकेले हो, तो मैं भी तो अकेला हूँ ! मेरे हृदय के रहस्य को भला कौन जानता है ?”

शायद वह उस समय राजकुमारी बैकेटमोन की अद्भुत और मोहिनी मुस्कान को याद कर रहा था ।

उसने मुझे अतुलनीय सुवर्ण दिया—इतना अधिक कि मैं सोच ही नहीं सकता था कि वह मुझे देगा और समुद्र तट तक मेरे साथ सैनिक भी भेजे कि मार्ग में डाकू मेरा धन न छूट लें । वहाँ आकर मैंने सारा धन व्यापारियों के पास जमा करके मिट्टी की तख्तियों पर उनकी मुहरें लगवा-लीं । अब मुझे डाकुओं का कोई डर नहीं रहा और मैं स्मर्ना की ओर जहाज में बैठकर चल दिया ।

६

जिस समय मैंने अपनी यात्राएँ की थी दुनिया चालीस-चालीस सालों युद्ध का नाम ही भूल गई थी । व्यापारी निर्विघ्न रूप से व्यापार करते और क्राओ के सैनिक जहाजों की रक्षा करते थे । सीमाएँ सब खुली हुई थी और सभी नगरों में सुवर्ण का स्वागत था । लोगों में आपस में सनातनी या खिचाव नहीं था और जब देश-देश के व्यापारी लोग आपस में मिलने तो एक-दूसरे का अभिवादन किया करते थे ।

सेतो में फसलें लदी खड़ी रहतीं और भरखाहे भालों के स्थान पर

बांसुरी बजाकर मवेशी चराने जाने थे। अंगूर की बेलें फूल रही होतीं और पेड़ फलों के भार से झुके-झुके हो जाने थे। मंदिरों में पुजारी लोग तैल से चिकने और छाये-पिये मोटे-साजे पड़े रहने और अगणित मूर्तियों का घुर्मा मंदिरों में सदा छाया रहता था। देवता भी मोटे हो रहे थे और उनकी कृपा से घनिक और अधिक धन बटोरने और गरीब और गरीब हो जाते थे। शायद उन दिनों सूर्य भी और उज्ज्वल रूप से चमकता था और हवाएँ हल्के-हल्के चलती थीं। आजकल के घुरे उमाने से वह दिन सचमुच कितने अच्छे थे यह मैं कैसे कहूँ।

जब मैं स्मर्ता लौटकर अपने घर पहुँचा तो बप्ताह ने मुझी से बिल्दागे हुए मेरा स्वागत किया और नेत्रों में आँसू भरकर मेरे पैरों पर गिर पड़ा। वह कहने लगा :

“घन्य है यह दिन जो मेरे स्वामी घर लौट आये हैं। मैंने तो समझा था कि कुछ में तुम मार डाले गए होगे। मेरी भला तुम मानते ही सब ये ..पर वह तो कहों कि हमारा देवता (वह छोटा-सा पत्थर) बड़ा शक्ति-शाली है जिसने तुम्हें बचा लिया। आज तुम्हें देखकर मेरा हृदय अत्यंत प्रमन्न है और प्रमन्नता मेरे नेत्रों से होकर आँसुओं के रूप में बह रही है... हालाँकि तुम्हारे न आने से मैंने अपने-आपको ही तुम्हारा वारिस समझा था—और तुम्हारा मारा मोना स्मर्ता के व्यापारी लोगों ने मैं से लेना—फिर भी इस हाथ ने निकली हुई दीपन के लिए मुझे तनिक भी अफसोस नहीं है क्योंकि तुम्हारे बिना मैं मा से बिछुड़े हुए मेमने की तरह हूँ और मुझे दिन में भी अंधेरा ही अंधेरा लगता है ..” वह बहुत देर तक बड़बड़ करता रहा। और जब वह रुका ही नहीं, बोलना ही चका गया तो आन्धिर ऊबकर मुझे उमड़े हुए करना पड़ा। फिर मैंने कहा : “अब सीप घावा की नैपारी करो क्योंकि बड़ यात्रा क्यों की होगी। हम धिन्नी और बेसीनीम की ओर जावेंगे।”

बप्ताह मुनकर फिर रोने-सीकने लगा। इसी बीच वह बाड़ी तुम्हारा हो करा था और जैने-जैन समय व्यतीत होना जाता था, उनमें ऐसी बानें बहतीं जूक कर दी थीं जैने ‘हमारा घर’, ‘हमारा देवता’ और ‘हमारा स्मर्ता’ इत्यादि। मैंने उमंगें बना :

“मूझे विश्वास है कि किसी दिन तुम अपनी बदतमीजी के लिए उल्टे सटकाये जाओगे...” वह चुप हो गया और तैयारी करने लगा ।

और हम यात्रा पर चल दिये । क्योंकि कप्ताह ने कसम खाई थी कि वह जहाज पर कभी कदम नहीं रखेगा अतएव हमने कारवाँ के साथ सफर करने का निश्चय किया । मार्ग में कोई विशेष घटना नहीं घटी । लैबनॉन की सैरार की लकड़ी मैंने देखी जो मिस्र के महलों में लगाई जाती थी और जिससे अम्मन की नाव बनाई जाती थी । रेगिस्तान में सूखी हवाएँ चली और बदन फट गए; यहाँ तक कि बहुत तैल शरीर पर मलना पड़ा । सरायों में खूब खाने-पीने को मिला और कहीं भी डाकू इत्यादि से धोखा नहीं पाया । यहाँ-वहाँ सरायों में मैंने रोगियों को भी औषधियाँ दीं । सिडार के जंगलों में पेड़ इतने ऊँचे थे कि यदि मैं उनकी ऊँचाई के बारे में किसी मिस्री से कहता तो कभी विश्वास नहीं करता । मार्ग में इन जंगलों में चरने स्वच्छ थे । यहाँ के जंगलों में गजब की खुशबू थी । मैंने समझा कि यहाँ रहने वाले कभी दुःखी नहीं हो सकते थे परन्तु जब दासों को लकड़ी काटकर समुद्र तट तक उसे ढोते देखा तो दिल काँप उठा । उनका दुःख अपार था उनके हाथ और पैर सब पेड़ की छालों और उनके औजारों से कटे हुए थे और पीठों पर चाबुक से बने घावों को मकियाँ ने सड़ा दिया था ।

आखिर हम कादेश नगर में पहुँच गए । यहाँ एक बड़ा किला था पर उसमें कोई पहरा नहीं था । मिस्री हाकिम और सिपाही सब नगर में अपने कुटुंबियों के साथ रहते थे । उन्हें शायद याद भी नहीं रहा था कि यहाँ सैनिक थे । मुझे यहाँ कप्ताह की पीठ में पड़े छालों के पुर जाने तक ठहरना पड़ा । इस बीच मैंने यहाँ बहुती का इलाज भी किया । यहाँ के मिस्र वैद्य बिल्कुल नालायक थे—इतने अयोग्य कि यदि कभी उनका नाम जीवन-गृह की पुस्तक में लिखा गया था तो उसे अब अवश्य मिटा देना चाहिए था ।

यही मैंने अपने नाम और उपाधियों की एक मुहर एक कीमती पत्थर पर खुदवाकर बनवाई । यहाँ मिस्र की भाँति मुहरें अँगूठियों में नहीं पहनते हैं बल्कि लम्बी गोलाकार बनवाकर गले में पहन लेते हैं कि जब उसे मित्र की लच्छी रखकर घेर दिया जाय तो उसका अच्छा उत्तर आयें ।

यहाँ से फिर हम चल दिये और सीमा पार करके नाहरानी पहुँचे। अब हम यात्री-कर देवर मिलन्नी लोको की भूमि में आ गए थे। यहाँ लोको ने हमारा स्वागत किया। उन्होंने कहा, "तुम मिमी हो इसलिये हम तुम्हारा स्वागत करने हैं। तुम्हें देखकर बड़ी प्रसन्नता होती है परन्तु हम उदास भी हैं क्योंकि तुम्हारे क्राऊन ने हमारी रक्षा के लिए सैन्य और हथियार और मोना नहीं भेजा है। अफवाह यह है कि कोई देवता हमारे राजा के पास वहाँ से भेजा गया है हालाँकि यहाँ हमारी रक्षा पढ़ने से ही निरबैह की देवी इतर मोजूद है।"

उन्होंने मुझे और कप्ताह को घरो पर बुलाकर भोजन कराया, मदिरा पिनाई इत्यादि। कप्ताह ने मुझसे कहा :

"मानिक यहीं हम रहें तो बहुत ही अच्छा हो क्योंकि यहाँ के लोग भोजन हैं और हम उन्हें गुब बेककूफ बनाकर उनमें घन एँठ सक्ते हैं।"

मिलन्नी का राजा अपने दरबारियों सहित उन दिनों गमियों की वजह से पहाड़ों पर चला गया था और मैंने इनकी परेशानी भुगतनी मजूर नहीं की कि वहाँ जाकर उमगे मिलना। परन्तु होरेमहेंव के बड़े अनुगार मैं वहाँ के बड़े लोगों में मित्रा और गरीबों में भी मित्रा। गमी बेचैन थे। मिलन्नी बिमी उमाने में शक्तिशाली क्षेत्र था परन्तु आजकल हवा में उड़ना-गा हल्का प्रतीत होता था। उसके एक ओर पूर्व में बेबीलोन था तो उत्तर में जमनी जालियाँ थी, और पश्चिम में हिनेनी लोग थे जिनका देश 'हानी' कहलाता था। मैंने हिनेनियों के बारे में जिनना सुना था कि वह भयानक लोग थे उनकी ही मेरी इच्छा बड़ी जान को प्रबल हो उठी परन्तु पढ़ने मैंने बेबीलोन जाना तय किया।

मिलन्नी के बागिचे बर के छोटे थे, उनकी स्त्रियाँ सुन्दर थी और बच्चे लिलीपुट जैसे लगते थे। हो मजता था कि वह कभी जबरदस्त थे और उन्होंने उत्तर-दिशि पूर्व और पश्चिम में राज्य किया था, परन्तु वह तो एक ऐसी बात है जिसे सभी राष्ट्र अपने बारे में बता कर रहे हैं। मुझे तो उड़ना मान्य था कि जकने क्राऊन मित्र में राज्य करने थे तब से यह लोग हमें जालियाँ थे और उन्हें कर भेजते थे। दो बीड़ियों में यह लोग अपनी लड़कियों को वहाँ मजरा की सेवा में भेज रहे थे। मुझे उन लोगों में जान

करने के बाद पता लगा कि उनके देश को सीरिया और मिस्र की ढाल की तरह बेबीलोन की महान् शक्ति और जयती जातियों के विरुद्ध काम में लाया जाता था, और केवल इसी कारण से फ़राऊन उनके राजा को बनाये रखता था और उन्हें हथियार, सिपाही और सुवर्ण दिया करता था । परन्तु वह लोग इस बात को समझते नहीं थे, और अपने देश और अपनी शक्ति का बेहद घमंड करते थे ।

और मैंने देखा कि वह ऐसा देश था जिसका भविष्य अंधकारमय था । लोग इस तरफ से वेफिक्र थे और खाने-पीने, वस्त्रों और नुकीले जूते और ऊँची टोपियों में मस्त रहते थे । वह लोग जवाहिराती के भी कुशल पारखी थे । वहाँ के लोगों के हाथ-पाँव मिश्रियों की भाँति पतले थे और स्त्रियों की त्वचा तो इतनी अधिक गोरी, नर्म और पारदर्शी होती थी कि अन्दर से नीली नर्से भी दिखाई देती थी । उनके आचरण नम्र और बोली मीठी होती और छुटपने से ही वहाँ की स्त्रियाँ और वहाँ के पुरुषों को नडाकत के साथ चलना सिखाया जाता था । वहाँ की रंगशालाओं में भी कभी झगड़े नहीं होते थे । मुझे उनके लिए डर लगा करता क्योंकि जो युद्ध मैंने देखा था और यदि जो कुछ 'हाती' राज्य की बाबत मैंने सुना था वह सब सच था तब तो मितन्नी डूबा ही समझना चाहिए था ।

उनके वैद्य चतुर और योग्य होते थे । और उनका इलाज ऊँची श्रेणी का था । परन्तु वह सिर खोलने की विधि से अनभिज्ञ थे ।

वह सोम मेरे पास इलाज कराने आये । जिस प्रकार उन्हें परदेशी वस्त्र पहनने और परदेशी मदिरा पीने का शौक था उसी प्रकार परदेशी इलाज के भी वह शौकीन थे । उनकी स्त्रियाँ मेरे पास मुस्कराती हुई आईं और उन्होंने मुझसे अपने दुःख कहे और कहा कि उनके पुरुष आलसी, धके हुए और पौरुष से खाली थे । उनकी बातों का अर्थ मैं समझ गया पर मैंने उन्हें आने न बढ़ने देने में होशियारी की क्योंकि मैं परदेश में उनके कायदे-कानूनों को नहीं तोड़ना चाहता था । मैंने उन्हें स्मर्ना में सीखी हुई औषधियाँ दीं कि वह उन्हें मदिरा में घोलकर अपने पुरुषों को पिताया करें । स्मर्ना उन दिनों इस प्रकार की औषधियों के लिए प्रसिद्ध था और वहाँ से चलते समय उनसे उक्त औषधियाँ बनाना मैं सीख आया था । मैं कह नहीं

सबता कि उन मित्रों ने यह भोगप्रिया अपने पत्नियों को दी अथवा अपने मित्रों को, वैसे मुझे मित्रों की ही सम्भावना अधिक लगती है, पर यह अवश्य है कि उनकी हविष पूरी हो गई होगी। उनमें से योशी ही मित्रों के वस्त्रों के जगमगे मुझे उन पर छाई हुई आपत्ति और भी बड़ी प्रतीत होने लगी थी।

वास्तविकता यह थी कि इन लोगों को अपने राज्य की सीमा के बारे में कोई ज्ञान नहीं था। हितैत्ती लोग पत्नियों को उगाड़कर से जाने और जहाँ उनके जी में आता वही लगा देने थे। यदि कभी मितन्नी आपत्ति करने तो वह हँसकर उनसे कहते : 'साहम हो तो लगा दो न तुम्हीं इन्हें।' मितन्नी मुनकर चुप लगा जाने क्योंकि जो कुछ उन्होंने हितैत्तियों के बारे में सुन रखा था उसे ध्यान में रखते हुए उनसे विरोध पैदा करना वह समझदारों नहीं समझते थे। हितैत्तियों की क्रूरता की यहाँ तक कहानियाँ कही जाती थी कि वह मनुष्य को पीटकर उसकी चीखें सुनकर और धारों से बहने रक्त को देखकर आनन्द मनाने थे। सीमाप्राप्त पर यदि कोई मितन्नी का रहनेवाला उन्हें मवेशी चराने से रोकता तो वह उसे पकड़कर उसके हथकाट डालते थे और खड़ी फसलें उजाड़ देते थे। या फिर पैर काटकर आदमी से कहते कि वह दौड़कर जाय और अपने राजा से उनकी शिकायत करे। सिर की खाल फाड़कर आँखों पर उल्टी उतार देते और फिर कहते : "अब सही स्थानों पर पत्थर गाड़ दे।" उनका अत्याचार अमानुषिक था। लोग कहते थे कि यह टीडी दल से भी अधिक भयानक थे। टीडियों के चले जाने पर पृथ्वी फिर से अनाज उगाती है परन्तु जहाँ होकर एक बार हितैत्तियों का रथ निकल जाता वहाँ निश्चय ही घास भी पैदा नहीं होती थी।

यहाँ की सभी बातें मैं जान चुका था और अब मैंने यहाँ अधिक रुकना व्यर्थ समझा। केवल एक बात रह गई थी और वह यह कि मितन्नी के वेष भेरी इस बात की, मैं सिर खोल सकता हूँ, नहीं मानते थे। मेरे ज्ञान पर यह एक आघात था। और तभी एक दिन मेरे पास एक छनी-मानी व्यक्ति आकर बोला कि उसके सिर में निरंतर समुद्र के गर्जन का रोर-सा हुआ करता है जिससे न उसे दिन में चैन है न रात को आराम। वह उससे बेहोश तक हो जाता है और इस कद्र दर्द उसके होता है कि उससे तो यह मर जाना बेह-

तर समझता है। मितन्नी वैद्यों ने उसे लाइलाज बहकर छोड़ दिया था।

वहाँ के वैद्यों की भोजूदगी में मैंने तीसरे दिन उसका सिर खोला और प्लाहौर ने जिस प्रकार उस हड्डी का भेजा साफ किया था उसी भाँति मैंने उसके भेजे में से चिड़िया के अंडे के बराबर मैल, जो शायद मैतान की रूह का अंडा था, अत्यंत सावधानी से साफ कर दिया। फिर चाँदी की मोटी चद्दर खोलते में लगाकर सिर सी दिया, मरीज पूरे समय तक होश में रहा और जब मैंने उसका घाव सी दिया तो उठकर खड़ा हो गया था और उसने मुझे धन्यवाद देते हुए कहा : “अब मेरी तकलीफ दूर हो गई है, अब वह शोर मुझे सुनाई नहीं देता... जो पीडा मोडी-बहुत हुई वह उस निरंतर होने वाली पीडा के सामने तो नहीं के बराबर थी।”

अब मितन्नी के वैद्यों ने मेरी बातों पर हँसना बंद कर दिया था। मेरा नाम दूर-दूर तक फैल गया और लोग मेरे हुनर की प्रशंसा करने लगे। तीसरे दिन वह रोगी नींद में उठकर चल दिया और ऊपर से गिरकर मर गया। परन्तु इसके लिए किसी ने मुझे दोषी नहीं ठहराया।

एक नाव किराये पर करके मैं और कप्ताहू नदी के बहाव के साथ बेबीलोन के लिए चल दिये।

बेबीलोन साम्राज्य से हम चलिड्या नाम के नगर में पहुँचे जिसे कैसाड-टिस-गूम भी कहते थे क्योंकि वहाँ के रहने वाले ‘साईटिस’ कहलाते थे। परन्तु मैं अपने वर्णन में इसे बेबीलोन ही लिखूँगा क्योंकि यही नाम प्रसिद्ध है। यह जगह अत्यंत उपजाऊ है और दूर-दूर तक वहाँ मैदान ही मैदान फैले हुए हैं जिनमें स्थान-स्थान पर सिंचाई की नहरें खुदी हुई हैं। मिस्त्री औरतें भुक्कर अनाज पीसती हैं और यहाँ अहु दो पत्थरों के बीच बैठकर उसे पीसती हैं जो प्रायः अधिक कठिन कार्य है।

पेड़ यहाँ इतने कम हैं कि उनका काटना जुर्म माना जाता है। जो कोई मया पेड़ लगाता है वह देवताओं की कृपा का भागी हो जाता है। यहाँ लोग तेल से चुपड़े-चिबने और छाये-पिये और मोटे-साजे हैं और मोटे लोगों की भाँति शुभमिवाञ्छ हैं जो अधिकतर हँसा करते हैं। यह लोग

गहरा खाना खाते हैं और इन्हीं के यहाँ मैंने एक विचित्र चिड़िया देखी जिसका नाम उन्होंने 'मुर्गी' बतलाया। यह उड़ नहीं सकती थी और मनुष्यों के बीच ही रहती थी और नित्य मगर के अंडे के बराबर एक अंडा देती थी जिसे वह लोग बड़े चाव के साथ खाते थे। हालाँकि उन लोगो में यह चिड़िया पदार्थ माना जाता था फिर भी मैंने उसे खाने का साहस नहीं किया।

परन्तु इस नगर की विनाशता और धन देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। इसका परकोट पर्वत के समान ऊँचा था और देवता के लिए बनाई हुई मीनार आकाश के मध्य मानो घुस गई थी। मकान यहाँ के पाँच-पाँच मंजिल ऊँचे थे और लोग उनमें एक-दूसरे के ऊपर रहते थे — यहाँ की सी दुकानें भीबाँड में नहीं थी।

इनका देवता मारूँक था। इसनर के मंदिर का तोरण अम्मन के द्वार से ऊँचा था और सूर्य के प्रकाश में उस पर लगे पत्थर चमकमा उठते थे। इस द्वार से मारूँक की मीनार तक एक सड़क जाती थी जो धीमे धीमे चलकर बन सा आती थी। यह इतनी चौड़ी और साफ थी कि उस पर होकर एक साथ कई रथ निकल जा सकते थे। इस बुजुं के ऊपर ग्योनिगी लोग रहते थे जो अच्छे-बुरे दिन तथा मनुष्य के भाग्य को उसका ज्ञापन बना-कर बतला देते थे।

मेरे पास इतना सुवर्ण था कि मंदिर के खजाने में चाहे जब गिनकर ला सकता था। मैंने वहीं द्वार के पास एक कई मंजिल ऊँची मराम में घर बनाया। यहाँ ऊपरी मंजिलों पर छतों पर बाग लगाये गए थे जहाँ पेड़ और फल-पूल लिये रहते थे। मेहरी यहाँ बहुत मिवनी थी। इस मराम में बड़े-बड़े आदमी ही ठहरा करते थे — जैसे राजदूत अथवा ऊँचे व्यापारी गण। यहाँ कमरों में मोटे गमीचे बिछे थे और जगनी जानवरों की गर्म लातों से सीया मकाई गई थी, दीवारों पर रंग-बिरंगे पत्थर काटकर भिज बने हुए थे जो अतिशय कामोत्प्रेरक थे। इसका नाम इसनर का अन्नद-भवन था और मगर में सभी लोग वस्तुओं के साथ यह भी देवता भी ही प्यार-राद थी।

यहाँ मैंने अपने मराम के लोग देखे और जाना आया-गई हुई। यह लोग

बाजारों में ऊँचे व्यापार किया करते थे। लोग कहते थे कि बेबीलोन ससार के मध्य में था और यहाँ का व्यापार बहुत ऊँचे दर्जे का था। व्यापार यहाँ सबसे महत्त्व का विषय था। नगर कोट तथा किले यह लोग अरमरधार्य बनाते थे लड़ने के लिए नहीं। यहाँ व्यापारिक क्षेत्र इतना बड़ा था कि देवता भी आपस में व्यापार करते थे अर्थात् एक मंदिर दूसरे मंदिर से व्यापार करता था। फिर भी उन्हें अपने सजे हुए सैनिकों पर गर्व था। वह सोने-चाँदी से भरे कवच और शिरस्त्राण पहनते थे।

मेरा पत्र मुझसे पहले ही यहाँ आ पहुँचा था। एक दिन मेरे पास इस्तर के आनन्द भवन में एक आदमी आया और उसने कहा कि बेबीलोन के मग्राह ने मुझे बुलाया था। कप्ताह मुनते ही आदित के मुताबिक घबराया और उसने कहा : "मत जाओ... बलौ यहाँ से भाग चलें.. राजाओं से मिलकर कोई साध नहीं होगा.. उन्हें मारे न जाएँ," मैंने कहा : 'मूर्ख ! हमारे पास हमारा देवता जो है !"

मुनकर उसने हाथ भले और कहा, "देवता छोटा-सा है और काम बड़ा है। और फिर हर बेजा काम में उसकी शक्ति की परवाह करना भी बेजा है। ..पर खैर जब तुम जाओगे तो मैं भी साथ चलूँगा ताकि मरें तो द्रष्टे मरें। परन्तु एक बात करो। आज मत जाओ क्योंकि आज हमने का आखिरी दिन है और सारा बाजार और लोगों के घर तक बन्द है। और फिर अब जाना ही है तो क्यों न द्रव्य के साथ जाओ... उससे कहो कि वह वह ले जाने के लिए कुर्सी लेता आवे।"

मैंने देखा कि वह बात पने की कह रहा था। मैंने बादशाह के आदमी से कहा, "तुम मुझे मामूली परदेशी समझ सकते हो यह तुम्हारी मर्जी है पर मैं बादशाह के पास कल जाऊँगा आज नहीं, क्योंकि आज खाली दिन है और फिर बल भी तब आऊँगा जब तुम्हारा बादशाह मेरे लिए कुर्सी भेजेगा क्योंकि सोवर से बिगड़े पैर लिये मैं बादशाह के सामने नहीं जाना चाहता।"

वह बोला, "मिथी कीड़े ! यह बोल तुम्हें भाते से छिदाकर कही मरवा न दें।"

पर साफ लगता था कि वह मेरे शब्दों से अत्यन्त प्रभावित हुआ था क्योंकि दूसरे दिन जब वह लौटा तो कुर्सी लेकर आया, हालांकि वह कुर्सी

भामूली थी जैसी कि साधारण व्यापारियों को बुनाने के लिए भेजी जाती थी।

कप्ताह ने उसे देखकर गालियाँ बकी और वह चिल्लाया, "सैट और समाम शैतान तुम्हारा नाश करें ! माझूँक तुमपर बिच्छू छोड़े ! यहाँ से भाग जाओ ! क्या तुम यह समझने हो कि मेरा मालिक इस टूटी कुर्सी पर जाएगा ?"

दास फटे नेत्रों से देखने लगे। उस आदमी ने कप्ताह को अपना डडा दिखाया और दर्शक एकत्रित होकर हँसकर कहने लगे, "अपने उस मालिक को तो दिखा जिसके लिए यह कुर्सी ठीक नहीं है !"

कप्ताह ने तुरन्त उस सराय की बड़ी कुर्सी किराये पर मंगाई जो काफी रकम की थी। यह एक बहुत ही शानदार और बड़ी कुर्सी थी जिसे चालीस दास मिलकर उठाते थे और जिसमें केवल शक्तिशाली राज्यों के राजदूत इत्यादि चढ़ा करते थे या फिर परदेशी देवताओं की सवारियाँ निकाली जाती थी। और जब मैं सुनहरी व रुपहली जूरी से मड़ी हुई कामदार पोशाक पहनकर नीचे उतरा तो लोगों की हँसी थम गई। मेरे गले और वक्ष पर सुवर्ण में खचित जवाहिरात सूर्य के प्रकाश में चमचमा रहे थे। मेरे गले में मोटी-मोटी सोने की जड़ीरें पड़ी हुई थीं। सराय के दास मेरे पीछे-पीछे सिंढार और आवनूस से बने हुए मेरे दवाओं के बस्तों को लेकर चले। लोगों ने मेरे सामने सिर झुका दिए। वह कहने लगे, "यह व्यक्ति तो सचमुच ही देवताओं जैसा योग्य लगता है... चलो हम लोग भी इनके पीछे-पीछे राजमहल को चलें।"

महल के दीर्घ द्वार पर सैनिकों ने भीड़ को भालों से रोका। ढालों की दीवार-सी खिंच गई जिन पर सोना और चाँदी चमकने लगी। जब मुझे भीतरी प्राणण की ओर ले जाया गया तो मैंने देखा भाग के दोनों ओर अगणित उड़ते हुए प्रस्तर के दीर्घ और विशालकाय सिंह रखे थे। यहीं मुझे एक बूढ़ा मिला जिसके गाल लटके हुए और नेत्रों में क्रोध था। उसकी ठोड़ी मुड़ी हुई थी और वह वहाँ के पड़े-लिसे लोगों की भाँति बानों में सुवर्ण के कूँडल पहने हुए था। वह मुझे देखकर बोला :

"तुम्हारी हारवतों से मेरा ज़िगर जलने लगा है। तुम आये क्या हो

अपने साथ नाहक भीड़ लगाकर साथे हो और तुमने व्यर्थ का हल्ला मचावा दिया है। दुनिया के चारों कोनों के मालिक ने मुझसे पूछा था कि यह आदमी कैसा है जो अपनी इच्छा से आता है और वादनाह की मर्जी से नहीं आता और जो अब आता है तो साथ हंगामा भी लाता है।”

मैंने उसको उत्तर दिया, ‘तुम्हारी बरबक मुझे मस्जिदों की भिन्न-भिन्न-हट-सी लगती है फिर भी मैं तुमसे पूछता हूँ कि तुम हो कौन जो मुझसे यह सब पूछने हो।’

“मैं दुनिया के चारों कोनों के मालिक का सबसे बड़ा बैर हूँ।” उसने कहा, “और तुम कौन ठग हो जो यहाँ हमारे मालिक को लूटने आये हो? यदि वह तुम्हें खुश होकर सोना या चाँदी दे तो समझ लो कि उसमें से मुझे आधा देना होगा।’

“तब तो तुम मेरे विचार से मेरे नौकर से वार्त करो जिसका काम बीच के बदमाशों को हटाना है। परन्तु फिर भी तुम्हारा बुझापा देखकर मैं तुम्हें दोस्त बना सकता हूँ हालाँकि तुम जानते कुछ भी नहीं हो। मैं अपने हाथों के यह सुवर्ण के कड़े तुम्हें दे दूँगा केवल यह दिखाने के लिए कि सोना मेरे लिए पैरों के नीचे की धूल से बड़कर नहीं है... मैं तो केवल ज्ञान का मूला हूँ।”

जब मैंने उसे बाँह से उतारकर सुवर्ण-खलप दे दिया तो वह हैरत में रह गया और इतना घबरा गया कि उसने मेरे साथ कप्ताह को भी अन्दर चला जाने दिया।

सम्राट बनें शूरियाश एक हवादार विशाल कक्ष में नरम गद्दों पर गाल को हाथ से दबाये बैठा था। वह एक विंगडा हुआ उद्दण्ड लड़का था। कमरे की दीवारों पर रंग-बिरंगे पत्थर चमचमा रहे थे। उसके पैरों के पास एक सिंह बैठा था जो हमें देखकर गुराया। बूढ़ उसे देखकर भूमि पर उल्टा लेट गया और होठों से पृथ्वी घिसने लगा। कप्ताह ने भी उसकी नकल की परन्तु जब उसने सिंह की गुराहट सुनी तो झपटकर उठ बैठा जिसे देखकर वादनाह हँसते-हँसते पीछे झुक गया। वह इतना हँसा कि उसकी आँखों में पानी आ गया। फिर अपने दर्द की याद कर वह कराहने लगा उसका एक गाल इतना सूज गया था कि उसकी बहवाली आँख भी आधी ही खुली थी।

यह उस वंश को देखकर गुराया तो वह झट से बोला, "यही वह मित्री है जो बुलाये से कल नहीं आया था। केवल एक शब्द श्रीमान् कह दें और सैनिक इसका हृदय फाड़ देंगे।" परन्तु बादशाह ने उसके साथ देकर कहा, "यह समय व्यर्थ धातें करने का नहीं है... पहले मेरा इलाज करो। मेरा दर्द इतना ज्यादा है कि अगर शीघ्र ठीक नहीं हुआ तो शायद मैं मर ही जाऊँगा। कई रात तो मैं सो भी नहीं सका हूँ।"

बुद्ध पृथ्वी पर सिर पटककर कहने लगा, "हे मसार के चारो कोनो के मालिक ! जो कुछ भी कर सकते थे वह सब हमने वरके देस लिया है हमने मन्दिर में जबड़े और दाँत सब चढा दिये हैं कि जो भूत श्रीमान के जबड़े में धुस गया है वह निकल जाए। इससे ज्यादा हम कुछ क्या कर सकते हैं क्योंकि अपने पवित्र शरीर को आप हमें छूने तो देते नहीं हैं और मेरा विचार है कि यह गदा मिस्त्री भी कोई लाभ नहीं पहुँचा सकेगा।"

तब मैंने कहा, "मैं मिस्त्री हूँ, सिन्धूहे—वह जो फराऊन द्वारा 'एवाजी' कहा गया था—वह जिसे युद्ध के बीच सैनिकों ने 'जगली गधे का बेटा' कहकर पुकारा था—श्रीमान को देखकर मर्ज जानने की आवश्यकता मुझे नहीं है क्योंकि आपका सूजा हुआ गाल साफ बता रहा है कि अन्दर डाढ़ बिगड़ गई है जिसे आपने समय के अन्दर, जैसा कि निश्चय ही आपके बँधों ने आप से कहा होगा, नहीं उपडबाया है। ऐसे दुःख अधिकतर बालकों के हुआ करने हैं और संसार के चारो कोनो के सम्राट् को शोभा नहीं देने जिसके सामने स्वयं सिंह भी काँपा करते हैं जैसा कि मैं प्रत्यक्ष भी देख रहा हूँ। फिर भी आपकी पीड़ा तीव्र है और मैं इसे ठीक कर दूँगा।"

बादशाह ने बैसे ही बँडे-बँडे कहा :

"तुम सचमुच बड़े साहस से बोलते हो। अगर मैं ठीक होता तो तुम्हारी जुवान बटवाकर तुम्हारा जिगर चिरवा देता—पर इस समय मैं अपना इलाज कराना चाहता हूँ। मुझे शीघ्र अच्छा कर दो और तुम्हें बड़ा इनाम मिलेगा पर अगर तुम मुझे कष्ट दोगे तो मैं शीघ्र मरवा डालूँगा।"

"ऐसा ही हो।" मैंने कहा। फिर अपने औजार बाहर निकालकर उन्हें पवित्र अग्नि में शुद्ध करने लगा और साथ-साथ मैं कहता भी गया, "मेरे एक छोटा-सा देवता है पर है वह अत्यन्त शक्तिशाली। कल मुझे उसने

नहीं आने दिया तो मुझे जीवनदान दे दिया क्योंकि आपके मूँह का सँतान आज ही पका है। मैं इसे बहुत ही आसानी से और बिना दर्द किये हुए फोड़ दूँगा। वैसे देवतापण बादशाहों को भी पीड़ा से मुक्त नहीं करते परन्तु यह मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे काम के बाद आपको बेहद आराम मिलेगा।”

और मैंने मदिरा गर्म करने की आज्ञा उस वैद्य को दी। वह बड़बड़ाया और उसने अपना सिर पृथ्वी पर दे मारा पर मैंने उसकी कोई परवाह नहीं की।

बादशाह कराहता हुआ बैठा था। वह सुन्दर लड़का था और मुझे वह भा गया था।

उस मदिरा में मैंने सुन्न करने की औषधि मिलाकर उसे पिलाया जिसे पीकर उसके नेत्र चमकने लगे और वह बोला :

“मेरा दर्द जाता रहा है...अब मुझे तुम्हारे चाकू-चिमटी की कोई जरूरत नहीं है।”

परन्तु मेरा आत्मिक बल अधिक था। उसका सिर अपनी काँख में मजबूती से दबाकर मैंने उसका मूँह खुलवाकर उस फूले मतूदे में अपना गर्म चाकू घुसाकर मवाद निकाल दिया। वह चाकू के दर्द से चिल्लाया जिसे सुनकर वह सिंह उठ बैठा और उसने दहाड़ लगाई। उसके नेत्रों से अंगारे बरसने लगे और उसने पूँछ उठाकर छड़ी कर ली। परन्तु शीघ्र ही वह बूकने लग गया। अब उसका दर्द जाता रहा था। मैंने उसके गाल ऊपर से तनिक दबाकर उसे और आराम दिया। अब वह दर्द जाता रहा था और घूक-घूककर उसने सारा मवाद और रक्त निकाल दिया था। वह बोला :

“मिस्री सिम्बूदे ! गो तुमने मुझे छू दिया फिर भी तुम छत्र्य हो !”

बूढ़ भीतर ही भीतर जल गया और उसने बट्टा, “ऐसा तो मैं भी कर सकता था यदि श्रीमान मुझे अपना शरीर छूने की आज्ञा दे देते और दाँतो वाला वैद्य तो इससे भी अधिक चातुर्य से इस काम को कर लेता।”

और जब मैंने कहा कि उसका कपन सत्य था तब तो वह आश्चर्य-चकित रह गया। “परन्तु”, फिर मैंने कहा, “इन लोगों का आत्मिक बल मेरे समान प्रबल नहीं था जो कि वैद्य में होना चाहिए क्योंकि बादशाह की

पीड़ा भी विधिवत् ही दूर की जा सकती है अन्यथा नहीं। यह लोग अपने प्राणों के भय से डरते थे और इलाज ठीक नहीं कर रहे थे। अब मैंने इलाज कर दिया है और श्रीमान् के अनुचरों का स्वागत है कि वह मेरा ज़िगर फाड़ डालें।”

बादशाह ने फिर थूककर गाल दबाया जहाँ अब दर्द बिल्कुल नहीं था और कहा :

“आज तक मैंने तुम्हारे समान निर्भीकतापूर्वक बोलने वाला व्यक्ति नहीं देखा मिन्यूहे ! परन्तु तुमने मेरी पीड़ा हरी है अतएव मैं तुम्हारी उद्दण्डता को क्षमा करता हूँ—और साथ ही साथ तुम्हारे अनुचर के प्राण भी छोड़ देता हूँ जबकि उसने मुझे तुम्हारी कान्ठ में तिर फँसाये रोने देखा लिया है। और फिर इसलिए भी उसे माफ़ करता हूँ कि उसने अपनी मूर्खता से मुझे हँसाकर सुन किया था।” फिर बादशाह से कहा, “बैसा फिर करो।”

पर उमने उत्तर दिया, “यह मेरी तोहीन है।”

बनेदुरियास ने मुस्कराकर उमगर मिह को सलाम दिया। और जब मिह उमकी ओर चला तो वह भागा और त्रिवाड पर चढ़ गया। मिह भी दीवान के सहारे पिछले दोनों पीरो पर लडा हो गया तो वह और ऊपर उठ गया और अछर-भा मटक गया। बादशाह का हँसी के मारे मुरा झान था।

फिर उमने मुझे साथ बिठाकर मदिरा तियाई और खाना निपाया। कई चाँदी के घाँसी में उनम भोजन परोसा गया जिनहे मैंने चाब में साधा और उनम मदिरा पी। मैंने कहा :

“आपके दर्द का असली कारण यह बिगरी हुई डाढ़ है और यदि यह खींचकर न निकाली गई तो आपका दर्द भीट सकता है। जब यह भीड़ का मूत्रन बैठ जाय तो उसे उखाड़ा लेना आवश्यक है।”

उमका चेहरा मूत्रकर स्याह पड़ गया और वह बोला : “हे परदेसी ! तुम पादपों की भाँति बहुत अधिक खान करने हो।” फिर कुछ सोचकर कहा, “हो सकता है कि तुम टीक चढ़ने हो क्योंकि हर भाँगी में यह दर्द बस जाता है जब मेरे पीर टूटने हो जाते हैं। उस समय दर्द इतना बढ़ जाता है कि मैं करना बेहतर समझने सकता हूँ। यदि यह बन्ध उखाड़ा हो ज़रूरी

है तो तुम इसे उखाड़ोगे क्योंकि उस दाँत वाले बैद्य को तो पास भी नहीं आने दूँगा..."

मैंने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया : "आपका दाँतोवाला बैद्य ही उसे उखाड़ेगा क्योंकि इस काम में उससे चतुर और कोई नहीं है—वह मुझसे भी ज्यादा हौशियार है। मैंसे मैं पास खड़ा रहूँगा और आपके हाथ पकड़कर आपकी हिम्मत बढ़ाऊँगा। मैं अपनी नाना देशों से प्राप्त विद्याओं से आपका ध्यान बँटा दूँगा और इस बीच जो दो हफ्ते का समय ठीक रहेगा जिसमें आपके मूँह की मूजन भी बँट जाएगी, आपको कुल्हा करने के लिए एक अति उत्तम औषधि दूँगा जो बीसे तो बुरे स्वाद की होगी और मूँह में थोड़ी-थोड़ी लगेगी भी, परन्तु इस मूजन को शीघ्र बिठा देगी और बाद में दाँत उखाड़ते समय भी सहायक सिद्ध होगी।"

वह नाराज़ हो गया, "और अगर मैं यह सब न करूँ तो?"

'आप मुझे वचन दें कि यह सब मेरे कहे अनुसार होगा और यह मैं जानता हूँ कि सत्सार के चारों कोनों का शासक वचन देकर कभी नहीं फिर सकता। और यदि आपने मेरा वहाँ कर दिया तो मैं आपका दिल अपने हुनर से ख़ुम कर दूँगा—पानी को खून बना दूँगा—और फिर आपको उसका कारण भी सिखा दूँगा कि आप अपना रियाया को धमत्कार दिखाकर प्रभावित कर सकें। परन्तु आपको वचन देना होगा कि आप उसे रहस्य ही बनाये रखेंगे क्योंकि यह अम्मन के मंदिर के प्रथम श्रेणी के पुजारी होने के नाते मैंने सीखी है और यदि आप बादशाह न होते तो मैं आपको यह कभी न बतला सकता था।"

और सभी कप्ताह पिल्लाया : "अरे इस दुष्ट जन्तु को शीघ्र हटाइये, मेरी कमर दुख रही है...अन्यथा मैं नीचे उतरकर इसका वध कर दूँगा।"

बर्नबुरियाग फिर जी भरकर हँसा और उसने मुझसे कहा : "इसे मुझे बेच दो...मैं तुम्हें बहुत धन दूँगा—बड़ा मसखरा आदमी है यह!"

जब हम वहाँ से लौटे तो मैंने उस बूढ़े बैद्य से कहा "दो सप्ताह बाद फिर आपत्ति आनेवाली है। अभी से बलि देकर देवताओं को सन्तुष्ट कर लिया जाय तो उत्तम रहेगा...क्यों?"

वह धर्मभीष्ट मनुष्य था। उसे मेरी सलाह बहुत ही भली लगी।

दांत वाले बंध को भी लेकर उसने मुझसे मिलने का वचन दिया और बाहरी प्रांगण से बैठे मेरी कुर्मी उठानेवाले चालीमां दामो को भोजन कराया और मदिरा पीने को दी। जब मैं वापस चला तो दाम गाना गा-गाकर मेरे यश को बखानते आ रहे थे। मेरा नाम उन्होंने पूरे नगर में फैला दिया। भीड़ें मेरे पीछे चली आ रही थी परन्तु कप्ताह अपने श्वेत गधे पर चढ़ा हुआ नाराज चला आ रहा था और मुझसे बोलना भी न था क्योंकि उसकी सौहीन हो गई थी।

दो सप्ताह बाद मझूँक की युज में मैं बादशाह के बंधों से मिला और हमने मिलकर एक भेड़ मंदिर में बलि चढ़ाई। पुजारियों ने उसका जिगर देखकर, क्योंकि उस देश में जिगर देखना एक विशेषता थी यह कहा : “बादशाह अत्यन्त क्रुद्ध होगा परन्तु कोई आदमी मारा नहीं जायेगा परन्तु तुम्हें पजो और भातों से सावधान रहना चाहिए।”

फिर हमने नजूमियों से कहा कि वह अपनी स्वर्ग की पुस्तक देखकर बतलाएँ कि वह दिन शुभ था अथवा अशुभ। उन्होंने कहा कि दिन न तो शुभ था न अशुभ, बेहतर था कि हम कोई दूसरा दिन छांटते। फिर पुजारियों ने हमारी प्रार्थना पर जल में तैल डालकर भाग्य देखकर कहा कि उसमें कोई विशेषता उन्हें प्रतीत नहीं हुई—सासकर कोई बुरा शकुन उन्हें नहीं दीखा। जब हम मंदिर से चले तो एक गिद्ध एक मनुष्य का शिर पजे में पकड़े हमारे ऊपर से उड़ गया जो उसने दीवाल से उल्टे लटके हुए किसी मुर्दे के शरीर से नोच लिया था। पुजारियों ने इसे अच्छा लक्षण बताया हालांकि मुझे वह बहुत ही उल्टा प्रतीत हुआ।

इन सब भविष्यवाणियों से सचेत होकर हमने बादशाह के सैनिकों और उस सिंह को कक्ष के बाहर छोड़कर अन्दर से द्वार बन्द कर लिये क्योंकि अपने गुस्से में मुमकिन था कि वह उन्हें हम पर छोड़ देता जैसा कि मुझे उन लोगों ने बतलाया, होता आया था।

सम्राट् वनें बुरियाण मंदिरा से चक होकर बहादुरी के साथ आया परन्तु जब उससे दांत वाले बंध के पास कुर्मी पर बैठने को कहा गया तो

भय से पीला पड़ते हुए बोला : “सुभे राज्य के बहुत ही आवश्यक कार्यों को करने अभी जाना है... मैं पीने में उन्हें भूल ही गया था,” और मुड़कर जाने लगा। उसके बैद्य पृथ्वी पर ओढ़े पड़े थे और होठों से ज़मीन पोछ रहे थे। तभी मैंने आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ लिया और कहा : “श्रीमान् धैर्य रखें, सब काम पलक मारते ही जायेगा... तनिक भी पीड़ा नहीं होगी,” और मैंने बैद्यों को काम शुरू करने की आज्ञा दी। औजारों को पवित्र अग्नि में गुड़ किया और मैं उसके मुँह में सुन्न करनेवाली औषधियाँ मलने लगा। शीघ्र ही वह बोला : “बस अब मत मलो... मेरा मुँह और जिह्वा लकड़ी जैसी हो गई है। फिर हमने उसे कुत्सी पर बिठाकर उसका मुँह खोलकर अन्दर लकड़ी फँसा दी कि वह उसे बन्द न कर सके। मैंने उसके हाथ पकड़कर उसे धीरज बाँधाया और उसके दाँतों वाले बैद्य ने बेबीलोन के सम्पूर्ण देवताओं को जगाकर चिमटी से इतनी सफाई से एक ही झटके में वह डाढ़ स्वीचकर निकाल ली कि मैं देखता ही रह गया। इतनी सफाई का काम मैंने इस सम्बन्ध में आज तक कभी नहीं देखा था। हालाँकि बादशाह उस समय पीड़ा से गै-नै-गै-नै करने लगा था और जूड़ हो उठा था और जिसे सुनकर बाहर सिंह ने गरजकर द्वार से टक्कर दी थी और द्वार को बारम्बार पंजों से सुरुचने लगा था।

अब उस बादशाह का सिर छोट दिपा गया और उसके मुँह से वह लकड़ी निकाल ली तो वह क्षण प्रलयकारी प्रतीत हुआ; क्योंकि पाप में उसने खून सूककर चिल्लाते हुए बकना शुरू किया। उसके नेत्रों में अध्रु भर आये थे और वह गरजकर सैनिकों को आज्ञा देने लगा कि हम सबको मार डाला जाय, उसने सिंह को भी पुकारा कि वह हम सबको पाटकर ला जाय और फिर लकड़ी लेकर अपने बैद्य—उन वृद्ध को मारने लगा। दाँत वाला बैद्य समझा कि उसका अन्त समय आ गया था और पड़ा-पड़ा धर-धर काँप रहा था। तभी मैंने उससे (बादशाह से) कहा कि वह कुत्सा करे। उसने बैसा ही किया। खूब कुत्सा करने के बाद जब रक्त रक गया और पीड़ा भी नहीं रही तो वह तनिक पान्त हो गया। फिर मुझसे बोला : “अपने बचनानुसार मुझे अब वह बमाल दिखाओ।” हम एक और कमरे में गए क्योंकि उस मनहूस कक्ष में अब वह एक क्षण भी खना पसन्द नहीं

करता था। मैंने एक पात्र में जल ढालकर उसे बादशाह और उसके वैद्यों को चाखाया कि वह उसे परत लें कि वह जल ही था। फिर मैंने उसे धीरे-धीरे एक और पात्र में छोड़ा और सभी आश्चर्य से देखने लगे क्योंकि वह रक्त में परिणित हो गया और सभी ने चिल्लाकर आश्चर्य प्रगट किया।

बादशाह ने प्रसन्न होकर अपने वैद्यों को तब इनाम बाँटा। दौत वाले वैद्य को तो उसने वास्तव में भालदार बना दिया। जब सब चले गए तो मैंने उसे रक्त बनाने की वह विधि भी बतला दी जो, जैसाकि सभी जानते हैं, कितनी सरल है, परन्तु सभी हुनर जड़ में आसान ही तो होते हैं। बादशाह ने मेरी बड़ी तारीफ़ की और फिर तुरन्त अपने दरबारियों को महल के बड़े तालाब के पास बुलवाकर सबके सामने उस जल को रक्त में बदलकर जब दिखा लिया सभी चैन पाया। और तब बड़े और छोटे, ज़बर्दस्त और सीधे सभी भय से उसके चरणों पर लोट गए।

बनबुरियाश प्रसन्न हो उठा, वह दाँत का दर्द अब बिल्कुल भूल गया था। मुझसे वह खुश होकर कहने लगा : “मिस्री सिन्यूहे ! तुमने मेरा इलाज कर दिया है, मेरी तबियत खुश की है और मुझे कमाल सिखाया है। मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। माँगो क्या चाहते हो और वही तुम्हें मिलेगा।”

मैंने उत्तर दिया : “ससार के चारों कोनों के सम्राट् बनबुरियाश ! वैद्य होने के नाते मैंने आपके सिर को अपनी कोख के नीचे दबाया है और जब आप चिल्ला रहे थे तो आपके दोनों हाथ पकड़े हैं। मैं परदेसी हूँ और जब अपने देश लौटूँगा तो बेबीलोन के प्रचंड सम्राट् की ऐसी याद लेकर नहीं जाना चाहूँगा। अतएव अपनी ठोड़ी पर आप एक दाढ़ी बाधें और अपनी विशाल बाहिनी को एक बार मेरे सामने होकर निकालें कि जब मैं आपकी उस प्रचंड शक्ति को देख लूँ तो पृथ्वी पर औंधा गिरकर आपके सामने सिर झुका दूँ...अपने-आपको धूल समझने लग जाऊँ...यस यही चाहता हूँ और मुझे कुछ नहीं चाहिए।”

मेरी प्रार्थना से वह प्रसन्न हो उठा। वह कहने लगा : “तब मुझे मेरे भामने आज तक ऐसे कोई नहीं बोला सिन्यूहे ! मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करता हूँ, हालाँकि पूरे दिन मुझे मुचर्ग सिंहासन पर बैठकर सलामी लेनी पड़ेगी। मेरे नेत्र थक जायेंगे और मैं जम्हाइयाँ लेने लूँगा।

परन्तु तुम्हारी खातिर यह सब मैं कहूँगा।”

ववायद का दिन निश्चित हो गया और उसके सम्पूर्ण देश में फैली हुई उसकी सेनाओं को आने की सूचना भेज दी गई।

इशतर के मंदिर के द्वार के सामने सेना का प्रदर्शन हुआ। सुवर्ण सिंहासन पर सम्राट् बैठा और उसके पैरों के पास सिंह बैठा। आसपास उसके उच्च पदाधिकारी पूरी तरह सजकर बैठे। सम्राट् उन सबके बीच ऐसा लग रहा था जैसे सोने-चाँदी के बादलों पर बैठा हो।

और तब धनुर्धरो, भाले वालों, सुसज्जित सैनिकों और रथों का समुद्र उमड़ पड़ा। रथों के भारी पहिये बादलों की भाँति गरजने लगे और सैनिकों की पदचाप से पृथ्वी झोलने लगी, मेरी आँखें तरने लगी और घटने कोपने लगे।

मैंने कप्ताह से कहा, “यह तो समुद्र की रेत की भाँति है जिनकी गणना भी कठिन है...फिर भी गिनो तो सही इन्हें।”

उसने विस्फारित नेत्रों से कहा, “मालिक, यह असंभव है क्योंकि इतनी तो शायद गिनती ही नहीं है।”

परन्तु मैंने फिर भी उन्हें गिनने का प्रयत्न किया। मैंने देखा कि सम्राट् के अंगरक्षक सोने-चाँदी से मड़ी डालें, कवच और शिरस्त्राण पहने हुए थे और तल्व लगे चिकने चमक रहे थे, वह साये-पिये स्वस्थ थे। वह इतने मोटे थे कि बैलों की भाँति हाँकते हुए बादशाह के सामने से चले जा रहे थे। परन्तु वह थोड़े ही थे। जो बाहर से आये थे वह गदे और तपे हुए लगने थे। उनकी खालें धूप में काली हो गई थी और उनमें से पेगाव की दुर्गन्ध आती थी। उनमें से कईयों के पास भाले भी नहीं थे। उनकी आँखों पर मस्किमाँ भिनभिना रही थी। उनके रथ भी पुराने थे जिनमें से दो-चार के तो पहिये भी हिल रहे थे। और तब मैंने समझ लिया कि सैनिक हर देश में ऐसे ही होते हैं।

शायकाल सम्राट् ने मुझे बुलाकर गर्व से मुस्कराने हुए मुझमें पूछा, “मेरी शक्ति देखो सिम्बूहे?”

मैं उसके सन्मुख पृथ्वी पर सेट गया और मैंने धरती को चूमकर उत्तर दिया, “वास्तव में आपके समान शक्तिशाली सम्राट् और कोई नहीं है।”

और लोग आपको मसाले के पारों कोने का सम्राट् व्यर्थ में ही नहीं कहते । मेरी आँखें बंद गई हैं, मेरा सिर चकरा गया है और मेरे हाथ-पाँव भय से काँप रहे हैं क्योंकि समुद्र की रेत के कणों की भाँति आपके पास सैनिक हैं... आपकी बाहिनी दुर्दम्य है । ”

वह खुश हो गया । फिर हमने मदिरा पी और भोजन किया । फिर वह मुझे अपने हरम में ले गया जहाँ देग-देस की स्त्रियाँ उसने एकत्रित कर रखी थीं । वहाँ दीवालों पर घोल सम्बन्धी मग्न चित्र बने थे और अनेकानेक आगनों से स्त्री-मुरूप युग्म दिसाये गए थे । उसने मुझे वही एक रात किसी भी स्त्री के साथ बिताने की आज्ञा दी । परन्तु जब मैं चुप रहा तो वह बारम्बार कहने लगा । अन्त में मैंने बहाना बनाकर कहा कि मुझे एक रोगी का सिर मोलना था जिसके लिए यह आवश्यक था कि मैं स्त्री मरण में उक्त समय तक दूर रहूँ अन्यथा देवताओं के क्रुद्ध होने का भय हो सकता था । वह मान गया ।

मेरे झोटेने से पूर्व उसने कहा “नदियाँ उफन रही हैं...नया वर्ष लग गया है अतएव पुजारियों ने आज मे तेरहवाँ दिन उत्सव के लिए निश्चित किया है । और उसी दिन नकली सम्राट् का दिवंग मनाया जायेगा । इस बार मैं सुनूँ इसमें एक आश्चर्य दिखाई देगा...परन्तु अभी मैं बगलाऊँगा नहीं क्योंकि फिर तो मेरा सारा मजा मारा जायेगा । ”

मैं सौट आया ।

बेबीलोन में मैंने वहाँ के वीरों से उनके इलाक़ की बहुत-सी अच्छी बातें सीखी, वहाँ के पुजारियों के ज्योतिष-ज्ञान का सुतपर बड़ा प्रभाव पड़ा । मैंने उनमें जेड के ज़िगर को देखकर भविष्य की बातों का ज्ञान सीखा । पानी पर नैज देखकर होने वाली बातों को सीखने में भी मैंने काफी समय व्यतीत किया ।

वहाँ के पुजारियों ने एक दिन पानी पर नैज तीरावर और जेड का ज़िगर देखकर मुझसे कहा, “सुन्दर ज़मन के बारे में कुछ सही बातें बतानी पड़ती हैं...ऐसा लगता है कि तुम साधारण मिथी हो नहीं हो बल्कि समार में कोई विशिष्ट कथा लेकर उभर आए हो...जेड का ज़िगर सही बतला रहा है । ”

और आश्चर्यचकित होकर तब मैंने उन्हें बतलाया कि मैं किस प्रकार वीर की नाव में बहा दिया गया था इत्यादि। मुनकर यह बोले, “यही हमने सोचा था।” फिर उन्होंने अपने यहाँ के एक बादशाह सार्जन की कथा सुनाई जिसने सम्पूर्ण पृथ्वी को अपने नीचे दबा लिया था पर जो स्वयं भी मेरी ही भाँति वीर की टोकारी में बहकर ज़ामा था और उसके जन्म के बारे में किसी को पता नहीं था। बाद में उसके महान् कार्यों को देखकर ही जाना गया था कि वह देवताओं की सत्ता था।

मुनकर मेरा हृदय भय से काँप उठा। मैंने हँसने की चेष्टा करते हुए पूछा, “मेरे बारे में तो कम से कम आप लोग नहीं सोचने होंगे कि मैं भी किसी देवता का पुत्र हूँ?”

परन्तु वह नहीं हँसे और गम्भीरतापूर्वक बोले, “हम यह बात नहीं जानते परन्तु स्वयं साथ ही छिपाना भी एक गुण है और हम श्रीमान् के सम्मुख सनमस्तक हैं,” और वह मेरे सामने पृथ्वी पर ओझे बैठ गए। एक बार फिर जब भेड़ का ज़िगर देखा गया तो उन्होंने मुझे भय से देखा और प्रणाम किया। वह बोले “आपकी भाग्य-देवा विचित्र है... आप देवता की सत्ता हैं... आपके शरीर में राज-रक्त बहता है... आप सत्ता पर हुकूमत करने के लिए पैदा हुए हैं...।”

पसल में जब नया दाना पड़ने लगा और राजों की बडाके की सदी कम हुई और थोड़ी गर्मी लगने लगी, तो पुजारी लोग नगर के बाहर जाकर देवताओं को उनकी कर्तों में से निकालने गए और फिर चिल्लाकर कहने लगे कि वह जाय उठे हैं। और तब बेबीलोन के नगर में धूम मचने लग गई। स्थान-स्थान पर लोग रग-बिरंगे वस्त्र पहनकर नाचने-गाने लगे और भीड़ की भीड़ बाजारों में टूट पड़ी। भीड़ ने दुकानें मूट ली और मैनिशों से भी अधिक मोर मचा दिया। इस्तर के मन्दिर में पुषतिपा और तरगिपा जाकर अपने विवाह का भाग लाने लगीं और जो भी उन्हें पसन्द करता था तब भी वह पसन्द करती उसीके साथ सब के बीच खुले में निरङ्गना-पुर्वक निपट जाती थी। इस उत्सव का अन्तिम दिन ‘नबनी सम्राट् का

दिक्क' कहनाया था।

अब जब बेबीलीन की रीतिरिवाजों से मैं काफी परिचित हो गया था परन्तु उक्त दिन मूर्ख निरूपण ने गहरे ही जब इन्तर के दीर्घ तौर पर सैनिक मदिरा पीकर चिन्मत्त हुए उपद्रव करने लगे तो मैं थकता गया और मैंने समझा कि नगर में बमबा हो गया था। अभी उन लोगों ने, भीड़ की भीड़ ने, द्वार तोड़ दिया और वह सगे चिल्लाने, 'हमारा सम्राट् कहीं छिप गया है ? मूर्ख निरूपण ने बापा है... उसे जल्दी माफ़ो।'

अभी अंधेरा ही था, भीड़ से ओर गहरा हो गया। मरणाजना दी गई और सराय के दास भय से काँपने लगे। कप्ताह डर के मारे मेरे पलंग के नीचे छिप गया। परन्तु मैंने एक ऊती चादर ओढ़कर द्वार खोला और उनके सामने सड़के होकर रोब से कहा, "यह तुम लोगों ने क्या गड़बड़ी मचा रखी है ? होश में आओ और मेरे सामने सम्भवकर पेग आओ क्योंकि मैं मिस्री सिन्यूहे हूँ— जंगली गधे का बेटा, जिसका नाम तुमने अवश्य ही सुना होगा।"

सुनकर वह हर्षोन्मत्त होकर चिल्लाये, "हम सिन्यूहे की ही जहर खा थी !" और उन्होंने मुझे उठा लिया और मेरी चादर खींच ली। अब मैं उनसे घिरा बिलकुल नग्न खड़ा था। नग्न देखकर वह एक-दूसरे के कोहनी मारकर हँसते हुए कहने लगे, "यह तो सचमुच ही खतरनाक है... हमारी धीरतों को इससे खतरा है क्योंकि इसके छतने को देखकर वह अवश्य इसे चाहने लगेंगी... स्त्रियाँ तो हर नयी वस्तु से आकर्षित हो जाती हैं !"

बेबीलीन में छतने की प्रथा नहीं थी। मुझसे खूब उपहास करने के बाद उन्होंने बताया कि वह कप्ताह की तलाश में थे जिसे सम्राट् ने आज के लिए चुना था। वह वहाँ जाकर सम्राट् बनाया जायेगा। अपना नाम सुनकर कप्ताह पलंग के नीचे ऐसा काँपा कि पलंग भी हिलने लगा और वह शीघ्र पकड़ लिया गया। उसे बाहर खींचकर लोगों ने उसके सामने सिर झुकाये और उसका जी भरके उपहास बनाया। कप्ताह ने भय से काँपने हुए मुझसे कहा, "अब मृत्यु आ गई... मैं तो गया ही पर मालिक तुम इस बुरे नगर से भाग जाओ... परन्तु इतना अवश्य करते जाना कि मेरी मृत्यु के बाद मुझे दीवाल से उतार लाना और मेरे शरीर को मिस्री ढंग से स्थायी

बना देना । मेरे शरीर की नदी में मत फेंक देना ।”

सुनकर सैनिक फिर चिल्लाये और बोले, “मादूक की कसम इससे अच्छा बादशाह हमें नहीं मिल सकता था ।”

फिर यह उसे भालों की मूंठों से ठेलते हुए पकड़कर ले गये ।

मुझे भी बड़ी चिन्ता हुई और मैं तुरन्त वस्त्र पहनकर महल की ओर चला । अभी सूर्य उगने से दूर थी पर सारा नगर जैसे उमड़ पड़ा था । सभी जगह से लोग मदिरोन्मत होकर महल की ओर जा रहे थे...भीड़ पर भीड़ उमड़ी पड़ रही थी ।

महल के बाहरी प्राणण में जोर मचा हुआ था, और मुझे विदवास हो गया कि हो न हो बसवा अवश्य हो गया था और अब अब आसपान से सैनिक उसे दवाने आवेंगे तो नगर में रक्त बहने लगेगा ।

परन्तु भीतरी प्राणण में जाकर जो कुछ मैंने देखा तो आश्चर्यचकित रह गया । सिंह के पैरों वाले मुवर्ण सिंहासन पर बर्नेबुरियाश राजसी वस्त्र पहने हाथों में राजदंड इत्यादि लिये स्वर्ण छत्र के नीचे बैठा हुआ था । उसके पीछे और बगलों में पुजारी वर्ग और उच्चपदाधिकारी लोग खड़े थे । परन्तु उन सबकी परवाह किये बिना सैनिक बप्ताह को लेकर सिंहासन के पास पहुँच गए । और उन्होंने बर्नेबुरियाश को सिंहासन से बलपूर्वक उठा दिया और उसके हाथ से राजदंड इत्यादि छीनकर उसे टीक मेरी तरह गगन कर दिया । तत्पश्चात् वह उसके गोरे मुतायम शरीर की नीचने लगे तो वह भागा । मुझे आश्चर्य हो रहा था कि मघाद् इस सबकी हँस-हँसकर हायापाई करता हुआ सहन कर रहा था । सैनिकों ने कहा, “अरे इसके मुँह में तो अभी माँ के दूध की गंध आती है . हरम की स्त्रियाँ भी बेचारी इस स्त्री के साथ ही जाने क्या करती हैं...इससे तो अच्छा यह बुझा मिथी है...बप्ताह तो उबड़स्त मर्द टहरा...बाह ! इसे ही बनाओ मघाद् ।”

और उन्होंने उसे राजसी वस्त्र पहनाकर राजमुकुट उमने सिर पर रख दिया और उसके हाथों में राजदंड इत्यादि पकड़ा दिये । अब उसे सिंहासन पर बिठा दिया गया तो सबसे पहले स्वयं बर्नेबुरियाश ने ही पृथ्वी पर औंधे लिटकर जगजा अभिवादन किया और फिर मँडिर बैठा ही करने लगे । अजीब समा था । भीड़ें उमड़ रही थीं, हल्ला हो रहा था, टहाने लग

रहे थे, और सभी नये सम्राट् की जयजयकार कर रहे थे, लगता था जैसे पूरा महानगर पागल हो गया था।

कप्ताह सिंहासनावृद्ध होने पर बोला, "यदि मैं वास्तव में सम्राट् हो गया हूँ तो आज्ञा देता हूँ कि मदिरा आने दो... जल्दी करो दासो! चलो अन्यथा मेरा डडा सबकी खबर लेगा...हाँ मदिरा...सबको पिलाओ... मेरे उन मित्रों को भी जिन्होंने मुझे सम्राट् बनाया है और मैं खुद तो गते तक उसमें ही डूब जाना चाह रहा हूँ।"

मुझे एकदम पता चल गया कि मार्ग में उन्होंने उसे तीव्र मदिरा काफी तादाद में पिला दी थी। उसकी आज्ञा सुनकर ठहाके लगने लगे। लोग उछल पड़े और उसे एक बड़े कमरे में धकेल ले गये जहाँ भोजन और मदिरा का प्रबन्ध किया गया था। मुझे आश्चर्य हुआ कि बर्नेबुरियाग स्वयं दामों की भाँति नग्न होकर वहाँ कप्ताह को सड़े-खड़े मदिरा पिला रहा था। बाहरी प्रांगण और उसके भी बाहर भेड़ और बैल का मांस लोगों को बाँटा जा रहा था और मदिरा की तो जैसे नदी बहाई जा रही थी। सभी ओर उत्साह ही उत्साह दिखाई दे रहा था। और जब मूर्ख निकल आया तब तो उस कोलाहल का जैसे कोई ठिकाना ही नहीं रहा।

मैंने मौका देखकर कप्ताह से कहा, "कप्ताह मेरे पीछे-पीछे चले आओ... चलो भाग चलें... इसमें अवश्य कोई भेद है।"

परन्तु उसने तो मदिरा पी रखी थी और वह सम्राट् बना हुआ था भला मेरी क्यों मानता? मेरी ओर मुँह मोड़कर कहने लगा, 'तुम्हारी बात मुझे जानों के पास मक्खियों की भिनभिनाहट जैसी लगती है... अब जब मैं बादशाह बन गया हूँ तो अपनी रियाया को कैसे छोड़ दूँ!'

इसी प्रकार वह बहकता रहा और लोग उसे तिलाने रहे। अन्त में लोग उसे हर्म की ओर ले गए। कप्ताह ने कहा, "ससार के चारों कोनों का मालिक होने के नाने मैं हर्म का भी पूर्ण रूप से स्वामी हूँ। अपनी मदिरा और माँग खाने के बाद मुझमें सिद्ध का ना बल आ गया है... मैं मित्रों से रगरेजिया करना चाहता हूँ।"

परन्तु बर्नेबुरियाग अब हँस नहीं रहा था। वह हाथ पर हाथ रखकर बस रहा था। मुझे देखते ही वह मेरे पास आकर बोला, "निम्नूरे! तुम

मेरे मित्र हो और बँड होने के नाते तुम हरम में जा सकते हो...तुम इसके साथ अन्दर जाओ और इसकी गतिविधि पर दृष्टि रखो कि यह मेरी स्थियों से कोई बँजा हरकत न कर बैठे। अन्यथा मैं इसे जिंदा जलवा दूंगा और...और इसे उल्टा लटकवा दूंगा...परन्तु यदि हमने ऐसा नहीं किया और सीमा के अन्दर ही रहा तो मैं वायदा करता हूँ कि इसे सरल मृत्यु प्राप्त होगी।'

मैंने उचित अवसर देखकर पूछा, 'सम्राट् को इस प्रकार दासों की भाँति बन्धन पहने और सभी द्वारा उपहासित देखकर मेरा मन उदास हो गया है.. यह सब क्या है?'

उमने उत्सुक होने हुए उत्तर दिया, "आज नक्ली सम्राट् का दिवस है...हर साल ऐसे ही एक सम्राट् एक दिन के लिए चुना जाता है। पर यह अवश्य है कि ऐसा विदूषक अभी तक मैंने नहीं देखा। इसे मालूम नहीं है कि अन्त में इसके माथ क्या होने वाला है।"

"क्या होने वाला है?" मैंने पूछा।

"सूर्यास्त होने ही जैसे ही इसके सिर पर राजमुकुट रखा जायेगा वह मार डाला जायेगा। मैं इसे बुरी मौत मार सकता हूँ परन्तु आमनीर पर इन्हें मदिरा में विष मिलाकर मार दिया जाता है। उसे पीकर वह सो जाने है और इन्हें मृत्यु का पना नहीं चलता।"

और तभी नाक से रक्त टपकाना हुआ कप्ताह हरम से बाहर निकला। सभी बुरी तरह हँस रहे थे। स्वयं सम्राट् भी हँसी न रोक सका। उस फोलाहल के बीच भी कप्ताह रो-रोकर बिल्लाकर कह रहा था, "कबछनो ने मेरा क्या हाल किया है! मुझे बुड्डी खूंसट हज्जिनें दे रहे थे...और जब मैंने उस नबबिजमित बत्ती को छूना चाहा तो वह सेरनी की तरह मुझ पर सपटी और मेरी नाक पर जूना दे मारा!" फिर मुझे देखकर वह बिस्लाया, "मिन्पूहे! तुम तनिक अन्दर जाकर उस सेरनी सुदरी का सिर खोल दो और उसके अन्दर से जीनान उडा दो...निश्चय ही उस पर जीनान सवार है अन्यथा वह भला सम्राट् के मूँह पर जूता मारनी?"

बर्नेकुटियाज ने मेरे कोहनी मारकर धीरे से कहा, "मिन्पूहे! अन्दर जाकर देख आओ क्या मात्रा है। निश्चय ही यह कल बामी नई स्त्री होगी

जो शेरनी की भाँति बफरी होगी...तुम तो बँध होने के नाते जा सकते हो...कंबल मुझे शाम तक अन्दर नहीं जाने देंगे।" और वह मेरे पीछे पड़ गया। आखिर मुझे जाना ही पड़ गया।

अन्दर जाकर मैंने देखा कि बूढ़ा कुरूप हस्तिमें रंग-बिरंगे वस्त्र पहने हुए चिल्ला रही थी, "हमारा वकरा कहाँ चला गया...हमारा प्यारा... उसे बुलाओ...!"

एक बड़े डील वाली हथिन जिसके काले स्नन काले रसोई के पात्रों की भाँति पेट तक लटक रहे थे चिल्लाई, "अरे मेरा प्यारा मुझे दे दो... मैं उसे अपनी छाती से लगा लूँ...अरे मेरा हाथी मुझे दे दो जो सूँड मेरे चारों ओर लपेट ले!"

परन्तु हिजड़ों ने मुझसे कहा, "इन स्त्रियों पर श्रीमान् ध्यान न दें क्योंकि यह नकली सम्राट् का स्वागत करने मदिरा पीकर अपने होश खो बैठी है...बैसे एक लडकी अन्दर है जो सचमुच ही बीमार लगती है और उसे बँध की आवश्यकता है। वह शेरनी की भाँति बफर रही है और उसने हाथ में एक तेज चाकू है।"

अन्दर मैंने देखा कि रंगबिरंगे पत्थरों का बना हुआ एक विमान बुझा ज़िममे जल जन्तु बने हुए थे। उनके मुँहों से जल निकल रहा था। एक ऐसे ही जन्तु के ऊपर चढ़कर एक युवती बैठी थी और उसके हाथ में एक बड़ा-सा तेज छुरा चमचमा रहा था। उसके कपड़े सब फट गए थे क्योंकि शायद उसे हिजड़ों ने पकड़ने का उद्योग किया था और जब वह छुड़ाकर भागी थी तो वह कट गए थे। चारों ओर बुरी तरह शोर मचा हुआ था। और वह लडकी भी कुछ कहती भी लग रही थी। मैंने देखा कि वह सचमुच ही सुदरी थी। मैंने शोर बन्द करने के लिए एक-दो बार हाथ उठाया पर जब वह न रुका तो मैं गुस्से में हिजड़ों पर टूट पड़ा और चिल्लाकर कहा, "निकल जाओ सब यहाँ से...यह क्या कहती है मुझे सुनने दो... और इन फव्वारों को भी बन्द कर दो जो शोर मचाने लगे।"

और तब जब पूर्ण निमग्नता छा गई तो मैंने सुना कि वह अजीब स्वर में दिक्कत भाषा बोलती हुई माना जा रही थी।

"बन्द कर यह माना जगती विष्णी। और बाहर निकल आ बनें।"

मैं देखता हूँ कि तू सबमुच ही बीमार है।”

उसका गाना धम गया और फिर वह मुझसे भी खराब बेबीलीन की भाषा में बोली, “यही आ बदर कि मैं तेरा हृदय इस चाकू से फाड़ सकूँ... मैं बेहद भूखी जो हूँ।”

“मैं तुम्हे कोई हानि नहीं पहुँचाना चाहता।”

‘ऐसे ही सब पुरुष कहते हैं और फिर सब झूठ बोलने हैं। मैं यदि पुरुष-सपकं चाहूँ तो भी नहीं कर सकती क्योंकि मैं देवता पर चढ़ाई जा चुकी हूँ...यह चाकू मैं इसीलिए रखती हूँ कि यदि कोई आपत्ति न टल सके तो अपने मार लूँ...और वह काना जो अभी आया या वह तो कभी मेरा स्पर्श न कर पायेगा।” और उसने घृणा से झूक दिया।

“मूर्ख स्त्री” मैंने कहा, “भोज उठा और यह चाकू फेंक दे क्योंकि मुझे भय है वह तेरे कही लग न जाय। हिज्रों ने तुम्हे सरीदने में निश्चय ही सघाट का काफी सोना शर्च किया होगा।”

“मैं दासी नहीं हूँ” वह तिनककर बोली, “मुझे यह लोग चुराकर ले आये हैं...अगर तुम्हारी आँखें होती तो तुम इस समय को पहचानते...पर क्या तुम कोई और भाषा नहीं बोल सकते ?”

“मैं मिस्री हूँ” मैंने अपनी भाषा में उत्तर दिया, “मेरा नाम सिन्वूहे है—वह जो एराकी है—वह जो अगली गंधे का बेटा है—मेरा पेशा वैद्यक है...मुझसे तुम्हे डरने की कोई आवश्यकता नहीं है।”

मुनकर वह एकदम जल में कूद पड़ी और तैरकर मेरे पास आ गई। वह बोली, “तुम मिस्री हो और मुझे यह ज्ञात है कि मिस्री लोग स्थियों से बलात्कार नहीं करते। अतएव मैं तुम पर विश्वास करती हूँ परन्तु यह चाकू मैं अपनी रक्षा के लिए रखती हूँ क्योंकि संभव है कि आज ही मुझे अपने रक्त की नलियाँ काट डालनी पड़ें। यदि कोई मेरे शरीर को छूकर मेरे देवता को वसुधित करना चाहेगा तो मुझे ऐसा करना ही होगा। यदि तुम देवताओं से डरते हो और मेरा भला चाहते हो तो मुझे यहाँ से छुड़ा ले चलो...वैसे मैं तुम्हें भी प्रतिकार में अपना शरीर कभी न दे सकूँगी क्योंकि हमारे यहाँ ऐसा करना निषिद्ध है।”

“तुम्हें छुड़ाने का मेरा कोई विचार नहीं है” मैंने आपरवाही से उत्तर

दिया, फिर कुछ रुककर कहा, "सम्राट् मेरा मित्र है और मैं उसे दुःख पहुँचाना नहीं चाहता, ग्रासकर जब तुम्हारे पीछे मुक्कन के पहाड़ खर्च कर दिये गए हैं। हाँ एक बात मैं तुम्हें बतला दूँ... वह यह कि जो मोटी मक्कन के समान काना आदमी तुमने देखा था, वह सम्राट् नहीं है। वह तो नकल आदशाह है जो केवल आज ही रहेगा। कल से अमली सम्राट् फिर राज्य करेगा और वह एक सुन्दर लड़का है। अभी उसके दाढ़ी भी नहीं उगी हैं पर वह तुमसे आनन्द प्राप्त करने की सोच भी रहा है। मेरे खयाल से तुम्हारा देवता यहाँ तक तुम्हारी सहायतायें नहीं आ सकेगा और तुम्हें उनके (सम्राट् के) समीप तक जाना पड़ेगा। इससे बेहतर यह है कि तुम उठो और सुन्दर वस्त्र धारण करो, इन वालों की सुन्दर मञ्चा करो क्योंकि मैं देखता हूँ, तुम अच्छी खासी खूबसूरत हो।"

सुनकर वह मुस्कराई। उसने अपने गीले केश छूकर गीली उँगली से होंठ और भवें पोछी फिर वह बोली, "मेरा नाम मीनिया है। जब तुम मुझे इस बुरे देश से निकाल कर मेरे साथ भाग चलोगे, तब मुझे इसी नाम से पुकारा करना।"

सुनते ही मैंने हताश होकर दोनों हाथ उठा दिये और मैं तेज बंदमों से वहाँ से चल दिया पर न जाने क्यों मेरा हृदय उसकी ओर मुझे खींचने लगा और मैं सौटकर उससे बोला, "मीनिया ! मैं सम्राट् से तुम्हारे बारे में बातें करूँगा। इससे अधिक और भला मैं कर भी क्या सकता हूँ। तुम उठो और शृंगार करो। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें सभी औपधि दे दूँगा। जिससे फिर तुम्हें पता ही नहीं चलेगा कि तुम्हारे साथ क्या हुआ था, हो रहा है।"

"कुछ भी करो पर मेरी सहायता करो", वह बोली, "और इसी हेतु अब तुम्हें मैं अपना यह चाकू दिये देती हूँ जिसने मुझे अब तक बचाया है। और एक बार जब इसे मैंने तुम्हें दे दिया तो मुझे विश्वास हो जायेगा कि भविष्य में मेरी रक्षा तुम स्वयं करोगे, मुझे धोखा नहीं दोगे और हम बुरे मुल्क से बाहर चलोगे।"

मैंने देखा वह अब भी मुस्करा रही थी। वह निश्चय ही मुझसे अधिक चतुर थी।

बाहर मुझे बर्नेबुरियाश मिला। उसने मुझने उसके बारे में पूछा। मैंने कहा, “तुम्हारे हिजड़े मुख हैं जो ऐसी सड़की ले आये हैं जो पुरुष को पास ही नहीं आने देती। वह पागल लगती है और अपने किसी देवता के लिए पहले से ही सकल्पित हो चुकी है। बेहतर होगा यदि उसे छोड़ दिया जाय, क्योंकि वह बुद्धि से भी उस मानूम होती है।”

लेकिन सुनकर बर्नेबुरियाश हँस दिया। उसने कहा, ‘तुम तो जानते हो कि मेरी अभी दाढ़ी भी नहीं उगी है। स्त्रियों के आसितन में मैं ऊब उठता हूँ। ऐसी ही स्त्रियाँ मुझे बहुत पसन्द हैं जो हठ करती हैं क्योंकि तब मैं उन्हें नंगी करवाकर हिजड़ों से पिटाता हूँ। डंडा ही इनका सबसे अच्छा इलाज है। मैं दावे के साथ कहता हूँ कि आज ही रात उसे इतना पिटाऊँगा कि उसकी पीठ सूज जायेगी और वह चित्त लेट भी नहीं सकेगी...और तब मुझे बड़ा आनन्द मिलेगा।”

जब वह चला गया तो मेरे हृदय में उसके प्रति अब तक का मैत्रीभाव लोप हो गया और फिर मैंने उसका भला कभी नहीं सोचा। मीनिया का चाकू अभी मेरे हाथ में था।

उसके बाद मेरे लिए वह सारा उत्सव फीका हो गया। हालाँकि अभी बेबीलोन के पुजारियों से ‘भेड़ के जिगर देखने की विधि’ पूरी तरह से मैं नहीं सीख पाया था और बर्नेबुरियाश से मित्रता होने के कारण मुझे अटूट धन भी मिलने की आशा थी, फिर भी न जाने क्यों मुझे वह सब बुरा लगने लग गया। रहु-रहकर मीनिया का सुन्दर चेहरा मेरी आँखों के सामने आ जाता और कप्ताह के लिए जो सम्राट् की एक व्यर्थ की सनक के कारण आज धातु मारा जाने वाला था, मुझे बड़ा दुःख होने लगा—वह मेरा मौक़र था तो कम से कम बादशाह उसे ऐसी परिस्थिति में डालने के पूर्व मुझसे पूछ तो लेता।

तीसरे पहर मैं नदी किनारे गया, और मैंने एक नाव किराये पर ली और मत्ताहों से कहा :

“बैसे आज नकली सम्राट् का दिवस है और मैं जानता हूँ कि तुम

मदिरा पीकर आनन्द मना रहे हो; परन्तु यदि तुम मेरा काम करोगे और नाथ को मेरे कहे अनुसार से बनोगे तो मैं तुम्हें दूना इनाम दूंगा। मेरा एक धनी चाचा मर गया है और मुझे उसकी मग को हमारे पुराने घर पर जो भित्ती के बिनारो पर स्थित है ले जाना है—देरी हो जाने में उसके लड़के व मेरे भाई इत्यादि आकर विरामत का अगड़ा करने लगेंगे और तब मेरे हाथ कुछ न लग पायेगा—अनएव यदि तुम जल्दी करो तो तुम्हें भर-पूर इनाम दिया जायेगा।”

मुनकर वह बटवड़ाने लगे परन्तु जब मैंने उन्हें दो बड़े पड़े मदिरा के खरीद दिये तो एवदम उन पर टूट पड़े।

वहाँ से मैं सीधा बुर्र पर गया जहाँ मैंने एक भेड़ को काटकर बलि दी। उसके जिगर को देखकर मैं कुछ विशेष अर्थ नहीं लगा सका क्योंकि मैं अपने ही विचारों में इतना अधिक सोया हुआ था कि कुछ पता न लग सका। फिर मैंने वह तमाम रक्त एक चमड़े के थैले में भर लिया और महल की ओर चल दिया। जब मैं हरम के द्वार पर पहुँचा तो मेरे मुँह के सामने से एक अवाधील उड़ गई और इस अच्छे शगुन से मेरा मन हल्का हो गया। हिजड़ों को हटाकर मीनिया से मैं अकेले में मिला और उसको वह खून भरा थैला और चाकू देकर मैंने जो कुछ उसे करना था सब समझा दिया। हिजड़ों से कह दिया गया कि मीनिया को दवा दी गई है उसे कम से कम शाम तक कोई न छेड़े जिससे दवा अपना असर कर सके।

तत्पश्चात् मैं उठकर बाहर आ गया। जब सूर्य छिपने लगा तो मैंने बर्नेबुरियाश से कहा : “मुझे विश्वास कैसे हो कि कप्ताह की मौत बिला तकलीफ हो जायेगी ?”

वह बोला : “जल्दी करो और स्वयं जाकर देख लो क्योंकि बूढ़ा बूढ़ उसकी मदिरा में विष मिलाने वाला है। सूर्यास्त हो रहा है और उसका मारा जाना रीति के अनुसार आवश्यक है।”

मैंने जाकर देखा कि बूढ़ विष मिलाने की तैयारी कर रहा था। जब मैंने उससे कहा कि मुझे सम्राट् ने भेजा था तो उसने मेरा विश्वास कर लिया और कहा : “अब तुम स्वयं ही विष मिला दो क्योंकि दिन-भर मदिरा पीने से मेरे हाथ काँप रहे हैं। तुम्हारा नौकर क्या है ग़ज़ब का

मूर्ख है—हूँमाने-हूँसाने उसने मेरा बुरा हात कर दिया है।” और यह चला गया।

मैंने वह विष फेंक दिया और मदिरा में ‘पीपी-गुप्प’ का रस मिला दिया—अधिक नहीं कि वह विष का काम करने लगे—बल्कि इतना कि अपना पूरा अमर दिखा जाय। फिर उसे लेकर सबके बीच कप्ताह के पास जाकर कहा, “कप्ताह, बस तो शायद तुम मुझे पहचानना भी अपनी तोहीन समझोने क्योंकि तुम तो अब सच्चाद हो गए हो। आज मेरे हाथ से मदिरा पी लो जिससे कि जब मैं मिला को खीटूँ तो यह तो कम से कम वह मर्द कि ससार के चरों कोनो का मालिक मेरा मित्र था... उसने मेरे हाथ से मदिरा पी थी।

कप्ताह ने उत्तर दिया, “इस मिथी की बातें मुझे, मस्मियों की भिन्नभिन्नहट जैसी मालूम होती है। हालांकि मैंने आज मदिरा खूब पी है, आज मैं मदिरा नाम की किमी वस्तु को नहीं ठुकरा सकता, और वह उमे पी गया। और उसी समय सूर्य डूब गया और वह भी गिर पड़ा। गिरने हुए वह बोला, “ओफ नींद आ रही है,” और उसने मेडफोश खींचकर अपने ऊपर डाल लिया। उसके लिचने से मेड पर रखी तमाम मदिरा की प्यानियाँ, घड़े-घड़े पात्र, खाने की सामग्री इत्यादि भूमि पर बिखर गई।

और तभी मशालें जला दी गईं। एकदम मौत का सा सन्नाटा छा गया। लोगो ने पृथ्वी पर गिरकर बनेबुनियाश को अभिवादन दिया। कप्ताह के शरीर से राजसी वस्त्र उतारकर जो मदिरा में भीग रहे थे बनेबुनियाश को पहनाये गए। सिर पर राजमुकुट रखा गया और हाथो में राजदंड इत्यादि दे दिये गए। जब वह सिंहासन पर बैठ गया तो उसने कहा :

“पूरे दिन कोलाहल होता रहा है और हम थक गए हैं—फिर भी हमने उन थोड़े से लोगो को देख लिया है जिन्होंने आवश्यकता से अधिक उद्दण्डता की है—शायद वह समझते थे कि हम फिर राजदण्ड नहीं संभालेंगे, सैर,” फिर उसने अधिकार के स्वर में आज्ञा दी :

“इन सोनेवालों को चाबुक लगाकर बाहर निकाल दो.. बाहरी प्राण में भीड़ पर घुड़चढ़ी छोड़ दो... भगा दो उन सबको... कुचल डालो

...और इस मूर्त्य को यदि यह मर चुका है तो घड़े में बन्द कर दो क्योंकि मैं इससे ऊब गया हूँ।”

कप्ताह पीठ के बल पड़ा था। वैद्य ने उसे देखकर कहा : “यह गोबर की मक्खी की भाँति मर चुका है।”

नौकर तुरन्त एक दीर्घ मिट्टी का घड़ा ले आये जिसमें कप्ताह बन्द कर दिया गया और उसके दक्कन पर मिट्टी लगाकर मुहर लगा दी गई। वेधीलोन में मृतकों को गाड़ने की यही रीति थी। फिर उसे पृथ्वी के अन्दर गाड़ दिया जाना था। सम्राट् ने कहा कि उस घड़े को पहले सासो के नकली सम्राटों के साथ तहसनों में रख दिया जाए। यहाँ मैं बोल उठा : “यदि सम्राट् को आपत्ति न हो तो मैं कुछ निवेदन करूँ,” और उनकी आज्ञा पाकर मैंने कहा : “यह मिथी था और हमारे देश की प्रथा के अनुसार मुझे इसके शरीर को शाश्वत काल तक के लिए मसाले लगाकर रखना होगा कि इसकी आत्मा पश्चिमी देशों की यात्रा आसानी से कर सके... इसमें तीस से सत्तर दिन तक लग जात है जैसा कि आदमी का प्लवा होता है। परन्तु यह तो बेवस मेरा नौकर था। इसके शरीर को बनाने में तो तीस ही दिन लगेंगे। यदि सम्राट् आज्ञा दें तो मैं यह कार्य करूँ... ऐसी हालत में मैं तीस दिन तक दरबार में हाज़िर नहीं हो सकूँगा क्योंकि उन दिनों मेरे हृद-गिदं इसमें से निकली हुई बुरी आत्माएँ भी निश्चय ही रहेंगी।”

सम्राट् ने आज्ञा प्रदान कर दी और मैंने वह मिट्टी का मग्घा पड़ा उटवाकर महल से बाहर अपनी कुर्मी पर रखा दिया। चुपचाप मैंने उसमें दो-एक छंद भी बना दिये कि ऊपर हवा जानी रहे।

छिद्र में छिपने हुए हरम में पहुँचा। हिजडे मुझे देखकर खुश हुए क्योंकि वह चाहते थे कि बादशाह के आने के पहले ही मीनिया टीक हो आय। मैं मीनिया मीनिया के बक्ष में चला गया परन्तु अब मैं वहाँ से तुरन्त लौटकर अपने खान जोबकर रोने लगा मैं वह खबरों गए। मैंने कहा : “अब क्या करूँ ! तुम लोगों ने बड़ी गलतिय की कि उसकी देहभान नहीं की। वह देहो उसने चाकू से अपनी हृत्ता कर ली है और खून में लनाव होकर पड़ी है।”

हिजड़ों ने जो जाकर खून देखा तो भय से काँपने लगे । उन्होंने उसे छूने का भी साहस नहीं किया क्योंकि आदमन हिजड़े रक्त देखकर भय-भीत हो जाते हैं । मैंने कहा :

“तुम लोग और मैं अब एक-सी परिस्थितियों में फँस गए हैं । यदि बादशाह ने अपनी इस चहेती को मरा हुआ देखा लिया तो तुम भी मरे और मैं भी मरा । जल्दी से एक चटाई में इसे लपेट दो जिससे मैं इसे बाहर ले जाकर फेंक आऊँ और जमीन पर से खून जल्दी से धो डालो । अब तो केवल एक ही उपाय है । शीघ्र जाकर एक और सुन्दरी दासी खरीद लाओ जो कोई परदेशी हो और यहाँ की भाषा न बोल सकती हो, न समझ सकती हो और उसे इसके स्थान पर लाकर रख दो । उससे कुछ ऐसी बातें करने को कहो जो वह न कर सके और फिर जब बादशाह माँ जाय तो उसे नगी करके उसके सामने मारो । बादशाह प्रसन्न हो उठेगा ।”

हिजड़ी ने मेरी बातों का तथ्य समझा और मेरी प्रशंसा की; परन्तु नई दासी के मूल्य के लिए वह झगड़ने लगे क्योंकि भीनिया के मरने का आधा दोण मुझ पर भी तो था । आगिरकार आधी कीमत उन्हें देकर मैं उस चटाई में लिपटी भीनिया को उठाकर बाहर चला आया । अपनी कुर्सी पर उसे भी रखकर मैं नदी तट की ओर चल दिया ।

७

नाव बड़ी चली जा रही थी—चेबीलोन की पहुँच से हम बहुत दूर निकल आये थे । मैं तख्तों के नीचे सेटकर सोने का उपक्रम कर रहा था क्योंकि मैं बेहद थक गया था । भीनिया इस बीच चटाई खोलकर निकल आई थी और अपने शरीर पर पड़े हुए खून को नदी के जल से धो रही थी । उसकी गोरी पतली-पतली उँगलियों के बीच से टपकता हुआ जल चन्द्रमा के प्रकाश में मोतियों जैसा लग रहा था । वह मुझे देखकर बड़बड़ा रही थी : “तुम्हारी सलाह से ही मैंने अपने-आपको उस रक्त से भिगोकर

गन्दा बिया था और मैं अगवित्र हो गई—और जब तुम मुझे चटाई में गोंटकर लाये थे तो आवश्यकता से अधिक तुमने मुझे दबाया था जिससे मेरी दम घुटने लगी थी—मैं अच्छी तरह सोच भी न से पाई थी—वह सारा दोष तुम्हारा ही है।”

प्रथम तो मैं बेहद थका हुआ था, दूसरे उसकी बातें मुझे बहुत बुरी लगी। मैंने बटफर कहा :

“अपनी जुवान बन्द कर बदनाम औरत ! जो कुछ मैंने तेरी खातिर किया है उस सबको माँचता हूँ तो जी करता है कि तुझे नदी में दे मारूँ जहाँ कि जी भर के नहा सकेगी। अगर तू न होनी तो इस वकन मैं बेबी-लोन के सप्राट् के दाहिने तरफ बँटा होना और बुज के तमाम पुजारी दिना कुछ छिपाये हुए मुझे अपनी बिद्या सिखाने और मैं ससार भर का योग्य बैठ बनकर रहूँता। तेरे ही पीछे वह तमाम सोना भी मेरा मारा गया जो मुझे मेरे मरीजों से मिलता। अब मेरा धन भी घोखे में आ गया है क्योंकि मंदिर के सजाने में मैं अपनी मिट्टी की तख्तियाँ भय के कारण दिखाने नहीं सकता। इस सब की जड़ तू है—बुरी थी वह घड़ी जब मैं तुझे देखा और अब हर साल उस दिन मुझे फटे वस्त्र पहनकर सिर पर राख डालकर अनिष्ट टालना पड़ेगा।”

सुनकर उसका सुन्दर मुन उदास हो गया और वह धीमे स्वर से बोली : “अगर तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो लो मैं नदी में कूदे जाती हूँ—तुम मुक्त हो जाओगे।”

वह उठकर कूदने ही को थी कि मैंने उठकर उसे पकड़ लिया और कहा : “अब अपनी भूलेंता न दोहराओ—वरना मेरी तमाम मेहनत बेकार चली जाएगी—देवताओं की वसम मुझे सोने दो मीनिया ! क्योंकि मैं बेहद थक गया हूँ !”

और मैं चटाई ओढ़कर लेट गया क्योंकि रात ठंडी हो गई थी। और थोड़ी देर बाद मीनिया मेरे पास आकर लेट गई। कहने लगी : “मैं यदि कुछ और नहीं कर सकती तो तुम्हें गर्मी तो पहुँचा ही सकती हूँ,” वह जवान थी और उसका शरीर मेरे बगल में अंगीठी सा दहक रहा था। मैं शीघ्र ही सो गया।

जब मैं जागा, हम उल्टी धार में बहुत दूर आ चुके थे और नाव वाले गड़ाबड़ा रहे थे :

“हमारे करे लकड़ी जैसे हो गये हैं और पीठ दुखने लगी है । क्या तुम हमें मारना चाहते हो ? कहाँ है तुम्हारा घर जो अभी तक नहीं आया ? क्या उसमें आग लग गई है जो हमें उसे सुझाने जाना पड़ेगा ?”

मैंने सख्ती से कहा : “जो ढील देगा उसी की पीठ पर मेरा डंडा पड़ेगा.. तुम्हारा पहला पड़ाव आज दोपहर को होगा और तब मैं तुम्हें उसमें मदिरा पीने को दूँगा जिसे पीकर तुम चिड़ियों से चटखने लग जाओगे । परन्तु यदि तुमने गड़बड़ी की तो समझ लो कि मैं तमाम बीजानों को जगा दूँगा जो तुम्हें खा जायेंगे, क्योंकि मैं पुजारी हूँ और जादूगर भी हूँ ।”

मैंने यह उन्हें डराने के लिए कहा था परन्तु सूर्य तेजी से चमक रहा था और उन्होंने मेरा विश्वास नहीं किया । वह बोले : “हम दस्त हैं और यह अवेला है ।” और एक ने मेरी तरफ मुझे मारने के लिए अपनी पत-धार भी चलाई ।

और उसी क्षण नौका के मूख की ओर से एक उबर्दम आवाज आई : बप्ताह मिट्टी के पात्र को अन्दर से बजा रहा था और धुरी तरह चिल्ला रहा था । नाविकों के चेहरे सफेद पड़ गये और वह एव के बाद एक सब जल में बूद पड़े और धीमे ही तैरकर दृष्टि के बाहर हो गए । भाव जब धार के बीच बहने लगी तो मैंने जलर का पत्थर नदी में डाल दिया ।

मीनिया बजड़े से बाहर आई और तिर के बाल काटने लगी । वह मुन्दरी सूर्य के प्रकाश में अद्भुत लग रही थी । बोंस के झुरमुटों में सारम घोल रहे थे ।

मैंने दीडकर उस पड़े पर दक्कन खोज दिया और कहा : ‘ गढ़े हो जाओ ।’

बप्ताह ने अपना बिगड़ा हुआ सिर घबरावर बाहर निकाला । मैंने आज तक बीता डरा हुआ मुख कभी नहीं देखा । वह कराहा : “यह सब बीसी मूर्खता है ? मेरा राजमुकुट और राजदह कहाँ गया ? मैं तो नया हूँ और ठंड से सिबुह गया हूँ, मेरा गिर पटा जा रहा है और हाथ-पाँव सब

जैसे सीसे के हो गये हैं सिन्यूहे ! मुझे ऐसा उपहास बिल्कुल पसन्द नहीं है, ध्यान रखो कि सम्राटों से इस प्रकार खेल करने का साहस नहीं करना चाहिए ।”

मैं उसकी नालायकी की सजा उसे देना चाहता था इसलिए मैंने भोले यनने हुए कहा :

“तुम्हारी वानें मेरी समझ में ही नहीं आ रही हैं—गायद तुम अब भी नशे में ही हो क्याह । घेबीलोन से जब हम चले थे तो तुमने नाव में इतनी ज्यादा गड़बड़ की थी कि आखिरकार तुम्हें मल्लाहों ने पकड़कर इस मिट्टी के पात्र में बन्द कर दिया था । तब भी तुम सम्राटों और न्यायाधीशों की वानें कर रहे थे ।”

मुनकर क्याह ने जोर से आँखें बन्द कर ली, और पहले दिन की बसाद करने की कोशिश करने लगा । फिर बोला, “मालिक ! अब मैं क्या मदिरा नहीं पिऊँगा । इसमें तो मुझे विविध स्वप्न आने लगे हैं । मुझे य आ रहा है कि मैं जाने कहाँ का सम्राट् बना दिया गया था और तब मैं सिंहासन पर बैठकर इसाफ किया था । और जाने क्या-क्या हुआ था या नहीं पट रहा है ।”

और तभी उसकी दृष्टि मौनिया पर पड़ गई । हाट से वह घड़े के अन्दर फिर छिप गया और वहाँ से रोनी आवाज़ में बोला, “मानिक ! अभी भ्रम मेरा नशा नहीं गया है, या फिर मैं स्वप्न देख रहा हूँ । क्योंकि अभी मैं नाव की दूसरी ओर एक लड़की को देगा है—यह वही है त्रिगके साथ मैंने क्या आनन्द भोगे थे...या बैगी ही कोई लड़की मुझे दिला रही है !”

और मौनिया ने जाकर उसके पास पकड़कर उसे उठा लिया और कहा, “मेरे ही माथ तुने क्या रात ऐसा किया था न ? बोन ?”

क्याह का डर के मारे बुरा हाल था । अपनी एक ही आँख बन्द करके वह धीरे से बोला, “विश्व के सपूर्ण देवताओ ! मुझे क्षमा करो क्योंकि मैंने पण्डितों देवताओ की भी गलती में बलि दे दी है—लेकिन तुम तो वही हो ! क्योंकि वह तो मेरा स्वप्न ही जो था ।”

मैंने उसे बाहर निकाला और उसे एक कड़वी औषधि दी कि उसका पेट शांत हो जाए और फिर उसके मना करने पर भी उसकी कमर में एक

नी बाँधकर उसे पानी में धकेल दिया जिससे उसे दिये गए विष और
 १ ही साथ मदिरा का असर उतर आए। फिर उससे कहा, "यही तुम्हारा
 है। जो कुछ तुमने स्वप्न में देखा था वह सभी सत्य था परन्तु यदि मैं
 पूरी समय से सहायता न करता तो निश्चय ही तुम अब तक मिट्टी के
 में मूँदे हुए पहलू के तबली खग्राहों के साथ कब्र में पहुँच गये होते।"

और जब मैंने कप्ताह को वह सारी बातें बतलाई तो वह मुँह फाड़े
 में गुनगा रहा और मुझे उसे कई बार समझाना पड़ा क्योंकि उसकी
 २ में ही नहीं आता था। सब सुनकर वह बोला, "तब तो मुझे मदिरा
 ने भी बमम नहीं पानी पड़ेगी क्योंकि जो कुछ हुआ वह सब सत्य था—
 ३ को उन्ने स्वप्न समझकर ही मदिरा ने भय किया था।" और वह आराम
 ४ मदिरा के इश्कन को खोलकर फिर पीने लगा। उसने मिश्र के
 पदेवनाओं की दुहाई दी और बीम ही नंगे में चूर होकर फिर सी गया।
 मुझे उसकी इस हरकत से इनका गुस्ता आया कि जो किया कि मैं
 बल में धकेल दूँ परन्तु तभी मीनिया ने कहा, "कप्ताह ने ठीक ही तो
 है। आत्र मन्नी से निबन्ध जाए तो कल की क्या जिक्र? यह जगह
 ११ अच्छी है—हम बाँसों की आड़ में छिपे हुए हैं, सारस खोल रहे हैं।
 १२ टप-टप और मुर्खों जैसा खमबमा रहा है—फिर क्यों न हम भी
 १३ पल होकर आनन्द मनाएँ?"

मैंने गोधा और पाया कि वह बुद्धिमानी की बात कर रही थी। फिर
 १४ कहा :

"जब तुम दोनोही सूर्यना पर लुपे हुए हो तो फिर मैं क्यों न कहूँ?"

१५ पर हम दोनो नदी में बूढ़कर गूब नहाने और मदिरा पीकर आनन्द
 १६ ले। मीनिया ने अपने देवता के लिए बलि दी और फिर जो अद्भुत
 १७ गने बिना तो मैं बोलना थामकर रह गया। जब उसने नृत्य रोका
 १८ दीर्घ श्वास छोड़कर कहा :

मीनिया ! मैंने अपने जीवन में एक ही स्त्री से अभी तक बहिन कहा
 १९ न उसका आभिनय अग्नि के समान और उसका शरीर झूलमा देने
 २० जगान की धर्ति था जिसने मुझे कोई आनन्द प्राप्त नहीं हो पाया।

१ ! उम जादू से मुझे मुक्त कर दो जिसमें मुझे तुमने फँसाकर मेरे

हाथ-पांव ढीले कर दिये हैं। मेरी ओर उन नेत्रों से न देखो जो नदी के जल पर फैले हुए चन्द्रमा के प्रकाश जैसे लगते हैं। अन्यथा कहीं मैं तुम्हें भी 'बहिन' न कहने लग जाऊँ और तब तुम मुझे अन्य स्त्रियों की भाँति बर्बाद और मृत्यु की ओर ले जाओगी—यह मैं जानता हूँ !”

उसने मेरी ओर विचित्र दृष्टि से देखा, फिर कहा, “शायद तुम किसी विचित्र स्त्री के फेर में पड़ गये होगे—सिन्धूदे ! शायद तुम्हारे देग की स्त्रियाँ ऐसी ही होती हो—पर मेरे सम्पर्क में तुम्हें कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा। मैं तुम्हें फँसाना कभी नहीं चाहूँगी क्योंकि मेरा देवता मुझे पुरुष-सम्पर्क के लिए तो आज्ञा ही नहीं देना।”

और उसने मेरा सिर अपने कोमल हाथों में लेकर अपने घुटनों पर रख लिया और मेरे गालों पर तथा चानों में उँगलियाँ फेरती हुई बोली :

“स्त्रियाँ ऐसी भी होती हैं जो तरे-भरे को मरभूमि बना देती हैं। हुआ मे विष धोल देती है कि जो भी उनका जल पिये वही मर जाए। परन्तु ऐसी भी तो होती है जो मरभूमि में फव्वारे की भाँति होती हैं, और उबड़े हुए उद्यान में नीहार की स्वच्छ बूँद जैसी पवित्र होती हैं। तुम मुझे, शायद कि तुम्हारे बाल काले और कड़े हैं और तुम्हारे भेजे में मूखता भरी है फिर भी प्यारे और लुभावने लगने हो—और इसीलिए मैं और भी उदास हूँ कि जो कुछ तुम मुझसे चाहने हो वह मैं तुम्हें नहीं दे सकूँगी—वन्कि रात्र वह है कि स्वयं तुम्हें चाहकर भी तुम्हें आत्मसमर्पण करने में असमर्थ हूँ।”

मैंने उसको गहरी हरी आँखों में देखकर उसके हाथ मजबूती से पकड़ कर कहा :

“मीनिया, मेरी बहिन ! मैं देवताओं से ऊँच गया हूँ। बाम्भव में इन सबको मनुष्य ने ही भय के कारण मान लिया है। अपने देवता से छुड़ी तो क्योंकि उनकी माँग ख़ूब है—वह तुम्हारा मुख छीनना चाहता है। मैं तुम्हें दूर, बहुत दूर ऐसे देग में ले चर्भूँगा जहाँ तुम्हारा वह देवता कभी न पहुँच सकेगा—वहाँ हम बाँसों के शुरमुट में रहेंगे। घाम और मछलियाँ गायों और जगलियों के साथ जीवन व्यतीत कर देंगे। निश्चय ही तुम्हारे देवता की कोई भीमा तो होगी ही—हम उसमें भी बाहर बने रहेंगे।”

“मेरा देवता मेरे हृदय में बसा हुआ है।” वह बाँसों और उसमें बँध

लेया । फिर धोड़ी देर बाद वह कहने लगी -

"मैं भी कोई नौकार नहीं हूँ जो तुम्हारा आश्रय न समझी होऊँ । मैं भी न भापाएँ जानती हूँ और उन्हें लिय भी सबती हूँ । मैं छुटपन से ही । की सुहनाल में पली हूँ और बँसों के पंने मीनों के बीच हड्डारों मेयों के सम्मुख नाची हूँ । नायद तुमने तो कभी ऐसा दृश्य देखा भी ना जब मुक्क और युवनिमाँ साँडो की बीच नाचने हो ।"

"मैंने कभी मुना भी नहीं है," मैंने उत्तर दिया, "पर यदि तुम्हारा ये मैं साँडो के लिए छोड़ दूँ तब तो वह बाग कुछ मुझे खँकती नहीं । नि मुना है कि शीरिया में पुत्रारी लोग पृथ्वीमाता की बलि के लिए यों यों बकरों के साथ छोड़ देने है ।"

और तभी मेरे गालों पर तड़ानड कई ओर के घण्ट उगने दे मारे रह मुझे गालियाँ देने लग गई । मैं उठकर वहाँ से चला आया ।

धोड़ी देर तक वह एही से होलक-जी बजानी गी फिर थोछ से फँस-हुए बग उठी और उसने अपने सम्पूर्ण वस्त्र उतार फेंके और अपने में मैल लगाया फिर वह हत्ती पुरी के साथ जगती मृग्य करने लगी पड़े नेत्रों से देखता ही रह गया । उसके घमासी से मार डगमगाने पर उसे जैसे हमका ध्यान ही नहीं था । उस लाकण्डमरी देर को तपस्यु मृग्य की, क्रिमम वह अपने अल-अल को नचा सेती थी और की तरह लचकीली होकर कभी हाथों पर मृग्य करने लपती तो कभी न, देखकर मेरे मन का थोछ घल गया और मैं उसमृग नेत्रों से उसे रहा ।

वह वह पानी से भीग गई और कचकर खुर हो गई तो उसने अपने को चरखों से डँक दिया और बैठकर रोने लगी ।

नि उसने कहा : "मेरे कारण न साओ धीनिदा । मैं तुमसे कुछ भी नहीं माँगता, तुम निर्दिष्टन रहो ।"

जाने कौन साँडकर जेब उटाने और कहा, "मैं तो अपने भाग्य पर है जिमने मुने मेरे देखना से हत्ती दूर कर दिया है और इतना दुर्बल रखा है कि एक झलके के नेत्रों के सम्मुख मेरे देर डगमग करे है ।" मे अर्ध उमका मुतादे था । वह फिर बहने लगी :

“हमारे देश में हर पूर्णिमा को एक सुन्दरी युवती देवता के प्रकोष्ठ में भेज दी जाती है। जो युवती इसके लिए छँटती है वह इसे अपना भाग्य समझती है। हमारा देवता समुद्री देवता बतलाया जाता है और एक अन्ध-कार-सम्पूर्ण विशाल घर में रहता है। कोई भी उसके पास एक बार जाकर फिर वापस नहीं लौटता। कहने हैं कि उससे एक बार मिलने के बाद संसार में उस युवती के लिए कोई प्रलोभन नहीं बच रहता। कोई कहता है कि उसका सिर बेल जैसा है और कोई उसे बेल के सिर वाला मनुष्य देह वाला अद्भुत प्राणी बनलाता है। मैंने छुटपन से ही देवता की शैया, उसके सह-वास और उसके साथ अमरता प्राप्त कर लेने की बातें सोची हैं—हालाँकि जब मेरा नाम उसके लिए छांट लिया गया था, उसके एक भास के अन्दर ही एक शाम जब हमारी नाव नदी में भटक गई थी तो मुझे सौदागरों ने उठाकर सुदूर बेबीलोन में जाकर बेच डाला था, परन्तु फिर भी मैं देवता की परिणीता तो हूँ ही। वैसे मैं उस बन्धन से अब मुक्त हूँ परन्तु हृदय मेरा देवता में ही लग चुका है। अब मैं केवल उसी की हो सकती हूँ अन्य किसी की नहीं। देवता के सम्मुख हमें वहाँ नृत्य करना होता है और इसी-लिए छुटपन से ही हमें बेलों के पौने सींगों के सामने उनके चारों ओर से बचकर नृत्य करना सिखाया जाता है। यही है मेरी कहानी सत्य है! और इसी-लिए मैं तुम्हें चाहकर भी तुम्हें...”

‘तुम्हारे बेलों का नाम सुनकर मैं अब समझ गया हूँ कि तुम्हारा देवता कौन है।’ मैंने कहा, “स्मर्ता में मैंने सुना था उस स्थान के बारे में। वहाँ लोगों ने यह भी कहा था कि देवता के उस घर के अन्दर से जाकर पुत्रापी लोग युवतियों की हत्या कर देते हैं जिससे वह कभी सौदगर आ ही न सकें—पर तुम निश्चय ही अधिक जाननी होगी क्योंकि तुम कौन की हो।”

कोई और होता तो शायद उममें बलात्कार कर देता। परन्तु मैंने उसे छोड़ दिया। क्यों? क्योंकि यह मैं समझ गया था कि वह अपने देवता में विमुख होकर कभी मुझ न पा सकेगी। देवताओं का अमर ही होता है उन पर जो उन्हें मानते हैं, उन पर विश्वास करते हैं।

नाम होने-होने बग़ाहू मीद में जाग उठा और झीने मागना हुआ समुद्रादमी मेरा हुआ कहने लगा ।

‘देवना बी बगम — हाँ भूय गया — भगमन बी भी बगम । अब मो मे बिगुन टीक है । दर भूय मे तो मेरा कुग हाग है ।’

और बिना पुछे ही कह हमारे मान पर आ दटा । दिन उमे देवने ही बता :

‘छाई ! यहाँ मो हागन कुरी हो रही है और नू बाय-बाय बटिरा दीकन मो जाग है । जानना है कि गच्छाह के मीनिक हूँदकर इधर आ निबले मो मीनो ही दुलहे लदके मच्छर आर्दिह ?’

बग़ाहू मे मिर मुशायी और फिर कुछ मोचकर बता, “माव मो दह हम मीनो मे मेई मही आ मचानी कदाकि दह बही बहून है और फिर माव केने बा बाय भुमे पगल भी मही है बड़ोकि दुलहे हाथ मे हाथे पर जाग है । परभु दहा रचना भी मचन मे मानी मही है । दुलिया हमे दहा मे मुगल बिसो दुलकरा कर देना आर्दिह, बीमे भी माव बायें का मीन है माव होदकर मो जादेन मही बड़िब मही बही काम-नाम लिगे हुए होन और दगदर का हम मिलकर हमारी हवाही ही बा दे बड़ोकि बहून देन मो बह दगदर बी, मही गयेन । फिर बग़ाहू के मीनिको बा भी भद है । बग़ाहू हमे बीने बड़ोके पगलकर हम मे कम मागन मेकर दहा मे कम देना आर्दिह । मचने जादे बचकर दहादे बीके बग़ो को देदकर बिनी बा लक मीन ।

दुलही कानो मे लगे बा । हम मोन मुगल बग़ाहू बा बा बहू के बीका बाये कम दिव । अब दर भी हमके दुल मना ली । मे बग़ाहू कोर्दिहो के बकर बा बागल मही बागल बा दुलियाह बीके दुल बग़ाहू की पीठ पर कानो कोदकर लकवा दिहा हान्नीक का कुरी लकू बिगल कर मना बा । दुलन बाग

‘दालू दगन ह दूके बग़ाहू न क हैन जाना और दह कम बह बीका नि मुक बीक हो । मुलके मीन बा कम के देदकरा और फिर बा बीकन देक-कर बागल बग़ाहू हा बीक हो लिहा है । बा मुक मो बाग़ाहू कर बाग़ाहू । मे बिगलक बड़ोके मचने को मुगलदहा और दह मचने बाग़ाहू बाग़ाहू देन कर मही । दुल लकू दहाही बाग़ाहू को दह मचने दह न बाग़ाहू बाग़ाहू

न हमें कोई टोकेगा।”

फिर हमने जितना सोना-चांदी हमारे पास बचा था उसे अपनी कमरों में बाँध लिया और चल पड़े। चलने समय दो पात्र भरकर मदिरा नाव में छोड़ आये। कप्ताह ने कहा “नाविक आने ही मदिरा देखकर पढ़ेंगे इसे पीयेंगे और हम बीच हमें दूर निकल जाने का मौका मिल जायेगा। यदि उसके बाद उन्होंने आधिकारियों से जाकर शिकायत की तो भी उनकी उन नसे की हालत में उनकी बातों का कोई विश्वास नहीं करेगा—उल्टे उनकी पीठ पर डंडे और पड़ेगे।”

और हम वेदीलून के गाँवों में होकर पद-यात्रा करने लगे। हम इतने गंदे और गरीब लगते थे कि कोई हमारी ओर ध्यान ही नहीं देता था। धूप से हमारी खालें जल गई थी और मैं लोगों को ज्योतिष से उनके भविष्य बताना करता। मार्ग में यदि कोई सभ्रांत व्यक्ति कुर्सी पर जाता होता तो हम रास्ता चलते उसे सिर झुका देते। कप्ताह गजब का झूठ बोलता, उसने शहजादियों की जादू की अनेकानेक बथाएँ लोगों को गढ़-गढ़कर सुनाई। उसने कई स्थानों पर कहा कि ‘अमुक’ देश में लोग ऐसे होते थे जो साल में एक बार भेड़िये बन जाया करते और जब सोचने-मोचने थक जाते तो अपने सिर को कंधे पर से उतारकर काँस में दबा लेते थे। लोग उसका विश्वास कर लेते और उसे खूब अच्छा खाना सिन्धाने में। मीनिया अपने देवता के सामने नृत्य करने के लिए नित्य नृत्य करके अपनी आदत बनाये रखती और उसे देखकर लोग उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते और बहने “ऐसा नृत्य कभी न देखा न सुना।”

इस यात्रा से मैंने यह सीखा कि हर देश में भाषाएँ, देवनाओं के नाम और रीति-रिवाज अवश्य भिन्न होते हैं परन्तु सभी जगहों में धनवान और गरीबों का रहन-सहन, मोचने की शक्ति और अधिकारों के पीछे हाथों एक से ही होते हैं। गरीब हर जगह एक से ही होते हैं—उनका दुःख सभी स्थानों में अचर्चनीय होता है। मेरा हृदय उनके दुःख को देखकर पिघल गया और गाँवों में उस भेष बदले हुए काल में भी मैं उनका इलाज करने बिना न रह सका। कड़ियों के फाँड़े मैंने काटे और बहुतों की आँखें साफ कीं।

और इसी तरह हम मितन्नी देश की सीमा पर पहुँच गये। वहाँ बर-बाहों ने हमें सरीब जानकर मार्ग दिखाया और सीमा के सैनिकों ने भी हम से कोई प्रवेश-शुल्क वसूल नहीं किया।

नाहरानी नगर में पहुँचकर हमने अच्छे वस्त्र खरीदे और फिर वहाँ की सबसे अच्छी सराय में ठहरे। और क्योंकि मेरा धन समाप्त हो जाता था, मैंने यहाँ अपना पैसा शुरू कर दिया। मितन्नी देश के लोग भी नई औपधियों से आकर्षित होकर मेरे पास आने लगे और मेरे पास फिर सोना खरगने लगा। मीनिया की सुन्दरता से लोगों ने आकर्षित होकर उसे माल लेना चाहा। और कप्ताह फिर आराम करके मोटा होने लग गया।

दिन गुजरने लगे और मेरा धन बढ़ने लगा। मीनिया दिव्य राज के समय रानी और मुझे घूरा करती। मैं जानता था कि वह मृगमं क्या चाहती थी। परन्तु मैं उससे विछुड़ना नहीं चाहता था। अन्त में मैंने एक दिन हानी देश जाना निश्चित किया। वहाँ हितैत्री लोग रहने थे जिनके बारे में मैंने बहुत कुछ सुन रखा था। मैंने मीनिया से कहा।

"हानी देश में वीट सीधे जहाज जाने है यहाँ से नहीं; अतएव पहुँचे वहाँ जाना ठीक रहेगा।" परन्तु मैं जानता था कि मैं उसे छोटा दे रहा था। पर उससे विछुड़ना भी तो मैं नहीं चाहता था। शरता भी क्या, खास कर जब वह अपने देवता से मिलने को इतनी इच्छुक थी। मैं यह तो जानता ही था कि एक बार वीट पहुँचने पर तो यह मुझसे सदा के लिए विछुड़ जायेगी।

एक बारशों के साथ हानी देश जिसे बेटा भी कहें थे, मैंने जाना निश्चय किया। कप्ताह ने जब यह सुना तो वह चिल्लाने लगा और उसने मिय के तमाम देवताओं की दुहाई दे डाली। फिर अपने छोटे से देवता का नाम लेकर वह यात्रा की तैयारी में लग गया। उसे मुझे विदबास दिखाना पड़ा था कि यात्रा समुद्र के रास्ते नहीं करनी थी क्योंकि वह जल के मार्ग से अत्यन्त ही भय करता था।

मितन्नी बारशों के साथ यात्रा में कोई बिसेफना नहीं पड़ी। हितैत्री

लोगों ने हमें रास्ते में खाने-पीने की कमी नहीं होने दी। वह लोग बहुत बड़े होते हैं। उन्हें सड़ो-गर्मीं तो जैसे सताती ही नहीं है। उन्हें छुटने से ही बंदोर जीवन व्यतीत करना सिखाया जाता है। मुझ उन्हें अत्यन्त प्रिय होता है। कमजोर मुल्कों से वह घुणा करते हैं और उन्हें दबा देने हैं और पराक्रमी लोगों से मित्रता बनाये रखने हैं।

उनका राष्ट्र कई छोटे-छोटे गाँवों, कबीलों और नगरों में बँटा हुआ है। हर एक में एक-एक राजा होता है और वह सब हानी देश के सम्राट को ही अपना मानिक मानकर खपते हैं जोकि अपने पर्वतीय नगर हनुमान में रहता है। वही उन सबका सबसे बड़ा पुजारी मोनार्फि और उष्णाम ग्यावाधीन है। समार पर राज्य करने के दोनों अधिकार—सागार्फि और घार्मिक उसको प्राप्त है। ऐसा पूर्ण अधिकार मैंने कहीं नहीं देखा म सुना। गर्भी जगह और नामका मिथ म तो घार्मिक वर्ग का सम्राट के ऊपर भी आनक छाया रहता है।

अब लोग समार के बड़े नगरों का उल्लेख करने हैं तो या तो धीरीः या बेबीःपोंन और कभी-कभी निनवैह (जो मैंने नहीं देखा है) का ही नाम लेते हैं। कोई द्वितीयों के इस महानगर हनुमान का नाम नहीं लेते हनुमन्ति पर्वत पर बसा हुआ यह नगर अत्यन्त शोभनीय और महान्। यहाँ ऊँची ऊँची पथार में तराती हुई इमारतें हैं और यहाँ का परकीः अत्यन्त है। इसका कारण मैंने यहाँ आकर यह जाना कि यहाँ के सम्राट ने अपने देश को पारदेमियों के लिए विष्णुन बन्द कर रखा है। देश के केवल बने राजदूत सम्राट के सामने पर्वतकण उपहार चोट कर सकते हैं यिभी पूर्व जाता प्रान्त है। अत्यन्त बड़ों को तो अपने उपहार महान के काटती बरस में रखकर खला जाता पकता है। जो भी पारदेमी यहाँ आया है उस पर राज्य की ओर से कहीं निराह रमी जाती है। उसके पीछे बरस जगदूम अने दिग्गज हैं जो उनकी सर्किटिड को देखा करते हैं। वीरे का के लोग मैंने जान है सर्किटन बरस के अंगों के साथ बरस में बने करते हैं। दर्द का इस दिग्गज अहर्निश बरस करने होते हैं जो इसे बड़ बड़ ही बरस करते हैं और बड़ बरस में उनके पीछे-पीछे कहीं कुछ मर कर जाते हैं। पर जगदूम-अप के बड़ उनके सर्किटन बरस करते हैं। दर्द काई उनके कुछ

पूछे भी तो उत्तर देने हैं "मुझे मालूम नहीं" या "मैं समझा नहीं"।

इस देश में सभ्य देशों की भाँति सैनिक नौकर नहीं रखे जाते। यहाँ हर नागरिक सैनिक होता है। उनका दर्जा उनके जन्म से नहीं माना जाता बल्कि इससे जाना जाता है कि उसकी कितनी हैमियन है। यदि किसी के पास रथ होता है तो वह ऊँचे दर्जे का सैनिक माना जाता है। अन्य बड़े मगरों की भाँति हस्तुमान व्यापारिक केन्द्र नहीं है। यहाँ तो जैसे घर-घर लोहसारी खुली हुई हैं और दनादन अस्त्र-शस्त्र बनाये जाते हैं।

जब मैं वहाँ पहुँचा, उन दिनों वही महान् मुम्बिनुन्मा अट्ठाईस वर्ष तक राज्य कर चुका था। उसका नाम ही लोगों के लिए आतंक का विषय था। लोग उसे केवल मुनकर ही सिर झुका लेते और दोनों हाथ उठाकर उसकी स्तुति करने लग जाते। वह मगर के बीच एक पर्यवर के बने हुए विशाल महल में रहता था और उसके चारों ओर अनेक कपाएँ प्रचलित थीं जैसे हर देश में हर साम्राट् के चारों ओर होती हैं, खास कर जब कि वह जवर्दस्त हो। मैं उसे कभी नहीं देखा था।

हस्तुमान में लोग अपनी बीमारी छिपाकर मर जाना ज्यादा पसन्द करते हैं बजाय इसके कि उसका इलाज कराया जाय। यही रोगी होना जैसे अपमान का विषय माना जाता है। दुर्बल बच्चों और रोगी दासों को तो वह बिना हिचके मार डालते हैं, इसीलिए वहाँ के पैट प्रायः गँवार हो होते हैं क्योंकि उन्हें रोग का ज्ञान ही नहीं होने पाता। फिर भी उनके पास शरीर की गर्मी धामन करने की विधि और आर्यजनक औषधियाँ होती हैं जिन्हें सीलकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। हिनैजियों को जैसे घृत में भय नहीं होता।

फिर भी सभी महानगर के रहने वालों की आदत एक-ही नहीं होती है। जब मेरे ज्ञान और विलक्षण इलाज की ख्याति पड़ी तो लोग मेरे पास शाम के बाद छिप-छिपकर आने लगे। वह मुझे उनके रोगों को छिपाकर रोगों के लिए अलग उपहार देने से क्योंकि यदि उनका रोगी होता अन्य कोई ज्ञान लेता तो वह समाज में लोगों की निंदाओं में गिर जाते। हस्तुमान में वही मुझे भय था कि भूखे मरने की हालत न पहुँच जाय, मैंने काफ़ी धन बचाया। मोनिगा मेरे रोगियों के माँसने अपना अद्भुत नृत्य बाली

और लोग उसे बहुमूल्य उपहार देते। वह इससे अधिक उससे और कुछ न चाहते क्योंकि एक तो वह कभी किसी स्त्री से बलात्कार नहीं करते, दूसरे वह उदार हृदय भी होते हैं और प्रसन्न होकर मुक्त हस्तों से उपहार और धन लुटाने हैं।

एक दिन मेरे पास सम्राट् का एक उच्चपदाधिकारी आया जो उसके पुस्तकालय का निरीक्षण करता था। वह कई भाषाएँ लिख और बोल सकता था और राज्य के तथा अन्तर्राष्ट्रीय पत्रव्यवहार किया करता था। मैंने उसका इलाज किया और मीनिया ने उसे नृत्य से लुभाया। थोड़े ही दिनों में मैंने उसे विश्वास दिला दिया कि मैं मिस्र से निकाला हुआ व्यक्ति था जो वहाँ कभी वापस नहीं जा सकता था। यह कि मैं वैद्य होने के नाते केवल धन कमाने और ज्ञान प्राप्ति के लिए ही उत्सुक था और इसीलिए देशाटन किया करता था। बातों ही में बातों मैंने उससे पूछा, 'हस्तुशास्त्र परदेशियों के लिए धन क्यों कर रखा गया है?' जबकि वह मीनिया के नंगे कंधों की सुन्दरता देख-देखकर ललचा रहा था। उसने मदिरा का घूंट लिया और मेरी ओर देखा। मैंने फिर अपना प्रश्न दोहराया और कहा, "...और खासकर जब यह इतना बड़ा और महान् नगर है—क्यों नहीं यहाँ भी परदेशियों को आने दिया जाता कि अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान फैल सके?"

उसने उत्तर में कहा, "हमारा महान् सम्राट् सुब्विमुल्लिषुमा जब सिंहासनाब्द हुआ था तो उसने कहा था, "तीस साल में मैं हाती देश को ससार का सबसे बड़ा देश बना दूँगा और अब वह तीस साल पूरे होने वाले है। और तब मेरा विचार है कि ससार यहाँ के बारे में इतनी अधिक जानकारी प्राप्त कर लेगा कि..."

"लिबिन" मैंने कहा, "बेबीलोन में तो मैंने साठ के साठ गुने और फिर साठ गुने, इतने सैनिक बादशाह के सामने बर्बाद करने देने थे जिनके पैरो की आवाज ऐसी थी जैसे कोई समुद्र गरज रहा हो। और यहाँ तो दस आदमी भी इकट्ठे चलने मैंने नहीं देने हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि इस पर्वतीय प्रदेश में तुम लोग इन रथों का क्या करते हो जब इन्हें चला नहीं गवने? यह तो मैदानी इलाकों के लिए होते हैं। यहाँ विविध बाल

है नि पर-पर सोहगारी है ।”

वह मुनवर हँसा, फिर बोला :

“मिली मिन्यूहे ! बैठ होकर मुम्हारी मह चिता खर्च नहीं बही जा सकती क्या ? शायद हम रस बेचकर ही अपना निर्वाह करने हों, तो ?” और उसने अपने नेत्र अधर्मूंदे करके मेरी ओर और मेरे देखा ।

“यह विरवगनीय बात नहीं हो सकती”, मैंने कहा, “क्योंकि भेटिये अपनी दाढ़ें औरी बों उछार नहीं देने ।”

मेरी निर्भीकता पर वह मुग्ध हो गया । शायद उसे अब विन्तुस ही सब नहीं रह गया था । वह धीरे धीरे मेरे सामने आया और उसने अपने घुटने लुब ठोकें । फिर कहा

“हिनियों का न्याय मैदानों में भिन्न होता है । शायद तुम्हें और मुम्हारे देश बापों को हिनियों का न्याय देखने के लिए अब बहुत प्रतीक्षा नहीं बानी पड़ेगी मिन्यूहे । मुम्हारे देशों में अभी लोग मरीकों पर राज्य करने हैं । परन्तु हमारी देश में ऐसा नहीं होता । यहाँ तो बरखान दुर्बल पर राज्य करने हैं ।”

“परन्तु हमारे मरे जगज्ज का तो एक मरा देवता मरता है जो दुःख नहीं चाहता ।” मैंने जोर से कहा कहने लगा

“वह मैं जानता हूँ क्योंकि मैं ही तो मर्याद के समाम सब पड़ता हूँ । उसका मत देवता मानि का पाठ सबको सिगारना है और दुःख मरना रक्त-पात नहीं चाहता । इसे उसने कोई आपत्ति नहीं है क्योंकि हम तो उसे चाहते हैं जब तक कि वह मरने में मरना मैदानों में बना रहे । मुम्हारे जगज्ज में हमारे मर्याद मर्याद के पास एक दिगो मरीक जीना दरक भिजा है जिसे वह जीवित का बिना बहकन मुबारक है । और हमारा जगज्ज भी कुछ क्यों सब निम्न ही लार्ज रहेगा और बिदेस सब में सब सब कि जगज्ज एंगे लोना भिजना रहेगा जिसने कि और लार्ज लोना और अमर लोना का लोना और लोनामरिदा व जगज्जाने लुब लुब दे और अधिकाधिक सब बनाये और लुब दे । इन सबके लिए अब बहुत मरनी होना है और हमारे मर्याद के लार्ज लुबज्ज में मरार सब के लुबलुब सब और निम्नलुब सबके लार्ज एक दिन सब बिदे है जिसे वह दुःख हमारे के लुबलुब देना है ।

लेकिन वह ऐसा क्यों करता है यह मुझे नहीं मालूम ।”

“तुम्हारी भविष्यवाणी से कोए और गीदड़ भले ही खुश हों पर मुझे तो यह विषय सुनने को भी बुरा लगता है,” मैंने कहा, “मितन्नी में तुम लोगों के जुल्मों की भयानक बातें वहीं जाती हैं, आखिर सम्म होकर ऐसी बातें तुम लोग करते क्यों हो ?”

‘सम्मता ?’ उसने पुनः मदिरा डालकर कहा, “यह क्या होती है ?” वह मदिरा पीने लगा । थोड़ी देर बाद फिर बोला, “यदि हमसे आशय लिखने-पढ़ने का है तो हम भी कई भाषाएँ लिख-पढ़ सकते हैं और मिट्टी की तस्वियों को किताबखानों में जमाकर लेते हैं । हमारा तो उद्देश्य यह है कि हमारा आतंक चारों ओर फैल जाय, कि जब हम उठें तो लड़े बिना ही दूसरे हमारे सामने भय से हथियार डाल दें । क्योंकि हम भी बरबादी नहीं चाहते कि भार-काट, तोड़-फोड़ के बाद किसी जगह को दबायें, तुमने तो सुना होगा कि डरपोक दुश्मन को आघा हारा हुआ समझिये ?”

‘इसका मतलब है कि सभी तुम्हारे शत्रु हैं ।’ मैंने कहा, ‘तुम्हारा कोई मित्र नहीं है ?’

“हमारे शत्रु वह जो हमारे सामने आयें और मित्र वह जो हमारे सामने सिर झुकाये और हमें नज़रे दें,” वह आराम से हथेली फँलाकर बोला ।

“परन्तु क्या तुम्हारा कोई देवता ऐसा नहीं है जो तुम्हारे इन कुचर्मों को रोके ?” मैंने उसकी अवहेलना करते हुए कहा, “जो क्या सही है क्या गलत है तुम्हें बताये ?”

“यह जानना तो बहुत ही सरल है,” उसने कहा, “सही वह जो हम चाहते हैं और गलत वह जो हमारे पड़ोसी या अन्य कोई चाहते हों । इस सिद्धांत से जीवन और राजनीति दोनों ही सरल हो जाती हैं । बस मैं जानता हूँ कि हमारा सिद्धान्त मैदानों के सिद्धान्तों से तनिक भिन्न है । वहाँ देवता लोग उसे सही समझते हैं जो अमीर चाहते हैं और उसे गनन समझते हैं जिसे गरीब पसन्द करते हैं ।”

“इन देवताओं के बारे में जितना अधिक ज्ञान मैं एकत्रित करता हूँ उतना ही उदास हो उठता हूँ ।” मैंने पुनः पूर्वक कहा ।

उसी शाम मैंने मीनिया से कहा, “हाली देश में मैं जो कुछ जानना चाहता था वह मैंने जान लिया है, अब हम क्रीट चल सकते हैं। मुझे यहाँ लोगों की बदबू आने लग गई है और मेरा दम सा घुटने लगा है।”

तत्पश्चात् कुछ उच्च अधिकारियोंके द्वारा जो मेरे मरीज थे, मैंने आम रास्ते से समुद्र तट पर पहुँचने के लिए आज्ञा प्राप्त कर ली। हालाँकि लोगों ने मुझसे बहुत कहा कि मैं न जाऊँ परन्तु मैंने जाना ही जब निश्चय कर लिया था तो फिर उन्होंने मुझे अधिक नहीं दबाया। हस्त-शास की भयानक दीवालों को छोड़कर हम गधों पर चढ़कर निकल आये। मार्ग के दोनों ओर जादूगरो की लार्सें पड़ी थी और गुलाम जिनकी आँखें निकाल ली गई थीं, भारी-भारी चक्की के पाट चला रहे थे। पूरे बीस दिन बाद हम समुद्र तट पर आ पहुँचे।

हम इस नगर में कुछ समय तक रुके रहे, हालाँकि यह छोटा, कीलाहल-पूर्ण और सारी बुराइयों और जुर्मों का केन्द्र था। जब किसी छोटे जहाज को हम देखने जो क्रीट जाता होता तो मीनिया कहती, “यह जहाज इतना छोटा है कि अवश्य मार्ग में डूब जायेगा—मैं इसमें नहीं जाऊँगी,” जब बड़ा जहाज देखती तो कहती, “यह सीरियन जहाज है—मैं इसमें नहीं जाऊँगी” और किसी और को जब हम देखते तो कहने लगती, “इस जहाज के कप्तान की आँखों में पीतान है, यह हमें परदेश में बेच डालेगा।”

और हम उस नगर में रुके रहे। मुझे इसकी भी कोई चिन्ता नहीं थी क्योंकि मेरे पास तो वहाँ भी बहुत काम आ गया।

एक दिन मेरे पास बन्दरगाह का उच्चाधिकारी अपनी चेचक का इलाज कराने आया। मैं इस रोग के ज़मान की विधि स्मर्त्ता में सीख चुका था और मैंने उसका इलाज कर दिया। जब वह ठीक हो गया तो बोला : “सिन्धूदे ! मैं तुम्हें क्या दूँ ?”

मैंने कहा : “मुझे तुम्हारा सोना नहीं चाहिए, मुझे तो तुम अपना यह चाकू दे दो जो तुमने कमर में लटकाकर रखा है। यह मुझे तुम्हारी याद सदा दिलाता रहेगा—उपहार मेरी दृष्टि में धन से अधिक मूल्यवान होता है।”

सुनकर उसने विरोध करते हुए कहा : “यह तो एक मामूली चाकू है— न तो इसकी धार ही तपी हुई है न इसकी मूँठ में चाँदी लगी है।”

मैं जानता था कि वह मुझे डालने का प्रयत्न कर रहा था क्योंकि उन्हें उनके सम्राट् की आज्ञा थी कि वह उन शस्त्रों को न बेचें न किसी को दें। वह नहीं चाहता था कि उस नई धातु के बारे में बाहर संसार में कोई जानकारी फैले। वह उसे अपने समय तक छिपा रखना चाहता था। मैंने इस नीली चमकती धातु के बने हुए एक-दो चाकू मितलनी में भी धनिकों के पास देसे थे और वहाँ वह उनके बोझ के दसगुने सोने में भी नहीं खरीदे जा सकते थे। वह उनकी मूँठ पर सोना जड़वाकर बड़े गर्व के साथ उन्हें कमर में बाँधने थे। परन्तु यहाँ उसका मूल्य कुछ भी नहीं था क्योंकि यहाँ यह बिक ही नहीं सकता था।

यन्दरगाह के उच्च अधिकारी को ज्ञान था कि मैं शीघ्र ही अन्य देश को जाने वाला था अनएव जब मैं उस चाकू को लेने पर ही अड़ा रहा तो उसने उसे मुझे दे डालने में कोई आपत्ति भी नहीं समझी। इस तरह वह अपने लिए अपना सोना भी बचा रहा था। उसने मुझे वह दे दिया।

वह इतना पैना था कि उससे बेहतरीन हथामत बन जाती थी। ताम्र के बने अस्त्र-शस्त्रों की धारों को वह काट डालता था और उसकी अपनी धार का कुछ भी नहीं बिगड़ता था। मैंने उसके फलक पर चाँदी फिरवाई और मूँठ में सोना जड़वाकर कमर में लटका लिया।

इस नगर में एक स्थान ऐसा भी था जहाँ बेलों के सामने युवक और युवतियाँ नृत्य करते थे। और यही मैंने मीनिया को प्रथम बार कुछ हाँड के सम्मुख अद्भुत नृत्य करते हुए देखा। एक पतला वस्त्र पहने तिर के मुनहले बाल सोले वह अद्भुत सुन्दरी किसी देवी की भाँति नृत्य कर रही थी। साँड डकराकर उस पर टूट रहा था पर वह जैसे फूल की भाँति हवा में तैर जाती और पता भी नहीं चलता था कि जब उसने उसके सींग पकड़ कर कला लगाई और बेल की पीठ पर आ गई। कभी वह अघर दिखती तो कभी भूमि पर। लोग चिल्ला रहे थे, “ऐसा कभी नहीं देखा।”

और मैं स्वेद स्नान उत्सुक हृदय लिये उस देवी नृत्य को फटी आँखों से देख रहा था।

इसके कुछ ही दिन बाद श्रौट का एक जहाज आया। यह न बहुत छोटा था न बहुत बड़ा और इसके कप्तान की आँखों में दौलत भी नहीं था। वह भीनिया की मानुभाषा बोलता था। भीनिया मुझसे बोली : “मैं इसमें चली जाऊँगी—यह मुझे मेरे देवता के पास निविष्ट पहुँचा देगा—अब मुझे आज्ञा दो—मुझे अब तक के कष्ट के लिए क्षमा करो।”

“तुम तो जानती हो भीनिया कि मैं स्वयं भी तुम्हारे साथ श्रौट जा रहा हूँ,” मैंने कहा।

और उतने मेरी ओर चाँदनी में चमकते हुए समुद्र के समान नेत्रों से देखा और अपने रँग हुए होठ हिलाये और कमान जैसी भँवें नचाईं। वह बोली :

“मेरे साथ सिन्धूहे ! तुम श्रौट क्यों चलना चाहते हो ? मैं तो इस जहाज में बिना किसी खतरे के सीधी घर पहुँच जाऊँगी—तुम व्यर्थ कष्ट क्यों कर रहे हो ?”

“तुम तो जानती हो भीनिया।” मैंने उत्तर दिया।

और उतने दीर्घ इबास छोड़कर अपनी उँगलियाँ मेरे हाथों में दे दीं फिर कहा : “हम साथ बाफ़ी आये बढ़ गये हैं सिन्धूहे ! मैंने इतने सारे देव और इतने सारे लोग देख लिये हैं कि अब मेरी मातृभूमि मेरे लिए कोई विशेष महत्त्व नहीं रखती और अब मैं अपने देवता के लिए उतनी उत्सुक नहीं रहती। तुम तो जानते हो कि मैंने जान-बूझकर इस यात्रा को बाफ़ी टाला है कि टस जाय तो शायद टस ही जाय। पर हार ही में जब मैं फिर बैलों के सामने नाचती हूँ तो मेरे मन में यह जान जम गई है कि यदि तुम्हें मैंने आज्ञासमर्पण कर दिया तो मेरी कृपु निश्चित हो जाएगी।”

“बहु ठीक है, ठीक है,” मैंने अपने हुए उत्तर दिया : “बहु सब तो पुरानी बातें हैं, उन्हें दोहराने में क्या प्रयोजन भी क्या है ? मैं तुम्हें पाना भी तो नहीं चाहता कि तुम्हारा देवता तुमसे हाथ धो बैठे। और फिर जो कुछ तुम्हारे पास से मिल सकता है, कप्तान के बड़े अनुमार, किसी भी सुवर्णी दागी से मिल सकता है—वह तो सभी एक ही बात है।”

और तब वह पंखवार उठी। उसके नेत्र गहरे हरे हो गये। उसे यह विस्तृत स्वीकार नहीं था कि मैं किसी अन्य स्त्री की ओर आँख उठाकर

भी देखूँ।

उसके प्रेम का यह अनूठा व्यवहार था कि न तो स्वयं ही समरंग करती थी न किसी और से सम्बन्ध रखने देती थी। परन्तु मुझे उस विविध परिस्थितियों में भी आनन्द का अनुभव हुआ। आखिर संसार की विविधताएँ ही तो मन को आकर्षित किया करती हैं।

और हम तीनों ज़ीट की ओर चल दिए। जहाज़ के सगर उठा रिये गए—मामने अनन्त समुद्र उमड़ रहा था।

८

दिन और रात बीतने लगे और हमारा जहाज़ हिलता हुआ अती समुद्र में चला जा रहा था, परन्तु मेरी धीनिया मेरे साथ थी और मुझे कोई चिन्ता नहीं थी।

कप्ताह मन्माही में अपनी देग-देग की चर्चाओं की बीतें हुईं। उमने उनसे कहा कि मित्रों से स्मर्त आने समय समुद्र में जब तूफान ने मस्तूम में पाव को उठा दिया था तो मेवच वह और जहाज़ का कप्तान ही बेचिन्न बने रहे थे बाकी सब लोग भय से रो-रोकर झूले-झुलाने जान दे रहे थे। उमने यह भी कहा कि नीच के समुद्र में मिलने के स्थान पर ऐसे ऐसे समुद्री जन्तु पाये जाने थे जो नाव सहित लोगों को खा जाते थे। वस्तु मन्माह भी पूरे बेचिन्ता थे। उन्होंने उमसे भी लगड़ी बातें सुनाई जिन्हें सुनकर भय में उनके रोगने लगे हो गये और वह भावा-भागा मेरे पास आया कि मैं उसे दिलावा दूँ। वह बोले, “समुद्र के दूबरे छोर पर बने-बिने बने लगे हैं जिन पर आकाश टिका हुआ है। समुद्र समुद्र में सब जिनों की झुंझी और वसों बाकी सुन्दर भागिनी रहनी है जो अहाही बली की प्रतीका में रहा करनी है। जैसे ही कोई उनके पास जाता और उनके उस पर जातु होगा।”

जहाज़ के सोने की सब धीनिया के बारे में बता बता कि वह है।

निर्मात्य थी तो वह उसकी हृदय से थड़ा करने लगे । परन्तु उनसे जब मैंने उनके देवता के बारे में पूछा था तो बोले : "हम तुम्हारा आशय नहीं समझे परदेशी," या "हमें नहीं मालूम," इनके अतिरिक्त तीसरा उत्तर मुझे उनसे नहीं मिला ।

और आखिर हम क्रीट आही पहुँचे । मीनिया अपने देश की पहाड़ियों को देखकर रो दी । मेरा हृदय बैठने लगा क्योंकि अब समय पास आ रहा था जब वह मुझसे निश्चित रूप से बिछुड़ जाने वाली थी । क्रीट के बन्दर-गाह में करीब एक हजार पोत लड़े थे । कप्ताह ने उन्हें देखकर आश्चर्य से कहा कि यदि वह उन्हें स्वगन्ध न देखता तो कभी विश्वास नहीं करता कि ससार-भर में बुल मिलाकर भी इतने जहाज हो सकते थे ।

नगर बन्दरगाह से मिला हुआ था । न ही बुजें थी और न नगर कोट और न किले न मोर्चे । क्रीट के समुद्री धाक ऐसी जबदस्त है—उसके समुद्री देवता की धाक सासकर ।

सारे संसार में जहाँ-जहाँ भी मैं गया, मैंने क्रीट का सा सौन्दर्य कहीं नहीं देखा । जिस प्रकार घमकती हुई भाप बिजारे की ओर उड़ा दी जाती है, जिस प्रकार इन्द्रधनुष के पाँचों रंगों से जल का बुलबुला दमकने लगता है और जिस प्रकार सीप के सम्पर्क से घोड़े भी घमक उठते हैं—टीक वैसे ही मेरी आँखों से क्रीट सुभावना बरकर बस गया । सारे संसार में मनुष्यों के मुँह इतने निवट और वास्तविक नहीं होते जो यहाँ अनुभव होने लगते हैं । यहाँ मोर्के की सूझ के अनुसार ही लोग घबरेते हैं और उनके विचार हर घड़ी हर पल बदलते रहते हैं । यही कारण है कि यहाँ के लोगों से कोई बचन नहीं लिपा जा सकता । बार्नोलाप में यह लोग अत्यन्त मीने और गुणो से पूर्ण होते हैं क्योंकि इनके समापण में भी सगीन होता है । पर इन लोगों में मृत्यु के लिए न तो कोई गम्ह है और न कोई उनकी चर्चा हो सकता है । उमे वह छिपाकर रखते हैं और जब कोई मर जाना है तो उसे न आने बर हटा देने है कि अन्य उसे देखकर दुष्ठी न हो जायें । यह लोग मेरे विचार से अपने मुँहों को बसाने है हाजाकि मैंने कहीं जिनने समय

टहरा था, उग बीच न किसी को जलते देखा न मरते ही। वहाँ मैं बरों भी नहीं देखी। केवल कुछ प्राचीन काल के राजाओं की कब्रें वहाँ थी और लोग उनसे इतनी दूर घबकर लगाकर बचकर निवृत्त थे कि लगता था इस प्रकार वह अपनी मृत्यु ही टाल देंगे—अथवा मृत्यु से छुटकारा पा जायेंगे।

अन्य देशों की भाँति यहाँ इमारतें, मंदिर और महल देखने में उबड़स्त नहीं हैं क्योंकि यह लोग अपना उद्देश्य बाहरी चमक-दमक के बजाय भीतरी आराम अधिक समझते हैं। इन्हें सफाई और शुद्ध हवा पसन्द है। उनके घरों में कई वातायन और स्नानजूह होते हैं जहाँ गर्म और ठंडे जल के चाँदी के नल लगे रहते हैं जिन्हें धुमा देने से बड़े-बड़े होड़ भर जाते हैं। यही नहीं कि ऐसा केवल धनिकों के यहाँ ही पाया जाता हो बल्कि मित्राम बन्दरगाह में रहने वालों के, बाकी सभी स्थानों पर यही आराम पाया जाता है।

यहाँ स्त्री और पुरुष दोनों ही शृंगार करते हैं। उनके सुन्दर सुँटे हुए शरीरों पर वह एक भी रोम नहीं रहने देते—और स्त्रियाँ विलक्षण केश-विन्यास करती हैं। अधिकतर वह अपनी ही भाषा बोलने हैं और हालाँकि इनका सारा धन समुद्री व्यापार से ही आता है फिर भी यह बन्दरगाह जैसी गन्दी जगह जाकर अपने जहाज देखना उचित नहीं समझते। मामूली हिसाब से भी यह घबराते हैं और इन्हें हर बाल के लिए गामदार की आवश्यकता होती है। और इसीलिए योग्य परदेसी लोग इनसे बाकी धन कुछ ही समय में कमा लेते हैं।

इनके पास ऐसे-ऐसे बाद्य हैं जो बिना किसी संगीतज्ञ के भी बजते हैं और इन्होंने तो बल्कि संगीत के रागों की भी पुस्तकें बना ली हैं।

और एक बात जो सभी जगह सुनी थी वास्तव में बिल्कुल सही है—और वह है यह कहावत—कि यह तो क्रीटन की भाँति झूठ बोलता है, शायद ही मैंने क्रीट का-मी झूठे कही और सुना हो।

वहाँ कोई मंदिर दिखाई नहीं देता—लोग अपने माँझों को घेराने और उनके सामने दुबकों और युवतियों के नृत्य देखने निरत हो जाते हैं—दृगं वह कभी नहीं चूकते। बेलों पर यह गर्म भगाकर दाँव लगाया करते हैं और इस प्रकार जुए में लोगों का बारा-न्यारा इनमें होता है।

उनके यहाँ राजा की भी कोई विशेष कद्र नहीं की जाती और उससे लोग चाहे जब जाकर मिल सकते हैं। यह आवश्यक नहीं होता कि वह अपनी कुरसत से उनसे मिले बल्कि लोग अपनी कुरसत से जाकर उससे मिल आते हैं। अंतर केवल इतना है कि वह एक बहुत ही विस्तृत महल में रहता है। जैसे उससे वह उपहास इत्यादि भी बराबरी में कर लेते हैं।

मदिरा वह लोग कभी इतनी नहीं पीने कि बेहोश हो जायें या उल्टी करने लगें।

स्त्रियाँ—विशेषकर विवाहित स्त्रियों पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होता यह चाहे जिस पर पुष्प की शंयापामिनी हो सकती है और दसी भाँति पुष्प। स्त्रियाँ अपने स्तनों को वस्त्रों से नहीं ढँकती।

परन्तु जो देवनिर्माल्य युवक अथवा युवतियाँ होती हैं वह सभोग से वंचित रहती हैं। ऐसों की बड़ी इज्जत होती है।

यहाँ की जिस परदेशियों की सराय में हम बन्दरगाह पर उतरकर टहरे, वह इतनी अच्छी और आरामदेह थी कि बेबीलोन का 'इस्तर का आनन्द भवन' उसके सामने कुछ लगने लगा।

मोनिया नहा-धोकर अपने बस में जब श्रृंगार करके निकली तो मैं उसके सौन्दर्य और वस्त्रों को देखना ही रह गया।

उसके सिर पर एक छोटी-सी टोपी लगी थी जो दीप जैसी लगती थी। पैरों में ऊँची एड़ी की काठ के जूने थे जिनसे चलने में निश्चय ही उसे बुरा होता होगा। मैंने उसे रंग-दिरंगे पत्थरों से बना हुआ एक हार दिया जिसे मुझे एक व्यापारी ने यह कहकर दिया था कि यह उस दिन का अत्यन्त प्रचलित हार था हालाँकि अगले दिन के बारे में यह कुछ नहीं कह सकता था। मोनिया के वस्त्रों में से उसके तन-स्तन बाहर लगे हुए निकल रहे थे जिनकी मोचो को उसने साँल रँग रखा था। उसने मुझसे आँखें नहीं मिलाई पर हठ काती हुई बोली : "मैं कोई अपने-स्तनों के प्रदर्शन से इतनी धोड़े ही हूँ? सोच देखें तो सही कि अन्य छोटी की स्त्रियों में यह किसी भाँति बर्ष नहीं है।" और बाल्ज यह उन्नत स्तन धोवन की सीमा को मानो पाई दे रहे थे।

छोट का नगर सुसार के अन्य नगरों से जितना भिन्न था ! यहाँ न

सोर था न भीड़। मकान हवादार, प्रकाश से पूर्ण और सुन्दर थे। मीनिय मुझे एक अनेक व्यक्ति के पास से गई जो ऊँची हैसियत का सा जैवता था जब हम पहुँचे तो वह लड़ने वाले बच्चों की फहरिस्त देख रहा था कि फिर पर दाँव लगाये। मीनिया का शायद उसके घर में निवृत्त का सम्पर्क था। जब उसने मीनिया को देखा तो अपनी फहरिस्त भूलकर उसने उसे मुसी से आनिमन में लेकर प्यार किया और कहा :

“तुम कहाँ खड़ी गई थी ? मैंने तो समझा कि तुम शायद देवता के घर अपने आप ही खली गई थी फिर जाने कहाँ गई—फिर भी मैंने तुम्हारा नाम अभी तक देवनिर्माण्य स्थियों में ही रखा छोड़ा है—शायद तुम्हारा कस भी खाली ही पड़ा है—पर कहीं मेरी स्त्री ने उसे तुम्हारा न दिया हो... ? क्योंकि वह उस स्थान पर एक कूट बनवाना चाहती थी।”

“कूट ?”

“हाँ, वह मछली पालन के लिए बहुत उपायशील हो रही थी।”

“कौन हीमिया ? हीमिया जब मे मछली पालने लगी ? मीनिया ने आश्चर्य से पूछा।

कुछ देर इस प्रश्न में चंचल गया तो बूढ़ ने उत्तर दिया “नहीं... नहीं वह हीमिया नहीं है यह तो मेरी नयी स्त्री है इस समय शायद वह अपने किसी युवक मित्र का अपनी मछलियाँ दिया रही है...” फिर मुझको देखकर वह बोला “और यह मायन कौन है ?”

मीनिया ने मेरे बारे में जब सब कुछ उसे बताया दिया तो बूढ़ ने मीनिया के स्नानी का देमकर कहा

“परन्तु मैंने तो सुनना अपना बोनार्थ बना ही रखा है न ? क्योंकि तुम्हारे स्नान कुछ बचकन में शायद बड़े हो गये है इसीलिए मैं पूछा है कि शायद तुम कामोन्मत्तता में अपने मित्र के साथ”

“नहीं !” बीच में ही मीनिया मुझसे से बोल उठी। फिर उसने ईर्ष्या से शेरदंष्ट्र कहा “जो वह मैं यह कह रही हूँ तो मुझे विश्वास है कि ऐसा बर्तन करके वे ही स्त्री की स्नानी की शरत में एक बार मेरे स्नानी की हो कर ही खूबी है तो मुझे अब फिर उसी प्रकार स्नान करना पसन्द आयेगी है। मेरा अग्रज का ही मुझे बचकन देमकर मुझे मुझे ही

और तुम हो कि अपनी हार-जीत में लगे हुए हो।" और वह रोने लगी।

बृद्ध परेशान हो गया। फिर बहाने लगाकर कि उस माईनोस के पास जाना था, सटक गया। माईनोस कीट के राजा को कहा जाता था।

तत्पश्चात् मीनिया भी मुझे लेकर माईनोस के पास गई। वहाँ अगणित लोग विविध वेश-भूषा पहने मिले जो हँस-हँसकर आपस में तथा माईनोस से बातें कर रहे थे। महल में अमंजय कक्ष थे जो सभी हवादार और प्रकाश से पूर्ण थे और सभी सुन्दर सजे हुए थे। भीतो पर वहाँ सुन्दर मछलियाँ और रंग-बिरंगे पुष्प बने हुए थे। माईनोस मुझसे मिली भाषा में बोला और उसने अत्यन्त प्रमत्तता दिखाई कि मैं उसे (मीनिया) सही-सलामत उसके देवता के हेतु लौटा लाया था। यही मुझे मालूम हुआ कि मीनिया राजवंश की थी।

जब हम बैलों के स्थान में पहुँचे तो मैंने देखा कि वह स्थान स्वयं एक महानगर था जहाँ अगणित साँड बँधे डकरा रहे थे और खुरो से पृथ्वी खोद रहे थे। वहाँ हमें मीनिया के पुराने जान-पहचान वाले कई युवक और युवतियाँ मिलीं। सभी मीनिया को देखकर खुश हुए। परन्तु एक बात माईनोस के यहाँ और इस स्थान में भी एक सी ही थी—सभी लोग बे-परवाह थे, खुशी होनी थी तो वह भी क्षणिक और एक किसी बात पर ध्यानपूर्वक जमकर ध्यान नहीं करते थे। सभी में एक अजीब-सी मस्ती थी।

अन्त में मीनिया मुझे एक छोटी-सी इमारत में कीट के सबसे बड़े पुजारी के पास ले गई। जिस प्रकार वहाँ का राजा सदा माईनोस ही रहता था वही भाँति वह बड़ा पुजारी भी सदा माईनोस की कहुलाता था। इसका शीट में सबसे बड़ा सम्मान था और साथ ही सब इससे बेहद डरते थे। लोग आपसी बातों में उसका नाम नहीं लेते थे और उसे बैलों वाला आदम-कट्टर ही आपस में पुकारते थे। स्वयं मीनिया भी उसके पास जाते डरती थी परन्तु वह उसे मेरे सामने जना नहीं रही थी। वैसे मैं उसकी आँदोलन उसके हर भाव अब बतला सकता था।

वह हमसे एक अँधेरे कक्ष में मिला। उसे देखकर एक बार तो मैं स-मुप ही समझा कि जो कुछ कीट के देवता के बारे में मैंने सुना था वह स-सच था। परन्तु जब हम दोनों ने उसको गुंजर अभिवादन कर दिया

उसने अपना वह चेहरा उतार दिया । मैंने देखा कि वह तपे हुए रंग का एक सुन्दर पुरुष था जिसके रोम-रोम में जैसे अधिकार कुट-कुटकर भरा हुआ था । उसने मुझे मोनिया को वापस लाने के उपलक्ष्य में धन्यवाद दिया और कहा कि मैंने उसके देश की भलाई की थी क्योंकि उसको बचाने का अर्थ था देवनिर्माल्य की रक्षा करना, जिससे उनका देवता प्रसन्न होता था । फिर उसने कहा, "तुम्हारी सराय में तुम्हारे लिए उत्तमोत्तम उपहार तुम्हारे लिए प्रतीक्षा करते तुम्हें मिलेंगे ।"

"उपहार एकत्रित करना मेरा काम नहीं है ।" मैंने कहा, "मैं तो ज्ञान का भूखा हूँ जो मैं देश-देश जाकर ढूँढ़ता फिरता हूँ । मैंने बेबीलोन और हितैतियों के बीच जाकर उनके देवताओं को भी देखा है और अब श्रीट के देवता के बारे में सुनकर यहाँ आया हूँ । यहाँ का देवता पवित्र युवक और युवतियों को पसन्द करता है तो सीरिया में मन्दिरों में रंगशालाएँ होती हैं जहाँ स्त्रियाँ संभोग में ही निपुणता दिखाती हैं और पुरुषों को प्रसन्न करती हैं । वहाँ के पुजारी हिजडे बना दिये आते हैं जिससे उन स्त्रियों से जो संभोग करे सो बाहर का ही हो ।"

"परन्तु हमारा अन्य देशों के देवताओं से भिन्न है । वैसे हमारे बन्दरगाह पर तुम्हें अम्मन और बलि के भी मन्दिर मिलेंगे । पर हमारा देवता एक जीविन वस्तु है; अन्य देशों की भाँति लकड़ी, पत्थर या धातु का नहीं बना है, और मरा हुआ नहीं है । उसे केवल देवनिर्माल्य युवक और युवतियाँ ही देख पाती हैं । उसका मर्क इतना गुप्त है कि फिर उसे छोड़कर कोई नहीं लौटता हालाँकि कायदा यह है कि वह चाहे तो एक मास बाद लौट सकता है । परन्तु अभी तक कोई नहीं लौटा । जब तक हमारा देवता जीवित है, श्रीट समुद्रों पर शासन करता रहेगा । वैसे हमारा जहाजी बेड़ा भी खवर्दस्त है । उमने यह भी बतनाया कि उनके देश में त्रिम युवनी का नाम वहाँ आने के लिए जारी में आजाता है वह बहुत ही भाग्यवान समझी जाती है । और सभी उसकी इरबत करने हैं ।

मैंने कहा : 'स्मर्ना में भोग आगमान को देवता मानने है क्योंकि वहाँ मेह से अन्न पकता है । श्रीट में शायद समुद्री देवता की इमलिए मान्यता है क्योंकि यहाँ मारा वैभव समुद्री व्यापार से ही माता है । वैसे मैंने

मुद्र में रहने वाले मल्लाह देखे हैं जिनके शरीर बेझील और चुरे होने हैं।
वे तो समुद्री देवता पर कोई श्रद्धा नहीं होती हालांकि मैंने सुना है कि
ही वा देवता किसी अन्धकारपूर्ण भूल-भुलैया में रहता है और देव के
बगैरे सुन्दर युवक व युवतियाँ उसको अग्नि कर दिये जाते हैं। चाहता तो
हूँ भी कि उसे जाकर एक बार देखा सकूँ।”

मार्सिनोटौरग ने मुनकर ठंडी तरह से केवल इतना कहा, “पूणिमा को
मिनिया देवता के घर जायेगी। तुम भी उसे जाने हुए देखा सकते हो।”

“और अगर वह मना कर दे तो ?” मैंने जोर से प्रश्न किया। क्योंकि
मिनिया का बिछोह अब मुझे वास्तविक दिग्गज लग गया था।

“ऐसा कभी हुआ ही नहीं है। मीनिया स्वयं सोहो के सम्मुख नृत्य कर
ती है और वह अवश्य जाना चाहेगी।” उसने इत्मीनान से जवाब दिया
और अपना बेल का सिर भोड़ दिया। हम वहीं से उठ आये। परन्तु मैंने
कहा देखा कि मीनिया अब दुःखी हो गई थी।

अब मैं साराप में अपने निवास-स्थान को लौटा तो मैंने देखा कि बल्लाह
मरणाद की मदिरा की दुकानों से गुब पीकर लौटा था। मुझे देखने ही
पता :

“मानिक ! मौजरो के लिए तो यह सबकुछ तबिलमी देव है। यहाँ
हैं कोई मारना-पीटना नहीं है न किसी मानिक को यही याद रहता है
उगले बटुने में बिना गोना और बिना जवाहरान पे। यदि कोई
मानिक गुस्ता होकर किसी मौजरो को निवात दे तो मौजरो कम उस दिन
जाये और दूसरी सुबह फिर आकर अपने काम में लग जाये। यहाँ उग
मानिक को पिछले दिन की कुछ याद ही नहीं रह जाती है।”

विराट अपने कमरे में चला गया जहाँ आकर वह द्वार बन्द करके
मैंने कि उगली आदम की अपने-आप जाने करना हुआ कहना मानिक।
मैं देव में लिखित जाने होने वाली है। मदिरा की दुकानों पर जाता ही
विराट कह रहे थे कि पीट का देवता मर गया है और कि यहाँ के दुकानों
पर अब भी वह होकर मरवा देवता बूँद रहे है। यह है मरणाद का मरणाद

लियो और मेरे मित्र मुझे बुला रहे हैं जहाँ मुझे काफी समय लग जायेगा । और फिर परसों ही तो पूणिमा है !” मैंने उपेक्षा का भाव दिखाने हुए उसे चिढ़ाने के लिए कहा :

“जीट में मैंने बड़े-बड़े नवीन अनुभव किये हैं, यहाँ की बेगभूषा अद्भुत है । जब मैं तुम्हारा नृत्य देख रहा था तो मुझे सुन्दर स्त्रियाँ अपने उन्नत पीन स्नानों को हिला-हिलाकर बुला रही थी । उन्होंने मुझे अपने घर भी बुलाया है । वैसे वह तुमने कुछ अधिक माँसल थी और शायद मनचली भी अधिक थी ।”

वह एकदम कड़ी पड़ गई । मेरी बाँह पकड़कर मेरी ओर आग्नेय नेत्रों में देसकर फुलवारती हुई बहने लगी :

“तुम मेरे रहने किसी अन्ध स्त्री से सम्बन्ध नहीं रख सकते. नही कभी नहीं...तुम्हारी निगाहों में मैं डुबती हूँ- यह मैं जानती हूँ पर मेरी मित्रता की इतनी मर्यादा अवश्य करो—मेरे रहने पराई स्त्री को मन गयाओ !”

“मैं तो उपहास कर रहा था । तुम्हें चिढ़ाने के लिए ।” मैंने कहा पर मेरा भी दिन भर आया था ।

और फिर मैं घला आया था । उन बेलों के गोबर की बदबू मेरे दिमाग में घुम गई थी जो निबलती ही न थी । अब भी जब कभी मैं बेल का गोबर देख लेता हूँ तो तबियत मचलने लग जाती है । सराय आकर मैं अपने गेमियो की सेवा-मुखूषा करने लगा और उन्हें औषधियाँ देने लगा । दीवानों के दूगरी और सँ हँसी-मजाक और तारीफ़ गुनाई दे रहा था ।

शाम के भँभेरे में मैं अपने कमरे में आकर अपनी बटाई पर सो गया । बत्ताह को मैंने दीपक जलाने से मना कर दिया था । मैं उदास हो रहा था । चाँद मुझे बुरा लग रहा था क्योंकि वही तो मेरी बहिन को मृताने छीन रहा था ! और तभी बिचार मुझे और घीनिचा अन्दर भा गई । वह इस समय अपनी पुरानी पोताक पहने हुए थी । उसके गिर के बाग एक मुनहरे पीने में डूबे थे । मैंने जोरकर पूछा :

“मीनिदा ! अब कैसे आई ? मैंने तो समझा था कि तुम अपने देवता के पास जाने की तैयारी कर रही होगी । उसने जैदनी उठाकर कहा, “छीरे

बोली, मैं नहीं चाहती कि और लोग हमारी बातें सुनें।”

वह मुझसे सटकर बैठ गई और फिर चाँद को देखकर कहने लगी, “बैलो वाले गृह में अपने सोने की जगह मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है और न अब मैं पहले की भाँति अपने मित्रों में ही सुख अनुभव करती हूँ। लेकिन इस रात तुम्हारे पास क्यों चली आई हूँ—यह मेरी खुद समझ में नहीं आ रहा है—शायद तुम्हें नींद आ रही हो—तो सिन्यूहे ! मैं चली जाऊँगी।”

फिर वह कुछ रुककर कहती गई, ‘मुझे नींद नहीं आई और मुझे हर रात की भाँति औपधियो की गद्य सुँघने की इच्छा होने लगी—कप्ताह के कान मलने व बाल खींचने की इच्छा होने लगी कि वह जाने क्या ऊँट-पटांग बोलता रहता है—यात्राओं और अनेकानेक देश के लोगों को देखने के बाद अब मुझे बैल, साँड और यहाँ के खेल के मैदानों के शोर अच्छे नहीं लगने। इनकी हरकतें अब मुझे बच्चों की सी मूर्खता लगती है—और अब तो मुझे देवता के घर जाने की भी वैसी इच्छा बाकी नहीं रह गई है। मेरा हृदय और मेरा मस्तिष्क शून्य हो गया है। सभी ओर मुझे दुःख ही दुःख दिखाई देता है। अभी तक मुझे इतनी वेदना कभी नहीं हुई थी। सिन्यूहे ! मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि फिर मेरे हाथों को अपने हाथों में ले लो जैसे कि हमेशा से लिया करते थे। और जब तक तुम्हारे हाथों में मेरे हाथ रहेंगे तब तक मैं मृत्यु से भी नहीं डरूँगी—हालाँकि मैं जानती हूँ कि तुम्हें मासल स्त्रियाँ अधिक पसन्द हैं।”

मैंने उसको उत्तर दिया, ‘मीनिया ! मेरी बहिन ! मेरा बचपन और मेरी जवानी गहरी परन्तु जूझ जल की धारा के समान थी। और मेरा पौष्ट्य एक बड़ी नदी के समान था। जो फैला और फैला परन्तु तब जल गदला हो गया और फिर वह गन्दे गहरे खड्डों में भर गया जहाँ से उसका बहना बन्द हो गया। परन्तु मेरी मीनिया ! जब तुम आई तो तुमने उन गड्ढों में उस तमाम जल को निकालकर फिर एक स्वच्छ धारा में बहा दिया जिससे मेरी तमाम ग्लानि और विषमता दूर हो गई। और तब दुनिया मुझे देखकर मुस्करा उठी। तुम्हारी ही साँतिर मैं अच्छा बना। मैंने स्वर्ण ध्योम क्रिये बिना रोगियों का इलाज किया और मृत्यु पर किसी देवता का कभी कोई अमर नहीं हुआ, न मैंने उन्हें माना ही। लेकिन अब

जब तुम फिर बली जाओगी तब मेरे जीवन की ज्योति फिर बुझ जायेगी। और तब मैं मरभूमि में एक कौर के समान रह जाऊँगा। मुझे अब किसी के प्रति सद्भावना नहीं रह गई है—मैं मनुष्य मात्र से घृणा करने लग गया हूँ—और देवताओं के बारे में एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता—

“बली मेरी भीनिया हम भाग चलें। दुनिया में देग कई हैं परन्तु नदी केवल एक है। उसके किनारों की काफी भूमि पर मैं तुम्हें ले चलूँगा जहाँ बाँस के झुंझुनों में जगती बल्लभों के-का करनी है और जहाँ निम्ब ही सुख अपने सुवर्ण रथ में सवार होकर पूर्व से पश्चिम की ओर आकाश में होकर निकल जाता है। भीनिया बली और हम दोनों मिलकर एक मटक की तोड़ में और फिर हम स्त्री-पुरुष हो जायेंगे और फिर कभी न बिटुड़ेंगे—और जब हम मर जायेंगे तो हमारे शरीर मसानो में अमर बना दिये जायेंगे कि हम पश्चिमी देग की यात्रा भी साथ ही साथ प्रेमपूर्वक कर सकें।”

भीनिया ने मेरी भँवें, पलकें और मेरा मुँह अपनी उँगलियों में छूकर मेरे हाथों को अपने हाथों में दबाया, फिर कहा :

“अगर मैं ऐसा करना भी चाहती तो भी नहीं कर सकती थी क्योंकि शीट में एक भी जहाज ऐसा नहीं है जो हमें छिपा ले या वहाँ में अगाधर से आज। बाल्यविक्रम तो यह है कि मेरे ऊपर अभी भी पहरा लग रहा है और मैं यह कभी महसूस नहीं कर सकती कि वह लोग मेरे कारण मुग़हारी हवा कर दें। अब तो मुझे बहाँ जाना ही हागा—कहाँ ? यह मुझे मायूम नहीं। शायद माईनोटीम कागल आनता हो।”

और मेरे सीने में मेरा दिल ऐसा गुना हो गया जैसे कोई मादरी बज हो और तब मैंने कहा :

“कब क्या होयेगा है यह सप्ता कीन जान सकता है ? परन्तु मुझे नहीं लगता कि तुम देवता के वहाँ में कभी लौट सकोगी। शायद मनुष्य के अन्दर बने हुए उन सुवर्ण के महलों में यह सुन्दर देवता मुझे मोह ले कि तुम लौटना ही पसन्द न करो। तुम मुझे भी चुन जाओ। बाल्यविक्रम तो यह है कि मैं इन भू-विस्तारों का जीवन भी बिनाश नहीं करूँगा। मैं न कई देवों से कई प्रकार के देवता देव लिये और उन

विशेषता नहीं देगी। यह सब कागल कल्पित बातें हैं। अतएव एक बात मैं तुमसे कह दूँ और वह यह कि यदि तुम निश्चित अवधि के अन्दर मेरे पास लौटकर नहीं आ गई तो समझ लो कि मैं तुम्हें ढूँढ़ता हुआ स्वयं उस देवता के घर में घुस जाऊँगा और फिर तुम्हें पकड़ लाऊँगा—और यदि तब तुम्हारे साथ भी न आना चाहो तब भी जबर्दस्ती घसीट लाऊँगा—क्योंकि तुम्हारे बिना तो मेरे लिए जीवन में कोई सुख ही नहीं रहेगा।”

उसने धवरकर मेरे मूँह पर अपना कोमल हाथ रखकर कहा “हिण! ऐसा नहीं कहते। बल्कि ऐसा सोचना भी नहीं चाहिए देवता का घर अंधेरा है और उसमें किसी भी अजनबी को मार्ग नहीं दिखाई देता। और फिर बाहर भी पहरा रहता है और बड़े तबिये के फाटन पड़े रहते हैं। कम से कम यही मेरे लिए बड़ी तसल्ली की बात है। बरना शायद तुम अपने पागलपन में मुझे ढूँढ़ते हुए चले ही आते! परन्तु सिन्धूदे मेरा विश्वास करो कि निश्चित अवधि के पश्चात् मैं तुम्हारे पास अवश्य लौट आऊँगा। मेरा देवता ऐसा निष्ठुर नहीं होगा कि मेरी प्रसन्नता में भी अड़चन डालेगा। वह तो अत्यन्त सुन्दर और प्यारा देवता है जो क्रीट को शक्ति प्रदान करता है, और हर क्रीटन का भला सोचता है। उसी की कृपा से जंतुन के वृक्ष फूलते-फलते हैं और खेत अनाज उगलते हैं और जहाज बन्दरगाह से बन्दरगाह निर्वाध तैरते रहते हैं। वही हमारे लिए अनुकूल हवाएँ चलाता है और जब धने कुहासे में हमारे जहाज फँस जाते हैं तो उन्हें मार्ग दिखाता है। फिर भला वह मेरी खुशी में क्यों अड़चन पैदा करने लगा?”

छुटपन से ही वह उस अन्धविश्वास की छाया में पली थी। वह अन्धी थी। और हालाँकि मैं अपनी सुई से अन्धों की आँखें खोलकर उन्हें नई रोशनी दे देता था फिर भी मैं उसकी आँखें न खोल सका। मैंने उस मजबूरी की हालत में उसे चिपटा लिया और उसे धूमता हुआ उसके स्निग्ध शरीर पर हाथ फेरने लग गया। वह मुझे उस समय रेगिस्तान में फव्वारे की भाँति दिखाई दे रही थी।

उसने कोई आपत्ति नहीं की। उल्टे अपना मुख मेरी गर्दन पर रखकर वह सिसकने लगी। उसके आँसुओं से मेरी पीवा भीग गई। फिर वह

वे देवता मर गये

बोली : "सिन्धूहे ! मेरे मित्र ! यदि तुम्हें मेरे लौट आने की बात पता है तो मैं आज तुम्हें किसी बात के लिए मना नहीं करूँगी । जिस तरह आनन्द प्राप्त हो उसी भाँति मुझसे ले लो—चाहे मुझे मरना ही पड़े । पर आज तुम्हें मैं सब कुछ देने को तैयार हूँ । मैं मृत्यु से भी नहीं डरती क्योंकि तुम्हारी बाँहों में तो मैं उससे भी नहीं डरती ।"

"और क्या उससे तुम्हें भी कुछ मिलेगा ?" मैंने पूछा, उसने देने में कुछ हिचकिचाहट की ।

"मैं नहीं जानती," उसने उत्तर दिया । "इतना तो जानती हूँ कि मन और शरीर दोनों बेचैन है । तुम्हें देखकर मैं कमजोर हो उठती । पहले मुझे मेरी नृत्यकला ही अत्यन्त प्रिय थी और मुझे मेरी कमजोरी पर घृणा हुआ करती थी । परन्तु अब तुम्हारा सग और तुम्हारा स्पर्श अत्यन्त प्रिय लगता है चाहे इससे मुझे दुःख ही क्यों न भुगतना पड़े । मैं बाद में पछताने लूँगी । परन्तु यदि इससे तुम्हें खुशी होगी तो मुझे खुशी होगी—क्योंकि तुम्हारी खुशी मेरी खुशी है और इससे अधिक मैं चाहती भी नहीं हूँ ।"

अपना आतिथ्य शिथिल करते हुए मैंने उसके बालों और आँखों को लपकपाकर कहा : "मेरे लिए यही बहुत है कि तुम मुझसे आज मिल गई और हम फिर उसी भाँति मिले जैसे पहले बेबीलोन में मिले थे । पीता मुझे दे दो ।"

उसको एकदम शक हो गया । आँखें आधी मूँदकर अपनी हथेलियों को अपनी रानों पर मलती हुई वह कहने लगी :

"सायद मैं काफी दुबली हूँ और तुम सोचने लगे कि मेरे पास तुम्हें आनन्द न प्राप्त हो सकेगा—निश्चय ही तुम मेरे बजाय एक और सुन्दर स्त्री पसन्द करोगे—लेकिन मैं भी तुम्हें पूरा सुख प्रयत्न करूँगी—तुम्हें निराश नहीं करूँगी—जितना मुझसे सम्भव है वह सब आनन्द तुम्हें दूँगी ।"

मैंने मुस्कराकर उसके स्निग्ध और मुहीन बगलों पर हाथ रखकर फिर कहा : "मीनिया ! मेरी दृष्टि में तो तुम्हारे समान सुन्दरी और नहीं है और न तुमसे अधिक आनन्द ही मुझे कोई दे सकती है ।

यह कैसे हो सकता है कि तुम्हें तुम्हारे देवता के सम्मुख आपत्ति में डालकर मैं तुम्हारे शरीर से सुख भांगूँ ? मुझे एक सुस्ति मूषी है जिसमें हम दोनों ही को आनन्द प्राप्त हो मकेगा । मेरे देव को विधि के अनुसार हम दोनों अपने बीच अभी एक घड़ा फोड़े लेते हैं और फिर हम दोनों स्त्री-पुरुष, पत्नी-पति बन जावेंगे हान्वाकि फिर भी तुमसे मैं कुछ नहीं भांगूँगा । हमारे विवाह का न कोई गवाह होगा—न कोई पुजारी आदिगा और न किसी मंदिर की पुस्तक में हमारा नाम ही लिखा जायेगा—”

और उस रात जब मैं मीनिया को अपनी बांहों में कमकर सोया तो उसके गर्म श्वास मेरी गर्दन पर लगा किये । उसके गर्म प्रेमाधुओं से मेरा वक्ष भीग गया । मेरा विचार है कि जो सुख मुझे उम्र समय मिला शायद तब न मिलता यदि मैं उससे बहवस्तु ले लेता जिसे देना उसके लिए निषेध बना हुआ था, मुझे तब ससार बहुत ही अच्छा मानूँ होने लगा—और कष्टना से मेरा हृदय गद्गद हो उठा था ।

दूसरी सुबह मीनिया फिर बेलों के सामने नाची, मेरा दिल धड़कने लगा पर उसके कोई धोट नहीं आई । परन्तु इसके बाद नाचनेवाले एक युवक से ज़रा-सी चूक हो गई और वह साँड के माथे पर से जो फितला तो साँड ने उसके शरीर को सींगों से फाड़ डाला । वह मर गया, सभी स्तब्ध रह गये । फिर स्त्रियों ने आकर उसके रक्त को छुआ और वह चीख मारकर भागने लगी । परन्तु पुरुषों ने केवल इतना कहा : “बहुत दिनों बाद ऐसी घटना घटी है परन्तु आज का खेल रहा सर्वोत्तम,” फिर वह अपनी हार-जीत का हिसाब करने लगे । उस रात भी मीनिया मुससे न मिल सकी ।

दूसरे दिन सुबह ही मैंने एक कुर्सी किराये पर की और मैं उस जुलूस के साथ नगर के बाहर चल दिया जिसमें मीनिया को देवता के घर ले जाया जा रहा था । पूरे जुलूस में एक विचित्र नीरव वातावरण था । मीनिया एक सुवर्ण के रथ में सवार थी जिसमें परों की किलंगियाँ सजे हुए घोड़े जुते हुए थे । साथ में बहुत से लोग कुर्तियों पर बैठकर जा रहे थे और वह सभी मीनिया पर पुष्पवर्षा कर रहे थे, सबसे आगे सुवर्ण मेतला

मे सुवर्ण की मूठ की तलवार लगाये माईनोटोरस सुवर्ण का बेल मुसल
जा रहा था ।

देवता का घर एक नीची पहाड़ी जैसा था जिसके ऊपर घास और
जंगली फूल खिल रहे थे । और पीछे की तरफ से यह आकर एक बड़े पहाड़
से मिल गया था । सामने भारी तबिये के फाटक लगे हुए थे — इतने भारी
कि एक कियाड़ को हटाने के लिए दस आदमियों की जरूरत होती थी ।

और जब जुलूस द्वार के पास पहुँच गया तो मीनिया को ले
माईनोटोरस आगे बढ़ा । द्वार अचानक खुला और भीतर घुप अन्धकार
दिखाई दिया । माईनोटोरस ने हाथ में जलती मशाल ली और मीनिया
लेकर अन्दर घोंसला चला गया । फाटक पीछे से बन्द कर दिये गए और
ताला लगा दिया गया ।

और तब मुझे लगा कि मेरी मीनिया मुझसे हमेशा के लिए छिन
गी ।

बाहर सुबक और सुबतियों ने नृत्य आरम्भ कर दिया था । मुझे
नहीं जाने कब तक मैं बेसुध वहाँ रेत में पड़ा रहा । मेरी दुनिया उजड़
गयी ।

फिर जब कप्ताह ने कहा : “यदि मेरी दृष्टि मुझे धोखा नहीं देती
बेल तो वापस निकल आया है—पता नहीं कैसे ? क्योंकि फाटक तो
बंद है ।”

मैंने मुड़कर देखा—सचमुच माईनोटोरस वापस आ गया था ।
भी उस उत्सव में भाग ले रहा था और नृत्य कर रहा था । मुझे
देखकर एकदम जोश आ गया और मैंने लपककर उसका हाथ पकड़ लिया
और उससे पूछा : “कहाँ है मीनिया बताओ ?”

उसने मेरा हाथ छटक दिया पर जब मैं फिर भी अड़ा रहा तो
होकर बोला : “पवित्र उत्सव की कार्यवाहियों के बीच में पड़कर व्यर्थ
करना हमारे यहाँ निषेध है; परन्तु क्योंकि तुम परदेसी हो अतएव
हो ।”

“कहाँ है मीनिया ?” मैं फिर चित्लाया पर तभी कप्ताह मुझे
पूर्वक घसीट ले गया । अलग साकर वह मुझसे कहने लगा : “क्यों

सबका ध्यान अपनी ओर खींचकर मूर्खता दिखा रहे हो? माईनोटोरम जिस रास्ते से वापस आया है वह मैंने सब देख लिया है। वह एक बप्पन की छोटी सिड़की से निकल आया था।" और फिर उसने मुझे मदिरा पिलाना प्रारम्भ कर दिया। उसने उसमें पौपी फूल का रस चुपचाप मिला दिया था। जिसे पीकर मैं बेहोश हो गया। पर उसने मुझे बताया कि मैंने उसके साथ बेबीलीन में किया था घड़े में बन्द नहीं किया बल्कि कम्बन उड़ा दिया।

पूरे दो दिन दो रात तक नृत्य जारी रहा। लोग जाते-आते रहे। और तीसरे दिन सभी लौट गये। केवल कुछ युवतियाँ अब भी नाच रही थीं।

जब माईनोटोरम लौटने लगा तो मैंने उससे जाकर अपने व्यवहार के लिए क्षमा माँगी और कहा कि मैं उन युवतियों को वहाँ रक्कर और देमना चाहता था। मैंने कहा : "यहाँ कई युवतियों और गृहणियों ने मुझे अपने स्तन हिना-हिनाकर मुझे रकने के लिए कहा है और मैं उनकी सुन्दरता पर मोहित हो गया हूँ अतएव मुझे यहीं रकने की आज्ञा दे दो।"

उसने मुझे मूर्ख समझा और मुस्कराकर चला गया। परन्तु जाने-जाने शायद वह उन स्त्रियों की ओर गंभीर कर गया कि वह मुझे अधिकाधिक रिताएँ क्योंकि उसके जाने ही मुझे खुले बंधों वाली स्त्रियों ने चारों ओर से घेर लिया।

और फिर वह केलि करती रही परन्तु मेरा मन उनमें विच्युत नहीं लग रहा था। रात्रि होने पर वह सब चली गई।

पहले वालों को मैं लाय ही मदिरा दिया करता था और जब आज फिर मैंने उन्हें मदिरा दी तो उन्हें कोई आश्चर्य या शक नहीं हुआ। परन्तु मेरी मदिरा पीकर वह बेहोश होकर साँ गये। मैंने उनकी कमर से चाबी निकालकर मिडकी मोली और बप्पाह को साथ लेकर उन मुद्रा के अन्दर जाकर द्वार बन्द कर लिया फिर अन्दर जाकर दीप जला दिया।

अब मैंने बप्पाह से कहा :

"बप्पाह, चाही तो तुम मेरे साथ अन्दर चलो अवका लौट आओ; परन्तु मैं तो अपनी मीनिया को वापस लाने अवश्य आइँगा क्योंकि उन्हें बिना मुझे समझ ही भूना-ना मलने मना है।"

और कप्ताह ने घेरे साथ ही रहना उचित समझा । उसने मदिरा का बड़ा पात्र उठाया और वह उसे पीने लग गया ।

सामने एक लम्बी गुफा थी जिसके घने अन्धकार में हमारी मशाल का प्रकाश बहुत ही क्षीण लग रहा था । हम आगे बढ़े । कप्ताह हाथ में मदिरा का बड़ा पात्र लिये चला आ रहा था । भय से उसके दाँत बज रहे थे । गुफा के छोर पर दस और गुफाएँ बनी हुई थी, यह सब ईंटों से बनी थी । मैंने बेबीलोन में सुन रखा था कि भूलभुलैयाँ आमतौर पर वृत्त की पसलियों की शृङ्खला की बनी होती हैं । अतएव मैंने आखिरी रास्ते से आगे बढ़ना तय किया । परन्तु कप्ताह ने तब कहा :

“जल्दी क्या है ? फिर यदि हम खतरे से चौकसी कर लें तो हर्ज भी क्या है ? हो सकता है कि इस भूलभुलैयाँ में हम भारी खो बैठें और उसने ईंट में एक कील ठोककर अपने झोले में से एक छोरे की गेंद निकाली । एक छोर उसका कील से बाँधकर वह गेंद से छोरा खोलता हुआ आगे बढ़ने लगा । उसकी उस चतुर मुक्ति से मैं अत्यन्त प्रभावित हो गया क्योंकि इतनी आसान तरीका मुझे निश्चय ही कभी न भूलती । परन्तु प्रत्यक्ष में मैंने अपनी दृग्गत का खयाल रखते हुए उसकी प्रशंसा नहीं की और केवल कहा, “जल्दी करो ।”

अन्धकार में हम धूम-धूमकर आगे बढ़ते ही गये, बढ़ते ही गये । और हमारे सामने नये-नये रास्ते खुलते गये । कई बार रास्ता सामने से बन्द हो जाता और हमें झोटना पड़ता । आखिर में कप्ताह ने हवा सूँघकर कहा : “मालिक बैलों की गध लग रही है न ?” उसके दाँत अब भी बज रहे थे ।

मुझे भी वह खुरी गध आने लगी थी—घुणित और मिचली लागे वाली और ऐसा लगने लगा जैसे हम किसी बहुत बड़े बैलों के अस्तबल में आ गए थे । पर मैंने कप्ताह को आज्ञा दी कि वह साँस रोककर आगे बढ़े । उसने फिर मदिरा का घूँट लिया और आगे बढ़ा ।

परन्तु थोड़ी ही दूर जाकर मेरा पैर फिसल गया । रोशनी में देखा—वह किसी स्त्री का सड़ता हुआ मुँह था जिसके केश अभी भी लगे हुए थे । और तब मैं समझ गया कि मुझे मेरी भीनिया अब कभी नहीं मिलनी थी ।

मैंने लौटना चाहा परन्तु न जाने क्यों, मैं फिर भी पागलों की तरह बढ़ता ही गया और कप्ताह डोरा खोलता हुआ चलता रहा।

कप्ताह एक स्थान पर हठात् रुक गया। सामने जो कुछ उसने देखा उससे उसके रोम भय से खड़े हो गए। दाँत बजने लगे। हाथ की मशाल हिलने लगी। मैंने देखा कि वह गोबर का एक बहुत बड़ा चबूतरा था जो सूख गया था। वह मनुष्य के बराबर ऊँचा था। कप्ताह बोला, "यह बैल का गोबर नहीं हो सकता। इतना बड़ा बैल तो इस गुफा में आ ही नहीं सकता। मेरा विचार है कि यह कोई जबर्दस्त सर्प है!"

मैंने देखा कि वह बिल्कुल ठीक कह रहा था। और मैं घबराकर लौटना ही चाहता था कि मुझे मीनिया की याद फिर हो आई और पागलों की भाँति मैं फिर आगे बढ़ चला। मैंने अपने पसीजे हुए हाथ में अपना चाकू मजबूती से पकड़ लिया था। जानते हुए भी कि उससे मेरा कोई बचाव नहीं हो सकता था।

बदबू बढ़ती गई। यहाँ तक कि साँस लेना भी कठिन हो गया। और हमारे पैरों के नीचे हड्डियाँ बोलने लगी और गोबरों के ढेर आने लगे। अब दीवारों ईंट की नहीं थी बल्कि गुफा चट्टान में कटी हुई थी। निश्चय ही हम पर्वत के नीचे आ गये थे। रास्ता नीचे जाने लगा। ढलुआ मार्ग पर हम बढ़ने लगे। पूरे रास्ते हड्डियों के ढेरों और दुर्गन्धपूर्ण हवा में हम चलते गए। अन्त में हम एक चट्टान के पास जाकर रुक गए। गुफा खत्म हो गई और सामने ऊँचे पर्वतों से घिरा हुआ एक विस्तृत जलाशय था जहाँ क्षीण प्रकाश हो रहा था। हवा वहाँ की अत्यन्त विपाकृत और दूषित थी। भयानक हरी सी रोशनी में वह स्थान अत्यन्त भीमत्स लग रहा था। दूर वहाँ समुद्र का गर्जन सुनाई दे रहा था जहाँ चट्टानों से भी लहरें टकरा रही थी।

सामने उस जल में पक्तिबद्ध कई चमड़े के थैले पड़े थे जो जल में फूल रहे थे। जब निगाह जमीं तो मैंने देखा कि वह कई थैले नहीं थे बल्कि एक ही विशाल जंतु का शरीर था जिसकी स्नायु जगह-जगह उभर आई थी। वह जंतु जल में मरा पड़ा था। वह इतना बड़ा था कि जिसका अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। उसका मुख एक भीमकाय बैल का सामान

था और शरीर बप्ताह के बड़े अनुसार सर्प का सा था। अब वह सड़कर हल्का हो गया था और जल पर तैर रहा था। मैंने देखा कि फ्रीट का देवता मरा पड़ा था—वह निश्चय ही महीनों से वहाँ पड़ा सड़ रहा था। परन्तु मीनिया तब वहाँ गई ?

और सभी मुझे मीनिया से पहले वहाँ आये हुए युवक और युवतियों का प्छान आया। और वह वहाँ गये ? इसी देवता के पास आने के लिए युवकों को स्त्री निषेध थी और युवतियों को पुरुष ! और देग का छँटा हुआ सोन्दर्य वहाँ आता था। और मेरी आँखों के सम्मुख चित्र घूमने लगे। युवक और युवतियाँ भाग रही हैं और यह भीमकाय जन्तु उनका पीछा कर रहा है—और यह उन्हें गुफा की भूलभुनैयाँ में जब सामने दीवाल आ जाती है अपने विशाल शरीर से टकराकर ला जाता है। हड्डियों को चबाकर चुर देता है—एक महीने में एक नर भक्षण—यही था फ्रीट का देवता पर मेरी मीनिया वहाँ गई ? और निराश होकर मैं 'मीनिया', 'मीनिय' बिल्लाने लगा। गुफा गूँज उठी। बप्ताह ने मेरा हाथ पकड़ा और जल अन्दर एक चट्टान की ओट में पड़े हुए एक शरीर की ओर इग्नित किया ऊपर चट्टान पर लाड़ा खून मूला हुआ था। मैंने देखा वह मीनिया शरीर था त्रिगुण मूल केंद्रों में ला लिया था। मैंने उसके केमो पर बालादी के जाल से उसे पट्टबाना। शरीर जल में हिन रहा था क्योंकि केंद्र उसे बुरेद-बुरेदकर ला रहे थे, उमड़ी पीठ में होला हुआ आरपार तलवार का घाव था।

मैं समझ गया कि माईनोटोरस ने उसे पीछे से गनवार घुसाकर मारा था और जल में डाल दिया था। वह जाने कब से उस देवता घावु को रहस्य ही बनाये रखने के लिए इस मीनिय युवक और युवतियों वहाँ तक लाकर अन्धकार अन्धकार जाल में फँक रहा था—

मेरे मूँह से एक भयानक पीन निकली और मैं बबबल लाकर निरा और यदि समय से बप्ताह ने मुझे न पकड़ लिया होता तो निश्चय ही अपनी मीनिया के पास उसी समय पहुँच गया होता। उसके बाद मुझे मरी रहा।

अब मेरी आँखें खुली तो मैंने देखा मुबट हो चुकी थी और बप्

मुझे एक झाड़ी में लिये बैठा था। दूर छीट नगर दिखाई दे रहा था।

जब मेरी संज्ञा लौटी तो उसने मुझे बतलाया कि जब मैं बेहोश हो गया तो वह मुझे उठाकर बड़ी कठिनाता से बाहर लाया था। मीनिया तो मर ही चुकी थी अतएव उसे लाना तो उसने व्यर्थ समझा और साथ ही मदिरा पात्र को क्योंकि वह नहीं ला सकता था। अतएव उसने उसमें से सम्पूर्ण मदिरा पीकर उस पात्र को वही जल में फेंक दिया था कि दूसरी बार जब मार्दनोटीरस आये तो उसे देखकर चकराये। गुफा के मुहाने पर आकर उसने डोरा फिर से लपेट लिया था और कील भी उखाड़ ली थी कि उनकी तरकीब के बारे में किसी को पता न लग सके। बाहर आकर उसने खिड़की में ताला लगाकर चाबी फिर बेहोश चौकीदार की कमर में खाम दी थी।

उसने मुझे मदिरा पिलाई और फिर हम दोनों नगर की ओर चल दिये। मुझे अब ऐसा लग रहा था जैसे मीनिया को मैं पिछले जन्म में जानता था—उसके वियोग में मैं बिल्कुल नहीं रोया। गाना गाता हुआ पागलों की भाँति मैं कप्ताह का सहारा लिये चलने लगा। मार्ग में मीनिया के मित्र हमें मिले और कप्ताह ने मुझे बाद में बतलाया कि मेरी उस नशे की हालत को देखकर उन्होंने आश्चर्य प्रगट किया क्योंकि छीट में इस तरह सबके बीच नशे में धूमना अत्यन्त घृणित कार्य समझा जाता था। परन्तु उन्होंने मुझे परदेसी समझकर सब बातें जैसे भुसा दों और वह मुँह फेरकर चल दिये। उसके बाद मैं सराय में पहुँचकर नित्य पीने लगा। कप्ताह मुझे खलने लगा था क्योंकि वह मुझे उबर्दस्ती खाना खिलाता था जब कि मैं केवल मदिरा ही पीना चाहता था। मुझे ध्यान आता कि मार्दनोटीरस की जाकर मैं हत्या कर दूँ क्योंकि वह मीनिया के अनिर्दिष्ट अनेक युवक और युवतियों की निर्भय हत्या कर चुका था; परन्तु फिर ध्यान आता कि आखिर जब वह दिग्गज जन्तु जीवित था तब भी तो वह जान-बूझकर ही उन युवक-युवतियों को जाकर उठाकी घति बढ़ाया करता था। एक बात का मुझे सन्तोष था कि अब जब उनका देवता मर चुका था तो छीट वालों का अंत आ गया था क्योंकि यही तो थी उनकी भविष्य-वाणी। जो कुछ भी हो, पर मेरी मीनिया की मृत्यु बहुत ही आगामी से

हों गई थी और उसे अपने प्राणों को लेकर उस मरभयक जन्तु के सामने भागना नहीं पड़ा था। और चींट का जब नाश होगा—मैं सोचता तो म्रियों की यह काम से विह्वल क्लृप्तकारियाँ मृत्यु की भयानक चीखों में परिणित हो जायेंगी और वह सुन्दर इमारतें सब जलकर राख की ढेरियाँ बन जायेंगी—माईनोटीरस का मोने का खिर पीट-पीटकर सीधा कर दिया जायेगा और फिर मृत के अन्य सामानों के साथ बाँट लिया जायेगा।

और मुझे बप्ताह ने बतलाया कि मैं खूब हँसता था—एक दिन बप्ताह मेरे सामने बैठकर जब रोने लगा तो मुझे बड़ा क्रोध आया और मैंने मुँहा से कहा :

“क्यों रोना है तुझे ?”

वह बोला : ‘मानिक ! तुमसे अब मैं भी बच गया हूँ, तुमने अब हृद बन्द दी। मरने वाले तो मर गये और सौटने के नहीं। पर तुम हो कि मरने पर मृते हुए हो। तुमने अपना सभाम सोना-चाँदी लिडबियों में नीचे फेंक दिया है—बाँपने हाथों से तुमने अब अपने मरीजों को देना चाहा तो वह सब मुझे छोड़कर भाग गये वह कहने हुए कि यह तो बुरी तरह नशे में चूर हो रहा है।

आरम्भ में तो मैंने भी लोगों से बड़ी लोखी हाँकी कि देमो मेरा मानिक बने हरिषाई छोटे की चीनि मदिरा पीता है। मैं स्वयं मदिरा को उतम बन्तु समझता था परन्तु अब तो तुम्हारे कारण साम्यन हूँ। तुमने पण-बाप्टा को भी पार कर दिया है। यदि तुम मरना ही चाहते हो तो फिर हम तरह-ती-पीकर मरने में अब्बल तो यह है कि एक मदिरा से भरे हुए होठ में दूध भर मर जाओ। तब तो कुछ नाश भी है।’

मैंने देमा कि वह बिल्कुल ठीक कह रहा था। मेरे हाथ अब देख के हाथ नहीं रहे थे। वह स्वरः बाँपने से मैंने अब मैं उनका मानिक नहीं रहा ना। मुझे एत हासन से जाने किनने दिन और किठनी रात्रे निकल गई थी। मैंने मदिरा पीना बन्द कर दिया। बाप्टाह से मैं पराकाष्ठा को पार कर गया था। मैंने बप्ताह से कहा :

‘तुम्हारी जाने मेरे जान से अस्मियों की मिनभिनास्ट-बैलो बयन है—फिर भी मैंने अब मदिरा से हाथ मीच लेने का निश्चय किया है—

चलो स्मर्ना वापस चलें ।'

और जहाज हमें श्रीट से दूर— दूर अनन्त समुद्र की ओर ले चला ।

९

तीन साल के बाद जब मैं स्मर्ना लौटा तो मैं युवक नहीं रहा था— मेरा पौरुष थक चुका था । इस बीच मैंने कई देशों में ज्ञान प्राप्त किया था अच्छा, बुरा, सब । पूरी समुद्री यात्रा में मुझे समुद्र के हरे जल में से मीनिया की हरी आँखें झाँकती हुई दिखाई देतीं और मैं उसी की याद में सोया-खोया सा रहता था ।

स्मर्ना में मेरा मकान अब भी खड़ा था हालाँकि उसके किवाड़ों व खिड़कियों को चोर तोड़ गए थे । अन्दर से काम-काज का जितना सामान था सब गायब हो चुका था और पड़ोसियों ने मुझे समझे अस्से से गायब देख कर मेरे मकान के सामने की जमीन को काम में लाना शुरू कर दिया था और उसे बेहद गंदा कर दिया था ।

मेरे पड़ोसी लोग मुझे वापस देखकर खुश नहीं हुए बल्कि आँखें फिटा-कर आपस में बोले, "यह मिस्री है और सारी बुराइयाँ मिस्र से ही निकलती हैं," अतएव मैं सीधा एक सराय में गया और सप्ताह को मैंने आशा दी कि वह मकान को रहने लायक ठीक करे । फिर मैं उन व्यापारियों के पास गया जिनके पास मेरा धन जमा था । वैसे अब मैं गरीब होकर लौटा था यहाँ तक कि होरेमहेव का दिया हुआ तमाम सुवर्ण भी अब समाप्त हो गया था । धनी व्यापारी लोगो ने मुझे देखकर बहुत आश्चर्य किया साथ ही वह कुछ उदास भी हो गए । क्योंकि मेरी लंबी गैरहाजिरी से वह मेरे धन को अपना समझने लग गये थे । फिर भी उन्होंने दाढ़ी खोजने हुए मुझे गंभीरतापूर्वक हिसाब समझाया । बहुत से जहाजों में फायदा हुआ तो कुछ सौटकर ही नहीं आये थे । हिसाब के उपरान्त जो उन्होंने मुझे दिया तो मैंने देखा कि मेरी आर्थिक परिस्थिति इतनी जबरदस्त अभी तक अभी

नहीं हुई थी। मेरे पास अब बहुत धन हो गया था। स्मर्त्ता में रहने के लिए मुझे कोई चिन्ता नहीं करनी थी।

परन्तु मुझे वह व्यापारी लोग अलग बुलाकर कहने लगे, “सिन्धूहे ! तुम कुशल बँध हो और हमीलिएहूम तुम्हारा सम्मान करने हैं; परन्तु आज बन यहाँ हवा दूसरी तरह की चल रही है। जो कर कराऊन को देना पड़ता है उसने यहाँ के लोग ऊँच गये हैं और वह अब बिद्रोही हो गये हैं। हाँ ही में मड़को पर लोगों ने भिक्षियों को पत्थरों से मार-मारकर हत्या कर दी है। अतएव हम तुम्हें सावधान किये देने हैं कि भविष्य में भयानक रहने में ही लाभ है वैसे नहीं।”

बच्चाह ने बताया कि जब वह एक सराय में मदिरा पीने गया तो लोगों ने उसे वहाँ मृत मारा।

मैं अपने मकान में आकर अब अपने रोगियों को सुधूपा करने लग गया था। वहाँ भी रोगियों से मेरी आये दिन मिस के करों को लेकर झगड़ें हो ही जाया करती थीं। परन्तु घुणा इत्यादि सब कुछ करते हुए भी लोगों का जाना मेरे यहाँ कम नहीं हुआ क्योंकि बीमारी और दुःख-दर्द मनुष्य मान देखकर आते हैं न कि जन्म भयवा शत्रु।

एक शाम मैं इन्कर के मंदिर में मौट रहा था कि मुझे मार्ग में तीन-चार आदमियों ने घेर लिया और आपस में कहा :

“यह तो मिथी मंगला है। हमारे मंदिर की कुमारियों को तो यह लज्जने बाणः पुरण बिगाड़ देगा। है म ?”

“तुम्हारी इन कुमारियों को शत्रु का जानि की परवाह नहीं हानी—वह तो मोना मौनी है मोना —” मैंने कहा : “मैं तो जोड़ राज उनके पास मंमोष के लिए जाता हूँ और जाता रहूँगा भी—इसमें किसी को क्या आपत्ति हो सकती है ?”

और अब उन लज्जने दिल्बर मुझे घुम्नी पर ले मारा परन्तु अब मेरा मुँह उनसे मे एक में देना तो वह बिज्जाया और एवम तमाम लोग मुँह इन्कर आये और बहने पड़े “ओह यह तो मिथुरे बँद है। हमारे मन्नाइ अडील का पिता !”

मुझे पता भी नहीं मला कि वह बीन के और बनी वह मुझे छोड़कर

भाग गए जब कि वह इतने अधिक थे और मुझे इनकी आसानी से मार सक्ते थे।

और तब मैंने सोचा कि मिया वापस चलना चाहिए। बप्ताह से मैंने अपनी इच्छा प्रकट कर दी।

हालांकि मैं मीरिया के लोगो की भाँति बरखादिक पहुँचने लग गया था फिर भी मुझ पर वहाँ के लोग गोबर इत्यादि फेंककर मारने लग गये थे।

कुछ दिनों बाद मेरे घर के द्वार पर एक घुड़सवार आकर था। तो मुझको तथा मेरे पड़ोसियों को बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि इस जैन और जंगली जानवर पर मियाँ या मीरियन लोग कभी यात्रा करना पगल नहीं करते थे। यह सड़ने में भी दिक्कत पैदा करता था जबकि यथा अल्प-दिव्य जन्तु था। सोचा मैंने आग जाल रहा था त्रिमूर्ति प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा था कि वह बहुत तेजी के साथ आया था। सवार की योग्यता से जाद्वि हो रहा था कि वह पहाड़ों का चढ़ने वाला था जहाँ लोग भेड़ पालकर जीवन यापन करते थे। वह उत्तरकर तेजी से आकर हमारे द्वार बोंगा।

“जीए अपनी कुर्सी मेंगाओ और चलो— मैं ब्रह्मर मे आया हूँ— मुझे वहाँ के राजा अर्जीक ने भेजा है। उसका पुत्र बीमार है और कोई उरुका इलाज नहीं कर पा रहा है। अर्जीक मेर की तरह कहर रहा है और वा उसके पास जाना है उम्मी की हृद्दयों लोभ देगा है। अबपर जीए अपनी दवाओ की बेटी मेकर मेरे साथ चलो। अन्यथा मैं तुम्हारा गिर कभी नहीं भेगा हूँ और उसे मरक पर लान देकर दुखकाया हूँ।”

“मेरे निच मे ला अर्जीक का काम जरी चलेगा” मैंने कहा, “पर क्या कि वह मेरा निच है अल्प चलेगा हूँ। मैं तुम्हारे छपरिपी की मैं तर्जिक भी बिना नहीं करना।”

मेरा मन अपनी निच की छबकी छिदकी में रुक रहा था। और मैं एक घुम्ने निच से बिबरक कुछ महीनता समुद्र करती चली।

ऊपर बप्ताह के दिन एक कुर्सी लाने की वह दिया। और बोला कि

अजीरू के साथ निश्चय ही आनन्द रहेगा क्योंकि यह वही तो था जिसके दाँतों पर मैंने सोना चढ़ाया था और जिसे मैंने किपनीयू नाम की स्त्री दी थी ।

थोड़ी दूर जाकर जब पहाड़ी इलाका आया तो मुझे छोटे जुता रथ तैयार मिला । वह मुझे अनगढ़ पथरो पर लेकर भाग चला । भारी पहियों के नीचे जबर्दस्त गड़गड़ाहट होती और वह रथ इतना ब्यादा हिलता कि मेरा जोड़-जोड़ हिलने लग गया । मैं घबरा गया, पर रथ था कि खण्डहर-खण्डहर भागा चला जा रहा था । मेरी हड्डी-पसली हिलने लगी और मैं चिल्लाने लगा । गाड़ी वाले को गालियाँ देने लगा । हर क्षण मुझे ऐसा लगता अब गिरा-गिरा-गिरकर मेरी गर्दन टूटी—रथ की बगली को मेरे हाथ स्वतः मजबूती से पकड़े हुए थे । सेरे पसीना छूट रहा था और मैं रथवान की पीठ पर धुँसे भी लगाता, गालियाँ देता, चीखता; पर जैसे कोई परवाह ही नहीं थी उसे । रथ उसी रफ्तार से हड़बड़ाहट करता भागा चला जा रहा था । दो-एक स्थानों पर रथ रुका और नये छोड़े बदले गए । जब मैं अम्पूर पहुँचा उस समय सूरज छिपा नहीं था । परन्तु मैं स्वयं रथ से उतरने के बाविल नहीं रह गया था । मुझे उठाकर वह लोग अन्दर ले गये । नगर अब बड़ा बन गया था । उसके चारों ओर ऊँचा फोद नया ही लिखा था । पर हमारे लिए द्वार पहले ही से खुले रहे गए थे । जब बाजार में होकर रथ निकला तो उसके पहियों के नीचे जाने कितनी गालियाँ मटरी इत्यादि टूट गईं जो वहाँ हाट वाली स्त्रियों ने रख रखी थी; रथ को रककर उन्हें हटवाने का समय नहीं था और स्त्रियाँ चिल्ला रही थी ।

मुझे बाँह पकड़कर दो सैनिक घसीटकर अन्दर ले चले और दास मेरी ओदधि की पेट्टी को उठा लाये । महल में घुसने ही हम अजीरू से भिद गए जो तेजी से बाहर भा रहा था । और वह पायल हाथी की भाँति चिपाड़ उठा । उसने अपने सामान बरत फाड़ डाले थे और केतों में राज डाल ली थी । मुँह उसने लाखनों से दाना रगड़ डाला था कि उन पत्थरों में से रक्त चिम्बिमाने लग गया था ।

परन्तु मुझे देखते ही उसका वह उग्र रूप गायन होकर विनीत बन गया और वह मुझसे लिपट गया । वह रोकर कहने लगा, “मेरे पुत्र को अच्छा

कर दो सिन्यूहे ! उसे अच्छा कर दो । और जो कुछ मेरे पास है वह सभी तुम्हारा हो जायेगा—”

“पहले मुझे उसे देख लेने दो” मैंने कहा । वह मुझे तुरन्त एक बड़े कमरे मे ले गया जिसमे अंगीठी जल रही थी हालाँकि वह भीष्म श्रुतु थी । कमरे मे एक पालना रखा था जिसमें एक बच्चा, जो सालभर से कम था, ऊनी वस्त्रों से लिपटा पड़ा बुरी तरह चीख रहा था । उसके माथे पर पसीना वह रहा था । हालाँकि वह इतना छोटा था फिर भी उसके सिर— अपने पिता की भाँति घने काले बाल थे । मैंने देखा कि उसे कोई खास नहीं था । यदि वह मर रहा होना तो उस कमजोरी मे कभी इतना चिल्ला कर रो नहीं सकता था । पालने के पास भूमि पर किफ्तीयू पड़ी रो रही थी । वह अब पहले से मोटी और ज्यादा गोरी भी हो गई थी । कमरे अन्य भागों से दास चिल्ला रहे थे क्योंकि अजीरू ने क्रुद्ध होकर उन्हें पीटा था—इसलिए कि वह उसके पुत्र को ठीक नहीं कर सकने थे ।

“घबराओ मत अजीरू,” मैंने कहा, “तुम्हारा पुत्र अच्छा हो जायेगा परन्तु इस बीच जब मैं अपने औजारों को शुद्ध करूँ तुम यहाँ से तमा लोगों को और इस अंगीठी को बाहर निकलवा दो ।”

“बच्चे को ठंड लग जायेगी” किफ्तीयू बोली पर तभी उसने गि ऊँचा किया और मुझे देखकर वह मुस्कराकर कहने लगी :

“अच्छा तुम हो सिन्यूहे !” और उसने अपने केश जो खुले पड़े थे उठाकर उन्हें जूड़े में बाँध लिया ।

अजीरू दीन स्वर में बोला :

‘बच्चे ने तीन दिन से न कुछ खाया है न पिया है—यह तो मिर्क रो रोकर जान दे रहा है । मेरा दिल इसकी चिल्लाहट सुनकर पानी-पान हूआ जाता है ।”

जब कमरा दास-दासियों से खाली हो गया और अंगीठी भी हटा दी गई तो मैंने कमरे की बिड़कियाँ खोल दी जिससे संध्या की मन्द ब्यार अन्दर आने लगी । बच्चे का स्वेद मैंने पोछ दिया क्योंकि अब तक मैं भी क्रुद्ध कर चुका था । फिर मैंने उसके (बच्चे के) ऊनी वस्त्र खोलकर उसे सूती चादर से उड़ा दिया । एकदम बच्चा चुप हो गया और अपने मोठे-

मोटे पैरो से लात चलाने लगा मैंने उसका पेट दबाकर देखा फिर उसके सारे शरीर को छूआ। हठात् मुझे एक बात सूझी और मैंने उसके मुँह में उँगली डाल दी। मेरा अनुमान बिल्कुल ठीक निकला, बच्चे का पहला दाँत उसके जबड़े में मोती की भाँति निकल रहा था।

और तब मैंने दनाढीटी क्रोध मुँह पर लाकर कहा, “अड़ीरु! क्या इतनी सी बात के लिए तुमने स्पर्शा के सबसे बड़े बंध को कुतबाया है कि जिसके हाथ पैर तुम्हारे उस रज में डीले हो गए? तुम्हारे बच्चे को बीबीनारी है ही नहीं—वह तो केवल अपने पिता की भाँति उतावला हो रहा है। हो सकता है कि इसे दो एक दिन बुखार भी हो गया हो और इसकी भी बीबी हो पर अब इसे बुखार भी नहीं है। अगर इसने बीबी है तो इसका अर्थ है कि यह उस गाँड़े दूध को हضم नहीं कर सकता था जो इसे जबड़ेस्त्री पिलाया गया था। अब बिपतीयू का दूध इसे न दिया जाय अन्यथा यह उसके स्तन को काट डालेगा—देखो इसका पहला दाँत निकल रहा है और मैंने बच्चे का मुँह खोलकर यह दाँत दिखा दिया। अड़ीरु खुशी नाचने लग गया और किफ्तीयू ने कहा कि ऐसा सुन्दर दाँत उसने आज तक कहीं नहीं देखा था।

अब किफ्तीयू उसे फिर ऊनी कपड़े पहनाने को आगे बढ़ी तो मैंने उसे रोक दिया।

और अड़ीरु फिर खुशी से नाचता फिर। उसे अपनी हैसियत और मान का भी खयाल न रहा। वह कहता रहा :

“कितनी रातें मैंने जागकर इसके पालने के सहारे काटी है? क्रोध आने कितने लोगो को मैंने मारपीट कर घायल कर दिया है—लेकिन तुम्हें यह तो समझ ही लेना चाहिए कि यह मेरा बेटा है; मेरा पहला बच्चा, मेरा सुवराज, मेरी आँखों का तारा, मेरा रत्न, मेरा छोटा शेर है जो एक अम्भूरु का राजमुकुट धारण करके अनेकों पर राज्य करेगा। क्योंकि देग को तो मैं इतना बड़ा बना जाऊँगा कि वास्तव में इसका उत्तराधिकारी आनन्द भोगेगा—देखो इसके बाल कैसे शेर के से है—मैं दावे साय कह सकता हूँ कि तुमने अपनी सारी यात्राओं में भी ऐसा सुन्दर बच्चा और कहीं नहीं देखा होगा।”

मैं उसकी बातों से ऊब उठा था। मेरा जोड़-जोड़ दुन रहा था तत्पश्चात् वह मुझे बाह पकड़कर प्रेम से भोजन कराने ले गया। अन्तर्भाति के साथ पदार्थ चाँदी के पात्रों में हमें परोसे गए और सोने के पात्रों में से अच्छी मदिरा दी गई। सा पीकर मैं तरोताजा हो गया।

उसका अथिति बनकर मैं कुछ दिन वहाँ रहा। उसने मुझे मन मार कर सोना चाँदी दिया—मैं प्रत्यक्ष देख रहा था अब वह काफी बमीर हो गया था। वह कैसे अमीर बना जब मैंने उससे पूछा तो केवल हँस दिया। उसने मुझे कारण नहीं बतलाया। उसने दाढ़ी सहलाते हुए हँस कर कहा, “जो स्त्री तुमने मुझे दी थी वही अपने साथ भाग्य लाई थी,” किफ़ीयू ने भी मेरी बड़ी इज्जत और सेवा की। जब वह चतती, उसके पीन निर्व्व और स्तन हिलते तब उसके आभूषण बजने लगते। अजीरू उसके पीछे इ अधिक पागल था कि उसने अपनी और स्त्रियों के पास जाना करीब-क वन्द ही कर दिया था। वह कभी एक आध बार वह उनसे मिलकर वा निभा देता था—क्योंकि वह भी आसपास के छोटे कबीलों के सरदारों के बेटियाँ थी जिनसे उसने अपनी शक्ति बढ़ाने के विचार से विवाह किये थे। अजीरू ने अपनी बढ़ती हुई शक्ति के बारे में झीग मारी। उसी बातों में जाहिर किया कि मेरा पता उसे उसके कुछ आदमियों ने दिया था जो एक रात मुझे मारने लगे थे, पर फिर मुझे पहचान कर भाग गए थे उस उस बात के लिए दुःख था। उसने कहा।

“यह सच है कि कई मिथियों के सिर टूट जायेंगे—क्योंकि सबसे बड़ा काम यह है कि बिबलोस, सिडोन और गाञा के लोग यह जान लें कि मिथी भी मारे में मर जाता है, कि उसके शरीर से भी अन्य किसी की भाँति ही रक्त बह निकलता है। लोग उनसे धर्म ही इतने डरे हुए हैं और उन्हें अजेय समझते हैं।”

“परन्तु अजीरू ! “मैंने पूछा, “तुम्हें मिसियों से इनकी तीव्र घृणा क्यों है ?”

उसने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा और मुस्कराया, फिर बोला :

“मुझे घृणा क्यों होने लगी ? क्या मैं तुम्हें नहीं चाहता ? तुम भी तो और तुमसे तो मुझे घृणा नहीं है। फिर मैं तो क़राऊन के स्वर्ण-

यह मे पता है। वही मैंने सीखा है कि विद्वानों की दृष्टि में सभी लोग बराबर होते हैं। कोई देव एव-दूसरे से न बुरा होता है न अच्छा। सभी जगह बहादुर, विद्वान, दूरगोक, कूर और बदमाश लोग रहते हैं। अनएव राजा लोग स्वयं तो किसी से घृणा नहीं करते परन्तु घृणा राजा का सबसे बड़ा अस्त्र बन सकती है। जब तक यह लोगों के दिलों में नहीं बैठाई जाती लोग हमिषार बलाने में असमर्थ रहते हैं। मैं वही कर रहा हूँ जो मुझे अब करना चाहिए क्योंकि सीरिया और मिश्र के बीच आग लगाना ही मेरे लिए लाभप्रद है। मैं इस आग की तब तक फूँकूँगा जब तक कि वह सपट बनकर मिस्त्री घाक का सीरिया में अन्त न कर देगी। सभी नगरों में यह बात प्रत्यक्ष हो जाएगी कि मिस्त्री दूरगोक, कूर, सुरे, लालची और एहसान-रामोश होने हैं और घृणा के योग्य हैं।”

‘लेकिन यह बात सच तो नहीं है’ मैंने टोका। अजीरु ने हाथ बढ़ाकर कचे झटके, फिर कहा :

“सिग्यूदे ! सच क्या है ? जब उनका रक्त इस सत्य को काफी सोख लेगा तो वह बसम खाकर बहने लगेंगे कि असली सत्य यही है और यदि कोई उस समय उनका विरोध करेगा तो वह मारा जाएगा। सत्य तो यह होगा कि यही के लोग जान जाएँ, बल्कि उनके दिलों में यह बात घर कर जाय कि वह स्वयं मिस्त्रियों से अधिक योग्य, अधिक बौर और अधिक ताकतवर हैं। बस फिर यही सत्य उन्हें हिंसा की ओर चलावेगा। यह भी तो सत्य ही है कि जब मिस्त्री सीरिया में आये थे तो अपने साथ रक्तपात और आग लाये थे, फिर क्यों न उसी सत्यसे उन्हें निकाला जाय ? सीरिया सभी स्वतन्त्र हो सकेगा।”

“स्वतन्त्र ?” मैंने डरते हुए पूछा, ‘कैसी स्वतन्त्रता ?’ उसने फिर अपने हाथ उठा दिये और वह मुस्करा दिया फिर बोला :

“स्वतन्त्रता शब्द के भी कई अर्थ होते हैं—कोई उसका कुछ अर्थ लगाता है तो कोई कुछ और परन्तु जब तक वह मित नहीं जाती तब तक तो उसकी कुछ चिन्ता है ही नहीं ? बहुत से स्वतन्त्र होने में लगे रहते हैं परन्तु जब स्वतन्त्रता मित जाती है तो वह उसे केवल अपने लिए रख लेते हैं—मेरा विचार है कि एक दिन अम्बूरु की भूमि स्वतन्त्रता का

कहलायेगी—जो राष्ट्र उन सब बातों पर विश्वास कर लेता है जो भी उससे कही जाती हैं—उस मवेशियों के झुंड की भांति होता है जिसे डंढा सेकर एक द्वार से हँका जा सकता है या शायद भेड़ के उस बच्चे के समान है जो अगली घंटी को सुनकर पीछे-पीछे चलता जाता है और समझता है कि वह ही उस झुंड का सरदार है।”

“तुम्हारे माथे में सचमुच भेड़ का ही भेजा भरा है,” मैंने कहा, “क्योंकि तुम फराऊन ! उस महान् फराऊन की शक्ति से टक्कर लेना चाहते हो ! वह तुम्हें, तुम्हारे नगर को धरती में मिला देगा और तुम्हें व तुम्हारे लड़के को अपने जंगी जहाजों की कमानों से उल्टा लटका देगा।”

सुनकर वह केवल मुस्करा दिया, फिर बोला :

“तुम्हारे फराऊन से मुझे कोई खतरा नहीं है क्योंकि उसके भेजे हुए ‘जीवन के चिह्न’ नामक पदक को मैंने सहर्ष स्वीकार करते हुए उसके देवता का मंदिर अपने यहाँ बनवा दिया है। वह मुझपर इतना अधिक विश्वास करता है कि सीरिया में किसी और पर नहीं करता—बल्कि अपने लोगों पर भी विश्वास नहीं करता क्योंकि वह अम्मन के माननेवाले हैं। चलो मैं तुम्हें कुछ दिखा दूँ—”

और उसने मुझे महल से बाहर लाकर दीवाल के सहारे उल्टी लटकी हुई एक लाश दिखाई जिस पर मक्खियाँ बुरी तरह भिनभिना रही थी। वह बोला : “देखो उसे ! वह मिस्री है—ध्यान से देखो कि उसका खतना हो रहा है—यह मिछ का कर-एकत्रित करनेवाला था। इतना उद्दण्ड और साहसी हो गया था वह कि मेरे पास भाँकर जवाब-सत्य बरने लगा कि क्यों मैंने दो साल से मिछ की नज़रें रोक रखी थी। मेरे सैनिकों ने उसके साथ खूब उपहाम किया और फिर उसे उसकी हिम्मत की सजा दे दी। यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि मिस्री लोग अपनी मर्जी से यहाँ आना पसन्द नहीं करते क्योंकि इसके बाद फिर कोई और नहीं आया और यहाँ के ध्यापारी लोग जो हैं, वह मिस्रियों की धजाय मुझे बर देना बरादा पसन्द करते हैं। मँगिबो मेरे कब्जे में आ चुका है—वहाँ के मिस्री सैनिक कितने से बाहर निकलकर नगर में नहीं घूम सकते क्योंकि उन्हें अपने प्राणों का भय है। पत्थरों से मार-मारकर उनका भुत्ता बना दिया

जायेगा ।”

उसके पास देन-देनातरो से आई हुई मिट्टी की तख्तियाँ थी जो उसके सिलसने-पड़ने के कक्ष में सजी रखी थीं । वह उसने मुझे नहीं दिखाई । उसके पास हिलैती राजदूत भी आते-जाते थे । मैंने उसे उनके बारे में जो मैंने वहाँ देखा था सब बतलाया परन्तु उसनी बातें वह पङ्खले से ही जानता था । साफ़ था कि वह मिस्र के विरुद्ध उसकी सहायता से रहा था । मैंने कहा :

“शेर और गीदड़ मिलकर भले ही एक शिकार मार लें, परन्तु क्या तुमने कभी सुना है कि बड़िया माल गीदड़ को मिल गया हो ?”

वह केवल हँस दिया फिर बोला : “तुम्हारी तरह ज्ञान प्राप्त करने की मेरी प्यास बेहद है परन्तु राजकाज से मुझे इतना अवकाश नहीं मिल पाता । तुम्हारा ज्ञान अपार है क्योंकि तुम पक्षी की भाँति स्वतन्त्र हो—परन्तु यदि हिलैती सेना के उच्चाधिकारी मेरे लोगों को—मेरे सरदारों को, युद्ध की कला सिखाएँ तो हज़े ही क्या है ? उनके पास नये-नये हथियार हैं और उनके सैनिकों को अनुभव भी अधिक है । फिर वह तो क़राऊन की ही सेवा है, क्योंकि यदि युद्ध छिड़ गया तो सीरिया ही तो हमेशा से मिस्र की दान रहा है ? यह सब हम तभी तय करेंगे ।”

युद्ध का नाम आते ही मुझे हौरेमहेब की याद हो आई । मैंने कहा : “तुम्हारा आतिथ्य मैंने भी भरकर भोग लिया है अब मुझे आज्ञा दो । परन्तु मैं तुम्हारे रथ में वापस नहीं जाना चाहता जिसमें हर घड़ी मुझे मृत्यु का भय बना रहता है । मेरे लिए एक कुर्सी मंगा दो । स्मनों मेरे लिए अब खंगल हो गया है जहाँ अब मैं रहना नहीं चाहता । अब नील का जल पीने को मेरा मन अबूमाने लगा है । मैं भीघ हीमिस्र की ओर जाने वाले जहाज़ में जाता जाऊँगा । शायद अब तुमसे कभी मिलना न हो सके । कौन जाने कब क्या होनेवाला है ! मैंने दुनिया की काज़ी बुछड़ियाँ देल भी हैं और कुछ बुछड़ तुमसे भी सीसी ही है ।”

वह हँस दिया । फिर उसने उत्तर दिया :

“कोई नहीं जानता कब क्या होनेवाला है ? सच है, इसकले पत्थरों पर कोई नहीं बसती—तुम्हारी आँखों में जो चमकता है उससे मैं कह सकता हूँ कि तुम किसी स्थान पर अधिक दिन नहीं टहर सकोगे ।”

उसके सैनिक मुझे स्मर्ना के नगरद्वार तक छोड़ गए। द्वार में घुमते ही एक अवाधील मेरे मुँह के सामने से उड़ गई। मेरा हृदय धक्-धक् करने लग गया। अजीरु का दिया हुआ सोना और चाँदी लेकर जब मैं घर घुसा तो कप्ताह खुशी से खड़ा हो गया और उसने अपनी आदन के अनुसार धक्कत शुरू कर दी। मैंने उससे कहा :

“सब सामान और यह घर बेच डालो। हम लोग शीघ्र भिक्षा जाने-वाले हैं।”

जब बन्दरगाह में मैं जहाज पर चढ़ गया तो मेरे मन में धीबीर पहुँच जाने की ऐसी हूक उठी कि मैं नेत्र मूँदे वहाँ की कल्पना करने लगा। पतझड़ का मौसम था और सीरिया में उत्सव शुरू हो गए थे। वहाँ के पुजारी लोग लकड़ी के चाबुको से अपने मुँह खरोंचने लग गए थे—और घावों से रक्त बहने लग जाता था—परन्तु यह सब और बाल की पूजा मैं काफ़ी देख चुका था। मुझे उन सबको देखने की अब कोई इच्छा नहीं रह गई थी।

मेरे हृदय में उस काली भूमि में पहुँच जाने की हूक उठ रही थी। जहाँ की मदिरा और नील का जल पीने को मानो मेरा कंठ सूखने लगा था।

और हमारा जहाज हिला और चल पड़ा। लगर उठ गया था और नीचे मल्लाह अपने मजबूत हाथों से डाँड चला रहे थे। सीरिया पीछे छूटने लगा—दूर से वह हरा-भरा देश बहुत ही अच्छा दिखाई दे रहा था—लाल भूमि पर पड़ी हुई घास ऐसी लगती थी मानो किसी ने वहाँ रक्त-वर्ण मदिरा फैला दी थी।

मैं घर आ रहा था हालाँकि मेरा कोई घर नहीं था—और मैं संसार का अकेला था।

जा रहा था—सामने अनंत समुद्र था। और मैं अपने में सो गया था।

फिर हमारे बगल से सिनाई का रेगिस्तान निकलने लगा—

उधर से लूएँ चलकर इधर आने लगी ।

फिर पीला समुद्र आया जिसके आगे हरी भूमि दूर-दूर तक फैली हुई थी ।

मल्लाहों ने एक पात्र नीचे लटकाकर वह जल भरा— फिर वह सबने पिया । वह खारा नहीं था—वह नील का जल था—

कप्ताह ने कहा : "पानी तो सभी जगह एक-सा होता है—चाहे नील का ही क्यों न हो । मैं तो तब घर आया समझूँगा जब पीबीज की मदिरा को किसी अच्छी सराय में बँटकर पीऊँगा ।"

उसकी बातें मुझे बहुत बुरी लगी और मैंने मुँह बिगाड़कर कहा : "एक बार का गुलाम—हमेशा ही गुलाम रहा, चाहे वह उत्तम ऊनी वस्त्र ही क्यों न पहने हुए हो—ठहर जाओ कप्ताह मुझे एक सचकदार बेंत ले लेने दो—ऐसी जो नील के किनारे मिल सकती है—और तब तुम शीघ्र समझ जाओगे कि तुम घर वापस आ गए हो ।"

परन्तु शामद उसने बुरा नहीं माना । उसके नेत्रों में अध्रु भर आये । उसकी टोड़ी काँपी और वह मेरे सामने झुक गया और उसने अपने घुटनों की सीध में अपने हाथ फैला दिए फिर बोला :

"निश्चय ही मालिक ! आप मे सही मौके पर सही बात कहने की अद्भुत क्षमता है क्योंकि मैं बेंत की उस मीठी मार को, जब वह पीठ पर या पैरों के पीछे की तरफ पड़कर खाल उखेड़ देती है, भूल ही गया था । आह मेरे मालिक सिन्धूहे ! यह एक ऐसा अनुभव है कि मैं चाहता हूँ कि तुम भी इस देखो और सीखो । मदिरा से, दूध से और बेंत के जंगलों में जल में तैरती हुई बत्तखों से भी सज्जदार और सम्पूर्ण मिस्र की भाषाओं से मधुर स्वर इस बेंत से से निबसता है । मैं अब समझ गया हूँ कि मैं घर वापस आ गया हूँ—ओह ! देवता के सद्गुण ब्रह्म ! तू ही सबको अपने-अपने स्थान पर रखती है—मेरे समान गलत में और बोरई नहीं है ।"

और वह पीढ़ी देर तक रोता रहा फिर अपने उस लाबीज पर लेट मजने चला गया । लेकिन मैंने देखा कि अब वह बीमारी तैल बाँध में नहीं लाता था । मिस्र की भूमि पास आ चुकी थी और उसे एक बार फिर ध्यान हो आया कि वह गुलाम था ।

विनाश मंदिर, उसके अमध्य स्तम्भ, पवित्र झील और दीर्घ प्रासाद दिखाई देने लगे। पश्चिम की ओर मृतकों का नगर दूर तक फैलकर पहाड़ियों की ओर घूम गया था। कराऊन का मृत्यु-मंदिर सफेद धमक रहा था और महान् साम्राज्ञी के मंदिर के स्तम्भों की पंक्तियों के मध्य अब भी अमध्य फूल खिले दीख रहे थे। पहाड़ियों की दूसरी तरफ निपेछ घाटी थी जहाँ सौपो और बिच्छुओं के बीच कराऊन की बन्न के पास रेत के अन्दर मेरे माता-पिता के शरीर अनंत निद्रा में सोये हुए थे। सुदूर दक्खिन की तरफ नील-अन्न के बिनारे पुष्पों से लदे उद्यानों के बीच कराऊन का हवादार, सुवर्णगृह खड़ा था। और मुझे हारेमहेव की याद हो आई—कहीं वही तो नहीं रहने लगा था वह कहीं ?

भाव जाकर अब बिनारे समीप तो मैं उस स्थान पर उतरा जहाँ सामने ही मेरा पिता सैगमट रहा करता था और मेरी आँखों के सामने मेरा वचपन घूमने लगा—यहाँ मैं खेला था—यहाँ मैं बड़ा था—यहीं मेरे अन्धे पिता ने मुझे पढ़ाया-लिखाया था और मेरी माता बीपा मुझे यही गर्म-गर्म रोटियाँ बिताने प्यार से खिलाया करती थी।

मैंने कप्ताह से कहा : "कप्ताह, मुझे यही इस गरीब मस्ती में, मेरे पिता के भवान के स्थान के पास (क्योंकि भवान तो गिरा दिया गया था) ही एक घर खरीद दो—मैं यहीं रहूँगा, हाँ मेरा सामान इत्यादि आत्र ही ठीक कर दो जिससे सबूह से ही मैं अपना काम चालू कर सकूँ।"

सुनकर उसका मुँह लम्बा हो गया। परन्तु उसने एक क्षण केवल मुझे घूरकर देखा फिर फिर लटकाये चला गया। जायद वह सोच रहा था कि मैं बीबीज में जाकर किसी उत्तम स्थान में जहाँ धनी रहते थे, ठहरेँगा, जहाँ अनेक दास-दासियाँ सेवा करने के लिए हाथ बाँधे लड़े रहेंगे।

उसी शाम को मैं एक छोटे में भवान में चला गया। इसी को कप्ताह ने मेरे लिए खरीदा था। पहले यह किसी लीवा गलानेवाले का घर था। जब शाम हुई तो गरीबों के घरों से रोटी सिबने की और मछलियों के बच आने लगी। दूर रमनालाओं में तेज रोशनी हो रही थी और बीबीज—बीबीज उगमन उत्साहों से अतलोलित हो रहा था।

दूगरी मुवह मैंने कप्ताह मे कहा :

“मेरे घर के द्वार पर एक बटुन ही मामूली तख्ती टांग दो त्रिग पर केवल मेरा नाम लिखा हो—और लोगों मे कह दो कि मैं हर किसी का इलाज करता हू—चाहे वह गरीब हों चाहे अमीर और मूल्य जो भी वह देना चाहे—जो उनके बस का हो—सो ही लेकर सतुष्ट हो जाना हूँ।—हाँ व्यर्थ ही मेरी प्रशंसा उनके सामने मन करने लगना।”

“गरीबों का इलाज ?” कप्ताह ने आश्चर्य से पूछा : “बैठे है तो ठीक ? कहीं बीमार तो नहीं है ? गदगद पानी तो नहीं पी लिया है या बिच्छू ने तो नहीं काट लिया तुम्हें ?”

“यदि तुम मेरे साथ रहना चाहने हो तो जैसा मैं कहना हूँ बना करो अन्यथा तुम स्वतन्त्र हो चाहे जहाँ जाओ और रहो। मैंने तुम्हें तुम्हारे अब तक के अच्छे कार्य के लिए तुम्हें मुक्त कर दिया है। मेरा विचार है, तुमने वैसे अब तक मेरे पास से काफी माल चुरा लिया होगा जिससे तुम अपना घर बना सकोगे चाहे तो विवाह भी कर सकोगे।”

“विवाह ? स्त्री ?” कप्ताह ने माथे में वल डालकर आश्चर्य से पूछा : “निश्चय ही मालिक तुम बीमार हो तभी ऐसी बेसिर-पैर की बातें करने हो। मैं भला स्त्री क्यों लाने लगा जो मेरी जान को बवाल बन जाय ?—छोडो इस दान को—चलो पास ही मैं ‘मगर की पूँछ’ नामक मदिरालय है—वहाँ अनेक मदिराओं को मिलाकर उत्तम आसव बनाया जाता है जिसे पीने ही तबीयत क्षटके के साथ फडक उठती है—चलो वहाँ तुम्हें मदिरा पिला लाऊँ।”

“कप्ताह, मैंने उसी तरह कहा : “हर कोई जब दुनिया में आता है तो नंगा ही आता है और रोग के लिए अमीर, गरीब, मिश्री और सीरियन सब एक होने हैं।”

“वह तो ठीक है—परन्तु उनके उपहारों में तो अन्तर होता है ! वह बोला, “और फिर ऐसे विचार तो दासत्व भोगने हुए नवयुवकों के होते हैं—मेरे भी होने थे जब तक कि बेंत ने उन्हें न भुला दिया। आप तो दान नहीं हैं फिर इतना उदासी का कारण क्या है ?”

“और सुनो।” मैंने कहा, “यदि मुझे कोई घनाय बालक मिल गया तो

मेरा विचार उसे गोद ले लेने का है।”

“घोर वह क्यों ;” उसने फिर प्रश्न किया, “मन्दिर में अनायालय बना ही हुआ है जहाँ ऐसे बच्चे पाले जाते हैं। वह बड़े होकर या तो नीचे दर्जे के पुजारी बना दिए जाते हैं या फिर फराऊन के सुवर्ण-ग्रह में स्त्रियों के बीच हिजड़े बनाकर भेज दिये जाते हैं।—हाँ एक बात मैं कहना चाहता था और वह यह कि एक दासी मोल ले ली जाय तो अच्छा रहे क्योंकि मेरे बूढ़े हाथ-पैरों से अब अच्छी तरह से काम नहीं होता—वैसे ही मेरे पास काफी काम हो गया है।”

“वह तो मैंने अब तक सोचता ही नहीं था।” मैंने उत्तर दिया, “तुम ठीक कहते हो—पर फिर भी मैं दासी मोल लेना नहीं चाहता—तुम चाहो तो किसी स्त्री को लीकर रख सकते हो।”

और फिर मैं बाहर चल दिया।

मैंने सोचा अपने पुराने मित्रों से मिल आऊँ। ‘सीरियन जार’ नामक मन्दिरालय में मैंने टोपीमीत्र को दूँडा। पर वहाँ अब कोई नया किरायेदार रहना था। फिर मैं सेना के शिविर में गया कि हीरेमहेव से मिल आऊँ। परन्तु वह स्थान भी खाली था। न अखाड़े में कोई पहलवान लड़ रहे थे न भाने वाले निशाना साध रहे थे और न बड़े-बड़े पात्रों में खाना उबल रहा था। सब कुछ वीरान था।

‘शारदानाथ’ का एक नायक वहाँ अकेला बैठा था। उसने मुझे, घूर-कर देखा और रेत में पैर चलाने लगा। उसका मुख बिना तेल लगा मूखा और हड्डी निकला हुआ था और जब मैंने उससे हीरेमहेव के बारे में पूछा तो उसने मुझे झुककर अभिवादन किया। उसने कहा कि हीरेमहेव अब भी मिस्र का सेनापति था परन्तु कुछ समय से कुग देश गया हुआ था जहाँ वह सैनिकों को छुट्टी देने गया था। किसी को मालूम नहीं था कि वह कब लौटने वाला था। मैंने उसे एक चाँदी का शिक्का दिया जिसे पाकर वह अपने शारदानाथ की याद भूल गया और किसी अपरिचित देवता की शपथ लेकर वह मुस्करा दिया। जब मैं जाने लगा तो वह मुझे हाथ उठा-कर रोते हुए रहने लगा :

“हीरेमहेव अबदरत आदमी है जो सैनिकों का दुःख समझता है—वह

निर्भीक है।—वह तोर है—पर फराऊन बिना सींग की बकरी है। गिबिर मूने पड़े हैं—न तनया है न शाना। मेरे गायी भोज मांगते फिरते हैं—क्या होने वाला है कौन जाने? अम्मन तुम्हारा भला करे, तुम बड़े अच्छे आदमी हो जो तुमने मुझे चाँदी का सिक्का दिया—मैंने महीनो से मदिरा नहीं छुई है—भर्ती करने वाले मिथ्री पदाधिकारिकायियों ने कहा था कि डेर मारी चाँदी, बहुत-सी औरतें और भरभर कर पात्र मदिरा मिलेगी—और अब...? न चाँदी है न औरत न मदिरा!"

उमने जमीन पर झुक दिया। और धूक को घँर से रेत में रगड़ दिया। मैं चल दिया। मुझे उसके लिए दुःख हुआ। जिन सैनिकों को पहले फराऊन के उमाने में भर्ती किया गया था वह सब उसके पुत्र द्वारा निकाल दिए गए थे।

वहाँ से मैं जीवन-गृह में गया कि बूढ़ प्लाहीर के बारे में जाँच करूँ। पर वहाँ जाकर पता चला कि वह तो मृतको के नगर में पहुँच चुका था।

अब मैं सीधा मन्दिर में जा पहुँचा जहाँ अगणित स्तम्भ सड़े हुए थे। अम्मन का यह विशाल प्राण जहाँ हमेशा भीड़ लगी रहती थी आज खाली-खाली दिखाई दे रहा था। तेल लगे, उस्तरा फिरे पुजारी लोग आपस में धीरे-धीरे बातें कर रहे थे।

जब मैं मन्दिर से बाहर आया और फराऊनों की दैत्याकार मूर्तियों के पास से होकर निकला तो मुझे बगल में ही एक और नया मन्दिर दिखाई दिया। यह भी काफी बड़ा था। इसके चारों तरफ कोई दीवाल नहीं सिंची हुई थी। एक खुले मैदान में एक बाल स्तंभ (आल्टर) कुछ फूल, अनाज के दाने और फल इत्यादि पड़े थे। एक दीवाल पर एटोन के सामने फराऊन बलि चढ़ाता दिखाया गया था। एटोन में से किरणें निकल रही थी जिनके झगले छोर पर एक-एक हाथ फराऊन को अभय देता दिखाया गया था। इन हाथों में हर एक में 'जीवन चक्र' बना हुआ था। वहाँ जितने पुजारी थे सभी नौजवान थे, और उनके सिरों पर केस थे, वह लोग एटोन की स्तुति जब गाते जो उनके मुखां पर असीम आनंद छा जाता—उसी भाँति जैसे मैंने उस पुजारी के मुख पर देखा था जिसने जेरूसलम में होरेमहेव और मेरे सामने स्तुति की थी। परन्तु इन सभी से अधिक आश्चर्य वहाँ आतीस

दीर्घ प्रस्तर के स्तंभ थे। इनमें हर एक में वर्तमान करारऊन की हूबहू मूर्ति गढ़ी हुई थी। वह मूर्तियाँ ऐसी बनी थी कि एक साथ सभी दर्शकों को देखती थी। करारऊन सीने पर हाथ बाँधे खड़ा था—हाथों में उसके शासन का दण्ड तथा काँटा था।

करारऊन की हूबहू मूर्तियाँ देखकर जिनमें वह जैसा था बिल्कुल वैसा ही दिखाया गया था। मुझे भव्यन्त आश्चर्य हुआ क्योंकि ऐसी कला तो मेरे मित्र टोपीमीज की ही थी। अम्मन के मन्दिर में तो करारऊनों की मूर्तियाँ देव तुल्य सुन्दर बनाई जाती थी। और यहाँ जैसा बेडौल वर्तमान करारऊन था वैसा ही दिखाया गया था। वही पतली-पतली टाँगें, मोटी जाँघें, हटी हुई गर्दन और उभरी हुई गाल की हड्डियाँ प्रत्यक्ष लग रही थी। और सभी मूर्तियों में वही व्यंग्यपूर्ण मुस्कान खेल रही थी जो दिन में स्वप्न देखती-सी लगती थी। मेरा भन्तर उन्हें देखकर काँप उठा क्योंकि यह पहली बार था कि चौथा ऐमनहोटप अपने वास्तविक रूप में गढ़ा गया था। निश्चय ही उनका बनाने वाला चित्प्री मित्र भर में अपूर्व साहसी व्यक्ति होगा।

मन्दिर में ज्यादा भीड़ नहीं थी। कुछ राजमी बस्व और जवाहरात जड़े के पहिने हुए लोग वहाँ थे जो करारऊन के पराने के मालूम पड़ते थे। मामूली आदमी पुजारियों के भजनो को सुन रहे थे परन्तु लग रहा था जैसे उनकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। क्योंकि यह भजन अम्मन के भक्तों से बिल्कुल भिन्न थे—जिन्हें लोग दो हजार सालों से—जब पिरै-मिड बनी थी—सुनते आये थे। हालाँकि उनका धर्म भी वह नहीं जानते थे फिर भी वह उन्हें बहस्य थे।

और जब प्रार्थना हो गई तो एक बूढ़े ओ बस्त्रों से गाँव वाला समझा या थोड़ा से घागे घाया और उसने एक पुजारी से एक ताबीज माँगा। लोग मन्दिरों में ताबीज, रसक पशु या आदू किया हुआ बागड का टुकड़ा मामूली दामों में खेने आया करते थे—यह प्रथा प्रचलित थी। पुजारियों ने उस बूढ़े से कहा कि उस मन्दिर में इस प्रकार की वस्तुएँ नहीं मिलती थी क्योंकि एटोन को आदू, भेंट, बलि इत्यादि की कभी आवश्यकता नहीं होती थी। वह तो उसके पास ओ उसपर भक्ति रखते थे, जैसे ही आ

जाता था। मुन कर बूढ़ नाराज हो गया और बड़बड़ाकर उनकी मूर्खता को कोसता हुआ बाहर चला गया और मैंने देखा कि वह सीधा अम्मन के मन्दिर की तरफ चला गया।

फिर एक मच्छी बेचने वाली बुढ़िया आई और पुजारियों की ओर श्रद्धा से भुक्ती हुई कहने लगी :

“क्या कोई एटोन को मैडे या बेल भेंट में नहीं चढ़ाता ? तुम जवान आदमी कितने दुबल हो रहे हो ? यदि तुम्हादा एटोन अम्मन से भी ज्यादा शक्तिशाली है, जो मुझे तो नहीं लगता, तो उनके पुजारियों को तो खूब मोटा-ताजा और चुपड़ा होना चाहिए।”

मुनकर पुजारी लोग हँसे और आपस में शैतान लड़कों की तरह फुस-फुसाने लगे परन्तु उनमें सबसे बड़े ने गम्भीर बनकर कहा :

“एटोन रक्त की बलि नहीं मांगता।—एटोन के मन्दिर में अम्मन का नाम लेना ठीक नहीं है क्योंकि वह झूठा देवता है—उसका साम्राज्य शीघ्र छिन्न-भिन्न हो जाएगा—उसका मन्दिर खंडहर बन जाएगा—”

बुढ़िया भय से घबराकर पीछे हट गई और पृथ्वी पर झुक कर जल्दी-जल्दी अम्मन का चिह्न बनाकर चिल्लाई : “यह तुमने कहा था—मैंने नहीं कहा था—शाप तुम्हें ही लगेगा !”

और वह शीघ्रता से बाहर चली गई। उसके साथ और भी बहुत से निकल चले। लेकिन पुजारी लोग समवेत स्वर से हँसे और बोले : “जाओ, क्योंकि तुममें विश्वास की कमी है—परन्तु याद रखो कि अम्मन झूठा देवता है, अम्मन केवल एक मूर्ति है और उसका साम्राज्य ऐसे ही बटकर गिर जाएगा जैसे हँसिये के नीचे घास गिर जाती है।”

और तब जाने हुआ में से एक घूमा और उसने एक पत्थर उठाकर निशाना साध कर एक पुजारी के मारा। पत्थर उसके मुँह पर आकर लगा और रक्त बहने लगा। वह मुँह ढँककर बुरी तरह रोने लगा और अन्य पुजारी लोग सैनिकों को बुलाने लगे। परन्तु मारने वाला भीड़ में मिलकर भाग गया था।

इस सबको देखकर मैं चिन्तित हो उठा। पुजारियों के पास जाकर मैंने कहा : “मैं मिस्री हूँ परन्तु अभी तक सीरिया में रहा हूँ। आप कृपया मुझे

अपने देवता के बारे में बनाएँ—वह है कौन, क्या चाहता है और उसकी पूजा कैसे की जाती है ?”

पहले उन्होंने समझा में ध्येय कर रहा हूँ परन्तु फिर कहा : “एटोन ही असली देवता है। उसीने धरती और नदी, मनुष्य और जन्तु और जो कुछ भी इस पृथ्वी पर है, सब बनाया है। वह शाश्वत है और अपने प्रारम्भिक अपने पुत्र फराऊन को दिखाई दिया था—वह फराऊन जो सत्य के लिए प्रादुर्भाव में ‘रा’ के नाम से पूजा जाता था। परन्तु वह एटोन के रूप में ही रहता है। एटोन ही केवल देवता है याकी सब तो मूर्तिपा हैं। उसके लिए सभी ‘गरीब’, अच्छे-बुरे—सब एक से हैं और वह सभी पर अपना प्रकाश डालता है—हर एक को जीवन प्रदान करता है। वह सभी जगह मौजूद है और उसकी इच्छा के बिना कुछ भी नहीं हो सकता।

वह शाश्वत है और उसकी कृपा से फराऊन—उसका पुत्र—हर किसी को हृदय की पुस्तक की भाँति पढ़ सकता है।”

“फिर तो वह मनुष्य नहीं है।” मैंने विरोध किया।

उन्होंने आपस में सलाह की फिर उत्तर दिया, “हालाँकि फराऊन स्वयं मनुष्य ही रहना चाहता है—फिर भी हमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि वास्तव में वह दैवी शक्ति निबे हुए है। और यह इससे पता चलता है कि थोड़े ही समय के अन्दर वह अपने कई जीवनो की बातें देख सकता है। लेकिन यह उन्हीं को पता चल सकता है जिन्हें वह प्रेम करता है—और इसीलिए कलाकार ने उसे इन स्तम्भों पर पुरुष और स्त्री, दोनों रूपों में दिखाया है क्योंकि एटोन एक जीवित शक्ति है, पुरुष के बीज को शीघ्र अक्षुरित करके स्त्री की कुशिल से बच्चे को बाहर निकाल लाता है।”

और तब मैंने ध्येयार्थक रूप से हताश होते हुए हाथ उठाकर कहा :

“मैं तो एक बिल्कुल ही भोला आदमी हूँ—शायद उस बुद्धिवा से भी भोला जो अभी गई है और मेरी समझ में तुम्हारी बातें नहीं आ रही हैं। इसके अतिरिक्त मुझे ऐसा लगता है कि खुद तुम्हारी समझ में भी पूरी तरह से यह धर्म नहीं आया है क्योंकि मुझे उत्तर देने के पूर्व तुम्हें आपस में सलाह करनी पड़ती है।”

वह बोले : “जिस प्रकार सूर्य की चाली पूर्ण है, उसी प्रकार एटोन भी

पूर्ण है और जो कुछ भी उसके साम्राज्य में है—सौम लेता है और जीवित है—वह सभी पूर्ण है। मनुष्य के विचार अपूर्ण और कुहासे की तरह हैं और इसीलिए हम मुन्हें सभी बातों का उत्तर नहीं दे सकते क्योंकि हम स्वयं अपूर्ण हैं और दिन-भर-दिन हमें सीखना-ही-सीखना है। केवल फराऊन को ही उमका पूरा ज्ञान है—फराऊन को—जो उमका पुत्र है और जो सत्य के सहारे ही रहता है।”

और जब मैं लौटा तो मेरे हृदय में तूफान उठा हुआ था। मैंने स्वयं से पूछा :

“क्या फराऊन और उसके पुत्रारियों को अन्तिम सत्य मिल गया था ? क्या उसीका नाम एटोन था ?”

जब मैं घर लौटा तो शाम हो चुकी थी—मेरे घर के द्वार पर मेरे नाम की तख्ती लटक रही थी और बाहरी प्रांगण में कुछ रोगी मेरी प्रतीक्षा में बैठे थे जो देखने में सभी निर्धन लगते थे, कप्ताह एक नई मदिरा की बोतल लिए हुए खजूर के पत्ते से मक्खियाँ उड़ाता हुआ एक तरफ चुपचाप बैठा था।

मैंने अन्दर जाकर सबसे पहले उस स्त्री को बुलवाया जो एक सूखे हुए बच्चे को लिये हुए थी। इसका इलाज केवल कुछ तबिके के सिकके से भोजन खरीदकर खाना या कि वह अपने बच्चे को दूध पिला सके। सो मैंने कर दिया—फिर एक दास की उंगलियाँ मैंने जोड़कर बांध दीं जो चक्की में पिम गई थी, फिर एक लेखक आया जिसकी गर्दन पर एक बड़ा-सा गोला उठ आया था, उससे उसकी साँस भी ठीक तरह से नहीं चल पाती थी। ऐसे रोगी का इलाज मैंने स्मर्ना में सीखा था। जब वह जाने लगा तो उसने एक साफ कपड़े में बँधे तबिके के दो सिकके मेरी ओर बढ़ाये। प्रत्यक्ष था कि वह अपनी गरीबी पर लज्जित था। मैंने उन्हें उसी को लौटा दिया और कहा कि कभी लिखाई में धुका लूँगा।

फिर पास ही रंगशाला में से एक युवती आई जिसकी आँखें दुखती थीं और जिससे उसके पेशे में हानि होती थी। मैंने उसकी आँखें साफ कीं

और उनमें दवा डाली। वह भेंपती हुई मुझे दाम चुकाने मेरे सामने नगी खड़ी हो गई क्योंकि उसके पास देने की और कुछ नहीं था। मैंने उसे मना करके कुछ पहुँचाना उचित न समझकर कहा कि मुझे उन दिनों किसी विशेष उपचार के कारण स्त्रियों से दूर रहना पड़ रहा था। उसने मेरी बात का विश्वास कर लिया और मेरे नियमित अनुशासन से वह प्रभावित हुई। फिर मैंने उसकी जाँघों और पेट पर, जहाँ त्वचा बिगड़कर सूजी हुई सी थी, दवा लगाकर हल्के नज़र लगाये, जिनमें उसके पीछा भी नहीं हुई और उसकी कुरूपता भी मिट गई। अब वह गई तो मेरी प्रशंसा करती हुई गई।

और इस प्रकार मेरी पहलेदिन की आमदनी से नमक भी नहीं मरीदा जा सकता था। अब चप्ताह ने मुझे धीवीड के रविकर तरीके से मोटी पत्ती हुई बत्तख खाने की दी तो वह मुँह बिचवाने लगा। उसके बाद रगीन बीच के पास में उसने मुझे अम्पन के सभीओ में तैयार की हुई बेहतरीन मदिरा पिलाई।

उसने फिर रत्नमीनान से बैठने हुए कहा : "मेरा विचार है आज से तुम्हारा यश फैलने लग जाएगा और बल कुछ तक तुम्हारा प्राणन मरीचो से गचलन भर जायेगा—मैंने अभी कुछ भिखारियों में आपस में बातें करने हुए सुना था।" वह कह रहे थे, "उस जोने में लीवा गलानेवाले के घर जल्दी चलो—वहाँ एक बैठ आया है जो बरी होमियारी से और दिना पीछा किये उत्तम इलाज करता है। वह इलाज के दाम तो नेता ही नहीं है बल्कि मरीचो को घन भी दान देता है। उसने रगशावाओ की बेयाओ के मरीचो की कुरूपताएँ बीराफादी करके दूर कर दी हैं और बदले में उनमें भी कुछ नहीं लिया है। जल्दी चलो क्योंकि जो पहले पहुँच गया वही प्रायः में रहेगा—क्योंकि यह तो निश्चय है ही कि बैठ को दीप्त ही अपना मरान बेच-बापकर वहीं और भाग जाना पड़ेगा।"

मैं मुनकर हँस दिया। वह फिर बोला :

"लेकिन वह सब सून है। जन्हे क्या मानूँ कि तुम्हारे पास बिठना होता है। पूरी किन्दरी हमी तरह मुन दलाव करो तो भी आगम में दोनो वन मोटी बत्तख खाओ और उत्तम मदिरा पीओ—बोई पाटा नहीं

है—लेकिन हज़ारों रोड़ गुम एक में नहीं रहने—तुम्हारे मस्तिष्क में दूफान आने रहने है। यदि किसी दिन तुमने यह मकान मुझ सहित किसीको बेच दिया या भुगत दे दिया तो भी मुझे आश्चर्य नहीं होगा अतएव यदि मेरी दासत्व से मुक्ति जो तुमने प्रणाम करके की है—निश्चित में आ जाय तो अच्छा रहेगा—क्योंकि निश्चित के सामने जुवानी वालों का कोई मूल्य नहीं होता। इसके अनिश्चित एक कारण और भी है जिसे मैं इस समय बटकर तुम्हें तग नहीं करना चाहता।”

वह पतझड़ की मुद्रावनी सध्या थी। कच्ची झोपड़ियों के सामने उपले जल रहे थे। वन्दरगाह से सिंढार की लकड़ी और सीरिया के सुगन्धित जल की खुशबू आ रही थी। भूनी मछलियों की खुशबू के साथ एकेशिया वृक्षों की सुगन्ध मिलकर एक विचित्र वातावरण पैदा कर रही थीं। मैंने तो मोटी वस्त्र लवाई थी—और मैं बेहद खुश थी। मैंने कप्ताह से कहा कि वह भी मेरे साथ अपने मिट्टी के पात्र में पिये, फिर कहा :

“कप्ताह तुम स्वतन्त्र हो—बल राजा के लेखक तुम्हारी स्वतन्त्रता का प्रमाण-पत्र लिख देंगे। परन्तु यह बताओ कि तुमने मेरा सोना कहाँ रखा है? कौन से व्यापार में लगाया है? क्या मंदिर के खजाने में रख दिया है?”

“कभी नहीं।” वह बोला : “वहाँ रखने से तो उल्टा नुकसान ही है। प्रथम तो मंदिर वाले उसकी चौकसी के लिए ही धन माँगते हैं फिर वहाँ रखने से कर असूल करनेवालों को पता चल जाता है कि जमा करनेवाले के पास कितना धन है। मैंने पूरे नगर में चक्कर लगाया है—और जांच की है—अम्मन आजकल जमीन बेच रहा है।”

“भूठ !” मैंने कहा : “अम्मन कभी नहीं बेचता—वह तो खरीदता है। उसने हमेशा से खरीदा है और देश की चौपाई भूमि का वह स्वामी है, और जो उसका एक बार हो गया वह फिर उसी का रहता है।”

“ठीक है, ठीक है।” कप्ताह ने कहा और मदिरा ढाली। फिर कहा : “भूमि में लगाया हुआ धन शाश्वत रहा आता है—इसे कौन नहीं जानता यद्यपि कि हर बाढ़ के उतर जाने पर राजकर्मचारी मित्र बने रहें—लेकिन यह सब है कि अम्मन भूमि बेच रहा है और छिपकर अपने भक्तों को बेच

रहा है, वह भी मस्ती । तुम तो जानते हो कि अम्मन के पास उत्तम भूमि है और ऐसी भूमि मोल लेने में फायदा ही फायदा है । अब तक अम्मन की बहुत भूमि बिक चुकी है और ठोस सोना तैलानों में जमा दिया जा चुका है ।”

“मुझसे यह मन कहना कि तुमने भी उसमें कुछ भूमि खरीद ली है ।” मैंने आगे धुमाकर कहा—

“मैं कोई मूर्ख थोड़े ही हूँ ?” वह बोला, “अम्मन की भूमि में जो दम बिज्जी में जो इतनी अच्छी और लाभप्रद दिग्विस्ती है वही न वही गोदड़ छिपा हुआ खरूर बैठा है—पर है यह साग सगडा कराऊन के नये देवता के ही कारण—लेकिन मैंने तो तुम्हारा लाभ देखने हुए कई इमारतें तुम्हारे लिए खरीद ली है—मकान, दुकान इत्यादि जिनका सान्नाना किराया भी काफी आ जाया करेगा—मैंने उन्हें बहुत ही सस्ते दामों में खरीदा है ।”

आगे उसने यह भी बतलाया कि वह अनाज का व्यापार करने की सोच रहा था । फिर उसने मुझे और लाभप्रद खोजना बताया और वह भी दासों के व्यापार की । पर मैंने जब मना कर दिया तो उसने स्वयं भी मनोप की सीम ली क्योंकि हृदय में वह भी उस कार्य को नहीं करता चाहता था ।

बाद में जब उसने ‘मगर की पूछ’ बनाने की कला तो मैं टहका लगाकर हँस दिया । मुझे वह सब उस दिन बहुत अच्छा लग रहा था क्योंकि मदिरा ने मुझे हँसना कर दिया था ।

बन्दरगाह की पानी बगनी में बड़ी बड़ी दुकानों और गोदामों ने घिरा हुआ एक अँधेरी-भी पानी में ‘मगर की पूछ’ नामक मदिरागृह था । हमकी ईंटों की दीवारों काफी मोटी थी जिससे कमियों में यह टूटा और ज़ाहो में लगे रहता था । मुख्य द्वार के ऊपर एक मुनाया हुआ मगर लटका रहा था जिसकी बीच की आँखें और पूंछ हुए खरड़े में अनेक दानों की पकिर्दा दियाई दे रही थी । बप्ताह मुझे उम्मुक होकर अन्दर ले गया और माजिब-दुबान को बुलाकर अच्छी मदियों वाली कुमियों की तस्क बना । मैंने

बैठने के उपरान्त आश्चर्य से देखा कि वहाँ की दीवारों और भूमि पर लकड़ी जड़ी हूई थी और साथ ही साथ चारों ओर लम्बी समुद्री पात्राओं में प्राप्त पारितोषिक सजे रमे थे जिनमें हृदयियों के भाले, परों की बल-गियाँ, घोंघे और शंख इत्यादि थे, और फीट के चित्रित पात्र भी रमे थे।

वप्ताह को वहाँ सब जानने थे। जब उसने मेरी दृष्टि देगी तो गर्व से मुस्कराता हुआ कहने लगा—“निश्चय ही तुम्हें इन्हें देसकर आश्चर्य होगा क्योंकि यह केवल धनी व्यक्तिओं के घरों पर लगे रहते हैं। पर जान लो कि यह पुराने जहाजों की लकड़ियाँ हैं। यह जो सामने पीली लकड़ी है वह पत के देग तक ही आई है—और यह भूरी सीरिया तब—अब वहाँ तो मदिराओं को मिनाकर बनाया हुआ उसमें पेय पिया जाय जिसे यहाँ के मातित ने अपने हाथ में हमारे लिए बनाया है।”

शख की भाँति चक्करदार एक सुन्दर फँसा हुआ गिलास मुझे दिया गया जिसे हथेली खोलकर लिया जा सकता था, मैंने उसे बिना देने ही ले लिया क्योंकि मेरी दृष्टि उग स्त्री को देखने में अटक गई थी जो उठी लड़ी थी। वह आम तौर पर सरायों में परोगनेवाली लड़कियों की भाँति पुकरी लॉन थी और न वह अधनगी ही थी कि जिसके नंगे शरीर को देसकर शब्द लिखे थले धावें, वह बायदे के वस्त्र धारण किये हुए थी और उगके बालों में चाँदी की बानियाँ और ताड़ुन बलाइयों में चाँदी की बुडियाँ थीं, उसने मेरी ओर निर्भीकता से देखा और तनिक भी गठी समझी जैसे कि आम तौर पर स्त्रियाँ आँने भुका मेनी है। उगकी भँवों के बाल उसके हृद के और वह बमानदार थी, धूरे नेत्रों में मुस्कराहट और दई दोनों का विविध सम्मिश्रण था— वह सुन्दर समरदार नेत्र थे—वह पूरी तरह देगने में सुन्दर, स्वयं और सुमाइनी समनी थी।

उगके नेत्रों में दमन हुए मैंने उससे पूछा : “हे सुन्दरी ! तुम्हारा क्या नाम है ?”

वह धीन स्वर में बोली, “मेरा नाम ‘मैरिट’ है—जान्नु मुझने सर्वोच्च सुबहो की भाँति सुन्दरी कहना उचित नहीं है क्योंकि वह एक लकी लकड़ी की लोथे लकड़ना चाहते हो—मुझे जाना है कि क्या लकड़ी का पत्र भी एही लोथे लकी लकड़ना चाहते हो—जिम्हूँ नेट—पुन

जो एकाकी हो !”

आश्चर्यचकित होकर मैंने पूछा : “परन्तु मेरा तो ऐसा कोई विचार नहीं था कि तुम्हारी जाँचें सहलाऊँ ! और तुम्हें मेरा नाम किसने बतला दिया ?”

वह मुस्कराई और वह मुस्कराती हुई बहुत अच्छी लगी फिर व्यंग्य-रमक स्वर से बहने लगी : “तुम्हारा यश तुमसे पहले वहाँ आ पहुँचा है—जगती गये के पुत्र ! और तुम्हें देखकर तो मुझे अब पता लगता है कि तुम्हारा यश गूँथ नहीं बीता था—वल्कि अक्षरशः सही था ।”

और मैं उसकी दी हुई मदिरा को पी गया—और पीने ही मेरा निरगम हो गया—गला घटपटाने लगा और ऐसा लगा कि मुझमें अग्नि ने प्रवेश था किया है । मैं सामने रखे घुने हुए कमल के बीजों को खाने लगा—मुझमें एक विचित्र स्फूर्ति आ गई और मुँह नमकीन हो गया । मुझे मेरा शरीर बिड़िया की भाँति हल्का लगने लगा । मैंने कहा :

“मैं और सम्पूर्ण गैतानो की बसम ! जाने किस विधि से यह पेय बनाया गया है ! अद्भुत है इसकी रसि और आश्चर्यजनक है इसका असर—परन्तु यह मेरी सभी तक समझ में नहीं आया कि यह जो जादू तुम पर हो गया है, यह इस मदिरा का है या मैरिट ! तुम्हारी मद भरी आँखों का, मेरी भुजाओं में अब जादू बह रहा है और मेरा हृदय अब इस जवान हो गया है । यदि अब मैं तुम्हारी जाँचें सहलाने लग जाऊँ तो आश्चर्य न करना क्योंकि यह मेरा नहीं इस प्याले का दोष होगा ।”

वह पीछे हट गई और हाथ उठाकर ब्याज करती हुई कहने लगी—मैंने देखा वह छरहरे शरीर वाली स्त्री अत्यन्त सुभावनी लग रही थी । बोली : “तुम्हें इस प्रकार यहाँ, जो एक अच्छी सराय है—मैंने मीनो का लक्ष्यमाना है—बसम खाने हुए देखकर मुझे आश्चर्य होता है और फिर मैं इतनी बूढ़ा भी नहीं हूँ और बीमार्य भी मेरा नहीं छोड़ा है—एतन्कि लायदे तुम इसका बिश्वास न करो—रि तुम चाहें जैसे मेरे सामने बसम लाओ । यह गई यह मदिरा बनाने की विधि—यह मेरे पिता की मेरे लिए देन है रि जब मैं विवाह करके अपनी जाँचें तो अपने पति को देने बतला दूँ । और इसी कारण तुम्हारे इस दास ने मुझे, इनने दिन तुमको

की चेष्टा की है। पर यह काना और बूढ़ है और निश्चय ही मृत-जैती पूर्ण तरणी इसमें आनन्द प्राप्त नहीं कर सकती—अब इसके पास सिवाय इस तन्दूरखाने के खरीदने के और कोई चारा नहीं रह गया था—और इसे मोल लेने के बाद अब यह इस विधि को भी मोल लेना चाहता है, पर इसके बताने के पहले इसे हमें काफी सुवर्ण देना होगा।”

कप्ताह मुंह बना-बनाकर पूरे समय उसे चुप कराने की चेष्टा कर रहा था। और तभी मुझे पता चला कि कप्ताह ने उस तन्दूरखाने को खरीद लिया था। थोड़ी देर बाद जब मैंने उससे उस व्यापार की हानि-लाभ के बारे में पूछा तो वह बोला :

“चाहे फराऊनों की शक्ति हिल जाय, चाहे देवताओं के सिंहासन हिल उठें—पर मनुष्य के कंठ में प्यास की चटक तो हमेशा बनी ही रहेगी—और लोग यहाँ पीने-खाने तो आएँगे ही—मनुष्य खुशी में और दुःख में, दोनों में मदिरा पीता है। फिलहाल तो मैरिट का पिता और मैं साथी रहेंगे और यही जादूगरनी इस पेय को बनाती रहेगी—मैरिट का पिता अम्मन का भक्त भी है और हर उत्सव में वहाँ बलि भी चढ़ाता है—यहाँ अम्मन के पुजारी भी कभी-कभी घाते हैं—शायद उन्हें खुश रखने की ही वह ऐसा करता हो—पर यह सब जानते हैं कि यह अम्मन दल का आदमी है। लेकिन मुझे संतोष तो इस बात का है कि मेरे इस काम से तुम्हें भी खुशी है...।”

जब हम वहाँ से चलने लगे तो द्वार के पास अँधेरे में मैंने मैरिट की स्निग्ध जंघा पर हाथ डाला पर उसने मेरा हाथ झटक दिया और कहा : “तुम्हारा स्पर्श शायद मुझे अच्छा लगने लगे परन्तु तब नहीं जब तुम इस मदिरा के नशे में झूमते होओ—”

मैंने अपने हाथ फैलाकर देसे और मुझे वह मगर के हाथों जैसे क्रूर दृष्टाई देने लगे।

और धीवीज के गरीबों के मुहल्ले में मेरे दिन बीतने लगे। कप्ताह की भविष्यवाणी सच निकली क्योंकि मैं ज़िन्दगी कमाता था उसने प्यादा रख

कर देता था । परन्तु फिर भी न जाने भुके कपो एक विचित्र आत्मसंतोष होता था ।

कप्ताह ने घर के काम-काज के लिए एक बूढ़ा नौकर रख ली थी । वह ऐसी लगती थी जैसे जीवन से ऊब चुकी हो परन्तु वह बकबक बिल्कुल नहीं करती थी । उसका नाम मूती था ।

महीने-पर-महीने निकल गए और बीबीज की अशान्ति बढ़ती ही गई । हौरेमदेव के लौटने का कोई समाचार नहीं मिल रहा था । गर्मी की श्रुति आ रही थी और मूर्ख का ताप उग्र हो गया था । कभी-कभी मैं कप्ताह को साथ लेकर 'मगर की पूँछ' में मैरिट से दिहलगी करने चला जाता था हालाँकि वह मुझसे छिची-छिची ही रहती थी । मैंने देखा कि उस स्थान में हर किसी का स्वागत नहीं किया जाता था । यहाँ के ग्राहक गिने-चुने थे और उनमें हालाँकि बहुत से तो गिरहकट, चोर और डाकू भी थे, परन्तु यहाँ आकर वह सब गम्भीर बन जाते और अत्यन्त भद्र व्यवहार करते थे । जितने लोग आते थे उन सबका आपस में कोई-न-कोई सम्बन्ध होता और हर किसी का एक-दूसरे से कोई-न-कोई काम होता । केवल मैं ही एक ऐसा था जिससे किसी का कोई काम नहीं होता था—परन्तु मैं कप्ताह का मित्र था—

यहाँ फराऊनों का गुणगान होता तो उसको गालियाँ भी दी जाती, उसके नये देवता का उपहास किया जाता—

एक शाम एक सुगन्धी सँदूरसाने में आया । उसके वस्त्र फटे हुए थे और बेजो में राख लगी हुई थी । वह अत्यन्त उदास लग रहा था और अपने दुःख को 'मगर की पूँछ' के पेय में डुबोने आया था । वह चिल्लाने लगा :

' इस नकली फराऊनों का नाश हो — इस जारअ, इस सुटेरे का नाश हो जो अपनी इच्छा के अनुसार आज्ञा देता फिरता है । हमेशा से जहाँ-जहाँ अम्न देशों को व्यापार के हेतु जाने रहे हैं । और उनमें से अधिकतर साल-के-साल मुनाफ़ा लेकर लौटने भी रहे हैं, परन्तु अब इससे और अधिक मूर्खता और क्या होगी कि फराऊन स्वयं बन्दरगाह पर गया और उसने जब देखा तो मल्लाहों और उनके परिवारों को वहाँ रोते पाया ।

मल्लाहों को तो डर लगा ही रहता है कि जाने लौटेंगे कि नहीं—बस उन्होंने तेज पत्थरों से मुंह खुरच डाले और लहलुहान होकर कराऊन के सामने रोने लगे। कराऊन ने बजाय उन्हें पिटवाकर सही रास्ते पर लाने के उल्टे यह आज्ञा दे डाली कि अब से कोई जहाज पत के देश को जायेगा ही नहीं—अम्मान हमारी रक्षा करे ! अब तो सभी व्यापारियों के कारोबार टपक जायेंगे—मालगोदामो में माल रखा ही रह जायेगा—मिट्टी के मुन्दर पात्र, बाँच के बर्तन सब व्यर्थ ! कुछ भी बाहर नहीं भेजा जा सकेगा—मिट्टी आहतिये भूसे मर जायेंगे !”

वह बकता रहा—परन्तु जब सीसरा तिलाम उसके कंठ से नीचे उतर गया तो वह मुस्कराया, फिर बहने लगा—“माझाजी ताया कोतो आई (पुजारी) की सप्ताह लेकर कराऊन को रोक्ना चाहिए कि वह मनचाही आज्ञाएँ देकर लोगों को परेशान न करे !—और—और—”

फिर वह इधर-उधर देखकर बोला—

“—घर जो नेकानीनी है—इसे बस बहनों का ही सदा ध्यान बना रहता है—अब दरबार में मित्रों अथि के चारों ओर हम रग लगाती हैं और नाभि से नीचे नगी घुमती हैं—सासकर पुरुषों के सामने !”

बप्ताह ने आश्चर्य में पुछा—“मैंने किसी भी देश में ऐसी पोंताक नहीं देखी है—तो क्या तुम्हारा मतलब है कि अब मित्रों अपने छिटे बगों को खोलकर खनती हैं ? और माझाजी भी ?”

मुमछी मुनकर मागाह होकर बोला—“मैं एक घरीक आदमी हूँ जिसके घर में स्त्री-अथि सब है, मैं भला किसी स्त्री की नाभि से नीचे देखने ही क्यों गया—और मुझे भी ऐसा नहीं करना चाहिए !”

“सर्वनाक तो तुम्हारा मूर्ख है जो ऐसी घुमिन बातें करने हों न कि स्त्रियों के मौम के निचे बनाई गई यह पोंताक जो इनकी टही और मुनकर रहती है—इससे स्त्री की सुन्दरता भी अच्छी दिखाई देती है बर्तन स्त्री का चेहरे इन्फैंट सुन्दर और सुन्दर हो ! मुम नीचे भी अच्छे बला कर देव कहने से बर्तन नीचे उलम महीन बर्तन की नकली पट्टी लगी रहती है जिससे कोई बेअदबी नहीं रह जाती !”

जब बप्ताह और मैं अपने लगे लगे दिन बीतते थे दुःख के पल बग

“मैं तो एकाकी हूँ ही पर तुम्हारी आँखें मुझसे कहती हैं कि तुम भी एकाकी हो। तुम्हारी कही हुई बातों को मैंने सोचा है और मैं भी विश्वास करने लगा हूँ कि कभी कभी झूठ सच से अधिक मुखकर लग सकता है यदि व्यक्ति एकाकी हो। तुम सुन्दर और स्वस्थ हो। यदि तुम ऐसी नई पोशाक पहिनने लगे तो निश्चय ही सुन्दरी दिखाई देगी और तब जब तुम मेरे साथ मैडों वाले राजपथ पर चलोगी तो निश्चय ही तुम्हें अपने सौंदर्य का गर्व हो उठेगा।”

उसने अबकी मेरा हाथ नहीं झटका बल्कि मेरे हाथ पर हाथ रखकर अपनी जाँघ पर उसे दबा लिया। और उच्छासित स्वर से बोली : “जैसे तुम कहोगे वैसे ही होगा।”

फिर भी, जब मैं बाहर आया तो मुझे दुनिया रंगीन दिखाई नहीं दी। दूर नदी तट से कोई दुःख भरे स्वर मे वासुरी बजा रहा था।

दूसरी सुबह होरेमहेव बीबीज को लौटा आया और उसके साथ एक सेना भी आई। परन्तु उसके बारे में कहने से पहले मैं यह बतला दूँ कि इस बीच मैंने दो स्थियों के सिर खोले। उनमें से एक अपने आपको महान साम्राज्ञी हूतने हूतरोप्सत समझती थी। दोनों ही मरीज ठीक हो गए। निश्चय ही वह ठीक होने से पहले से अधिक आनन्द का अनुभव करती होंगी।

१०

जब होरेमहेव लौटा उस समय घोर अतृप्त चरमसीमा की पहुँच रही थी। तालाबों में पानी सूख गया था और टीडियो ने फसलों पर हमला कर दिया था। बिहियार् नदी की बीचड़ में घुस चुकी थी, परन्तु छानियों के उद्घातन अब भी हरे-भरे और ठंडे थे और मैदों वाले राजपथ के दोनों ओर इन्द्रधनुषी-सी रंगों के विविध पुष्प खिले रहने थे। केवल गरीबों पर

धूल जमी रहती और उनके भोजन और पानी तक में धूल मिली रहती थी। दक्षिण की ओर फ़राऊनों का स्वर्ण गूह हरा-भरा लगता और उस पीपल ऋतु के धुंधले आकाश की पृष्ठभूमि में दूर से अद्भुत नगरी-सा प्रतीत होता था। हालाँकि गर्मी अब काफी तेज़ थी फिर भी अबकी बार फ़राऊन निचले साम्राज्य में अपने गर्मी के महलों में नहीं गया था और थीबीज़ में रखा हुआ था। इससे सभी को एक अज्ञातभय लगा हुआ था कि न जाने क्या होने वाला था। जिस प्रकार तूफ़ान के पहले आकाश में अँधेरा छा जाता है वैसे ही लोगों के हृदयों में भय और आतंक के काले बादल छाये हुए थे।

थीबीज़ के राजपथों पर धूल से मैली ढाल लिये और चमचमाते हुए शिरम्भाण पहने हुए सैनिक नित्य बचावद करते हुए निकलते और उनके हाकिम अपने घोड़ों पर बलगियाँ लगाये हुए ऐँठने हुए चले जाते। छावनी में फिर से बड़े-बड़े पार्श्वों में ताल किये हुए पत्थर पटके जाते और उनमें खाना पकाया जाता। परन्तु कहीं भी किसी सैनिक दिखाई नहीं देता था—जो थे सब या तो न्यूबियन थे जो दक्षिण से आये थे अथवा उत्तर पश्चिम के रेगिस्तान से शारदाना लोग थे जो निर्दय होकर हत्या कर सकते थे। सभी काले-काले भयानक लगते थे।

नदी का मार्ग राजाज्ञा से बंद कर दिया गया था और सेना ने महानगर में अपना शासन प्रारम्भ कर दिया गया था। चतुष्पथों पर अलाव जलते रहते और पहरें लगा करते। धीरे-धीरे कारखानों में काम बन्द होने लगे। व्यापारी लोग दुकानों से सामान उठाकर गोदामों में बन्द करने लगे और तदूरखानों पर हड़ट्टे-कट्टे जवान क्यादा तादाद में नौकर रखे जाने लगे। लोग श्वेत वस्त्र धारण किये अम्मन के मंदिर में इकट्ठे होने लगे। वहाँ इतनी भीड़ लगने लगी कि भीतरी तमाम प्राणण भरकर बाहरी तोरण के भी बाहर लोगों के ठट्टे के ठट्टे जमा रहने लगे।

और इसी बीच एक दिन हस्ता उठा कि रात के अख्यान में एटीन का मंदिर अपवित्र कर दिया गया था। किसी ने वहाँ के बलि स्तंभ पर, जहाँ नित्य पुष्प, अनाज इत्यादि चढ़ाये जाते थे, एक कुत्ते की सड़ी हुई लाश रख दी थी और वहाँ के चौकीदार का गला कान से कान तक फाड़

झाला था। लोगों में जब यह समाचार फैला तो अतिक छा गया परन्तु बहुत से मन-ही-मन अत्यन्त हर्षित हुए।

“अपने औजार साफ करके तैयार रख लो मालिक। मुझसे कप्ताह ने कहा, “क्योंकि रात तक निश्चय ही तुम्हारे पास बहुत काम आ जायेगा—नायद दो-चार सिर भी खोलने पड़ जाएँ।”

लेकिन फिर भी शाम तक कोई सास बारदात नहीं हुई। नरो में चूर न्यूवियन सैनिकों ने कुछ दुकानें लूट ली थी। और दो-चार स्त्रियों के साथ बलात्कार कर दिया था। पहरे के सैनिकों ने उन्हें पकड़ लिया और उन्हें सबके बीच कोड़े से पीटा जिससे उन दुबानदारों और उन स्त्रियों को सान्त्वना मिली।

यह जानकर कि होरेमहेव सेनापति वाले जहाज में मौजूद था। मैं भी बन्दरगाह गया। हालाँकि मुझे उससे मिल पाने की बहुत ही कम आशा थी। पहरे वालों ने मुझे उड़ती हुई दृष्टि से देखा और मेरी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया और अन्त में मेरे बहुत कहने पर एक अन्दर सूचना देने गया। परन्तु वह जब लौटा तो मुझे स्वयं आश्चर्य हुआ क्योंकि मुझे सुरत अन्दर बुलाया गया था।

और मैंने जीवन में पहली बार जमी जहाज अन्दर से देखा। वहाँ अनेकानेक अस्त्र-शस्त्र रखे हुए थे, बाकी सब वह माफूसी ही था। होरेमहेव मुझे पहले से कुछ अधिक ऊँचा मालूम हुआ और कुछ रोबदार भी उसका अधिक ही ऊँचा। उसके पुट्टे चौड़े और बहि गठिन दिमाई देनी थी। परन्तु उसके चेहरे पर बिन्ता की गहरी रेखाएँ उभर आई थीं और उसकी आँखें खूनी लाल और धवी लगती थी। मैंने मुक्कर घुटनों के सामने हाथ सीरे फैलाकर उसका अभिवादन किया।

वह बड़बी हँसी हँसते हुए बोला :

“देखो वह सिन्धूहे है—जगली गये का बेटा ! सबमुख तुम गुमचटी में ही आये हो !”

अपने स्तब्ध की बजह से उसने मेरा आतिथ्य नहीं किया। लेकिन मुक्कर अपने पास सड़े हुए एक छोटी-छोटी आँखो वाले और नाटे बदन के हाकिम से जो गर्मी के कारण हाँक रहा था, वह बोला : “यह लो,

धूल जमी रहती और उनके भोजन और पानी तक में धूल मिली रहती थी। दक्षिण की ओर क़र्राऊनों का स्वर्ण गृह हरा-मरा सगता और उस बीच भूतु के घुघले आकाश की गृष्ठभूमि में दूर से अद्भुत नगरी-सा प्रतीत होता था। हालाँकि गर्मी अब काफी तेज़ थी फिर भी अबकी बार क़र्राऊन निचले साम्राज्य में अपने गर्मी के महलों में नहीं गया था और धीरे-धीरे मर रहा हुआ था। इससे सभी को एक अज्ञातभय सगा हुआ था कि न जाने क्या होने वाला था। जिस प्रकार तूफ़ान के पहले आकाश में भँपेरा छा जाता है वैसे ही लोगो के हृदयों में भय और आतंक के नामे बादल छाये हुए थे।

धीबीऊ के राजपथों पर धूल से मैसी ढाल लिये और चमकमाने हुए गिरम्राण पहने हुए सैनिक नित्य क़वायद करने हुए निकलने और उनके हाकिम अपने घोड़ों पर बलगियाँ लगाये हुए छँटे छँटे हुए भले जाने। छावनी में फिर से बड़े-बड़े पात्रों में लाल रिये हुए पत्थर पड़े जाने और उनमें खाना पकाया जाना। परन्तु वही भी मिथी सैनिक दिखाई नहीं देता था—जो थे सब या तो न्यूबियन थे जो दक्षिण में आये थे अथवा उत्तर पश्चिम के रेगिस्तान में शारदाना लोग थे जो निर्दय होकर हत्या करवाते थे। सभी काले-काले भयानक लगते थे।

नदी का मार्ग राजाजा में बद कर दिया गया था और मेना ने महा-नगर में अपना सामन प्रारम्भ कर दिया गया था। अनुगधों पर अनाज जकने रहने और पहरे लगा करने। धीरे-धीरे कारवानों में काम बन्द होने लगे। व्यापारी लोग दुकानों में सामान उठाकर गोदामों में बन्द करने लगे और लूटखानों पर हड़टे-कड़टे जवान खादा लादाद में लीहर रथे जाने लगे। लोग इतने बरुन धारण किये अस्मन के मंदिर में इकट्ठे होने लगे। वही इतनी भीड़लगने लगी कि भीखरी नमाम प्राणन भगदर बादरी तोरण के भी बाहुर भोगों के टट्ट के टट्ट जमा रहने लगे।

और इसी बीच एक दिन हम्मा उठा कि राज के अन्तर्गत में एरुन का मंदिर बनाने कर दिया गया था। किसी ने वहाँ के बरुन कपड़ों पर, उहाँ लिये पुत्र, अनाज इत्यादि खाने जाने थे, एक कृष्ण की मूर्ति हुई लम्बा उस ही की और वहाँ के चौकीदार का कपड़ा काम में काम नद था।

डाला था। लोगों में जब यह समाचार फैला तो आतंक छा गया परन्तु बहुत से मन-ही-मन अत्यन्त हर्षित हुए।

“अपने औजार साफ करके तैयार रख लो मालिक” मुझे कप्ताह ने कहा, “क्योंकि रात तक निश्चय ही तुम्हारे पास बहुत काम आ जायेगा—शायद दो-चार सिर भी खोलने पड़ जाएँ।”

लेकिन फिर भी शाम तक कोई खास बारदात नहीं हुई। नये में चूर न्यूयियन सैनिकों ने कुछ दुकानें छूट ली थी। और दो-चार स्थियों के साथ बलात्कार कर दिया था। पहले के सैनिकों ने उन्हें पकड़ लिया और उन्हें सबके बीच कोड़े से पीटा जिससे उन दुकानदारों और उन स्थियों को सान्त्वना मिली।

यह जानकर कि होरेमहेब सेनापति वाले जहाज में मौजूद था। मैं भी बन्दरगाह गया हालाँकि मुझे उससे मिल पाने की बहुत ही कम आशा थी। पहले वालों ने मुझे उड़ती हुई दृष्टि से देखा और मेरी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया और अन्त में मेरे बहुत कहने पर एक अन्दर सूचना देने गया। परन्तु वह जब लौटा तो मुझे स्वयं आश्चर्य हुआ क्योंकि मुझे तुरत अन्दर बुलाया गया था।

और मैंने जीवन में पहली बार जमी जहाज अन्दर से देखा। वहाँ अनेकानेक अस्त्र-धस्त्र रखे हुए थे, जिनकी सब वह मामूली ही था। होरेमहेब मुझे पहले से कुछ अधिक ऊँचा मातूम हुआ और कुछ रोबदाब भी उसका अधिक ही ऊँचा। उसके पुद्गे चौड़े और बाँहें गठित दिखाई देती थी। परन्तु उसके चेहरे पर चिन्ता की गहरी रेखाएँ उभर आई थी और उसकी आँखें छूती साल और घनी लगती थी। मैंने झुककर घुटनों के सामने हाथ जोड़े फेलाकर उसका अभिवादन किया।

वह कड़वी हँसी हँसने हुए बोला :

“देखो वह सित्यूहे है—जगत्नी गये का बेटा ! सबमुख तुम गुमघड़ी में ही आये हो !”

अपने रतबे की बजह से उसने मेरा आतिथ्य नहीं किया। लेकिन मुझकर अपने पास गये हुए एक छोटी-छोटी आँखों वाले और नाटे बदन के हाजिम से जो गर्मों के कारण हाँक रहा था, वह बोला : “यह सो,

धूल जमी रहती और उनके भोजन और पानी तक में धूल मिली रहती थी। दक्षिण की ओर क़राऊनों का स्वर्ण गृह हरा-भरा लगता और उस शीघ्र ऋतु के धुंधले आकाश की पृष्ठभूमि में दूर से अद्भुत नगरी-सा प्रतीत होता था। हालाँकि गर्मी अब काफी तेज़ थी फिर भी अबकी बार क़राऊन निचने साम्राज्य में अपने गर्मियों के महलों में नहीं गया था और धीबीज़ में रखा हुआ था। इससे सभी को एक अज्ञातभय लगा हुआ था कि न जाने क्या होने वाला था। जिस प्रकार तूफ़ान के पहले आकाश में अँधेरा छा जाता है वैसे ही लोगों के हृदयों में भय और आतंक के काले बादल छाये हुए थे।

धीबीज़ के राजपथों पर धूल से मैली ढाल लिये और चमचमाते हुए शिरस्त्राण पहने हुए सैनिक नित्य कवायद करते हुए निकलते और उनके हाकिम अपने घोड़ों पर कलगियाँ लगाये हुए ऐँठते हुए चले जाते। छावनी में फिर से बड़े-बड़े पात्रों में लाल किये हुए पत्थर पटके जाते और उनमें स्नाना पकाया जाता। परन्तु कहीं भी किसी सैनिक दिखाई नहीं देता था—जो थे सब या तो न्यूबियन थे जो दक्षिण से आये थे अथवा उत्तर पश्चिम के रेगिस्तान से शारदाना लोग थे जो निर्दय होकर हत्या कर सक्ते थे। सभी काले-काले भयानक लगते थे।

नदी का मार्ग राजाभा से बद कर दिया गया था और सेना ने महानगर में अपना शासन प्रारम्भ कर दिया गया था। चतुष्पथों पर अलाय जलते रहते और पहरें लगा करने। धीरे-धीरे कारखानों में काम बन्द होने लगे। व्यापारी लोग दुकानों से सामान उठाकर गोदामों में बन्द करते लगे और तंदूरखानों पर हट्टे-कट्टे जवान क्यादा तादाद में नौकर रखे जाने लगे। लोग श्वेत वस्त्र धारण किये अम्मन के मंदिर में इकट्ठे होने लगे। वहाँ इतनी भीड़ लगने लगी कि भीतरी तमाम प्राणन भरकर बाहरी तोरण के भी बाहर लोगों के ठट्ट के ठट्ट जमा रहने लगे।

और इसी बीच एक दिन हस्ता उठा कि रात के अख्यान में एटीन का मंदिर अर्पित कर दिया गया था। किसी ने वहाँ के बलि स्तंभ पर, जहाँ नित्य पुष्प, अनाज इत्यादि चढ़ाये जाते थे, एक कुम्भ की छड़ी हुई साज रख दी थी और वहाँ के चौबीदार का गला कान में कान तक फाड़

झना था। लोगों में जब यह समाचार फैला तो आतंक छा गया परन्तु बहुत में मन-ही-मन अत्यन्त हर्षित हुए।

“अपने औजार साफ करके तैयार रख लो मालिक” मुझसे कप्ताह ने कहा, “क्योंकि रात तक निश्चय ही तुम्हारे पास बहुत काम आ जायेगा—शायद दो-चार सिर भी खोलने पड़ जाएँ।”

लेकिन फिर भी शाम तक कोई खास बारदात नहीं हुई। नसे में धूर स्पूबियन सैनिकों ने कुछ दुकानें सूट ली थी। और दो-चार स्त्रियों के साथ बलात्कार कर दिया था। पहले के सैनिकों ने उन्हें पकड़ लिया और उन्हें सबके बीच कोड़े से पीटा जिससे उन दुकानदारों और उन स्त्रियों को मानवता मिली।

यह जानकर कि होरेमहेव सेनापति वाले जहाज में मौजूद था। मैं भी घमरगाह गया हालाँकि मुझे उससे मिल पाने की बहुत ही कम आशा थी। पहले वालों ने मुझे उड़ती हुई दृष्टि से देखा और मेरी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया और अन्त में मेरे बहुत कहने पर एक अन्दर सूचना देने गया। परन्तु वह जब मौटा तो मुझे स्वयं आश्चर्य हुआ क्योंकि मुझे तुरत अन्दर बुलाया गया था।

और मैंने जीवन में पहली बार जमी जहाज अन्दर से देखा। वहाँ अनेकानेक अस्त्र-दास्त्र रखे हुए थे, बाकी सब वह मामूली ही था। होरेमहेव मुझे पहले से कुछ अधिक ऊँचा मालूम हुआ और कुछ रीबदाब भी उसका अधिक ही ऊँचा। उसके पुट्टे चौड़े और बाहि गठित दिसाई देती थी। परन्तु उनके चेहरे पर चिन्ता की गहरी रेखाएँ उभर आई थी और उसकी आँखें खूनी सास और पक्की लगती थी। मैंने शुककर घुटनों के सामने हाथ सीरे फैलाकर उसका अभिवादन किया।

वह कड़वी हँसी हँगने हुए बोला :

“देखो वह निन्सूहे है—जगली पथे का बेटा ! सबसुच गुम गुमचडी में ही आवे हो !”

अपने रुबे की बजह से उसने मेरा आतिगन नहीं किया। लेकिन मुझकर अपने पास रखे हुए एक छोटी-छोटी आँखों वाले और नाई बंद के हाथों से जो गर्मी के कारण हाँक रहा था, वह बोला : “यह सो,

मँभालो”

और उमने उमके हाथ में अपनी मोने की चाबुक दे दी। भाने गये मे जहाऊ मोने का कटी उगारकर उसकी मोटी गर्दन में लोट दी। फिर कहा

‘अब तुम सेना को मँभालो। अब लोगों का रक्ता गुहादारे मरे हाथों से बहे।’

मेरी और मुहम्मद होरमश्व ने फिर एकदम कहा

‘मिल्लुहे, मेरे मित्र, अब मैं स्वगत्य हूँ — मेरा विचार है कि तुम्हारे घर में मेरे लिए एक बटाई होगी जिस पर मैं आशाम से शायनीर फँगा कर मो मईगा। और मैं इस मूल्य में फिर भगाया हूँ कि जिस पर वह मगाई है।’

उमने उस पदार्थिका की कड़ो पर हाथ रख दिये आ उमने एक मित्र नीचा था, फिर मुगले भगा

इस अवसर का देना मिल्लुहे। और इसकी हुंनया देना — इसी के हाथ में जहाऊन ने आज कीबीह का भाव्य ब दिया है। अब मैं जहाऊन से कहा कि वह बागल का है। उमने इस गरी अगह निपुण किया है — इस देमकर अता हा लया था कि दिवनी बली जहाऊन का फिर मेरी उमने यह कह दिया है।

वह हुआ और उमने अपने बेटे को यह उसकी हुंनी में देनी दी। मैं कहता हूँ हा गया। उस दण्ड में हाँदस के अगह, मईन और मी हल्लो से जहाऊन कह गया था।

“मुगले बेटे में हाँदा होरमश्व,” वह पलीयो नेव जहाऊन से कहा, “कई मेन हा मुहम्मद अहमद की चाबुक मरत मुस से ला ली है। मैं ला मुस जहाऊन ही हाँदक जहाऊन देल्लो ही और जहाऊन में ही जहाऊन गया है — और मैं मुझे कुछ मछला हा मछला है। जहाऊन दण्डन की जहाऊन हा जहाऊन काक काक मी ला मैं काँटी ली हाँदा। और वह कहता है कि उम मरे हाँद — और मुँह दण्डन मरत हा मछला हा जहाऊन — हाँद मैं जहाऊन है।”

कहाऊन कह वह होरमश्व ने उसकी पीठ पर एक हाँद जहाऊन से

वह 'ऊई' कर गया और हाँफने लग गया—और जो कुछ वह कहना चाहता था वह उसके गले में ही अटक गया। हौरेमहेव ने तेजी से जहाज़ से निकलकर सीढ़ियों पर जैसे ही पैर रखा कि सैनिकों ने सीढ़े खड़े होकर भाते तानकर उसका अभिवादन किया। उसने उनकी ओर हाथ हिलाया और चिल्लाकर कहा :

"विदा मिट्टी के डेलो ! अब इस विल्ली के वच्चे की आज्ञा का पालन करना—देखना कि कहीं यह रथ में से न खुदक जाय या कहीं अपने ही चाकू से घायल न हो जाय ।"

मैनिक हँस पड़े और उन्होंने उसका जयनाद किया परन्तु वह उसे मुनकर कुछ ही उठा और गुंता तानकर चिल्लाया : "नहीं मैं तुमसे विदाई नहीं ले रहा हूँ—मैं तुमसे शीघ्र भिर्लूंगा—क्योंकि तुम्हारी आँखें मुझे तुम्हारे दरारे बता रही हैं—मैं तुमसे कहता हूँ कि सम्मिलकर रहना अन्यथा मुझे सौटकर तुम्हारी पीठो पर पड़िट्याँ बघवान्नी पड़ेंगी ।"

उसने अपना सामान जहाज़ पर ही रहने दिया क्योंकि वहाँ ज्यादा हिफाज़त थी। फिर वह मेरे साथ चल दिया। अब उसने पहले की भाँति मेरे गले में हाथ डाल दिया और कहा : "आज मैंने बड़ी ईमानदारी का रास्ता पकड़ा है सि-यूहे ! आज मैं स्वतंत्र हूँ ।"

अब मैंने उससे 'मगर की पूँछ' के बारे में कहा तो वह बहुत खुश हुआ और तब मैंने साहस करके उससे कहा कि वह कप्ताह के उस तंदूरखाने पर पहुँच सगवा दे। उसने पहले के हाकिम की आज्ञा दी, जिसने वायदा किया कि दूसरे ही दिन वहाँ वह कुछ पुराने और डिम्बेदार सैनिकों को तैनात कर देगा—इस भाँति कप्ताह के लिए मैंने एक बड़ा काम कर दिया जिससे मुझे कुछ लगाना भी नहीं पड़ा।

"मगर की पूँछ" में अब मरिट उसके लिये बेव देबर खली गई तो उसने कहा :

"कबी तो मुन्दर है—शायद तुम्हारा..."

"नहीं !" मैंने उत्तर दिया। "यह मेरी कोई नहीं है" परन्तु हौरेमहेव ने उसके साथ कोई हरकत नहीं की। भाम्बरा तब तब मरिट ने वह सामने से गुली नई पोसाक नहीं पहनी थी अन्यथा शायद वह उस पर हाथ कर

देता। परन्तु दूसरी बार मदिरा लाने पर जब मैरिट ने उसकी चौड़ी पीठ और गुगुठित बाटुओं को देखकर प्रशंसा-युक्त नेत्रों में उसे देखा तो मैंने तीव्र स्वर में उसे वहाँ से भगा दिया।

होरेमहेय तीसरा गिलास पीने के बाद आँखों में आँसू भर बहने लगा :
 “कल धीवीज मे रक्त बहेगा मिन्यूहे ! और मैं उसे रोकने के लिए कुछ नहीं कर सकता—फराऊन मेरा मित्र है और मैं उसकी भूलतता के दावजूद उससे प्रेम करता हूँ ! एक बार जब मेरा बाज उसके पास लाया था, मैंने उसको अपने वस्त्र से उड़ाया था और तभी मेरा और उसका भाग्य जुड़ गया था....।”

फिर कुछ सोचकर उसने दीर्घ द्वासछोड़कर कहा : “ओह ! मेरे मित्र मिन्यूहे ! उम दिन से जब हम उस गंदे देश सीरिया में मिले थे, अब तक नील में बहुत जल बह गया है। मैं अभी फराऊन की आज्ञा से कुस के देश से सेना को वर्धास्त करके आ रहा हूँ और हम्मसी सैनिकों को धीवीज ले आया हूँ, सच पूछा जाय तो दक्षिण में देश इस समय अरक्षित है। अगर ऐसे ही चलता रहा तो सीरिया में शीघ्र बलबे होना अवश्यम्भावी हैं। शायद तभी फराऊन की समझ लौट आवे। जब से यह सिंहासनारूढ़ हुआ है तब से न्यूबिया की सोने की खानों में काम बंद है—अब आलसी को दंड से काम पर लगाना जायज नहीं है—निश्चय ही फराऊन और उसका नया देवता दोनों ही विविध हैं !”

फिर वह धुप हो गया। मैंने कहा :

“पर अम्मन भी तो भूटा देवता है—घृणित भी है और उसके पुजारियों ने एक लम्बे समय से लोगों को अधकार में रखा है। यहाँ तक कि यह हालत हो गई है कि लोग उनके विरुद्ध एक शब्द बहने की भी हिम्मत नहीं करते।”

वह मेरी ओर घूरकर देखने लगा फिर बोला :

“और कल वह हटाया जाएगा—वैसे उसका हटाया जाना ठीक भी है क्योंकि देन में फराऊन के मुखाबले में दूसरी शक्ति इन पुजारियों की हो गई है—और यह उचित नहीं है। दूसरे देवताओं के पुजारी लोगों को भी अम्मन के पुजारियों ने दबा दिया है—लोगों का यह हाल है कि वह

पुजारियों द्वारा ही शासित हैं—और यह बात छतरे से खाली नहीं है।”

“मेरे विचार से एटौन अच्छा देवता है।” मैंने कहा, “कम से कम यह लोगो को घोरसे मे तो नहीं रखता।”

“जो कुछ भी हो,” वह बोला, “पर देवताओं की शक्ति फराऊन से बढ़ती नहीं चाहिए।”

मैंने उसे हाटी-देश, थोट, बेबीलोन में जो कुछ मैंने देखा था सब उससे कह सुनाया— परन्तु वह नये मे खूब धायद ही उन सबसे कुछ तथ्य निवान सका।

सारी रात वह मेरी बांहों में सोया, परन्तु धीबीज मे सारी रात सैनिक घूमने रहे—उनके अस्त्र-दास्त्रों की खदखदाहट होती रही, चप्पाह और तंदूरखाने के मालिक ने देर सारे सैनिकों को अपने यहाँ बुलाकर उन्हें मुफ्त मदिरा पिलाकर उनको अपने यहाँ रोक रखा कि वह आपत्ति के समय उनकी रक्षा करें।

उस रात धीबीज में धायद ही कोई सोया हो। भयानक आतक छाया हुआ था—सोग बुरी तरह घबराये हुए थे। निश्चय ही फराऊन भी उस रात नहीं सो सका होगा—

परन्तु होरेमहेब—जो जन्म-जात सैनिक था—गहरी नींद सोया—

अम्मन के मन्दिर के सामने सारी रात भीड़ें लगी रही। गरीब ठंडी घास पर सेटे हुए थे। अम्मन के तेल सने मोटे पुजारियों ने बलि पर बलि दीं और माना प्रचार के भोग लगाये, फिर वह मौम और साध सामग्रियाँ लोगो में बाँटने लगे। मदिरा और रोटी के तो जैसे भंडार खोल दिये गए थे। पुजारी लोग अम्मन का नाम जोरो से उच्चारण करते और लोगो को समझ देने कि जो भी उसके प्रति सच्चा रहेगा वह साद्वन जीवन प्राप्त करेगा—

यह पुजारी लोग यदि चाहते तो रक्तपात बिस्तार न होता—उन्हें केवल भुज्जा पड़ता था और तब फराऊन उन्हें शान्तिपूर्वक रह लेने देना क्योंकि उसका देवता तो रक्तपात से बूना करता ही था। सैनिक अधिकार और धन ने उनके मस्तिष्कों को धेर दिया था, यहाँ तक कि वह मृत्यु ने भी

अब नहीं डरते थे। वह यह जानने थे कि मुठ के घिसे-पिटे सैनिकों के सामने नागरिकों की भीड़ें और उनके अपने पहरेदार लोग ऐसे बहु जायेंगे जैसे नदी की बाढ़ में तिनके बहु जाते हैं। पर वह अम्मन और एटोन के बीच रक्तपात इसलिए चाहते थे कि क्राऊन सदा के लिये सूनी और हथारा बहाने लगे—क्योंकि गृहयुद्ध छिड़ने के बाद उसकी सेना के बाले-बाले हम्पी लोगों का मिमियो का रक्तपात करना अवश्यम्भावी होता—वह चाहते थे कि अम्मन की बलि चलती रहे चाहे उसकी मूर्ति फेंक दी जाय और उसका मंदिर बंद कर दिया जाए।

आविस्कार रात बीत गई और तीनों पट्टाडियों के पीछे से एटोन की यात्री ऊपर उठने लगी—और रात की घीगलना के स्थान पर गर्मी छाने लग गई। हर राजगण और बीराहों पर मींग फूँके जाने लगे और क्राऊन की आज्ञापरकर गुनवाई आने लगी, जिसमें कहा गया कि—अम्मन नक्की देवता था—और उसे हटा दिया गया था और वह हमेशा-हमेशा के लिए गायब हो चुका था—कि उसका नाम मगुन ऊपरी और निचले साया-राज्य में नमाम निशाकटों, लुदाकटों—यही तक कि कछों में भी हटा दिया जाय, अम्मन की समस्त भूमि मवेशियाँ, दाम-दामियाँ, इमारतें, सोना-चाँदी, लौहा सब उध्व समझा जाय—वह सब अब कगऊन और उसके देवता एटोन का समझा जाय—क्राऊन ने लोगो को आज्ञागत दिया था कि वह उनके (अम्मन के) मंदिरों को गराये और उद्योगों को स्वमागारण के धूमने के लिए भेदान बना देगा—उसकी पवित्र ग्रीधों को सभी के तराने के लिए सोप देगा बड़ी गरीब लोग बड़ा लूटें और स्वयंनगुनई बड़ी पानी भर लें—उसने बापदा दिया कि वह उसकी आगर भूमि को बारी में बंट देगा—बापकर उनको बिनके पाम भूमि मरी थी—जिसमें कि वह एटोन के नाम पर काटन कर के सुभी ग्रीधन कप्री कर लें।

राजादा को आदेश के अनुसार लोगों ने बुधवार बुना था—उसके बाद सभी बगल भाव बिगमने लगे, "अम्मन! अम्मन!" नि-मगुन इनकी उबरमन की कि दीगने दिएने लगी। ऐसा लगेन मवा बीन बापन मगल रहे ही—सबूट और कर रहा हो—और सब बाजे बीनक चरमने। उनके मगल और मंदिर पुने मंदिर सब से उगल मग, उनकी अंधा की बंटे

दिसाई देने लग गई—और उन्होंने देखा कि गो वह काफी घे फिर भी भीड़ के सामने कुछ नहीं के समान थे। धीवीज का महानगर उमड़ पड़ा था। इतनी भीड़ उन्होंने जीवनभर में कहीं नहीं देखी थी।

उस भयानक रोर से हौरेमहेब भी जाग उठा। उठकर हम सीने अम्मन के मन्दिर की ओर चल दिये। मार्ग में एक फव्वारे के पास हम फारिग हुए और मुंह-हाथ धोकर जब मन्दिर पहुँचे तो देखा कि वह मोटी बिल्ली जैसा लगने वाला मया सेनापति अपने सैनिकों और रथों को मन्दिर के सामने भेजने में लगा हुआ था। जब उसे सूचना दी गई कि सब तैयार हो गए थे और हर सैनिक उसका उद्देश्य समझ गया था तो वह अपनी कलाई की हुई कुर्सी पर खड़ा हो गया और तीखी-पतली आवाज में चिल्लाया :

“मित्र के सैनिकों ! कुश के बीरो ! बहादुर शारदानाओ ! सब चलो और अम्मन की मूर्ति को उल्टा कर दो जो शापग्रस्त है—फराऊन की आज्ञा पूरी करो और तुम्हारा उपहार अमूल्य होगा ।”

इतना कहकर, क्योंकि वह समझता था कि उसका काम अब समाप्त हो चुका था। वह अपनी कुर्सी के नमं गद्दों पर बैठ गया और दास उसे हवा करने लगे क्योंकि बेहद गर्मी पड़ रही थी।

लेकिन मन्दिर के सामने असंख्य लोग खड़े थे—मर्द-औरत, जवान-बूढ़े और बच्चे, जब रथ आगे बढ़े तो वह नहीं हटे। भयानक कोलाहल हो रहा था। और घोड़ों पर चाबुक चटकी और वह फुदके रथ के पहिये अर्किर लुढ़के—भीड़ न हटी और रथ के घोड़े, पहिये भीड़ पर चढ़ गए। भारी पहियों के नीचे शरीर कुचल गए, घोड़ों की टापी से सिर फट गए और भयानक चीत्कार से वातावरण गुँज उठा। सेनानायकों ने देखा कि रक्तपात बिना वह आगे नहीं बढ़ सकते थे क्योंकि रक्त अब बहने लग गया था। उन्होंने सैनिकों को पीछे हटने की आज्ञा दी क्योंकि फराऊन की आज्ञा थी थी रक्तपात बिल्कुल न हो—फत्यर खून से भीग गए थे—घायल चीख रहे थे—भीड़ गर्जन कर रही थी अम्मन की जय-जयकार से आकाश गुँज रहा था। जब सैनिक पीछे हटे तो भीड़ ने समझा वह भाग रहे थे।

इसी बीच पैपीटमोन को ध्यान हुआ फराऊन ने अपना नाम इस राजाशा में, बदलकर, एखनैटोन रख लिया था—क्यों न वह भी उसे खुश

रखने के लिए अपना नाम भी बदल डाले, जब सेनानायक उनसे सलाह तथा आज्ञा लेने आये तो वह चुप लगा गया क्योंकि वह उसका असली नाम ले रहे थे। अंत में आखिरी पूरी फाड़कर बोला :

“मैं पैपीट्टमौन नामक किसी व्यक्ति को नहीं जानता, मेरा नाम तो पैपीट्टौन है—पैपी-ऐटौन का प्यारा।”

सेनानायक जिनके हर एक के हाथों में एक-एक सोने का कोड़ा था और जो एक-एक हजार सैनिकों के जत्थे का कमान अपने नीचे रखते थे, सुनकर बहुत चिढ़े, रथों का नायक चिल्लाया : “बिना पैदे के गड्डे में जाए ऐटौन ! यह क्या मूर्खता है ? हमें अपनी आज्ञा दो !”

तब पैपीट्टौन ने उनका उपहास करते हुए व्यंग से कहा : “तुम सोग योद्धा हो या औरतें ? भीड़ भगा दो—पर रक्त न बहाना क्योंकि उनके लिए कर्राऊन ने खासतौर पर मना कर दिया है।”

उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा और घृणा से धूक दिया। फिर क्योंकि वह और कुछ कर ही नहीं सकते थे, वह लौट गए।

इधर जब यह बातें हो ही रही थीं उधर भीड़ ने हथियारों को धर दबाया—उन पर पत्थर फेंके, कई हथियारों के सिर फट गए और वह गिर पड़े। वह अपने ही खून में नहा गए। छोड़े बिदक गए और रथवानों को उन्हें रोक्ना कठिन मालूम होने लगा। पत्थरों की बौछारें बराबर आनी रही।

जब रथों का नायक अपने सैनिकों के पास पहुँचा तो उसने देखा कि सबसे उत्तम नस्ल के घोड़े की एक आँख निकल आई थी और वह लंगड़ा हो गया था। वह धर-धर काँप रहा था। देखकर वह ऋद्ध हो उठा और पागल होकर चिल्लाया :

‘अरे मेरा सोने का तीर ! मेरा हिरन ! मेरा मूर्खपूँज ! इन कमीनों ने इसकी आँख निकाल ली—टूट्टर तो—!’ और वह रथ बढ़ा कर भीड़ में घुसा—फिर चिल्लाया : “कर्राऊन की आज्ञानुसार खून बहाना बर्जित है !”

फिर उसने बढ़कर सबसे ज्यादा चिल्लाने वाले बागी को पकड़कर रथ में खींच लिया और उसकी गर्दन लगाम में पँसा कर खींची—वह

मनुष्य घुट कर मर गया। उसकी देखा-देखी अनेक रथ बड़े और उन्होंने बहुत से आदमी इसी भाँति मार डाले। घोड़ों के नीचे अगणित पिस कर मर गए। भारी पहियों से बहुत से कट गए और भयानक कराहे उठने लगी—रक्त से पृथ्वी भीग गई। जब रथ वाले मरे हुए लोगों की लाशें सटकाये लौटे तो भीड़ में भयानक घातक छा गया। तभी न्यूविया के मैनिशों ने क्षुण्ण स्रोते और प्रत्यंचा में जकड़कर वह लोगो को धोत कर मारने लगे, उन्होंने बच्चे भी पीट दिए। परन्तु पत्थर अब भी फिक रहे थे और सैनिक उन्हें अपनी डालो पर रोक रहे थे। भयानक कोलाहल हो रहा था—और तभी भीड़ ने एक रथवान को शीघ्रकर नीचे गिरा दिया। “मारो मारो” का नारा लगा—और लोगों ने उसके गिर को पत्थर पर दे मारा—वह छटपटा कर मर गया—रक्त में रक्त मिलकर बहने लगा। भीड़ अब और क्रुद्ध हो उठी थी।

सेनापति पैपीटैटोन परेशान हो उठा था। उसे अपनी सूझान की बिल्ली का ध्यान हो आया था। आज वह बच्चे देने वाली थी और वह यही स्पर्श में समय गँवा रहा था जबकि उसे इस समय उनके पास रहना जरूरी था। वह चिल्लाया :

“मिरी बिल्ली अकेली है ! मुझे जाना है। एटोन के नाम पर जाओ और उस अभिषेक अम्मन की मूर्ति को उल्टा कर दो, बरना मैं और तमाम घेतानों की शपथ ! मैं तुम्हारे गले की जजीरो को छीन लूँगा और तुम्हारे कोहों को तोड़ दूँगा—”

मैनिशों ने जब यह सुना तो वह समझ गए कि उनके साथ छोटा ही रहा था और उन्होंने कम-से-कम अपनी मैनिश सर्वाश रखनी चाही। उन्होंने झूह बनाया और भीड़ पर हमला कर दिया। भीड़ उनके सामने ऐसे साफ हो गई जैसे बाढ़ के सामने निनवा। हिंसाओं के भावें रक्त में माल हो गए और खून बहने लगा—और उन्होंने सो धार हमले हिंसे और हर बार तो पुष्प-रुनी-बच्चे-बूढ़े मार डाले। एटोन के नाम पर भूमि साक्षों से पट गई। अम्मन के मंदिर का दीर्घद्वार बन्द कर दिया गया और पुकारी उन्हें तार देने लगे। अब लोग भागे—मैनिशों ने उन्हें धुन-धुन-कर मारा—रथ उनके पीछे दौड़ पड़े और तब लोगों में भयानक आतंक

फिर छा गया। लोग भाग रहे थे—गिर रहे थे—जिसका जहाँ स
समाया गया वहीं छिपने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु प्रतिशोध की क
वार वहाँ भी उन्हें नहीं छोड़ती थी।

इशिया पर लुन चढ़ गया और वह निरंकुश हो कर हत्या कर
लगे। भीड़ घबराकर एटोन के मंदिर में घुस गई और उन्होंने वहाँ
पुत्रागियों को काट डाला और बाल-स्नग्म को उखाड़ फेंका। रथ वहाँ
आ गए। और फिर जो मार-काट हुई तो एटोन के मंदिर का दिनाग
पक्का प्राण रक्त में खमकने लग गया।

पर अम्मन का मोटा तबिये का द्वार बन्द हो चुका था। ऊपर से मंदिर
के पत्थरदार सीर खला रहे थे। मंत्रियों ने मंदिर घेर लिया था पर भागे
उन्हें और कुछ नहीं सूझ रहा था। गाड़ा लून रात्रपथ पर जम गया था—
उम पर मक्षिणयी भिनभिना रही थी।

पैरोट्टोन ने अपनी मुक्कन की कुर्मी पर बैठे हुए देखा कि दूर-दूर तक
जाने जैसी गहरी थी—धूम उठ रही थी—मक्षिणयी भिनभिना रही थी,
रक्त बह रहा था। बह घबरा गया और बदबू से परेशान हो उठा। अपने
दामों को आज्ञा दी कि अगस्त-धूम जलाया जाये अपने अपने कपड़े वाड
दाये।

फिर भी उसे अपनी शिखी की याद आ रही थी। बह आने नायकों
में घोड़ा।

‘मुझे डर है कि जो कुछ हुआ है उसे मुनकर कराउन अगस्त कुछ
ही उठा। क्योंकि इनका सब करके भी मुझे अभी तक अम्मन की मूर्ति की
उठा नहीं दिया है उम्हें जानियाँ में रक्त की धारें बहा रही हैं। मैं अब भी
कराउन के नाम जाना हूँ—निश्चय ही मैं मुनगा रात्र भूना—और
बायें में अपने घर भी होगा आऊँगा। क्योंकि मेरी बिनी आज बन्ना
देने वाली है—कि मुझे बन्ना भी बदलने है—वही बदल बदल है—आज
रात्र हम करेकर को नहीं लाएँ अपने—मद कराउन की निश्चय बात
होगा कि अब क्या किया जाय।’

बह जाना लगा। लेकिन मंदिर में रुक गए। बायें नहीं रही। पर वह
सीखी की बायें की मूर्ति को आई जो बह मुनी पर बैठकर जाने लगे।

फिर जो रातें गुजरी उनमें महानगर में जगह-जगह आग लगी—
हमियाँ ने सोने के प्यालों में मदिरा मुफ्त पी और शारदाना और न्यूविया
के मैनिक घरों में घुस कर नर्म से नर्म गद्दों पर गृहणियों के साथ सोये।
महानगर के सभाम गंडी का दाँव लग गया—चोर-बदमाश, भत्रचोर,
उच्चकें लूटमार करने लगे। वह न एटोन से डरते थे न अम्मन से। उन्होंने
एटोन को धन्यवाद दिया कि ऐसा शुभदिन उन्हें दिखाया। एटोन का
मन्दिर फराडन की आशा से तुरन्त पवित्र कर दिया गया था और वहाँ
भक्तों को मुक्त-हस्तों से जो जीवन पदक बाँटे गए थे, मारे बदमाश
उन्हें ले आये थे और उन्हें पहनकर सैनिकों से मुक्त होकर खुली लूट कर
रहे थे। यीवीज की शक्ति और संपत्ति घायल के शरीर से रक्त के समान
बह रही थी।

होरेमहेव मेरे घर रुका रहा। ओप से उसके नेत्र लाल हो गए। मुली
उसका विशेष सत्कार करती और बारम्बार उसे स्वादिष्ट भोजन परोसती।

होरेमहेव ने कहा : “मुझे अम्मन या एटोन की परवाह नहीं है—मुझे
तो दुःख केवल अपने सैनिकों के लिए है जिन्हें आजकल उद्‌ण्ड बना दिया
गया है। इससे पहले कि वह फिर अनुशासन में लाये जायें मेरे कोड़े उनकी
पीठों पर मुझे बरसाने पड़ेंगे। यह मेरे बड़े अच्छे सैनिक है और बस यही
मुझे दुःख है।”

और कप्ताह दिनों-दिन मालदार होता गया। उमका बेहूरा चिक-
नाहट से सना हुआ चमका करता। रातों को वह अब ‘मगर की पूँछ’ में
ही रहा करता क्योंकि सैनिक लोग उसे मदिरा के मूल्य में मृद्वी भर कर
सुवर्ण देते और तड़ूरखाने के पिछवाड़े के कक्षों में चोरी के माल के ढेर
के ढेर जवाहिरात, सोना-चाँदी, चटाइयाँ इत्यादि के ढेर लगे रहते क्योंकि
मदिरा के बदले चाहक इन्हें बिना मूल्य ठहराये ही पटक जाते थे। ‘मगर
की पूँछ’ पर कोई हमला नहीं करता था क्योंकि होरेमहेव के मैनिक वहाँ
पहरा दे रहे थे।

तीस रे दिन मेरी दवाइयाँ खत्म गईं और सोने के मूल्य में भी कहीं न

मिल सकी। लाशों और गदले पानी में जो रोग गरीबों के मुहल्लों में पड़े थे, उनसे मैं लोगों को नहीं बचा सका। मैं बुरी तरह थक गया था और मेरे आँखें लाल हो गई थीं—मेरी तबीयत सबसे ऊब गई थी। अम्मन, ऐटी, गरीब-अमीर, ज़रम—सबसे, और मैं 'मगर की पूँछ' चल दिया। बगल जाकर मैंने भर-भर कर मदिरा पी। फिर वहीं सो गया।

सुबह जब मैरिट ने मुझे जगाया तो मैंने देखा कि मैं रात-भर उमी में सोया उसी की चटाई पर सोया था। मुझे रात की बातों पर ध्यान हो आया और शर्म से मेरा सिर झुक गया। मैंने मैरिट से कहा: "जीवन एक ठंडी रात के समान है लेकिन यदि दो एकाकी मिल जाते हैं तो वह सुखकर हो जाती है—हालांकि उनके हाथ और उनकी आँखें साफ़ बतला देती हैं कि वह मित्रता बनाये रखने के लिए कितनी बड़ी झूठें—छिपा रहे हैं।"

मैरिट ने नींद की खुमारी में अलसाई हुई जम्हाई ली। फिर बोली: "तुम कैसे कहते हो कि मेरे हाथ और आँखें झूठ बोलती हैं? सैनिकों की उँगलियों को झटकने और उनके पैरों में लान मारती हुई मैं थक गई हूँ और मिन्यूहे! यहाँ तुम्हारे बगल में ही मुझे पूरे शहर में सुरक्षित स्थान मिल पाया है—जहाँ मुझ पर कोई हाथ नहीं डाल सकता। ऐसा क्यों है मैं नहीं कह सकती, लेकिन लोग कहते हैं कि मैं सुन्दर हूँ। मेरा पेट अत्यन्त सुभावना है—हालांकि तुमने उसको देखने का कष्ट नहीं किया है।"

उसने मुझे मदिरा दी जिसे पीकर मैंने अपना दिमाग साफ़ किया। उसने मुझे मुस्कराकर देखा परन्तु फिर भी उसकी आँखों की गहवाई में मुझे दुःख दिखाई दिया—जैसे गहरे कुएँ में पानी।

और धीधीध में अनाति बनी रही। लूट-खसोट, जोर-जबर्दस्ती और रक्तपात होता रहा। रातों को जगह-जगह स्त्रियों की चीखें सुनाई देनीं जहाँ सैनिक बलात्कार करते। मुझे ऐसे समय अपने पिता और माता की याद हो आई और मैंने अपना एक उद्देश्य पूरा करने की टानी।

पाँचवें दिन सैनिकों ने अपने हाकिमों की आज्ञा मानने में मी इन्कार कर दिया—उद्घुष्टना पराकाष्ठा को पशुंच चुकी थी। उन्वन्नशास्त्रागिनों ने जाकर पैपीटैटोन को दबाया कि वह पुराऊन के पास आकर वाग्नविह मियनि समस पाया। पैपीटैटोन स्वयं मुद्ध और रक्तपात में ऊब गया था

और फिर उसे अपनी विल्लियों से भी दूर रहना पड़ रहा था ।

परिणाम यह हुआ कि फराऊन के दूत मेरे घर हीरेमहेब को बुलाने आ गए । हीरेमहेब अपनी सीमा पर से सिंह की भाँति उठा—नहाया, वस्त्र बदले और बड़बड़ाने हुए चला गया । अब स्वयं फराऊन का अधिकार भी सतरे में आ गया था—कल की कोई नहीं जानता था ।

फराऊन एखनैटोन के सम्मुख जाकर उसने अभिवादन के उपरान्त कहा : “अब एक पल भी नष्ट करने का नहीं है—यदि तुम चाहते हो कि फिर सब कुछ वैसा ही हो जाय जैसा कि था तो मुझे अपना अधिकार तीन दिन के लिए दे दो—तीसरे दिन मैं उस अधिकार को तुम्हें लौटा दूँगा । तुम्हें कोई जरूरत नहीं पड़ेगी कि जानो कि क्या हुआ ।”

“तुम अम्मन को उखाड़ दोगे ?” फराऊन ने पूछा ।

“निश्चय ही तुम्हारे ऊपर देवता सवार है,” हीरेमहेब ने कहा ।

“लेकिन अब जो कुछ हो चुका है उससे अम्मन को उखाड़ना ही पड़ेगा यदि फराऊन की धान कायम रखनी है—निश्चय ही मैं उसे उखाड़ दूँगा—परन्तु यह न पूछो कि मैं क्या करूँगा ।”

फराऊन ने कहा : “तो तुम उसके पुजारियों को कोई नुकसान मत पहुँचाना क्योंकि वह अवोध है—जानते नहीं हैं कि वह क्या कर रहे हैं ।” हीरेमहेब कोष की धुँट की पीकर बोला :

“निश्चय ही तुम्हारा तिर सोल देना चाहिए क्योंकि यह स्पष्ट है कि इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है—लेकिन फिर भी मैं तुम्हारी आज्ञा मानूँगा—कम-से-कम उस घड़ी की मर्यादा के लिए जब मैंने तुम्हें अपना उत्तरीय उढाया था ।”

और फराऊन ने रोकर उसे अपना बोझ और राजसी चिह्न दे दिया कि वह उन्हें तीन दिन तक रखे । यह सब बातें मुझे बाद में हीरेमहेब ने ही बताई थीं ।

और फराऊन के सुवर्ण रथ में आरुढ़ होकर हीरेमहेब नगर को आया और मुहल्ले-मुहल्ले में सैनिकों को आवाज देता हुआ—उन्हे नाम लेकर बुलाना हुआ वह रथ दोड़ाने लगा—विश्वस्त सैनिकों से उसने सींग फुँक-बाये और सैनिक जब उमड़ने लगे तो उन्हें विविध झंडों के नीचे एकत्रित

भर । जोड़ें । घन घन रहेंगे । अब मंदिर के पुजारियों ने देखा कि फाटक टूट जाएगा तो सींगे फँकवा दिए—उधर हथौड़ी भी दीवारों के पास आ गये थे । सींगे फँकवाने का अर्थ था कि मुनहूँ कर ली जाय—व्यर्थ खून-गुनगा न हो । उनका कहना यह था कि अम्मन ने काफी बलि ले ली थी और अब वह उन लोगो को आगे बची काम में आने देने के लिए मरने देना नहीं चाहते थे ।

मंदिर के दीर्घ द्वार अर्धवृत्त खूल गए और होरेमहेब की आज्ञा से मैनिबो ने छन्दर की भीड़ को भागकर निकल जाने दिया । लोग अपने प्राणों को लेकर भागे और गिरते-पड़ते उन्होंने अपने घर लिए ।

अब होरेमहेब के कब्जे में बाहरी तमाम प्रांगण, गोदाम, घुड़खाना, मंदिर के बाग़ानें इत्यादि सभी आ गए थे, केवल थोड़े से लोग मरे थे, फिर जीवन-मृत इत्यादि भी जीत लिये गए, होरेमहेब ने वहाँ के वैद्यों को आज्ञा दी कि वह नगर में जाकर बामनों का इलाज करें । मृतकगृह की ओर कोई नहीं गया क्योंकि वह तो एक ऐसा विभाग था जिसका बाहरी दुनिया में कोई सम्बन्ध ही नहीं था ।

बालु जब मेला छन्दर नाम मंदिर के सामने पहुँची तो अम्मन के पुजारियों ने अन्तिम विरोध किया । उन्होंने अपने मैनिबो पर जादू कर दिया और उन्हें ऐसी दवाएँ मंदिर में मिलाकर दिया की वह भया-मरणा से दृढ़ बनने लगे । स्वयं पुजारी लोग भी हथियार लेकर सामने आ गए थे ।

रात लंबी भारकाट होती रही और अम्मन के घारे मैनिबो का जादू समाप्त कर दिया गया । केवल मरने उँचे दहों के पुजारी अपने देवता की दर्शना को ले लगे रह गए । होरेमहेब की आज्ञा से दृढ़ बन्द कर दिया गया । मैनिब लानों को उल्टा-उठाकर नदी में फेंकने लगे—

और अब होरेमहेब ने पुजारियों के साम आकर कहा : “मैं स्वयं अम्मन के विरुद्ध नहीं हूँ क्योंकि मैं होरस का आकर हूँ जो मेरा बाप है । फिर भी मुझे बग़ावन की आज्ञा का पालन तो करना ही होगा । क्या वह मुझसे बिल् और मरे बिल्—दोनों के बिल् अच्छा न होगा यदि मैनिबो को होरस के बिल् कोई दुःख ही न मिले ? क्योंकि स्वयं मैं एरिब मुनि का

ग्रंथ कर रहे थे। उस रात धीबीज में एटीन के नाम पर महोत्सव मनाया जा रहा था और किसी और हथेली में कोई अन्तर नहीं रह गया था। इसकी देखा-देखी दरबार की स्त्रियों ने अपने शयन कक्षों में न्यूविया के हथेलियों का स्वागत किया और अपनी नई धूम्र श्रुति की पोशाकों को फेंककर उनके पौरुष की परीक्षा की थी। और तब यदि कोई मंदिर के धायल सैनिक अपनी बेहोशी में कहीं दीवाल की छाया से निकलकर 'अम्मन-अम्मन' की आवाजें लगाते तो सैनिक उनके सिर पक्के फर्श पर लौट देते और स्त्रियाँ उनके चारों ओर मदोन्मत्त होकर नाचने लग जाती।

यह सब मैंने अपनी आँखों देखा था। कैंसा या मनुष्य का जीवन कि कुछ ही घंटों में हत्याओं को भूलकर उत्सव मनाने में लग रहा था। और मुझे सैरिट की कही बातें याद हो आईं। मुझे अपने माता-पिता की याद हो आई और मैं पागलों की भाँति उठा और कुछ सैनिकों को लेकर अपना एक अभीष्ट सिद्ध करने चल दिया। सैनिकों ने मुझे हीरेमहेव के साथ देखा था—वह मुझसे भय करते थे—तुरन्त मेरे साथ चल दिए।

मैं नेफर नेफर नेफर के घर के सामने जाकर रुक गया। यहाँ मेरे पैर लड़खड़ाने लगे परन्तु मैंने अपूर्व साहस से सैनिकों से कहा : "हीरेमहेव—फराऊन के सेनापति की आज्ञा है—इस मकान में घुस जाओ। तुम्हें एक स्त्री मिलेगी जो गर्व से अपना सिर ऊपर उठाये रखती है—उसकी आँखें पन्ने की तरह हरी हैं—उसे यहाँ ले आओ—यदि वह विरोध करे तो उसके सिर में भाले की मूँठमारो और उसे उठा लाओ—परन्तु उसे मारना मत।"

सैनिक हँसते हुए उस घर में घुस गए। शीघ्र ही वहाँ भगदड़ मच गई। वही के अतिथि भागने लगे और नौकर पहरेदारों को बुलाने लगे। परन्तु तब तक सैनिक हाथों में सहद में डूबी रोटियाँ, मंदिर के पात्र इत्यादिके साथ नेफर नेफर नेफर को उठा लाये थे। वह नायब उनसे लड़ी थी तभी उसके सिर पर गुम्फ उछल आया था। जहाँ भाले की मूँठ मारी गई थी, वहाँ थोड़ा खून भी निकल आया था। उसके सिर से ओढ़नी (विग) हट गई थी और वस्त्र फट गए थे। मैंने उसके स्तनों पर हाथ

रखा—वह गर्म थी परन्तु मुझे लगा जैसे मैंने किसी साँप पर हाथ र दिया था । उसका हृदय धड़क रहा था जिससे मैंने जान लिया कि वह जीवित थी फिर भी मैंने उसे एक काले कपड़े में लपेट लिया जैसे मुँदें लपे जाते हैं और उसे लेकर अपनी कुर्सी पर बैठ गया । पहरेदारों ने मुझे नहीं टोका क्योंकि मेरे साथ सैनिक जो थे । मैंने दासों से कहा कि मृतकगृह क

और इस भाँति नेकुर नेकुर नेकुर से मैंने बदला ले लिया। परन्तु बाद में मुझे पता लगा कि मेरे इस बदले से उसकी कोई हानि नहीं हुई।

और मैं 'मगर की पूँछ' लौट आया जहाँ मैरिट से मैंने कहा - "मैंने अपना प्रतिशोध ले लिया है—परन्तु फिर भी न जाने क्यों मेरे मन को क्षान्ति नहीं मिल सकी है—मेरे हाथ-पैर अब भी ठंडे हैं हालाँकि रात काफी गर्म है।"

मैंने मदिरा पी और वह मुझे बुरी लगी। मैंने घुणा से कहा - "यदि कभी किसी स्त्री पर मैं हाथ रखूँ तो मेरा शरीर नष्ट हो जाय ! क्योंकि मैं जितना उसके बारे में सोचता हूँ उतना ही मेरा मन बढ़ता जाता है।"

मैरिट ने मेरे हाथ पकड़ लिये और स्नेहसिक्त स्वर से कहा : "ध्यान करनेवाली, भला बान्हनेवाली स्त्री से शायद अभी तक तुम मिले ही नहीं हो।"

और मैं फिर मैरिट को बाहुओं में लेकर उसी की बटाई पर सो गया। मैंने उठते कहा : "मैरिट मैंने एक स्त्री के साथ पहले पड़ा फोड़ लिया है पर वह अब मर चुकी है—उसके सिर के बाल बाँधने का बोझ का पीना मेरे पास अब भी मौजूद है—परन्तु फिर भी यदि तुम कहो तो हमारी मिथना के कारण मैं तुम्हारे साथ फिर पड़ा फोड़ भूँ।"

उमने जगह्राई सो और मेरे गालों को छूकर बोली :

"तुम्हें 'मगर की पूँछ' का प्य अब कभी नहीं पीना चाहिये—इसमें तुम्हारा दूसरा दिन भी गराब हो जाता है।"

मैंने उसे ध्यान से अक मे भर लिया। फिर उमने कहा : "तुम एकाकी हो और मैं भी हूँ, परन्तु मसार से और भी बहुत से ऐसे हैं। मैं तुम्हें किसी भी स्त्री के साथ रहने से कभी नहीं रोकूँगी—और न तुम्हीं को मेरे मार्ग से आना चाहिए। फिर तुम तो जानते हो कि मैं तदुत्पत्ताने से ही बड़ी हुई हूँ—न कोई मई मदकी हो हूँ कि पुराणों से परिचित न होऊँ—"

मेरा हृदय पत्थी की भाँति हल्का हो गया—मुझे उम समय तना देने अब कुछ कुछ भी नहीं हुआ था और जो होना था वही मेरे लिए सब कुछ था।

दूगरी गुबह में मैरिट का साथ लेकर फराऊन की सवारी देखने गए। वह अपनी नई धीप्मन्तु की पोशाक पहने हुए अपने कमनीय सवारी की हात्ताकि वह तदूरसाने में ही पत्नी हुई थी—फराऊन के कृपापात्रों लिए पहले से ही निर्धारित स्थान पर जब मैं उसे साथ लेकर पहुंचा तो मुझे उसके कारण तनिक भी शर्मिन्दा न होना पड़ा।

मेरी वाला राजपरिवार रगबिरगी श्रद्धियों से सजाया गया था और मा के दोनों ओर लोगों की अपार भीड़ लगी हुई थी। दोनों ओर उद्यानों में पेड़ों पर लहके खड़े गए थे और पैसीटैटोन की आज्ञा से राजमार्ग पर अगणित फूलों की टोकरियाँ रख दी गई थीं कि रीति के अनुसार जब फराऊन आने लगे तो लोग उसके सामने फूल बरमावें। मेरे मन में उल्लास और आशा बंध रही थी क्योंकि देव की स्वतंत्रता का आभास होने लगा था। मुझे फराऊन के यहाँ से एक सुवर्ण का बड़ा पात्र दिया गया था। और मैं राजपरिवार का सिर खोलनेवाला बंध बना दिया गया था। वजन में मेरे एक सुन्दर तरुणी लड़ी थी जो कि मेरी मित्र थी और जहाँ-जहाँ भी दृष्टि जाती थी मुझे लोग खुश और हँसते ही दिखाई देने थे।

फिर भी निस्तब्ध वातावरण छाया हुआ था—यहाँ तक कि मंदिर की छतों पर से कौबों की काँव-काँव भी सुनाई दे रही थी। उन दिनों कौबे और गिद्ध धीबीज से इतने हिल गए थे कि वहाँ से लौटकर पहाड़ों को जाने ही न थे।

फराऊन ने अपनी कुर्सी के पीछे मुख पर रंगपुने हुए हथियों को लाकर गलती की। केवल उन्हें देखकर ही लोगों में क्रोध फूट निकला क्योंकि ऐसे बहुत थे जिन्होंने उनके हाथों इन दिनों चोट खाई थी।

लेकिन फराऊन ऐखनैटोन लोगों के सिरों से भी बहुत ऊपर दिखाई दे रहा था—उसके सिर पर दोनों साम्राज्यों का ताज था—उसकी बहि उसके सीने पर बंधी थी और हाथों में राजदंड और चाबुक इत्यादि थे। वह मूर्तिवत बिना हिले-डुले बैठा था—ठीक उसी प्रकार जैसे हर समय के फराऊन लोगों के सामने बैठने आये थे—और जब वह आया तो भयानक

छा गया जैसे उसे केवल देखकर ही लोग गूँगे हों गए हों। मार्ग-निर्देशकों ने भागे उठाकर उसका जय-जयकार किया और लोगों ने

राजसी कुर्सी के सामने फूल फेंककर जय बोलना शुरू कर दिया। लेकिन तभी भीड़ में उस जय-जयकार को चुप कराने के लिए आवाजें उठने लगी और उनके सामने वह जयकार नगाड़े के सामने तूती जैसा प्रतीत होने लगा। लोग आश्चर्य से घबराकर एक-दूसरे को देखने लगे और तब तमाम रीति-रिवाजों के विरुद्ध फराऊन हिला और उसने अपना राजदंड और कोडा उठाकर लोगों का अभिवादन किया—भीड़ पीछे हट गई और हटानु उनमें से कई वयस्कठ समवेत गर्जन कर उठे—जैसे महासमुद्र में भी तहरें भीषण लहरानों से टकराकर रोर कर उठी हो।

“अम्मन ! अम्मन ! हमे अम्मन वापस दे दो सारे देवताओं का राजा अम्मन !”

और अम्मन का जयनाद गूँजने लगा था। प्रत्येक जयनाद पहले से भयंकर होने लगा जिन्हे सुनकर धील-कौवे उड़-उड़कर फराऊन के ऊपर घबरा लगाने लगे और लोग चिल्लाये :

“नरसी फराऊन ! वापस जाओ—जाओ !”

अग-रक्षाक डर गए। कुर्सी जहाँ थी वहीं रुक गई और साथ के सैनिक और उसके नायक घबराकर इकट्ठे हो गए परन्तु मेढ़ों वाले उस राजपथ पर लोग ऐसे टूट पड़े कि उनका प्रवाह रोके न सका और तब वह हासन हो गई कि जो कुछ हुआ उसका ठीक-ठीक पता नहीं था सचा सिपाही लोग भीड़ को रोक रहे थे पर भीड़ ही वह उनसे अपनी आत्मारक्षा में लड़ने लगे। हवा में भाते धने, लकड़ियाँ चलीं और पत्थर उड़ते दिसाई देने लगे और राजपथ पर रक्त बहने लग गया। गुमुम रोर हो रहा था—मारो ! मारो ! वह हली ! वह ! जाने न पाये ! एटीन का भाग हो ! इत्यादि से बानावरण गूँज उठा।

परन्तु फराऊन के ऊपर किसी का हाथ नहीं उठा। वह मूर्ख का पुत्र था—तमाम फराऊनों की भाँति—उमका सरीर पवित्र था—पूरी भीड़ में एक भी आदमी ऐसा नहीं था जो उस पर हाथ उठाने की समझ रखता। उस पर स्वयं से भी हाथ तो हाथ, अर्थात् भी नहीं उठाई जा सकती थी—किस विचार है कि पुत्रापी लोग भी ऐसा करने की सोच नहीं सकते थे। फराऊन के मर निर्धन होकर देना, फिर वह अपनी जान घुनकर उठ खड़ा

या केगों में उसी मिसत्री जो सब फराऊन एगिप्टोन के नये देवता के वाग्म्य बहाई गई थी; परन्तु फराऊन जैसे उगमे अनभिज्ञ था—वह अपने बंध में नयं बटाई पर सेटा हुआ था—जहाँ अनुचर उसके शरीर में सुगंधित सेन मग रहे थे और सुगंध भी जला रहे थे कि वह वहीं अपने देवता की सुगंध न सूँघ सके।

दस दिन तैरने के बाद नदी फिर शुद्ध हो गई और तब फराऊन जहाज की कमान में आकर खड़ा हो गया। तट की भूमि उस शीघ्र ऋतु में पीली दिखाई दे रही थी और किसान लोग अपनी फसलों को इकट्ठी कर रहे थे। शायो को वह अपनी मवेशियों को नदी में लाकर पानी पिलाने और दुनाली बाँगुरियाँ आनन्द से बजाते।

जब लोगों ने फराऊन का पोंत देखा जो वह स्वेन वस्त्र धारण करके नदी तट पर आकर खजूर की टहनियाँ हिलाकर चिल्ला-चिल्लाकर उनका अभियादन करने लगे। फराऊन की आज्ञा से कभी-कभी जहाज किनारे लगा दिया जाता और तब वह अपनी प्रजा से बातें करने, उन्हें छूने और उनकी स्त्रियों और बच्चों को आशीर्वाद देने नीचे उतर जाता, भेटें भी शर्माती बनकर आती और उसके वस्त्रों को अपनी नाक लगाकर सिर हिलाने लगती—और उन्हें देखकर वह बहुत खुश होता।

रात्रि के अवसान में वह पोंत की कमान में सड़ा होकर चमकने हुए सितारों को घूरकर देखा करता। उसने मुससे कहा :

“नकली देवता की भूमि में इन सब गरीबों को बाँट दूँगा—” फिर एक बार कहा :

“मनुष्य का हृदय अंधेरी रात जैसा काला है—धीधीज अंधेरी रात के समान है—एटीन का साम्राज्य उज्ज्वल है अतएव मैं धीधीज में नहीं रह सकता—सितारों से मुझे भय लगता है क्योंकि जब वह टिम-टिमाने हैं तो गीदट चिल्लाने लगते हैं—शेर अपनी माँ से निकलकर रक्त पिपासा में दहाड़ने लगता है—मुझे पुरानापन कुछ भी अच्छा नहीं लगता। क्योंकि वह सब रात के समान है। बच्चे कितने अच्छे होते हैं सिन्यूदे ! वही नये ससार—एटीन के संसार के सच्चे प्राणी हैं—वही आगे ————— को भर देंगे—संसार बदल

जायेगा—मैं पाठशाळाएँ हर जगह खुलवाऊँगा जहाँ पाठ्यक्रम बदल दूँगा—लिखना भी आसान बना दूँगा कि गाँव में लोग लिख सकें—पढ़ सकें—कि जब मैं उन्हें एटोन का संदेश लिखकर भेजूँ तो वह स्वयं उन्हें पढ़लें लाह ! तब कितना आनंद होगा । ”

फराऊन की बातों ने मुझे चक्कर में डाल दिया । इस नई लिपि के बारे में जिसकी ओर उसका संकेत था, मैं जानता था कि वह आसान थी परन्तु वह पवित्र नहीं मानी जाती थी और न प्रचलित लिपि के समान सुन्दर ही थी । मैंने कहा :

“नई लिपि सुंदर नहीं है और न पवित्र है—और यदि सभी लिखना-पढ़ना सीख जायेंगे तो मिस्र का क्या भविष्य होगा ? ऐसा कभी नहीं हुआ है—फिर भला मेहनत कौन करना चाहेगा ? खेत सूने पड़े रह जायेंगे—और फिर जब लोग भूखे मरने लगेंगे तो लिखने-पढ़ने का आनंद कौन भोगेगा ? ”

मुझे शायद यह सब नहीं कहना चाहिये था क्योंकि मुझसे ही वह मुँह मिथोड़कर गुस्से से बोला :

“तो अधिकार मेरे इतने पास मौजूद है ! सिग्यूहे ! वह तुममें साक्षात्कार होकर बोल रहा है—तुम मेरे पवित्र मार्ग में शक के रोड़े अटका रहे हो—परन्तु ध्यान रखो कि सत्य मेरे अंदर उज्ज्वल अग्नि की भाँति जलता है । मेरी आँखें अड़चनों के पार ऐसे देख लेती हैं जैसे वह अड़चनें सब पवित्र जल की हो और जो दुनिया मेरे बाढ़ आयेगी उसे मैं साफ देख रहा हूँ—उस दुनिया में न भूषण है न भय है—लोग सब मिलकर मेहनत करने हैं और वहाँ न अमीर हैं न गरीब हैं—सभी बराबर हैं—सभी लिख-पढ़ सकते हैं और जो कुछ मैं उन्हें लिख कर भेजता हूँ उसे वह पढ़ सकते हैं—कोई किसी से ‘गदे सीरियन’ या ‘घृणित ह्यूजी’ नहीं कहता—सभी भाई-भाई हैं और मसार से मुक्त समाप्त हो गया है—इन सबको देख कर मेरी शक्ति बढ़ जाती है और मुझे इतना खादा आत्ममनोष होने लगता है कि मेरा हृदय फूट उठता है और ऐसा लगने लगता है कि वह मुझी से फट जाएगा । ”

मैंने उसे औषधि पिलाकर गुना दिया । मैं उसके पागलपन के बारे

में सोच रहा था और तब मुझे लगा कि उसके पागलपन में भी कितना सार था—कैसी थी उसकी वह बातें जो हृदय में डंक की तरह सघ जाती थी—कितनी सच्चाई थी उसके संदेश में! मेरा विचार है कि उसका वह सत्य बाकी तमाम सत्यो से ऊँचा था। हालाँकि उसी सत्य के पीछे पृथ्वी रक्त-रजित हो रही थी, मैं सोचता हूँ कि ऐसा भी संसार वहीं हो सकता था जैसा एस्तर्नटोन चाहता था—कहते थे कि मृत्यु के उपरांत पश्चिमी देश में ऐसा ही साम्राज्य मिलता था जहाँ होकर आत्मा को जाना पड़ता था—पर कौन जाने, क्योंकि मृत्यु के बाद का हाल कितने देना था। शायद वह झूठी ही हो। मैंने आकाश में चमचमाते तारे देने और मुझे अनुभव होने लगा कि मैं एकाकी था—और तभी मुझे लगा कि फराऊन एस्तर्नटोन महान् था—शायद वह संसार को बदलने के लिए ही पैदा हुआ था—क्योंकि जो कभी नहीं हुआ उसे वह कर दिखाना चाहता था—वह ममर्ष था, कर भी मगना था—किर क्यों न मैं उसके साथ रहूँ और उसे महारा हूँ—उमका साहस बढ़ाऊँ? मिस ही तो गंगार का मवमे बड़ा देना है फिर क्यों न वहीं मवमे सत्य का मार्ग प्रदर्शित करे? और मुझे लगा शास्त्र काय में खानू रीति-रिवाज टूट गए हैं—नई दुनिया का प्रकाश फैल रहा है।

पंद्रहवें दिन फराऊन की आज्ञा से पोत रोका गया। वहाँ तट पर की भूमि न देवता की थी न किसी मनुष्य की। दूर तक वह भूमि सुषर्णमयी बनकर सुष के प्रभाग में चमक रही थी—उसकी पृष्ठ-भूमि में नीली पहाड़ियाँ पहेदार बनी खड़ी थीं। फराऊन ने वह भूमि एरीन को समर्पित कर दी। उसकी आज्ञा से वहाँ एक नगर स्थापित किया जाने लगा।—उसका नाम रखा गया—एस्तर्नटोन स्वर्गों का नगर। यहाँ भूमि खूनी हुई नहीं थी—केवल कुछ घरवाले बेन की टट्टियाँ बाँधकर बठा करने में। जहाज पर जहाज आने लगे। कारीगर और कपाहार, और बार्दी और मुहार—सभी इकट्ठे होने लगे, और फराऊन स्वयं उन्हें नये नगर बनाने का नक्शा मिलाते लगा—वहाँ उसका सुषर्णदृष्ट बनना था—वहाँ एरीन का मंदिर बनना था और लोगों के घर बनने थे। बागवटें, पेड़-पौधे और उनकी वह कच्ची सीढ़ियाँ उसका दी गई, फराऊन

ने उन्हें आना दी कि वह महानगर के बाहर अपने कच्चे मकान बना लें ।

उत्तर से दक्षिण की ओर और पूर्व से पश्चिम की ओर पाँच-पाँच सड़कें बनाई गईं और उनके दोनों ओर प्रायः एक से मकान बनाये गए—और नगर बनने लगा—बसने लगा—रात-दिन हथौड़े चलने रहे—पत्थर लगता गया, ईंटें पकती गईं और मकान खड़े होते गए ।

जाड़े आगए पर फराऊन खीबीज नहीं लौटा । उसका नगर बन रहा था, बस रहा था—और अब सभे पर सभे जुड़ते, पत्थर पर पत्थर रस्ता जाता वह खुशी से नाचने लग जाता । उसने अम्मन से प्राप्त तमाम धन इस नगर को बनवाने में खर्च कर दिया और उसकी सारी भूमि अग्न्यन निर्धनो को बाँट दी ।

अब बाढ़ उनरी तो हौरैमहेब दरवार के अन्य लोगों सहित जहाज से उतरा—और एलटैटोन आया—वह फराऊन को समझाने आया था कि वह सेना को छुट्टी देने का अपना विचार बदल डाले ।

परन्तु फराऊन अपने इरादे पर अड़ा रहा और दोनों की नित्य की बहसों का कुछ भी नतीजा नहीं निकल रहा था ।

हौरैमहेब ने कहा: “सीरिया में काफी हलचल मची हुई है और वहाँ मिस्र के लोगों के लिये प्राण-भय उत्पन्न हो गया है । राजा अजीक मिश्रियों के प्रति भुण्णका जोरो से प्रचार कर रहा है—इसमें अब तनिक भी संदेह नहीं है कि वहाँ बलवा हो जावेगा ।”

और फराऊन एलटैटोन ने उत्तर दिया :

“तुमने मेरे महल का फर्श नहीं देखा जिसमें कारीगर बाँस की शारियों के बीच अल में लैरनी हुई बलसों की टोट की बत्ता के अनुसार, उनी प्रणाली में बिजुल कर रहे हैं ?—रह गई सीरिया में बलसों की बाग—मेरे विचार से वह असंभव है, क्योंकि वहाँ के राजाओं के पाग में ‘जीबन-पदक’ भेज चुका हूँ । राजा अजीक तो मेरा नाम दोस्त है जिसने मेरा ‘जीवन पदक’ गमगमान सहन करने के उपरांत अम्मन की भूमि पर एटोन का मंदिर भी बनवाया है—जिसने निरबध ही वहाँ मेरे मूल्य के अतिरिक्त एटोन के मंदिर का विस्तार संभव तो देगा ही होगा—वह सबकुछ देखने योग्य ही है हालाँकि उनके रणभ सब ईंटों के ही बने हैं—

समय बचाया गया है—इसके अतिरिक्त खानों से दासों को कड़ी मेहनत करके पत्थर लाने पड़ते और वह दृश्य मुझे नहीं सुहाता—नहीं—नहीं—और हाँ अबीर—उस पर तुम्हारा शक करना व्यर्थ है। उसके पास से मेरे पास अगणित मिट्टी की तख्तियाँ आई हैं अपने व ऐटोन के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए बहुत ही इच्छुक है। अगर तुम चाहो तो मेरे किताब-खाने के लोग तुम्हें वह सब तख्तियाँ दिखा सकते हैं पर पहले किताब-खाना जरा ठीक हो जाय—अभी वह इमारत बनकर पूरी नहीं हुई है—”

होरेमहेब ने उत्तर दिया : “मैं उसकी मिट्टी के तख्तियों पर झुकता हूँ—जैसा झूठा वह स्वयं है वैसी ही वह तख्तियाँ हैं—लेकिन यदि मेना को छुट्टी दे देने का तुम्हारा विचार दृढ़ हो गया है तो कम से कम मुझे सीमा प्रदेशों में तो सेना को मुद्रुद कर लेने दो—क्योंकि अभी दक्षिण से कबीलों ने कुश की भूमि में और सीरिया में अपने मवेशी चराने के लिये हांक दिये हैं—हमारे काले मित्रों के गाँवों को वह जला रहे हैं क्योंकि वह फूम के बने हैं जो आग को झट पकड़ लेते हैं—”

“वह सब किसी शत्रुता से वह लोग नहीं करते।” फ़राऊन बोला :

“वह लोग बेहद गरीब हैं—हमारे मित्रों को दक्षिणी कबीलों के लोगों के मवेशियों को भी चराने देना चाहिये—हर्ज क्या है ? और फिर कुछ गाँवों की खातिर पूरे-के-पूरे कबीलों से हमें घृणा भी नहीं करनी चाहिये—पर यदि तुम सीमा की रक्षा करने जाना चाहते हो तो वहाँ सैनिक संगठन कर सकते हो क्योंकि राज्य की सुरक्षा का उत्तरदायित्व तुम्हारे ऊपर है—पर ध्यान रखना कि वह केवल रक्षा करें—हमलावर सैनिक न बन जायें।”

होरेमहेब ने सिर पीट लिया। पर फ़राऊन कहता गया :

“तुमने पहले भी मेरा कहना नहीं माना था—यदि लोगों को तुम शुरू से ही ऐटोन का सदेन सुनाते तो आज ऐसे दिन देखने को न मिलते, —और हाँ, तुमने देखा कि मेरी दोनों पुत्रियाँ अब चल लेती हैं ? बड़ी से बड़ी से कितना प्यार करती है और उनके पास एक छोटा-सा प्यारा-सा हिरन का बच्चा भी है जिससे वह सेला करती है—और वह गर्द

सुरक्षा की बात—सो तुम इन्हीं यर्खास्त हुए लोगों को फिर रख सकते हो—और यह रख तो सब जगड़े और किसानों की जड़ है—इनको तोड़ देना चाहिये क्योंकि शक में शक पैदा होता है—हमें अपने पड़ोसियों में शक पैदा नहीं करना चाहिए।”

“इससे बेहतर होगा कि अपने रखों को अजीरू या हितैषी लोगों को बेच डालो।” ब्याग और घृणा से हीरेमहेव बोला. “वह तो सुवर्ण देगे बदले में और उससे तुम यहाँ इन्हीं अधिकाधिक पक्का सकोगे।”

और रोज़ उनका जगड़ा चलता रहा। फराऊन ने हीरेमहेव से कहा : “सीमाओं पर चाहें जितने सुरक्षादल रखो पर मेरे विचार से सबको लकड़ी के भालों से सज्जित करो।”

हीरेमहेव ने मैम्फिस में तमाम जिलों के शासकों को इकट्ठे होने की आज्ञा दी क्योंकि वह देश के मध्य में था, ऊपरी और निचली सल्तनतों की सीमा पर। और जब वह जहाज़ में चढ़कर जाने ही वाला था कि दून आये और काफी खतरे के समाचार लाये। सीरिया से बहुत से पत्र और मिट्टी की तथितियाँ भेजी हुई आई थी। उसकी सेना बढ़ाने की आज्ञा फिर चमक उठी क्योंकि अब उसे मालूम हुआ कि सीरिया के राजा के बारे में समाचार सुनकर अजीरू ने अपने राज्य की सीमा आगे बढ़ा ली थी। सीरिया के मुख्य केन्द्र मैग्निटो में बलबे हो गए थे और वहाँ के किले में स्थित मिस्री फौजों को अजीरू के लोगो ने घेर लिया था। मिस्रियों ने फराऊन से प्रार्थना की थी कि शीघ्र मदद पहुँचाई जाय अन्यथा जीवित रहना दुर्लभ था।

पर फराऊन ने जब यह सुना तो बोला—

“अजीरू गुस्मिल आदमी है। शायद उसने ठीक ही किया है क्योंकि मेरे दूनो ने ही कुछ गड़बड़ी की मालूम होती है। जो कुछ भी हो उससे उसकी हारबतों के बारे में पूछे बिना मैं उसके विषय कुछ नहीं करना चाहता। एक चीज़ मैं जरूर कर सकता हूँ, यह जरूर मुझे पहिले ही कर देना चाहिए था, अब जबकि एटोन का नगर काली भूमि में सड़ा हो रहा है सो मुझे ऐसा ही एक साल भूमि में बनवा देना चाहिए। सीरिया में, दून में, मैग्निटो कारवानों के मिलने का अड्डा है, ठीक है वही सबने उत्तम

रहेगा। परन्तु अभी तो मुझे शक है क्योंकि तुम कहने हो वहाँ हलचल है।”

और वह साँसने लगा। फिर कहने लगा :

“लेकिन तुमने मुझसे कहा था कि एटोन का मन्दिर जैहसलम में बना है। हमने देखा था न जब तुम सबीरियों से युद्ध करने गए थे? ओह! उस युद्ध के लिए तो मैं कभी अपने-आपको क्षमा नहीं कर सकता। सैर, पर मैगिह्को के मुकाबले में जैहसलम शीरिया के बीच में तो नहीं है, क्योंकि वह ज़रा और दक्षिण में है, फिर भी अब मैं ख्याल रखूँगा कि वह नगर भविष्य में एटोन का नगर बन जाय। इस समय वह केवल गाँव है। पर अब वह शीरिया का मुख्य केन्द्र बन जायेगा।”

और वह नेत्र मूँदकर एटोन के जग भविष्य में बनाये जाने वाले नगर की कल्पना में ली गया।

होरेमहेब ने यह सब सुना तो उसका धर्म जाना रहा और उगने अपनी बाहुक तोड़कर फराऊन के कदमों के पास फेंक दी। वह बूढ़ होकर अपने जहाज पर चला गया। वहाँ में वह मैगिस चला गया जहाँ आकर उसने सारे देश की सेना का संगठन प्रारम्भ कर दिया। एल्टैटोन आकर उगको साथ ही हुआ क्योंकि मैंने उगे इमपीनान में बेबीलोन, मिन्मी और हानी देश में जो कुछ मैंने देखा था सब बनवाया, वह खुश्याम मुनना रहा और मेरे उस आहू पर हाथ फेरता रहा जो मुझे शानी देश में बहाड़ी कप्तान ने भेंट में दिया था। उसने मुझसे पूछकर वहाँ की मढ़ियों, गुप्तों और बगी के मुख्य जाँचों के नाम लिखा लिखे। मैंने उगे मवाह दी कि विदेश परिचय यदि वह उन देशों के बारे में सुनना चाहता था तो बल्गाह से मिले, क्योंकि कई बागों में उसकी स्मृति मुझसे मिली थी।

होरेमहेब एल्टैटोन से कह गया तो अगस्त बूढ़ था और उमरान ने उसके जाने की लोभी मनाई। मुझसे वह मुझगाता हुआ बोला—

“जानकर एटोन की बड़ी इच्छा है कि हम मैगिह्को को या बेई और यदि ऐसा होना हो तो भना है कौन होना हूँ जो विश्व के उगजन अगस्त से मेरा सम्बन्ध है? मैंने शीरिया के जन से विश्व का केशा ला लिया। सभी सुगदरों उसी देश के बड़ी बर्त है। मैगिह्को हमारे हाथ में

नेकल जाय तो शायद हमारा रहन-सहन भी सीधा-सादा हो जाय ।
सच्चा और पवित्र । ”

मेरा हृदय उसकी बातों से विद्रोह कर रहा था मैंने कहा :

“परन्तु सीरिया मे इस समय सारे बच्चों और स्त्रियों पर अत्या-
चार हो रहे हैं । स्मर्ना मे मिस्री किलेदार का एक लडका है, उसका नाम
रैमिसीस है । वह भूरी-भूरी आंखों वाला बड़ा प्यारा बच्चा है । मैगिड्डो
मे एक सुन्दरी मिस्री महिला रहती है जिसका मैंने इलाज किया था । वह
गर्भवती थी । ”

“यह सब मुझसे क्या कह रहे हो ? ” फराऊन ने ऊबकर बीच मे ही
टोका, मैंने कहा :

“और सीरियन लोगो ने रैमिसीस को काटकर फेंक दिया हो और
वस स्निग्ध त्वचा वाली स्त्री के साथ बलात्कार करके उसे काट डाला हो
तो ? ” मेरा स्वर आवेश के साथ कुछ ऊँचा हो गया था ।

सुनकर फराऊन की मृदुलियाँ बध गई और वह नेत्र अधमुँदे करके
बोला: “सिन्धूहे ! जानते हो कि यदि जीवन और मृत्यु मे से एक को चुनना
ही पड़े तो मैं सौ मिस्रियों की जान के बदले हजार सीरियनों की जान
लेना कभी पसन्द नहीं करूँगा ? क्योंकि यदि मैंने सीरिया मे मुद्र किया
तो जाने कितने मिस्री और सीरियन दोनों ही मारे जायेंगे, यदि मैं बुराई
को बुराई से ही माहूँगा तो नतीजा और भी भयानक होगा और यदि
बुराई का सामना अच्छाई से करूँगा तो शायद नतीजा इतना बुरा न
निकले । मैं किसी भी हालत में जीवन से मृत्यु को अच्छा नहीं समझता
और इसलिए तुम्हारी बातें सुनने मे असमर्थ हूँ । एटीन के नाम पर और
सत्य के नाम पर मुझे शांति से रहने दो क्योंकि मैं मरने वालों की धीतर
नरतर नहीं गुन गाऊँगा । नहीं ! ”

और वह सिर झुकाकर सोचने लग गया । वह भावावेश मे वाप रहा
था, उसके नेत्र लाल हो उठे थे । मैंने देखा कि वह कँसा पागल था, परन्तु
फेर भी मैगिड्डो मे शत्रु के अत्याचारों को मैं भूल गया क्योंकि मैं उस
पागल को प्यार करने लगा था । वह कितना बड़ा सत्य कह रहा था । मुझे
नेत्रस्थ हो गया कि यदि वह अधिक दिनों तक जीवित रहा तो अपना ही

राज्य खो बैठेगा। फिर भी उसका पागलपन बूढ़ मानों की बुद्धि में ज्यादा अच्छा और सुन्दर प्रतीत हो रहा था।

नये नगर के बसाये जाने में राज धराने में दरार पड़ गई। राजनाथ तापा ने अपने पुत्र के साथ उस रेगिस्तान में जाना मंजूर नहीं किया। धीबीज उसका अपना नगर था जहाँ उसके पति फ़राऊन ने सुवर्ण-गृह बनाया था। तापा ने निचने साम्राज्य में बैठ के जंगलों में अपना जीवन प्रारम्भ किया था। तब यह वृक्ष बेचने वाली लड़की थी। वहाँ से उसके पति एमनहोटप ने उसे लाकर धीबीज में साम्राज्ञी बना दिया था। वह धीबीज छोड़कर कहीं नहीं जा सकती थी। राजकुमारी वीकेटेमोन ने भी उसी के साथ रहना मंजूर किया था। पुजारी 'आई' फ़राऊन के स्थान पर धीबीज में न्याय देने लगा। वह चमड़े में लिपटी हुई पुस्तकों को सामने रखकर फ़राऊन के सिंहासन पर बैठकर वहाँ शासन करता। धीबीज में सब कुछ पूर्ववत् था। केवल नकली फ़राऊन नहीं था और न उसके होने का किसी को अफसोस ही था।

साम्राज्ञी नेफरतीती अपना तीसरा जापा कराने धीबीज आ गई थी क्योंकि धीबीज के वैद्यों और जादूगरनियों के बिना वह जापा कैसे करा सकती थी ?

उसने तीसरी पुत्री को जन्म दे दिया था। जो आगे चलकर रानी बनने वाली थी। जापा आसानी से कराने के लिए हस्तान जादूगरनियों ने धरुबी का सिर पतला और लम्बा कर दिया था जैसाकि पहली दोनों लड़कियों का किया था। आगे चलकर जब राजकुमारियाँ बड़ी हुई तो उनकी देखा-देखी घरघार की स्त्रियाँ भी अपने सिरों के पीछे नकली सिर बाँधतीं कि उनके सिर भी वैसे ही फूले दिखाई दें पर राजकुमारियाँ अपने सिरों पर नित्य उस्तरा फिरवाकर अपनी लोपड़ियों का सौंदर्य प्रदर्शित किया करतीं और कलाकार उनकी प्रशंसा करते और अपने चित्रों में भी वैसे ही सिर के उभार बनाया करते थे।

और जब साम्राज्ञी नेफरतीती एलर्टीटोन लौटी तो लोगो ने देखा कि

वह सौंदर्य में और अधिक निखर आई थी। फराऊन सिवाय उसके किसी और अपनी स्त्री के साथ रहना पसन्द नहीं करता था।

एसटैटोन एक ही वर्ष में जंगल से महानगर बन गया। वहाँ बाजारों में गजूर के पेड़ दोनों ओर शान से लहराने लगे थे। सपूर्ण नगर एक उद्यान के सदृश्य था। वहाँ स्थान-स्थान पर पुष्प खिले रहने और फलों के पेड़ फला करते थे। सुन्दर मकान, मनोहर चित्र और स्वच्छ जल से भरे कुण्ड वहाँ अगणित थे और बागों में पालतू हिरन घूमा करते थे। रंगबिरंगे फूल और रंग-विरंगी मछलियों की वहाँ कमी नहीं थी। राजमागों पर हल्के रंगों की दीर्घकाय जवर्दस्त घोड़े जिनके शिरो पर शतुर्मुख के पर लगे रहते, जब टेढ़ी गर्दन किये खींचते तो मानो नगर की महिमा स्वयं बोलने लग जाती थी और रसोइयों की नाना प्रकार की सामग्रियों से आगन्तुकों की भूख बढ जाती थी, वहाँ सारी दुनिया से मसाले लाये जाते थे।

और जब जाड़ा सौटा तो इस नगर को फराऊन ने एटोन को समर्पित कर दिया। जब वह अपने सुवर्ण रथ में बैठकर पक्के राजपथों पर से होकर उस उत्सव में निकला तो उसके मार्ग में फूल बिछा दिए गए और तारों के बाँधों पर एटोन की स्तुति गाई गई।

फराऊन ने निश्चय किया कि मृत्यु के उपरान्त भी वह उस नगर को नहीं छोड़ेगा। जब नगर बन गया तो उसकी आज्ञा से पूर्वी पहाड़ियों के पास कशो का निर्माण प्रारम्भ कर दिया गया। कारीगरों व राजों के पास इतना काम था कि कि वह जीवन-भर वही रहकर उसे किया करते। और उन्होंने घर सौटकर न जाने का ही निश्चय किया क्योंकि यहाँ फराऊन की छाया में उन्हें सुख था—उनके पास धान्य और तैल की कमी नहीं थी—वह उन्हें भर-भरकर मिलता था और यहाँ उनकी स्त्रियाँ सुखी थी जो उन्हें हृष्ट-गुष्ट संतानें देती थी।

बाद में फराऊन ने एसटैटोन में मृतकों के शरीरों में मसाले लगाने का भी प्रबंध किया—और मृतक-गृह बनाया गया और इस सम्बन्ध में थोड़ी-थोड़ी से मृतक-गृह के विरोधज्ञ बुलाये गए। फराऊन ने मुझे उस विभाग का अधिकारी बनाया। जब मृतक-गृह के लाक छोलेवाले जहाज से उतरे तो उनकी अन्धकार की प्रकृतिस्य आँखें वहाँ की चमकौंध में मंद गईं।

वह भी शीघ्र ही अपनी दुर्गन्ध सहित नये मृतकगृह में घुस गए—और उनमें मेने देखा कि मेरा पुराना मित्र रैमोज भी था—वह जिसका नाम नाक के रास्ते चिमटियों से भेजा बाहर निकाल लेना था। मैंने जब उससे मित्र कहा तो वह मुझे घूरने लगा फिर शीघ्र ही पहचान गया। मुझे उससे नेफर नेफर नेफर के बारे में पूछने की उत्कंठा जाग्रत हो उठी। मैं अपने लिये हुए बदले के बारे में जानना चाहता था। और उमी ने मुझे बतलाया कि किस प्रकार उस बुरी स्त्री ने होश में आने पर उन सबको आपस में लड़ाया—उसके एक कटाश पर लाख धोने वाले एक-दूसरे को मारने को तुल जाते थे। उसको जब वह सब अपना खोरी किया हुआ सम्पूर्ण घन दे चुके तो भी उसकी पिपासा कम न हुई और तब उसके स्वर्ग की क्षान्तिर सौग घ्रापस में एक-दूसरे की खोरी करने लग गए। वह पूरे तीस दिन तीस रातें वहाँ रही थी और निलज्ज होकर उनके बीच गल होकर रही थी—परन्तु उसने जब जाने की टानी तो कोई उसे नहीं रोक सबा था क्योंकि यदि एक उसे रोकता तो दूसरा चाकू लेकर उसके पक्ष में तैयार हो जाता था—जब वह गई तो तीन सौ दबन सोना—न जाने कितनी चाँदी और ताँबा, कपड़े, मसाने इत्यादि ले गई थी और जाने-जाने कह गई थी कि अगले साल वह फिर आवेगी, यह देखने कि हमने इस बीच फिर खोरी से कितना घन इकट्ठा किया है। और तब से मृतकगृह में खोर्गिया बढ़ गई थी।

रैमोज ने मुझे धुल में बतलाया कि उन्होंने उसका नाम 'मैट जेकर' रखा था क्योंकि वह मुन्दरी तो थी पर उसका सौन्दर्य मैट के ही समान प्रगल्भारी था—

और तब मैंने जाना कि बदले में आरामा लुप्त नहीं होती थी—उसका अमर शक्ति होता है और अमर बर्तों के ही विपरीत उसका अमर हो जाना है। वह उमी के हृदय को आग की भाँति झुपका करता है। मैं स्व-मूख नेकर नेकर नेकर का कुछ भी न बिगाड़ सबा था हाँकि जब वह मृतकगृह से गई होगी तो निश्चय ही कई दिनों तक उसके शरीर में खोरी की दुर्गन्ध नहीं आ सकती होगी।

११

जलघड़ी में से जल बहते सभी ने देखा है ; और उसी भाँति जीवन भी बहता चला जाता है—बस यह पानी से नहीं नापा जाता बल्कि विशेष घटनाओं से विभूषित किया जाता है। बूढ़ावस्था में पहुँचकर ही मनुष्य इस सत्य को पहचान पाता है जब उसे सभी कुछ बुरा मालूम होने लगता है—एक महत्वपूर्ण दिन कई वर्षों के मामूली जीवन से अधिक छाप मनुष्य के हृदय पर छोड़ता है—और यह सत्य मैंने नये महानगर एक्स्टेंशन में रहकर सीखा जहाँ मेरा जीवन नील के जल के समान निर्वाध रूप से बहता रहा और मेरा जीवन मुझे स्वप्न की भाँति प्रतीत होने लगा था—दस साल मैंने क़राऊन एक्स्टेंशन के सुवर्ण-गृह में बिता दिये—यह दस साल मेरे जीवन के सबसे छोटे साल थे जो हाथ भी न आए—एकदम फिसल गए।

एक्स्टेंशन में मैंने अपने ज्ञान में कोई वृद्धि नहीं की—बल्कि जो कुछ विद्या मैंने देश-देशान्तरो में जाकर सीखी थी उसी के बल पर दिया किया—जैसे मधुमक्खी गरमियों में इकट्ठे किये हुए मधु को जाटों में बैठकर खाती है—लेकिन जैसे बहता पानी पत्थर के कगारों को न जाने क्या काट जाता है—उसी भाँति आयु ने शायद मेरे हृदय में परिवर्तन कर दिया था—अब मैं पहले से अधिक शान्त, और स्थिर चित्त का हो गया था—काम्य इसलिए कि अब क़प्ताह मेरे पास नहीं रहता था—वह दूर धीवीज़ में 'मगर की पूँछ' में मेरा व्यापार संभाल रहा था—

और क़राऊन एक्स्टेंशन के लिए एटोन के नगर की सीमाओं से बाहर होनेवाली समस्त बातों में जैसे कोई सम्बन्ध और रुचि नहीं होती थी—वह सब उसके लिए बँसो ही निरर्थक थी जैसे जल की छाती पर समकती हुई चन्दा की चाँदनी।

धीवीज़ में पुजारी 'आई' क़राऊन का राजदंड लेकर दोनों साम्राज्यों पर घामन करता था—वह क़राऊन का समुर भी था और उन दिनों वास्तविक सम्राट बना हुआ था। वह बूढ़ा अवश्य था परन्तु महत्वाकांक्षी

था। अब जब अम्मन की शक्ति समाप्त की जा चुकी थी तो वह जानता था कि फराऊन का ही अधिकार सर्वोच्च था और इसीलिए वह उसे दूर-ही-दूर रखना चाहता था कि वह उसके शासन में आकर बाधा न डाल दे। जिस तरह भी होता वह घन समेटता और फराऊन के पास उसे भेजता रहता कि वह अपने नगर को बसाने, वहाँ नई-नई इमारतें बनाने और एटीन का प्रचार करने में व्यस्त रहे।

उसके शासन का साजोदार मैम्फिस में बैठा हुआ हौरेमहेब था जिसके ऊपर सम्पूर्ण देश की सुव्यवस्था का भार था—उसी की शक्ति से अम्मन का नाम कब्रों में से टाँकी से छील दिया गया था—फराऊन एलनंटीन को तो अम्मन से इतनी ज्यादा चिढ़ थी कि उसने अपने पिता की कब्र सुतबा-कर उसमें से भी उसका नाम (अम्मन का) उड़वा दिया था।

‘आई’ चाहता था कि फराऊन इसी प्रकार के कामों में लगा रहे और उसके बीच न बोले। राज्य में कर उसी भाँति वसूल किये जाने और यदि गरीब उन्हें न दे सकने के कारण पीटे जाते अथवा दास बनाकर बेच दिये जाते या सिर पर राख डालकर रोने लगने तो यह सब विशेष नहीं माना जाता क्योंकि हमेशा से ऐसा ही होता आया था।

जब फराऊन की स्त्री नैफरतीती ने चौथी बच्ची को जन्म दिया तो वह बात स्मर्ना की हार से भी अधिक दुर्भाग्यपूर्ण समझी गई—नैफरतीती भागकर धीबीज पहुँची कि अपनी माँ की साथ की हज्जिन जादूगरनियों से इस मामले में सलाह करे कि कहीं वह किसी के जादू के कारण तो ऐसा नहीं था। परन्तु उसे तो फराऊन को दो और पुत्रियाँ देनी थीं और वह उसने जन्मी।

जैसे-जैसे समय धीनीत होता गया सीरिया में उपद्रव बढ़ने लगे। जब-जब जहाज आते तो नई-नई मिट्टी की तख्तियाँ लाने और जब मैं उन्हें पढ़ता तो मुझे लगता मेरे सिर के ऊपर से तीर छूट रहे थे—नगर जल रहे थे—जिनका धुआँ मेरी नाक में घुसता हुआ-सा लगता—बच्चे और स्त्रियों के बुचबे हुए शरीर मेरे नेत्रों के सामने से घूम जाते। अम्मून् के लोग हिय पशुओं की भाँति अत्याचार कर रहे थे। बेबीलोन और ईर-सलम के शासकों ने लिखा था कि वह फराऊन के सदा के दास थे और

उससे उस अत्याचारसे पीड़ित होकर सहायता माँग रहे थे। फराऊन अन्त में उन्हें मुनने-मुनने ऊब गया था। अब उसने उन्हें मुनना भी बन्द कर दिया था—अब वह वैसे ही राजसी बितावसानों में जमा कर दी जानी थी।

लेकिन जब जैरुसलम भी हाथ से चला गया और जोप्पा ने भी राजा अजीरु से मित्रता कर ली तो होरेमहेव मैम्फिस से एसर्टेटोन आया। वह उससे सेना बढ़ाकर सीरिया में मुद्ध करने की आज्ञा लेने आया था।

उसने आकर फराऊन से कहा—

“मुझे दस हजार माले वाले सैनिक घोर धनुर्धारी दे दो। सो रथ दे दो— और मैं सीरिया को फिर तुम्हारे नीचे ला दूँगा—अब जबकि योद्धाओं ने हथियार डाल दिये हैं और अजीरु शत्रु से मिल गया है ता सीरिया में मित्र की शक्ति सम्पन्न हो समझनी चाहिए।”

फराऊन एसनेटोन को बड़ा दुःख हुआ जब उसने सुना कि जैरुसलम का ध्वंस कर दिया गया था क्योंकि सीरिया को मान्य करने के लिये वहाँ एटोन का नगर बनाने का निश्चय कर लिया था वरन् उग मरघ में कुछ काम शुरू भी हो गया था। उसने कहा—

“जैरुसलम में यह वृद्ध—उसका नाम तो मुझे याद नहीं रहा— मेरे पिता का मित्र था। जब मैं छोटा था तो मैंने उसे भीबीज के ग्वर्ग-गृह में देखा भी था—उसकी लंबी ध्वेन दाढ़ी थी। मैं उसे मिर्गी कोष में जीवन-व्यापन के हेतु धन दूँगा हालाँकि मित्र की आमदनी सीरिया में व्यापार रथ जाने से बारम्बार अब काफी घट गई है।”

“वह अब तुम्हारे धन की चोरने की हासल में नहीं रहा है। होरेमहेव ने मुझे उत्तर दिया “उसकी सोचने की शक्ति पर मोना मनुष्य का अत्यन्त गुदर और निष्कर्षिता— अजीरु की—”

“वह छोटे से बोला :

1. , समझना था ।—

2. , अन्धध बारीक बैसे बरा

मनते हो ? सोच वैसे ही करों से दबे जा रहे हैं—इधर कसलें भी अच्छी नहीं हुई हैं।”

“एटोन के नाम पर मुझे अधिकार दे दो कि मैं कम-से-कम दस रप और सौ भाले वाले ही एकत्रित कर सकूँ—मैं उन्हें लेकर सीरिया में जाऊँगा और जो कुछ बचपायेगा उसी को बचाऊँगा—” होरेमटेब ने ध्वज में उत्तर दिया।

परन्तु करारुज ने कहा : “नहीं, मैं सीरिया से मुड़ नहीं कर सकता—एटोन को मुड़ और रक्षागान से घुणा है—सीरिया को स्वतंत्र हो जाने दो होरेमटेब ! और तब मिस्र उससे पहले की भाँति व्यापार करके ही समोप कर लेगा—मिस्र के धान्य बिना उमका काम कैसे चल सकता है ?”

“तुम्हारा विचार है कि वह वहीं तक रुक जायेंगे करारुज एतनी-टोन ?” चौककर होरेमटेब ने कहा : “प्रत्येक मिस्री की हृष्या से, प्रत्येक दीर्घाय के टूटने से और प्रत्येक नगर की विध्वंस से शत्रु का हौगवा बढ़ता चला जायेगा सीरिया के बाद मिनार्ई की खानों पर हमला होगा और तब हम भागों और तीरों के लिये तैयार वहाँ से मिलेंगे ?”

“मैं तो पहले ही बच्चा हूँ कि रशकों के लिये सफ़ाई के भाँते ही काफी हैं,” करारुज ने बिड़बड़ उत्तर दिया फिर क्यों बार-बार मेरे नामने भागों और तीरों की खानें करने हो—जानने हो अब मैं एटोन की स्तुति में कविता करना हूँ तो यह सब खानें मुझे परेशान करने लगती हैं और कविता नहीं बनाने देती ?”

परन्तु होरेमटेब नहीं रुका—बढ़ बढ़ता ही गया : “और देना कि तुम करने हो कि सीरिया का काम मिस्र के धान्य के बिना कैसे चलता तो मुन भो कि वह उसे बेबीलोन में भेजा रहे हैं यदि तुम सीरिया से नहीं हटते तो कम-से-कम द्वितीयों से तो बड़ी खिलरी खिल बढ़ाने की शक्ति का कोई अन्त ही नहीं है।”

करारुज मुनकर हुआ फिर बोला :

“अब सब की मुझे सन्देह है किसी शत्रु ने मिस्र की अधिपत हकका करने का सम्म्य नहीं दिया है—मिस्र सम्राट का मनने बड़ा और छोटी देस है फिर मैं सम्राट् सुखि सुखि उका के पल की तो जीवन-मरव देस

बीमार पड़ गई। वह दिनों दिन दुबली होती गई और मुझे उसकी चिंता बढने लगी। मैं उसे सुवर्ण मिथुन औषधियाँ पिलाता और हर घड़ी उसकी सुथूपा में लगा रहता। स्वयं फराऊन उसकी बीमारी से परेशान हो गया था क्योंकि वह अपनी पुत्रियों से बहुत प्रेम करता था। मैं उसके इलाज में इतना लगे गया कि मुझे थीबीज में अपने व्यापार और कपताह की भी याद नहीं रही। मैं काफी थका हुआ और परेशान रहने लगा था यहाँ तक कि मेरा स्वभाव भी चिड़चिड़ा हो गया था। मेरे मरीज अक्सर कहते लग गए थे, "राजघराने का वैद्य बनकर इसका दिमाग फिर गया है—।"

रातों को मुझे कभी बेबी-बोन के तो कभी स्मर्ना के स्वप्न आने और मैं घबरा जाता। वैसे मैं पहले से अब कुछ मोटा और भारी अवस्थ हो गया था। मेरी साम भी जल्दी फल आती थी।

और जब जाड़े फिर आए तो फराऊन की पुत्री ठीक होने लगी—वह मुस्कराने लगी और उसकी छाती की पीड़ा अब नहीं रही—और तब फराऊन की आज्ञा लेकर मैं थीबीज के लिए चल दिया। जब मैं जहाज में चला तो फराऊन ने कहला भेजा कि मैं उसके बदले नदी तट के लोगों से मिलूँ जिनके बीच उसने नकली देवता अम्मन की भूमि बाँटी थी और उनकी कुशल-क्षेम पूछूँ।

मैं कई गाँवों के बड़े-बूढ़ों से मिला। यह यात्रा मेरी यात्रा से भी अधिक सुखकर निकली क्योंकि इस जहाज के मस्तूल पर फराऊन का झंडा उड़ रहा था—मेरी श्रृंखा नभ थी और नदी में मक्सियाँ भी नहीं थी। लोग मेरे रसोइये को नित्य नई भेंटें लाकर देते और मेरे सामने ताजा भोजन हर समय तैयार रहता था। परन्तु जब किसान मेरे सामने आए तो मैंने देखा कि हड्डी के ढाँचे बने हुए थे। उनकी स्त्रियाँ दुबली और भयभीत लगती थीं—उनके बच्चे रोगग्रस्त थे। उन्होंने मुझे अपना अनाज लाकर दिखाया था—मैंने देखा वह साल चूरा-सा हो गया था—ऐसा जैसे रक्त में डूबो दिया गया हो। उन्होंने मुझसे कहा:

"पहले हम लोगों ने समझा कि हमारी असफलता हमारे अज्ञान के कारण थी क्योंकि हमने कभी शेती का काम नहीं किया था—परन्तु अब

हमें ज्ञान हो गया है कि जो भूमि हमें फराऊन ने दी थी वह शापग्र है और जो उसे जोतता है वह भी वैसा ही हो जाता है, रातों को अद्भुत पैर हमारी फसलों को कुचल जाते हैं और अदृश्य ही हाथ हमारे फलों पेड़ों को तोड़ जाते हैं। हमारे मवेशी अकारण ही मर जाते हैं। हमारा सिंचाई की नहरें बंद हो जाती हैं और कुओं का जल जहरीला हो जाता है। बहुत से तो भूमि छोड़कर नगरों को लौट गए हैं—उनकी हाल अब पहले से भी नाजुक हो गई है—वह फराऊन और उसके नये देवता को गाली देते हैं। परन्तु हमने अभी साहस नहीं छोड़ा है क्योंकि हमारा पास फराऊन ने जीवन-पदक और पत्र भेजे हैं। हमने उन्हें 'विजका' बन कर खेतों में टांग दिया है कि टींडी हमें मुक्तान न पहुँचावे। लेकिन ऐसा लगता है कि अम्मत की शक्ति फराऊन की शक्ति से अधिक है—अतः तो हम लोग भी इस भूमि को छोड़कर चले जाना चाहते हैं अन्यथा हमारे स्त्रियो और बच्चों के जीवन खतरे में पड़ जायेंगे—जैसे कि अब तब हुआ है और हो रहा है।"

मैं पाठशालाओं में भी गया। अध्यापकों ने मेरे बन्धुओं के ऊपर जे एटोन का जीवन-पदक देखा तो उन्होंने अपने बेटे छिपा दिये और अम्मत का चिह्न हवा में उगली फेर कर बनाया। बच्चे मुझे आलसी-पानधी बेटे इतने गौर में देखने लगे कि अपनी नाक पोछना भी भूल गए।

अध्यापकों ने कहा : "इससे ज्यादा भ्रष्टता और क्या हो सकती है कि सभी के बच्चे पड़ाए-लिखाए जाएँ ?—पर हम क्या करें ? फराऊन हमारा पिता है—बही माता है—फिर भला हम उसे नाश्वर्य बँसे कर सकते हैं ? लेकिन हम पढ़े-लिखे लोग हैं और यहाँ गंदी भूमि पर बच्चों की नाक पोछने हुए उन्हें पढ़ाना हमारी मर्यादा के विरुद्ध है—न यहाँ मिट्टी की तक्षिण्या है न बाँस की बलम। इसके अतिरिक्त यह जो नयी लिपि है—इसे पढ़ाने के लिए तो हमने इतनी मेहनत करके लिखना-पढ़ना नहीं सीखा था ? हमारी तनख्वाहें हमें बापदे से हर माम नहीं मिलती और बच्चों के माँ-बाप भी हमें कुछ भेंट इत्यादि नहीं देते—और देते हैं भी तो थोड़ा-बहुत—फिर भी हम फराऊन को यह ज्ञान देने के लिए कि हर कोई नहीं पढ़ाया जा सकता—मरे हुए हैं—करें भी क्या ?"

मैंने बच्चों की पढ़ाई की जाँच की—और उन्हें बहुत ही कमजोर पाया—अध्यापक लोग स्वयं विगड़े हुए और पहले के असफल लेखक लोग थे—और उन्होंने एटोन का 'जीवन-पदक' लेकर नौकरी प्राप्त की थी—वह स्वयं भी कुछ नहीं जानते थे।

गाँव के बड़े-बूढ़ों ने एटोन का नाम लेकर बड़ी कटुता से शपथ ली और कहा :

“मालिक सित्यूहे ! हमारी ओर से फराऊन से प्रार्थना करना कि कम-से-कम इन पाठशालाओं का बोझ तो हमारे ऊपर से उठाले अन्यथा हमारा जीना दूभर हो जाएगा। हमारे बच्चे इतने पीटे जाते हैं कि जब घर आते हैं तो नीले पड़ जाते हैं—उनके आस मोच लिए जाते हैं—यह अध्यापक लोग मगर के समान सर्वभक्षी होते हैं—यह हमारे घरों को खाये जाते हैं—हमारी मवेशियों की सूखी खानों तक को उठा ले जाते हैं और उन्हें बेचकर मदिरा मोल लेते हैं। हमारा आखिरी ताँबे का टुकड़ा भी यह हमसे छीन ले जाते हैं और जब हम लोग खेतों पर होते हैं तो यह पीछे से हमारे घरों में घुसकर हमारी स्त्रियों से बलात्कार करने है—उनका कहना है कि यह सब एटोन की ही दृष्टि से होना है क्योंकि आदमी-आदमी और स्त्री-स्त्री में कोई अन्तर नहीं होना—हम तो बाल्य में धरने जीवन में कोई तबदीली नहीं चाहते थे—शहर में हम गरीब अकस्य थे पर दुःखी तो नहीं थे। उस समय भी लोगों ने हमसे कहा था—परिवर्तन से भावधान रहें ! क्योंकि हमसे गरीब और भी गरीब हो जायेंगे—समर में जब भी परिवर्तन हुए हैं उसमें सबसे अधिक सदा में गरीब ही पिसने रहे हैं और पिसेंगे।”

मैंने देखा कि वह कितना बड़ा मध्य कह रहे थे—और मुझे लगा कि फराऊन के चारों ओर रहने वाले लोग जिनमें मैं भी एक था—दुर्ग के बासी में घुसे हुए कमीनों की भाँति थे—जो प्रजा के दुःख से सर्वथा अनभिज्ञ थे।

मेरा जहाज बढ़ता रहा—आखिरकार भीबीइ की नींव पराईना दिशाई देने लगी। मैंने भीबीइ की ऊँची-ऊँची इमारतें देखी और रीति के अनुसार लोग के जब में मदिरा उँईज की।

से देवता भर गये

जब मैं लाँचा गलाने वाले के मकान पर पहुँचा, जो कि मेरा था मुझे बहुत ही छोटा लगा—और उसके सामने का महलना बड़ा गद जिसमें मक्खियाँ भरी पड़ी थी और बढ़ू आ रही थी। जो साईक का पेड़ मैंने स्वयं लगाया था, वह अब काफी बड़ा हो गया था पर मु देखकर भी कोई सतोष नहीं हुआ। फराऊन एसर्नटोन के वैभव में मैं इतना विगड़ गया था कि मैं अपने घर लौटकर भी सुख का नहीं कर सका।

कप्लाह घर पर नहीं था, केवल मुती वहाँ थी। उसने अपनी के अनुसार स्वागत तो मेरा किया परन्तु बड़बड़ाते हुए क्योंकि मैंने आने की सूचना पहले नहीं भेजी थी जिससे वह पहले से ही मक साफ़ कर रखती और नये कपड़ों से उसे सजाकर रखती। वहाँ से मैं 'मगर की पूछ' पहुँचा। द्वार पर मुझे मैरिट मिली जिसने मेरे राजसी और उस राजसी कुर्सी के कारण मुझे नहीं पहचाना। वह बोली :

"क्या तुमने आज शाम के लिए यहाँ पहले से ही कुर्सी भाड़े ली है ? अन्यथा मैं तुम्हें अंदर नहीं जाने दे सकती।" वह पहले से मोटी हो गई थी—और अब उसके गालों की हड्डियाँ उतनी उभर नहीं लगती थी।

मेरा दिल उसे देखकर तुम हो गया और मैंने उसकी ओर प रखकर कहा : "मैं समझता हूँ कि तुमने मुझे बिल्कुल ही भुला दिया क्योंकि एकाकी भी तो इस बीच अनेकों महाँ आये होंगे जिनको अपनी थट्टाई पर अपने अंग से गर्म किया होगा ! फिर भी मैंने सो शायद तुम्हारे घर में स्थान मिल जाय और मैं एक प्याला ठंडी पी लूँ—तुम्हारी थट्टाई के बारे में तो मैं अब सोच ही कैसे सकता हूँ वह आश्चर्य और गुपी से बिल्ला उठी :

"सिन्धूहे ! तुम हो ? गृभ है यह दिन जो मेरे मालिक का आये है।"

उसने अपने प्यारे-प्यारे हाथ मेरे कंधों पर रख दिये और "सिन्धूहे ! तुम्हें हो क्या गया है—अबने रहे-रहकर इतने भारी पए हो ?" उसने मेरे सिर से बत्त (बिग) उतारा और मेरे ग

पर हल्के से चपत लगाई फिर बोली : “बैठो न सिन्धूहे ! मैं तुम्हारे लिए ठंडी मदिरा लाती हूँ—तुम तो यात्रा से थक गए हो और हांक रहे हो !”

मैंने कहा : “पर किसी भी हालत में ‘मगर की पूंछ’ मत ले आना—क्योंकि अब मेरे पेट में वह शक्ति नहीं रही है कि उसे पचा सकूँ और मेरे सिर की तो पूछो ही मत ।”

मेरे घुटनो को छूकर वह बोली : “क्या मैं इतनी मोटी बुड्डी और कुरूप हो गई हूँ कि बरसों के बाद मुझसे मिलने पर भी आज तुम अपने पेट के बारे में बातें करते हो ?”

मैं उसकी बातें सुनकर भेंप गया क्योंकि उसने सच बात कही थी और सच बात हमेशा ठीक असर करती है । मैंने उत्तर दिया :

“ओह मैरिट ! मेरी मित्र !—मैं स्वयं वृद्ध हो गया हूँ और अब क्या बाकी रहा है मुझमें ?”

लेकिन उसने शोखी से कहा : “तुम्हारा खयाल ऐसा है ? पर जब तुम्हारी आँखें मुझे देखती हैं तब तो वृद्ध कहीं से भी नज़र नहीं आती—और मुझे तो यही खाती है ।”

“मैरिट—मेरी मित्रता के नाने कम-से-कम ‘मगर की पूंछ’ जल्दी ला दो—इससे पहले कि मैं... राजसी घराने का सिर खोलने वाला बैठ—गुस्सा होकर चिल्लाने न लग जाऊँ, और खास कर इस बंदरगाह की सराय में ।”

वह मेरे लिए मदिरा एक बड़े सीप में लाई जिसे मैंने अपनी हथेली पर रख लिया । पीने ही मेरा कंठ जलने लगा क्योंकि अब मुझे तो अंगूरी पी उत्तम मदिरा की आदत पड़ गई थी... फिर भी वह जलन मुझे अच्छी लगी क्योंकि मेरा दूसरा हाथ उसकी जाँघों पर रखा था ।

और मैंने कहा : ‘मैरिट ! तुमने मुझसे एक बार कहा था कि त्रिजि सोगो के जीवन की पहली बहारें गुज़र चुकी हों, और जो एजारी हों उनके लिए सच में झूठ ही कभी-कभी हितकर साबित होता है । हम सीप बहुत सालों तक एक-दूसरे से बिछुड़े रहे हैं लेकिन वह कौन-सा दिन बीता है जब मैंने तुम्हारा नाम हवाओं में नहीं फुसफुसाया है ? मैंने उल्टी धाराओं में आने वाली चिड़ियाओ द्वारा तुम्हारे पास प्यार के संदेश भेजे

है और हर सुबह जब मैं उठा हूँ तो तुम्हारा नाम स्वतः मेरे होठों से निकल गया है ।”

उसने मुझे घूरकर देखा और मैंने रुढ़ो कि वह अब भी काफी लुभावनी और सुन्दर थी, उसकी आँखों की गहराइयों में मुस्कराहट और वही पुरानी उदासी थी जैसी कि गहरे कुएँ के पानी में होती है । उसने मेरे गाल छूकर कहा “सिन्धूहे । अब बात बहुत अच्छी तरह करना सीख गए हो । मैं भी क्यों नहीं साफ कह दूँ कि तुम्हारी याद मुझे बहुत आती रही है । जब मैं अकेली अपनी चटाई पर सोती थी तो तुम्हारे बिना मुझे सब कुछ सूना-सूना लगता था। ‘मगर की भूँछ’ के अक्षर से यदि कभी किसी ग्राहक ने मेरे मेरे ऊपर हाथ बढ़ाना चाहा है तो तुम्हारी याद हो आई है, पर, फराऊन के सुवर्ण-गृह में तो बहुत-सी स्त्रियाँ होंगी, सुन्दरी भी अगणित ही होंगी ही और निश्चय ही वैद्य होने के नाते तुमने उनके साथ रगरेलिया की होभी ।”

“यह सच है कि मैंने वहाँ की स्त्रियों से संपर्क रखा था । वह सुन्दरियाँ भी थीं और जवान भी और उनकी स्वचाएँ भी ताजा फूल जैसी थी, पर वह सब कुछ नहीं, मेरी मित्र तो केवल तुम हो ।”

उस तेज मदिरा ने अब तक मुझ पर पूरा असर कर दिया था । मेरा शरीर जवान हो गया था और मेरी रंगों में मद छा गया । मैंने कहा: “इस बीच तुम्हारी चटाई पर कई आदमी सोये होंगे लेकिन जब तक मैं यहाँ धोबीज में हूँ तब तक उनमें से कोई तुम्हारे पास न आने पाये । क्योंकि यदि मैं उत्तेजित हो गया तो समझलो कि उनकी खैर नहीं होगी जब मैंने लदीरियों से युद्ध किया था तो मेरा प्रचण्ड रूप देखकर हीरेम-हेव के सैनिकों ने मेरा नाम ‘जगली गधे का बेटा’ रख दिया था समझी ।”

उसने बनावटी भय दिखाते हुए हाथ उठा दिये और कहने लगी : “वम उसी से तो मुझे डर लगा करता है क्योंकि कप्ताहू से मैं मुन चुकी हूँ कि तुम अपने गुस्से के कारण किस भीति लोगों से लड़ पड़ते थे और फिर उसे मुझे उसे छड़ाना पड़ता था ।”

कप्ताहू का नाम सुनकर मेरे नेत्र उमड़ आये, मैंने कहा: “वह है क्या ? मैं उस अपने पुराने दास से मिलना चाहता हूँ ।”

मैरिट ने मेरी तरफ घुप रहने का संकेत किया फिर बोली: "अब तुम्हें 'मगर की पूँछ' की आदत तो नहीं रही है। वह देखो मेरा पिता तुम्हारे सोर से परेमान होकर घूर रहा है। कप्ताह शाम से पहिले नहीं लौटेगा क्योंकि वह आवश्यक अनाज के व्यापार के सम्बन्ध में बाहर गया है। उसे देखकर तुम आश्चर्यचकित रह जाओगे क्योंकि अब तो उसे याद भी नहीं रहा है कि वह कभी तुम्हारा दास था। चलो इस बीच मैं तुम्हें बाहर घुमा लाऊँ, बाहर की ठण्डी हवा से तुम्हारी हालत भी सुधर जायेगी, देखो तो सही कि तुम्हारे जाने के बाद पीबीज कितना बदल गया है।"

जब वह नये वस्त्र और आभूषणों से सजकर आई तो अत्यन्त कम-नीय लग रही थी, उसे सिर्फ उसके हाथों और पैरों से हो पहचाना जा सकता था कि वह उच्च वंश की स्त्री नहीं थी। हम दोनों कुर्सी में सटकर बैठ गए और मुझे उसके पारीर की गन्ध बड़ी अच्छी लगी। मैट्रों की सड़क पर जब दास हमारी कुर्सी उठाकर चले तो मैंने उमका हाथ अपने हाथ में ले लिया और जब मुझे अनुभव होने लगा कि मैं घर लौट आया था।

अम्मन के मन्दिर में कौवे और काली चीलें चक्कर लगा रही थीं, प्रांगण सब खाली पड़े थे, बागों में घास उग आई थी, जीवन-गृह और मृतक-गृह के बाहर थोड़े से लोग खड़े थे। मैरिट ने मुझे बतलाया कि जीवन-गृह में अब लोग अधिक संख्या में नहीं जाते थे। वीथी में नगर में अपनी-अपनी दुकानें खोल ली थी।

मैरिट ने कहा: "तुम मुझे कहाँ इस नापसन्द स्थान में ले आये? तुम्हारे वस्त्रों पर बना हुआ यह जो एटौन का जीवन-पदक है यह हमें शायद आपत्तियों से बचाते पर यह भी साथ-साथ मत भूलना कि इसके कारण हम पर पत्थर भी फेंके जा सकते हैं। लोगों में अब भी उसके प्रति घृणा कूट-कूटकर भरी हुई है।"

उसने सच कहा था क्योंकि जब हम मंदिर के बाहर आए तो लोगों ने मेरे 'जीवन-पदक' को देखकर घृणा से धुक दिया। और तभी मैंने देखा कि अम्मन का एक पुजारी उधर से आया—उसका सिर घुटा हुआ था और उसके मुख और सिर पर तेस चमक रहा था। वह शुभ्र श्वेत वस्त्र पहिने हुए था, लगता था जैसे उसने किसी आपत्ति का सामना नहीं किया था।

लोगों ने उसे आदर से नत-मस्तक होकर मार्ग छोड़ दिया। मैंने अक्ल-मन्दी की और अपने जीवन-पदक पर हथेली रख ली। मैं नहीं चाहता था कि उपद्रव का शिकार बनूँ।

मैंने देखा कि मंदिर की दीवार के सहारे एक आदमी कहानियाँ सुना रहा था। लोगों की भीड़ उसके चारों ओर लग रही थी। वह नाम बदल कर फराऊन एखनैटोन और उसके एटोन की ही कथा सुना रहा था और लोग एकाग्रचित्त होकर उसे सुन रहे थे। आगे वह बोला : “और ‘रौ’ कुड़ हो गया, उसके साथ से अकाल पड़ने लगा। झीलो का पानी सूड़ गया। उनमें खून मिल गया और फिर वह नकली फराऊन जो हजारों साल पहले था और उसकी माँ जो एक जादूगरनी हूभिशन थी बिना पँदे के गड्ढे में फेंक दिये गए।” और लोग खुशी से चीख उठे और उस कहानी सुनाने वाले के पात्र में ताँबे के बहुत से सिक्के इकट्ठे हो गए।

मैंटिन ने मुझसे कहा कि इस प्रकार की कथाएँ संपूर्ण उत्तरी और दक्षिणी साम्राज्यों में प्रचलित थी जिन्हें भला कौन रोक सकता था ? फिर उसने कहा : “आजकल भविष्यवाणियों का भी यहाँ बहुत जोर है। आज के भाव डाँवाडोल हो रहे हैं। गरीब भूखों मर रहे हैं और करो के जोड़ से सभी ऊब उठे हैं। भयानक भविष्यवाणियाँ हो रही हैं। सब मुझे तो अत्यन्त भय लगता है।”

जब हम तंदूरस्ताने में से लौट आये तो मुझे फराऊन एखनैटोन के शब्द याद आने लगे—“एटोन माता से बच्चे को अलग कर देगा, पुष्प को उसके हृदय में बसी हुई ‘बहिन’ से अलग कर देगा, जब तक कि सत्तार में उसका साम्राज्य स्थापित न हो जायेगा।” लेकिन मुझे वह बात अच्छी नहीं लगी क्योंकि मैं अपनी मैरिट से अलग नहीं होना चाहता था।

जब कप्ताह अन्दर आया तो मैं भौचक्क होकर उसे देखता रह गया। वह गजब का मोटा हो गया था और विशाल-काय हो गया था, इतना अधिक कि द्वार में अन्दर घुसने के लिए उसे आड़ा मुड़ना पड़ता था। उसका चेहरा गोल हो गया था जिस पर तेल चमचमा रहा था।

सिर पर उसके नीला वस्त्र (विग) था और उसकी कानी आँख पर एक सोने की गोल पत्ती लटक रही थी। अब वह सीरियन पोशाक नहीं पहनता था बल्कि धीवीज के बेहतरीन दज़ियों से मिली राजसी वस्त्र सिलवाकर पहना करता था। उसकी कलाइयों और टखनों में सोने के कड़े झिल-मिलाते थे। उसके गले में कई लड़ी सोने की ज़ंजों पड़ी थी और मोटी-मोटी भद्दी उँगलियों में सोने की जडाऊ अँगूठियाँ चमक रही थी। वह हाँफ रहा था और उसके पसीना बह रहा था।

जब उसने मुझे देखा तो आश्चर्य से हाथ उठाकर वह चिल्लाने लगा : “शुभ है यह दिन जो मेरे मालिक घर आये हैं।” फिर उसने झुककर बड़ी मुश्किल से अपने घुटनों की सीध में अपने दोनों हाथ फँसा दिये। उसका भारी पेट उसे झुकने नहीं दे रहा था।

भाववेश में वह रोने लगा और उसने मेरे घुटने पकड़ लिये। उसने वह शोर मचाया कि मुझे यह अनुभव होने लगा कि मुझे मेरा पुराना कप्ताह मिल गया था। मैंने उसे उठाकर छाती से लगा लिया, मुझे लगा जैसे मैं किसी मोटे बैल का आलिंगन कर रहा था जिसमें से नई रोटी की खुशबू आ रही थी।

उसने मेरा कंधा सूँघा, आँसू पोंछे और फिर वह हँसा, फिर उसने कहा : “आज का दिन मेरे लिए बहुत ही शुभ है। इस समय जितने भी लोग मेरे घर में बैठे हैं, सबको मैं मुफ्त में एक-एक सीप भरकर ‘मगर की पूँछ’ पिलाऊँगा। परन्तु यदि वह दूसरी बार माँगेंगे तो उन्हें दाम देने होंगे।” आखिरी शब्द उसने धीरे से कहा।

घर के अन्दर के हिस्से में ले जाकर उसने मुझे नमं घटाई पर बिठाया और मैरिट को मेरे पास बँटने की आज्ञा दे दी। उसके अनुचर और दासों ने जो कुछ उस घर में था उनमें से छाँटकर सर्वोत्तम खाद्य और पेय मेरे सामने परोसे। उसकी मदिराएँ कीमती और फ़राऊन की मदिराओं के समान ही थीं और उसकी परोसी हुई भुनी हुई बत्तल तो धीवीज की विशेष वस्तु थी ही, क्योंकि वह सड़ी हुई मछलियों पर पासी जाती थी जिनसे उनके मांस में एक विचित्र स्वाद आ जाता था।

जब हम सा-नी चुके तो उसने कहा : “सिन्यूहे, मेरे मालिक, मैंने जो

तुम्हारे पास व्यापार के सामान के हिसाब अब तक भेजे हैं, मुझे आशा है वह सब तुमने देख लिए होंगे और उनसे तुम्हें यह भी पता चल गया होगा कि तुम्हारा धन कितना अधिक बढ़ गया है, पर हाँ आज का यह जो भोजन हमने किया है और जो-जोश मेमैंने सारे ग्राहकों को 'मगर की पूछ' मुपन पिलादी है उसे मेरे विचार से परस्वर्च में डलवा दिया जाय, क्योंकि हमने फायदा भी है, मुझे फराऊन के कर वसूल करने वालों की बजड़ से बड़ी परेशानी रहा करती है।"

मैंने उत्तर दिया, "मेरे लिए तुम्हारे हिसाब सब कोई अर्थ नहीं रखते। न मेरा इतना दिमाग ही है कि डेर सारे ओडो को देखूँ या समझूँ, जो मुनासिब जँजे वही करो क्योंकि तुम पर मुझे पूरा विश्वास है।"

सुनकर कप्ताह हँसने लगा और उसके मोटे पेट में से हँसी ऐसे निकलने लगी जैसे गर्म गद्दों में से आ रही हो। मैरिट भी हँसती रही क्योंकि आज उसने मेरे साथ मदिरा पी भी और अब वह सिर के पीछे दोनों हाथ लगाये चित्त लेटी हुई थी कि मैं उसके बस्त्रों के नीचे उसके वक्ष के उभार को देख सकूँ।

इसके बाद कप्ताह बतलाता रहा कि उसने दो सीरियन मुनीम रख जिन्हे ये जिनके हिसाबों से कर वसूल करने वाले भी पबरा जाने थे क्योंकि वह उन्हें समझ ही नहीं पाने थे। सीरियन का हिसाब समझना हँसी खेल नहीं होता था। बट तरकीबों से करों की खोरी किया करता था। कई माम मर्दों को वह भीबरों पर तथा अन्य लोगों पर स्वर्च में दिखाता था। फराऊन के करों का भार असह्य था। गरीबों से जब उनकी आमदनी का पाँचवा बट लिया जाता था तो अमीरों से तीसरा था। कभी-कभी आधा ले लिया जाता था। "फराऊन का यह अन्वय है?" वह बोला: "कि सभी पर एव-सा कर नहीं लगाया गया है। जब गरीबों से पाँचवाँ बट लेने है तो अमीरों से भी वही लेना चाहिए। एक तो यह और दूसरे सीरिया हाथ में रहा नहीं और इन्ही दो ने बाग़न मिख गरीब हो गया है और हाँ, सबसे विचित्र बात तो यह है कि जब मुल्क गरीब हो गया है तो गरीब और भी गरीब हो गये हैं और अमीर फिर और भी ज्यादा अमीर हो गए हैं। ऐसे फराऊन भी नहीं बदल सक्ता।"

मैं चुपचाप गुनाह रहा। कलाह ने और मदिरा दी फिर वह अपनी सोफी हाँसने लगा कि वह अनाज का चुगल व्यापारी था।

“हमारा देवता गन्धमुख ही बड़ा गन्धियागन्धी निकला, क्योंकि जब देनाटन करके पहुँचे ही दिन में इस मराप में आया तो उसी दिन वहाँ अनाज के व्यापारियों से जान-बूझान हो गई। मैंने एकदम अनाज खरीदना शुरू कर दिया और उसी साज मैंने उसमें से गहरा लाभ उठाया, क्योंकि तुम्हें तो पता ही है कि अम्मन—मेरा मतलब है कि बहुत-सी भूमि बजर पड़ी रह गई थी। हमें बड़ा मुनाफ़ा हुआ। फिर मैंने इसी तरह हर साल किया और अब मेरे पास अनाज के अगणिता गोदाम भरे पड़े हैं पर मैं उन्हें अब बेच नहीं रहा हूँ बल्कि और भी खरीदने की सोच रहा हूँ जब तक कि उसे सोने के भाव न बेच सकूँगा। अनाज भी कमाल का मुनाफ़ा देता है, जैसे कोई जादू हो।

“लेकिन यह सोचना फिर भी घनत है कि मैंने तुम्हारा सारा धन केवल अनाज में ही लगा दिया है—अनेक व्यापारों में उन्नति प्राप्त की है मैंने मेरे प्यारे मालिक !” और उसने मेरा पात्र फिर मदिरा से भर दिया।

देर तक वह व्यापार की बातें करता रहा और मैं उसे समझने की कोशिश करता रहा—मैरिट सेटे-सेटे हँसती रही। फिर वह बोला :

“मुनाफ़े से मेरा मतलब है उस रक्कम से है जो कर देने के उपरांत हाथ में बच जाय—इसमें से मुझे वह उपहार भी घटा देने पड़ते हैं जो करे घटवाने के लिए मुझे हाकिमों को देने पड़ते हैं—समय-समय पर मैं गरीबों को अनाज बाँटा भी करता हूँ और यह काम बड़ा फायदेमंद साबित होता है—जब मैं किसी को एक नाप भर कर अनाज दान करता हूँ तो उससे पाँच नापों पर अंगूठा करा लेता हूँ और वह लिखा-पढ़ा तो होता नहीं है और फिर यदि हो भी तो उसे दाम तो देने पड़ते नहीं हैं। वह निशानी भी कर देता है और दुआएँ देता हुआ हमारे यश का गान करता फिरता है और उन निशानियों से मैं कर लेने वालों से बच जाता हूँ...।”

मैंने पूछा : “तो हमारे पास बहुत अनाज है ?” उसने गव से सिर हिलाया। मैंने कहा :

“तब तो तुम जल्दी करो और किसानों को जाकर बीज दो—उनके

पास जो बीज हैं वह लाल है गोया खून की वर्षा हो गई है उस पर—पानी पड़ ही चुका है और अब फसल बोने का समय है।”

कप्ताह ने मुझे ऐसे देखा जैसे मैं मूर्ख था, फिर सिर हिलाकर कहा : “मालिक ! जिस काम को तुम नहीं समझते उसमें दखल न दो—उसे मुझे ही करने दो—तुम्हारी राय में तो बड़ा नुकसान है—मामला कुछ ऐसा है कि हम अनाज के व्यापारियों ने पहले बीज बाँटा—किसान गरीब तो थे ही—उन्हे उसकी आवश्यकता थी—हमने दुगना अनाज ठहरा लिया। पर जब फसल तैयार हुई तो वह न चुका सके। हमने उनकी मवेशियाँ कटवा दी और उनकी छालें ले आये और कर्ब का गट्टर भरा, पर जब अनाज की कीमत बढ़ी तो यह सौदा नुकसान का रहा—अब तो यह है कि जिस कदर जमीन कम बोई जाय वही अच्छा है—अनाज कम पैदा होगा और हमारे गोदामों के माल की कीमत दुगनी-तिगुनी-चौगुनी हो जाएगी—तुम धर्म व्यापार के पचड़े में मत पड़ो।”

और तब मैंने जमकर कहना शुरू किया : “जैसे मैं आज्ञा देता हूँ कप्ताह वैसे ही करो—क्योंकि अनाज मेरा है—मुझे इस समय मुनाफ़ा लेना नहीं भूझ रहा है बल्कि मुझे उन किसानों की परनिर्वा दिलाई दे रही है जो विलुप्त हो पानों में परिश्रम करने वाले दासों जैसे दुर्बल हो गए हैं—उनकी स्त्रियाँ याद आ रही हैं जिनके स्नान ऐसे सटकने हैं जैसे दो पाली धैलियाँ हो—उनके बच्चे जो नदी तट पर टेढ़े पैरों से चलते हैं और चलने-बलने कमजोरी से गिर जाते हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम जाकर उन्हें बीज बाँट आओ—एटीन के नाम पर फराऊन एखनटोन के नाम पर जिससे मैं प्रेम करता हूँ। मैं वह भी नहीं चाहता कि तुम उन्हें बीज मुफ्त दो क्योंकि यह आदत भी अच्छी साबित नहीं होती। फराऊन ने उन्हें भूमि मुफ्त ही तो दी थी ? पर मैं यह चाहता हूँ कि उन्हें नाप के नाप पर बीज दिया जाय—जितना दिया जाय उतना ही लिया जाय—यदि वह उसे भी न दें तो तुम अपना बड़ा सम्भालना, पर मुझे उनसे मुनाफ़ा नहीं चाहिये।”

कप्ताह ने जब यह सुना तो उसने अपने वस्त्र फाड़ डाले और वह बिस्माने लगा :

“नाप का नाप ? पायलपन है यह ! फिर मैं मुनाफ़ा कहाँ से

कमाऊंगा ? यह क्या देवताओं के लिए भी अप्रिय बात कह रहे हों ? इससे तो व्यापारी लोगों के अतिरिक्त अम्मन—हाँ अब मैं उसका नाम स्वन-व्रता से यहाँ ले सकता हूँ क्योंकि यहाँ मुनने वाला कोई नहीं है—हाँ अम्मन के पुजारी लोग भी क्रुद्ध हो उठेंगे ।”

पर मैं अपनी बात पर अड़ा रहा । तब वह बोला :

“क्या तुम्हें पागल कुत्ते ने काट लिया है या बिच्छू ने डंक मार दिया है तुम्हारे ? मेरा तो विचार था कि तुम उपहास कर रहे थे । पर धीर—जब तुम चाहते हो तो ऐसा ही सही—हमारे ताबीज का देवता हमारी रक्षा करेगा—तो हम गरीब जरूर हो जाएँगे—वैसे मैं स्वयं भी दुबले आदमियों को देखकर खुश नहीं होता - अबनर अपनी आँखें फेर लिया करना हूँ ।”

मैंने कहा : “तुम बेहद झूठे हो—गरीब तुम कभी नहीं हो सक्ते—हर बात में तुमने लाभ उठाना सीख लिया है—मैं वैद्य हूँ और इस नाम से तुम इतने मोटे हो, तुम्हारा भागना-दौटना अब जरूरी है—जाओ और किसानों की सहायता करो—याद है कप्ताह बेबीलों की धूल में हम कैसे चला करते थे—और लंबैनान के पहाड़ों में जब तुम गधे पर चढ़कर बने थे तो कितना मुस हूए थे—हाँ, यहाँ के चढ़े-चढ़े फिर का-देश में आकर ही उतरे थे—ओह ! क्या थे वह दिन ! कान में फिर जवान हो सक्ता ।”

देर तक हम मदिरा पीने हुए बाने करने रहे । मैंने जब मेरे साथ रात को मेरी घटाई पर सोई तो उमने दमन हटाकर मेरे होंठों के गम्भुज अपनी भूरी त्वचा कर दी थी—मैं उसके साथ आनन्द भोगता हुआ मो गया । मैंने उसे फिर भी बहन कहना नहीं चाहा पर वैसे मैं उसके गाय घड़ा फोड़ने को तैयार हो गया क्योंकि वह मेरी मित्र तो थी ही—पर प्यारी भी थी ।

दूसरी सुबह मुझे गुवर्णगृह में राजमाता की सेवा में उपस्थित होना पड़ा तबसे मेरा थाबीज जादूगुनी कहने लग गया था । मेरे दिवंगत में उसकी यह उपाधि सही थी क्योंकि उसने अपनी आगार शक्ति में मेरी अम्माइयों को बुराई में बदल दिया था ।

जब मैं अपने जहाज की ओर लौटा और मैंने अपने राजसी वस्त्र पहने और अपने रतने के पदक पहने तब मेरी रसोई बनाने वाली स्त्री मुत्ती वहाँ आ पहुँची और वृद्ध होकर कहने लगी :

“शुभ है यह दिन जो मेरे मालिक घर आये, पर यह वहाँ का कायदा है कि आते ही रातभर रंगशालाओं में डोलने रहे और घर की मुछ भी नहीं ली, जिसे मैंने साफ करके तुम्हारे लिए सजाया है और खाना तक नहीं खाया जबकि मैंने तुम्हारी पसंद के उत्तमोत्तम धीबीर के खाद्य बनाये है—अब घर चलो और उन्हें साओ—और यदि अपनी उस रसूल को अलग नहीं छोड़ सकते हो उसे भी साथ ले आओ—पुरुषों का ही रहन-सहन विचित्र है—मुझे अब इस वृद्धावस्था में तो उन पर कतई विश्वास नहीं रहा है।”

ऐसी थी मुत्ती हालाँकि मैरिट को, जिसे उसने रसूल कहा था, बहुत ही आदर की दृष्टि से देखा करती थी। परन्तु यह उसके बोलने-चालने की विचित्र आदत थी जिसका मैं आदी था। उसका बड़बड़ाना मुझे मधुरकर प्रसीत हुआ क्योंकि अब मुझे लगने लगा कि मैं घर आ गया था। मैं मैरिट को लेने चला गया। मुत्ती की बड़बड़ाहट तब तक जारी रही जब तक मैंने उसे झट न दिया। और तब वह एकदम चुप हो गई और साथ ही खुश भी हो गई क्योंकि उसे अनुभव होने लग गया कि घर का मालिक लौट आया था।

मैरिट के साथ मैंने घर आकर धीबीर का उत्तम भोजन किया जो मुत्ती ने बड़े परिश्रम से बनाया था। उसने मकान एकदम नया कर दिया था, ऐसा सजाया था उसे। जगह-जगह घर में फूल लगाये थे और जिस विल्सी की सूती हुई लाना पहले मेरे घर के द्वार के पास पड़ी थी अब वह पड़ोसी के द्वार के पास पड़ी थी।

खा-पी चुकने के बाद पड़ोसी मुझसे मिलने और मुझे प्रेमोपहार भेंट करने आये। उन्होंने कहा : “मालिक सिन्धूदे ! “जब तुम चले जाते हो तो हमें तुम्हारा यहाँ न होना बहुत ही महंगा पड़ता है—तब हमें तुम्हारे कितनी खरब पड़ती है हम यह कैसे बतलाएँ।” उनमें मेरे सभी पुराने

उनके प्रेम को देखकर मेरा हृदय भर आया—उम समय मैंने अनुभव किया कि मैं कितना मुगो था—मेरे पाम सुन्दरी मँरिट थी—मेरे पाम मेरे रोगी थे जो मुझे प्रेम करते थे, मुनी थी जो सर्वोत्तम खाना बनाती थी।

फिर रोगी घाने लगे और मैं उनकी परिचर्या में लग गया। मँरिट मेरी सहायता करने लगी। उसने अपनी बढ़िया पोशाक की बाँहें ऊपर सरका ली थी। कितनी अच्छी लग रही थी, वह मैं कैसे लिखूँ ? और तब मैंने कहा : “ओ जल पड़ी ! जल बहाना रोक दे—क्योंकि ऐसा समय फिर तो नहीं आवेगा।”

गाम हो गई और मैं राजमाता के यहाँ जाना बिल्कुल भूल गया। मँरिट ने मुझे वहाँ जाने की याद दिलाने हुए कहा कि रात को वह मेरी प्रतीक्षा अपने पास करेगी।

जब मैं नदी पार करके सुवर्णगृह पहुँचा तो पश्चिमी पहाड़ियों के पीछे सूर्य डूब गया था और पहला नक्षत्र आकाश में दिखाई देने लगा था—

राजमाता मुझसे एक एकात कक्ष में मिली जहाँ बहुत-सी छोटी-छोटी रंगविरंगी बिड़ियाएँ जिनके पर काट दिये थे—पित्रों में फुदक रही थी। वह शायद अपनी जवानी के दिन अभी तक नहीं भूली थी जब वह बिड़ियाँ पकड़ कर बेचा करती। उस समय वह बैठी हुई रंगीन दरी बुन रही थी। मुझे देखकर उसने तीखे स्वर में डाँटा क्योंकि मैंने पहुँचने में इतनी देर कर दी थी। फिर उसने पूछा : “क्या मेरे पुत्र का पागलपन कुछ कम हुआ है या उसका सिर खोलना ही पड़ेगा ? उसने अपने एटीन का बड़ा शोर मचा रखा है जिससे लोग भड़क उठते हैं—मेरी समझ में नहीं आता कि अब उसकी आवश्यकता ही क्या रही है जब नकली देवता अम्मन भी उठाकर फेंका जा चुका है और फराऊन की सर्वोच्च शक्ति का प्रतिद्वंदी बाकी रहा ही नहीं है !”

मैंने उसे फराऊन एखनैटोन के बारे में और उसकी पुत्रियों के बारे में सब कुछ बतलाया। राजकुमारियों के हिरन के बच्चों और फुत्ते के पिल्लों के साथ खेल और एखनैटोन की पवित्र शील पर सँवर करने की सारी वार्ता कह सुनाई। धुनकर वह भावावेश में आ गई और फिर उसने मुझे अपने पैरों के पास बिठाकर मदिरा पिलाई और स्वयं भी पीने लगी। और शीघ्र

ही मदिंग उनके गिर में बह गई और उनकी बीच घर में उनका निदधन उठ गया। वह कहने लगी :

“मेरे पुत्र ने मुझसे मांग जाने दिन दुर्गना की उषस में एकाकी गग दिवा था—परन्तु मैं तो देवता ही मित्र हूँ।” कि मुम मायाविष स्पर्श हो और माय में व्यवहार कुशल और मेक और कुडिमान भी हो। हास्यवि मेरी मया में नहीं आता कि मेरी दिन मानि हिनकर हो मयनी है, क्योंकि मेक लोग आसानी पर दुर्ग ही होने है। जो कुछ भी हो, मुझसे परी रहने में लगभी होती है। इन एटीन की मेरे आसनी धर्मना में इनका कवितायी बन जाने दिया है—और इनके अब मैं योगदान हो गई हूँ—यह मेरा विचार नहीं था कि मायों इन हद तक पहुँच जायें। मैंने तो इन एटीन को दमनिष् बनाया था कि इनकी आह में आसन की कविता उगार जाय और मेरे पुत्र की एवमात्र पवित्र स्थापित रही आवे और अमनी बात भी यह है कि पुत्राई ‘आई’ दमनिष् ही दमे पोलिन में लाया था और उमी में इन सरके के दिमाग में भुगा दिया। ‘आई’ को मुम जानने ही हो कि वह मेरा पति बना हुआ है—हानीकि उनके और अपने बीच मैंने कोई घटा नहीं पोसा है। फिर भी इन बम्बरन में मैं ऊँच उठी हूँ क्योंकि उनका पीएर अब शुभ हो चुका है।”

गारे पीवीक में यह बात सभी जानने थे और इन भेद को छिपाने की भी आवश्यकता रात्रमाता अब नहीं करती थी। उसे जैसे शर्म आनी ही नहीं थी। मैं बैठ था और जैसे कि बैठोंगे मित्रों बहुत कुछ कह लेनी है जैसे ही वह बं जा रही थी। मैंने देखा कि वह इन बातों में अन्य मित्रों से भिन्न नहीं थी। फिर वह कहने लगी :

“मुझे तो ‘आई’ की इन पुत्री के कारण बड़ी विस्ता बनी रहनी है—नैकरनीनी बार-बार पुत्रियाँ ही जन्मनी है हास्यवि मेरी हस्मिन दादयो ने भरमक उनकी सहायता करने का प्रयत्न किया है—लोग इनसे इतनी भुगा करने हैं कि मुझे इन्हें छिपाकर रखना पड़ता है। वह नाक में हाथीदाँत की मुद्रा पहनती हैं और बच्चों के शिर लम्बे और पपटे बनाने में दक्ष हैं। पर मेरा उनके बिना काम नहीं चलता क्योंकि उनकी जैसी दक्ष पैर दवाने वाली और लम्बे मोचने वाली और कौन हो सकती हैं? फिर वह मुझे

बह-बह ग्रीनधियां बनाकर निभाती रहती है कि मेरी कामोत्तेजना उठनी रहे और मैं आनन्द भोगनी रहूँ।”

यह स्वयं ही-ही करके हैंसने लगी। यह नंगे में धूर हो रही थी। मैं धुपचाप बैठा हुआ उसकी कान्ती उंगलियों को देख रहा था—वह नदी तट पर कपड़े धोने वाली घोंबियों की भाँति लगी रही थी। फिर वह बोली : ‘आई’ से मुझे घृणा है—उसमें अब क्या बाकी है ? अब तो अपने प्यारे हृदयों से आनन्द लेती हूँ—यह सोंग बड़े चतुर बँध होने है और लोग अपने अज्ञान के कारण इन्हें जादूगर कहते हैं—मैं अब ममोग को कोई नई चीज मानकर उसे नहीं करती बल्कि इसलिये कि मेरे हृदयी बँधों ने इसे जवान बने रहने के लिए मेरे लिए आवश्यक बताया है। हालाँकि अन्य दरबारी स्त्रियाँ सब जगह घूमने-फिरने के बाद ‘उन्हें सड़े मांस में ही सबसे अधिक स्वाद है’ मानकर ही उनसे प्रेम करती है—मैं तो इसलिए उन्हें पसन्द करती हूँ कि उनके संपर्क से मैं जीवन की गर्मी महसूस करती हूँ—अधिकाधिक प्रकृति के पास अपने को अनुभव करने लगती हूँ क्योंकि उनमें और जानवरों में बहुत थोड़ा ही भेद होता है—वैसे मैं जवान हूँ—क्योंकि यौवन बनाये रखने के लिए मुझे दवाइयाँ या पोष्टिक जड़ी-बूटियाँ नहीं खानी पड़ती, “फिर वह थोड़ी देर चुप हो गई। मैं धुपचाप देख रहा।

“दुनिया में भलाई से कुछ प्राप्त नहीं होता—जो कुछ होता है सब शक्ति से होता है। जो जन्मजात शक्तिशाली होने हैं वह इसका महत्त्व अनुभव नहीं कर पाते—परन्तु मैं इसका महत्त्व जानती हूँ क्योंकि मैं तो गरीब थी। इसे बनाये रखने के लिए मैंने सब कुछ किया है—कभी कसर नहीं छोड़ी है—चाहे देवता लोग मेरे कर्मों से खुश न हो पर मुझे इसकी तनिक भी चिन्ता नहीं है क्योंकि मैंने सदा से फराऊन को ही सर्वोच्च माना है। दुनिया में न सचाई रह जाती है और न बुराई—जो सफल हो गया

और जो असफल रह गया और पकड़ गया वह मेरा दिल धबरा उठता है और मेरे पेट में पानी

मैं अपने किये हुए पर सोचने लगती हूँ। आखिर मैं स्त्री औरत ही हूँ कि सभी स्त्रियाँ अन्धविश्वास करती हैं—मेरा दिल टुकड़े-टुकड़े कर लड़कियों को जन्म देती है—मेरा दिल टुकड़े-

टुकड़े हो जाता है—मुझे ऐसा लगता है कि जो पत्थर मैंने अपने पीछे फेंके हैं मुझे आगे पड़े पाने लगे हैं।”

उसके मोटे होठ कांपने लग गए। मैंने देखा वह दरी के गूल में गाँठ लगा रही थी और उसे देखकर मेरा हृदय स्तब्ध रह गया। सम्पूर्ण निश्चयता साक्षात्कार की बनी हुई दरियों में मैंने ऐसी गाँठ कहीं नहीं देखी थी। ऐसी गाँठ मैंने देखी थी अपनी माता कीपा के कमरे में—धुएँ से काली हुई उस बाँस की टोकरी के अन्दर बिछी मोटी दरी में—तो क्या वह इसी के हाथ की बनी हुई थी—तो क्या मैं सुवर्ण-गृह से हो—? और मेरी रीढ़ की हड्डी में होकर टड पार हो गई—मेरे माथे पर पसीना झलक आया। मेरा शरीर जैसे छूँट गया।

पर उसने मेरी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह कहने लगी :

“सिन्धूदे ! मेरी स्पष्ट वार्ता से शायद तुम मुझे बुरी और घृणा के योग्य औरत समझने लगे हो—लेकिन मेरे कामों के लिए मुझे कठोर नियमों से मत जाँचो—बल्कि वास्तविकता समझने की कोशिश करो। बिड़ीमार की जवान सहकी के लिए जिनके पैर खोड़े और बुरे से मे और जो काली थी—फराऊन के हराम में घुसकर बड़ा शासन करना कोई आसान बात नहीं थी—खामकर जब बड़ा सभी उससे घृणा करते थे। वह तो केवल फराऊन की एक उमंग थी कि मैं उसकी निगाहों में खड़े रहूँ और फिर मैंने उसी उमंग को बनाये रखने के लिए अपनी जवानी का काम लिया और उसे जीवन के वह-वह आनन्द दिये कि जिनसे वह सदा अनभिज्ञ था। हम्मी जाति के पास अनेकानेक ऐसी विधियाँ हैं जिनसे सम्पन्न गमाज अनभिज्ञ हैं। और कामान यह था कि मैं न स्वयं गर्भवती होनी पड़े न फराऊन की अन्य किसी स्त्री को गर्भधारण करने देनी पड़े। मुझे मालूम था कि जानकर आश्चर्य होगा कि मेरे कामन में सुवर्णगृह में किसी स्त्री ने पुत्र नहीं जन्मा—जो पुत्रियाँ हुईं उनके विवाह मैंने पैदा होने ही अपने प्रभु के मे उच्च मामलों के साथ करा दिये। मैं स्वयं गर्भधारण करने अपने मोन्दर्य और जीवन को बिगाड़ना नहीं चाहती थी और जब फराऊन मर हो गया तब मैंने उपयुक्त समय समझकर पहला गर्भधारण किया। परन्तु जब मेरे उस गर्भ से पुत्री जन्मी तो मैं भयभीत हो गई—बही है यह बँके

और विनया विवाह अभी तक नहीं किया है - यह मेरे घरकर्म में दुगरा भी है। बीते कुछ दिनों में भी अपने घरकर्मों में कई लोग मर गये हैं और एक में उन्हें मर्ग मही होगा। उनके बाद मैं बाकी परेमान रही और फिर याकर एक पुत्र हुआ। परन्तु अपने मुझे कोई सम्मान नहीं दी क्योंकि वह नामान्वित था और जब मैंने अपनी जानाई अपने कर्मों के लिये पुत्र पर लगाई—और मरी मुझे अपनी हार दिखाई दे रही है क्योंकि बीते दिनों ! तुम बैठ हो। बोली है मैं यह कमाए कि मैंने अपने जादू में पराक्रम की मध्य रथी के गर्भ में तुम उत्पन्न नहीं होने दिया ?”

बाँधने हुए मैंने उनके मेचों में शरीर और कहा ‘राजमाता तुम्हारा जादू विन्या ही आमान है क्योंकि उसे तुम्हारी उँगलियों ने रंगीन दरिया बनाकर सबसे सम्मान दिला दिया है।”

उसके हाथ रक गए और उसके मेचों की मफेदी दिखाई देने लगी फिर वह कुछ परेमान सी होकर बोली

“क्या तुम जादूगर भी हो विन्या ? या इन बातों को सभी जानते हैं ?”

मैंने कहा ‘गर्भी को सभी कुछ ज्ञात है—मैंने ही किसी ने तुम्हारे बालों को न देखा हो, लेकिन फिर भी रात के तुम्हें पहचाना है और रात की हवा ने तुम्हारी हरकतों के बारे में कई कानों में पुसपुसाकर बहानियाँ सुनाई हैं। तुम्हारे भय में लोगों की जुबान तो बन्द हो गई पर रात की हवा की पुसपुसाहट तुमसे भी न रही।—जो भी हो पर जो जादू की दरी तुम्हारी उँगलियों के नीचे इस समय बन रही है, अत्यन्त सुन्दर है और यदि यह मुझे उपहार में मिल जाय तो मैं बहुत ही आभारी रहूँगा।”

वह चुप हो गई। फिर काँपती हुई उँगलियों से काम करने लगी—और अधिक मंदिर उसने पी। फिर मेरी ओर हठात् मक्कारी से देखनी हुई बोली :

“यह दरी सुन्दर है—इसका बड़ा मूल्य है क्योंकि यह मेरे हाथों से बनी है—यह शाही दरी है—और यदि यह कभी बनकर समाप्त हो गई तो शायद मैं इसे तुम्हें दे दूँ—पर बदले में तुम मुझे क्या दोगे ?”

मैं हँसा और मैंने उत्तर दिया : “राजमाता ! तुम्हें बदले में क्या,

बल्कि यों कहूँ कि भेंट में मैं अपनी जीभ दूँगा— गो मैं यह जरूर चाहूँगा कि वह जहाँ है वहीं रही आवे। यह जीभ तुम्हारे विरुद्ध कभी न बोल सकेगी यह तुम्हारी है।”

सुनकर वह कुछ बहदवाई फिर मुझे कनखियों से देखकर कहने लगी :

“जो चीज बीसे ही मेरी है उसे मैं उपहार में क्यों स्वीकार करूँ ? यदि मैं तुम्हारी जीभ कटवा लेना चाहूँ तो भला ऐसा करने से कौन रोक सकता है। इसके अतिरिक्त मैं तुम्हारे हाथों को भी कटवा डाल सकती हूँ कि तुम्हारी जीभ कट जाने के बाद तुम लिसकर भी किसी को कुछ बता न सको—इससे भी आगे का मार्ग भी मेरे पास ही है। मैं तुम्हें अभी पकड़वाकर भूमि के अन्दर तंखानों में अपने प्यारे हथियारों के पास पहुँचाये देती हूँ जहाँ से तुम कभी लौट ही नहीं सकोगे क्योंकि वह लोग नर-बलियों के बितने शीकीन होते हैं, यह तो तुम जानते ही होगे सिन्धूहे !”

मैंने कहा : “राजमाता, निश्चय ही तुमने अधिक मदिरा पी ली है। अब आज रात और न पीना अन्यथा स्वप्न में तुम्हें दरियाई घोड़े दिखाई देने लगेंगे।”

जब मैं चलने के लिए उठा तो वह नंगे में चूर बुढ़ियाओं की भाँति बहकने लगी, बोली :

“तुम मुझे खूब शकमा देते हो सिन्धूहे ! खूब शकमा देते हो।”

मैं सही-सलामत नगर को लौट आया और मैरिट को भुजाओं में बाँधकर सो गया। अब मेरा हृदय उदास था। मुझे रह-रहकर दिखाई दे रहा था कि सुवर्ण-गृह से एक दूरी में लिपटा हुआ अच्छा सरकंडो की नाव में रखा गया और नील के जल में धीवीज की ओर दो काले हाथों ने उसे बहा दिया जहाँ मेरी माता कीपा ने उसे उठाकर पाल लिया।

जब मनुष्य का ज्ञान अधिक बढ़ जाता है तो परेशानी भी बढ़ जाती है—

जब एल्टेटोन से मैं धीविज आया था तो उसका सरकारी रूप यह

था कि मैं वहाँ जीवन-गृह का मुआयना करने जा रहा था। बरसों बाद जब मैं वहाँ पहुँचा तो मैंने देखा कि अब वहाँ पहली-सी धूम नहीं थी। एक्स्टेंशन में भी अभी तक मैंने एक भी सिर नहीं खोला था और मुझे भय लगने लगा था कि वही मेरे हाथों की दक्षता कम तो नहीं हो गई है।

जीवनगृह में विद्या प्राप्त करने के लिए वह पहली-सी पक्ष नहीं रही थी कि विद्यार्थी को पहले नीचे दर्जे का पुजारी बनना पड़े—अनएव मैंने सोचा कि शायद उन्हें 'क्यों' पूछने का अधिकार भी मिल गया हो। परन्तु जाकर जब मैंने उन्हें देखा तो मेरा दिल बैठ गया क्योंकि अब के विद्यार्थी लोग 'क्यों' पूछना ही नहीं चाहते थे—बल्कि उन्हें तो पकी-पकाई सीर से मतलब था कि झट उसे घोट-पीटकर उत्तीर्ण हो जाएँ और फिर एकदम धन कमाने लग जाएँ। वहाँ ज्ञान प्राप्ति का जैसे उद्देश्य ही नहीं रह गया था।

वहाँ अब इतने कम मरीज आते थे कि मुझे तीन सिर खोलने में हफ्तों लग गए। मैंने अनुभव किया कि अब मेरी आँखें कुछ धुंधला देखती थी और मुझे रोग पहचानने के लिए अब रोगी से बहुत सारे प्रश्न करने पड़ते थे। पहले जैसी सफाई और दक्षता अब मुझमें नहीं रही थी। उसी दिन से मैंने घर आकर लोगों का ज्यादा-से-ज्यादा इलाज शुरू कर दिया और वह भी मुफ्त क्योंकि मैं फिर अपने हुनर में दक्ष बनकर रहना चाहता था। मेरे तीनों सिर खोलने के काम सफल रहे। दो तो तीसरे ही दिन मर गए पर उनसे मेरे हुनर में फर्क न पड़ा। तीसरा जीवित रहा आया जो एक लड़का था। जीवन-गृह में मेरी धाक जम गई।

मेरे ओहदे के कारण जीवन-गृह में मुझसे सघ डरते थे और मेरा आदर करते थे—परन्तु पुराने वैद्य लोग मुझसे खिंचे-खिंचे रहते थे क्योंकि मैं एक्स्टेंशन से आया था जहाँ एटोन का साम्राज्य था। परन्तु मैंने वहाँ देवताओं के बारे में एक दिन भी बातें नहीं कीं और पेशे की बातें ही करता रहा। वह लोग भी कुत्तों की भाँति मेरे चारों ओर सूँघने का प्रयत्न करने हुए चक्कर लगाने रहे।

तीसरा सिर खोलने के बाद शायद उन्हें विश्वास हो चला था कि मैं केवल पेशे से ही सम्बन्ध रखनेवाला व्यक्ति था जिसे देवताओं के ज्ञानों

और भावनीतिव विरसों में कोई बच नहीं थी। और तब वह अल्प-
योग और दस बंद मुक्तों आकर बहने लगा।

“माही निम्नरे ! यह तो तुम देना ही रहे हो कि बीर-गुह में अब
पाने बीना जान नहीं रहा है—हालांकि बीबीज में बीमारियों की बनी
नहीं हुई है। तुम अनेकानेक देनों में घुमे हो और माना प्रचार के आगे
तुमने देने है लेकिन फिर भी मुझे मज है कि बीना इलाज आरक्षण बीबीज
में गहन्ययप लीबो से और वह भी छिपकर दिया जाता है—बीना तुमने
कही नहीं देना होता। इस इलाज में न चाकू की उल्लेख पड़ी है न आग
की न औषधियों की न पट्टियों की। मुझने बिनी ने यह मान कही है कि मैं
मुझे ऐसा इलाज देने के लिए आमंत्रित बच्चे परन्तु मुझे पाने बचन
देना होता कि जो तुम देना उसे गहन्य ही बना रहने दो और अन्दर जो
समय, जिस स्थान पर ऐसा इलाज होता है, अपनी आँखें बंदवा लो जिसमें
मान में तुम अनभिज्ञ रहे आधो—यदि मुझे यह सब खींचार है तो मेरा
निमन्त्रण स्वीकार करो।”

उसकी बातें सुनकर मैं चकरा गया क्योंकि मुझे प्रराजन के प्रति
तनका दिखाई देने लगा फिर भी मेरी दृष्टा हुई कि उस गहन्य को जान
सकू। मैंने कहा : “मैंने भी गुना है कि आरक्षण बीबीज में बिचित्र माने
हो रही है—पुनर कहानियाँ गुनाने है और स्थियों को दमहाम होने मने
है—परन्तु इलाजों के बारे में मैंने कुछ नहीं गुना है। लेकिन बंद होने
के नाने मैं इस विचार के किन्तुन विरुद्ध हूँ कि बिना चाकू, आग, औष-
धियों और पट्टियों के भी इलाज हो सकता है—और इसीलिए मैं एमी
छोनेप्रदी की बातों में पड़ना ही नहीं चाहता कि जाकर उन्हें देना और
स्वयं भूटा कहाऊँ।”

“हमारा तो विचार था माही सिन्धूदे, कि तुम निष्पक्ष स्वभाव वाले
हो।” यह बोला : “क्योंकि तुमने देना-देना घुमे हैं और ऐसे-ऐसे इलाज
निस्त्वय रूप से देखे होने जिन्हें मिश्र में कोई जानता भी नहीं है। जब
वहना हुआ रक्त बिना बिगटी और गर्म छलानों के रोका जा सकता है
तो भना बिना चाकू या आग के इलाज क्यों नहीं हो सकते ? और फिर
हमने तुम्हारा नाम किन्तुल नहीं आवेगा। तुम्हें ले चलने के तो और भी

कारण हैं और तुम इतना विश्वास रखो कि तुम्हारे साथ किसी तरह का धोखा नहो हीगा।”

मेरी उत्कंठा बढ़ने लगी और मैंने स्वीकृति दे दी, अंधेरा होने के बाद वह मुझे मेरे घर कुर्सी पर बिठाकर ले चला। उसने मेरी आँखें एक कपड़े से बाँध दी कि मैं मार्ग न पहचान सकूँ। फिर वह मुझे पैदल किसी इमारत के अन्दर ले चला। लम्बे-लम्बे दालानों और पेचीड़े मार्गों से सीढ़ियाँ चढ़ते-उतरते वह मुझे ले जाने लगा। जब इस तरह का फीचर लिये तो मैंने ऊब कर कहा कि उस मूर्खता से मैं परेशान आ गया था। उसने मुझे सांत्वना दी और मेरी आँखों की पट्टी यहीं खोल दी और फिर वह मुझे एक पत्थर के बने हुए बड़े कमरे में ले गया जहाँ अनेक दीपक जल रहे थे।

पृथ्वी पर तीन रोगी पालकियों में पड़े थे। एक पुजारी जिसका तिर घुटा हुआ था और जो तैल से चमक रहा था आया और उसने मेरा नाम लेकर मुझसे कहा कि मैं उन रोगियों की जाँच स्वयं कर लूँ कि बाद में उनका इलाज चालाकी न बहलाए। उसकी वाणी स्थिर और शांत थी और वह देखने से ही विद्वान् मालूम होता था।

मैंने रोगियों की जाँच की। तीनों रोगी पालकियों से नीचे उतरने के योग्य नहीं थे। उनमें से एक युवती स्त्री थी जिसके हाथ-पैर सूख गए थे और जीव रहित थी। उसका मुँह भी सूजा हुआ था। दूसरा एक लड़का था जिसके सारे शरीर पर सतरनाक फोड़े-फुँसी हो रहे थे और कई स्थानों पर रक्त चमचमा रहा था। तीसरा एक बूढ़ा था जिसके पैरों को सड़का मार गया था, वह उन्हें हिला भी नहीं सकता था। उसकी तबलीफ वास्तविक थी क्योंकि जब मैंने उसके मुँह चुभाई तो उमे पता ही नहीं चला।

मैंने अन्त में कहा :

“मैंने इन्हें पूरी जानकारी में देक्ष दिया है। मृत्यु और स्त्री का तो मैं बहुत कर सकता सिवाय इसके कि इन्हें जीवन-मृत्यु में भेज दूँ। मरके बाद शायद बार-बार गन्धक के छल में स्नान कराने से कुछ बच जाय।”

पुजारी मुनकर मुस्कराया और उसने उस बड़े कमरे के कोने में पड़ी हुई एक पत्थर की चौकी पर हमसे बैठने को कहा । फिर उसने दासों द्वारा रोगियों की पालकियों सहित कमरे के बीच में बने हुए विशाल बाल-स्तम्भ पर रखवा दिया और फिर धूम्र जलाया जिसमें एक प्रकार का नशा था । और सभी बगल के मार्ग से गाते हुए बहुत से पुजारी लोग अन्दर आये । बहु अम्जन की स्तुति या रहे थे । रोगियों के पास बैठकर फिर वह गाने लगे, स्तुति करने लगे और जैसे जैसे उनका ओश बढ़ता गया वह ज्यादा-ज्यादा बिल्लाने लगे और फिर उछलने कूदने और चीखने लगे । उनके धुनों पर से स्वेद गिरने लगा और उन्होंने अपने कंधों पर से वस्त्र फेंक दिये । हाथों में घटियाँ बाँध ली और पैने पत्थरों से छाती पीटते हुए उन्होंने वही पाव कर लिये ।

मैंने इन सभ्य की बातें सीरिया में देखी थी और जो कुछ हो रहा था उनके भी ठण्डी दृष्टि से अवलोकित हुए देख रहा था । उनका दोर बढ़ता गया, बढ़ता गया और फिर वह दीवाल पर भूटियों मारने लगे और दीवाल पटने के भाव लुप्त गई और अन्दर से अम्जन दीपों की ज्योति में प्रबल होकर उन पर छा गया और एरदम पुजारी लोग चुप हो गये । बीच का भा बहुत गन्नाटा छा गया । अम्जन का मूस उस अघकारपूर्ण स्थान में उन दीपों के प्रकाश में दिव्य ज्योति में जगमगाता हुआ प्रतीत होने लगा ।

फिर एरदम उन पुजारियों में से उनका मुखिया आगे आया और उसने शब्दों की लय में उसे बुलाया । वह चिल्लाकर बोला : ' उठ और चल, क्योंकि अम्जन स्थान की लुप्त पर विशेष कृपा हुई है, क्योंकि मेरा विराम उस पर है—उठ । "

और दौड़े बिनाही वे, अपनी कानों में देता कि तीनों रोगी अपनी अपनी पालकी से से उठ आये और अम्जन की मूर्ति की ओर दबकती बौंहे हुए, चलते हुए चलने लगे । फिर वह मूर्ति के सामने आकर पपक-पपक कर गये लपक गए और फिर उसकी स्तुति गाने लगे ।

मरणा में अम्जन की दीवान्द बन्द हो गई । पुजारी लोग उठकर चले गए । दासों के साथ-साथ हजारों हजारों लोग भी —

चाहे वह गरीब है, चाहे दास; यहाँ तक कि परदेसी भी उसकी दृष्टि में एक से है। मेरा विचार है कि पहला चक्र अब समाप्त हो चुका है और अब ससार का दूसरा चक्र घूमने वाला है। शायद दुनिया को बदलकर मनुष्यों को बराबरी देने का यह अवसर सर्वोत्तम है।”

ह्विहौर ने विरोध में हाथ ऊपर उठा दिए और मुस्कराकर कहा : ‘तुम तो दिन में भी स्वप्न देखने लगते हो सिन्यूहे ! हालाँकि मैंने समझा था कि तुम समझदार आदमी होंगे। मैं शायद तुमसे कम महत्वाकांक्षी हूँ। मैं तो केवल इतना चाहता हूँ कि जैसा था फिर वैसा ही हो जाय। इसी में मित्र की शान है। मालिक, नोकर, दास जो अहाँ जन्मा है वहीं रहा आवे और गरीब की भर पेट अन्न मिल जाय। न्याय में दण्ड का प्रयोग हो, अन्यथा व्यवस्था शोचनीय हो उठती है।’

फिर उसने मेरी बांह छूकर कहा :

“सिन्यूहे, तुम समझदार व्यक्ति हो। कम से कम यह तो खूब जानते हो कि इस नकली फ़राऊन का राज अधिक नहीं चलेगा। हम ऐसे समय से गुज़र रहे हैं जब हर व्यक्ति को अपना ध्येय बनाना आवश्यक हो गया है। जो हमारे साथ नहीं है वह हमारा शत्रु है। फिर तुम्हारा अम्मन में विश्वास रखने न रखने से भी हमारी और अम्मन की कोई हानि नहीं है क्योंकि यदि तुम उसे न मानो तो भी वह सर्वशक्तिमान बना रह सकता है। परन्तु मित्र पर यह अभिशाप जो आजकल छा रहा है, तुम उतार सकते हो। तुम्हारी इतनी शक्ति है सिन्यूहे ! कि तुम मित्र को उसी पुरानी शान में वापिस ला सकते हो, हम यह जानते हैं।”

उसके शब्दों से मैं कुछ परेशान हो गया। मैंने और मदिरा पी और मैंने ज़बर्दस्ती हँसने हुए कहा : “शायद तुम्हें किसी पागल कुत्ते या बिन्दू ने बाट खाया है जो तुम मुझे शक्तिशाली समझ बैठे हो। जबकि मैं ऐसा नहीं हूँ जो तुम्हारे समान इलाज भी नहीं कर सकता।”

वह उठा फिर बोला :

“चलो मैं तुम्हें कुछ दिखला दूँ।”

और वह दीप लेकर वह मुझे एक रास्ते की तरफ से गया। जाने

... उसने कई ताने खोले और फिर हम एक बड़े बक्ष में घुम गए।

मैंने देखा वहाँ सोना, चाँदी और जवाहरात बिने रत्ने थे जिन पर प्रकाश जब पड़ा तो वह चमचमा उठे, उसने कहा:

“यबराओ मत—मैं तुम्हें सोने से ललचाने नहीं आया हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ तुम्हारी दृष्टि में यह धूल है—फिर भी यह देख लेने में तो तुम्हारा कोई हर्ज है ही नहीं कि अम्मन अब भी फराऊन से अधिक धनवान है—मैं तुम्हें अब कुछ और ही दिखाऊँगा—”

उसने सामने का एक और भारी तबिये का द्वार खोल दिया, अन्दर जाकर मैंने देखा—

एक पत्थर की चौकी पर एक मोम की मूर्ति सिर पर दुहरा ताज पहने सेटी हुई थी जिसकी छाती और वनपट्टियों में हड्डी की कीलें ठुकर रही थी। स्वतः मेरे दोनों हाथ ऊपर उठ गए और मेरे मुँह से वह मन्त्र निकलने लगे जो मैंने प्रथम श्रेणी के पुजारी बनते समय जादू-टोने से बचने के लिये सीखे थे। हिहीर ने मुझे मुस्कराकर देखा और उसके स्थिर हाथों में दीप तनिक भी नहीं हिला।

वह बोला : “क्या अब भी तुम्हें विश्वास है कि नकली फराऊन अधिक जी सकेगा ? हमने इस मूर्ति पर जादू कर दिया है और इसके हृदय और मस्तिष्क में पवित्र सुईयाँ घुसा दी हैं—फिर भी हमारे जादू का असर धीरे-धीरे हो रहा है और अभी बहुत गड़बड़ियाँ होनी बाकी हैं। इसके अतिरिक्त उसका देवता भी उसकी पौड़ी-बहुत रक्षा कर रहा है—”

द्वार बन्द करके वह मुझे फिर अपने वक्ष में ले आया और उसने मेरा प्याला फिर मदिरा से भर दिया—मेरा प्याला मेरे हाथ में हिलने लगा—मदिरा मेरी ठोड़ी पर छलक आई और प्याले का किनारा मेरे दाँतों से बजने लगा—मैंने ऐसा भयानक जादू आज तक कही नहीं देखा था।

उसने कहा : “हमने फराऊन के केश और नाखून कैसे मँगा कर इस मूर्ति में लगाये हैं यह हमसे न पूछो—इतना मैं बतावे देता हूँ कि यह सुवर्ण के बदले में नहीं लाये गए हैं—बल्कि अम्मन के नाम पर घाये हैं—जो भी हो अब तो तुम समझ ही गए होगे कि अम्मन की शक्ति फराऊन एण्डनेटोन की शक्ति से अधिक है।”

फिर वह आँखें अघमूंदी करके मुझे गौर से देखने हुए बोला : “उन

बीमारों को तुमने अम्मन के नाम पर अकटा होने देखा है और इसी तरह उसकी शक्ति दिनों-दिन बढ़ रही है क़राऊन जितना ज्यादा त्रियेगा उतनी ही कठिनाइयाँ लोगों को अधिकाधिक रूप से भोगनी पड़ेंगी—क्योंकि जादू का असर घीमा है। ...सिम्यूहे ! यदि मैं तुम्हें एक ऐसी औषधि दूँ कि जिसे तुम क़राऊन को उसकी सिर की पीड़ा होने समय पिला दो, जिससे फिर कभी पीड़ा रहे ही नहीं तो ?”

“आदमी और पीड़ा का तो साथ है,” मैंने सब कुछ समझकर भी नासमझ बनने हुए उत्तर दिया, “और मरे हुए को ही पीड़ा नहीं होती।”

उसकी जलती आँखें मुझपर गड़ गई और मैंने अनुभव किया कि उसकी प्रबल आरमशक्ति ने मुझ पर अपना असर कर दिया था—क्योंकि अब मैं जहाँ बैठा था वही अकड़ गया—हाथ-पैर भी न हिला सबा—उसने धीरे से कहा : ‘यह सच है—पर इस दवाई से बाद में कुछ पता नहीं चलता—किसी को तुम पर शक नहीं हो सकेगा, यहाँ तक कि शरीर में मसाले भरने वाले भी इसका पता न लगा सकेंगे—बस उसे तुम किसी तरह इसे पिला दो और वह फिर सोकर कभी न उठेगा—उसे न कोई कष्ट होगा न पीड़ा सब कुछ शांतिपूर्वक हो जायेगा।”

और इससे पहले कि मैं बोलूँ उसने हाथ उठा दिये और फिर कहने लगा :

“मैं तुम्हें सुवर्ण का लोभ नहीं देता—पर इतना अवश्य कहता हूँ कि यदि तुमने यह काम कर दिया तो तुम्हारा नाम शास्त्रकाल तक धन्य माना जायेगा—तुम्हारा शरीर भी कभी नष्ट नहीं होगा—अदृश्य हाथ तुम्हारी रक्षा करेंगे और कोई भी ऐसी मानवीय इच्छा नहीं रहेगी जो तुम चाहो और पूरी न हो—यह मैं तुम्हें देता हूँ क्योंकि यह सब मेरे अधिकार में है।”

उसने अपने हाथ उठा दिये । उसकी जलती हुई आँखें मुझे घूर रही थीं और मैं चाहकर भी उनसे अपनी निगाहें नहीं हटा पा रहा था । मैं अपने हाथ हिला भी नहीं सकता था—वह बोला :

‘यदि मैं कहूँ ‘उठो’ तो तुम उठ बैठोगे, यदि मैं कहूँ ‘हाथ उठाओ’ तो तुम्हें उन्हें उठाना पड़ जायेगा । परन्तु मैं तुम्हें तुम्हारी इच्छा के बिना

अग्नि के सम्मुख झुका नहीं सकता और न तुम्हें ऐसे कामों को करने के लिए मजबूर कर सकता हूँ जिन्हें तुम्हारा दिल न माने—यस यही मेरी शक्ति समाप्त हो जाती है। सिन्धूदे, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि मिश्र के लिए इस औषधि को उसे पिला दो और उसके सिर की पीड़ा को सदा के लिए शांत कर दो।”

उसने अपने हाथ नीचे गिरा दिये और अब मैंने देखा कि मैं अपने हाथ-पैर हिला-डुला सकता था। अब मैं काँप भी नहीं रहा था। उसकी मदिरा की मुगन्ध एक बार फिर मुझे अनुभव होने लग गई थी। और मैंने कहा : “हिहीर, मैं तुमसे किसी प्रकार का वचन नहीं लेता लेकिन इस दर्द मिटाने वाली औषधि को मुझे दे दो क्योंकि शायद वह पौषी के रस से अधिक उत्तम हो—और शायद कोई ऐसा समय आ जाय जब फराऊन स्वयं इसे पीकर भदा के लिए सो जाना चाहे।”

उसने मुझे वह औषधि एक रंगीन सोंगी में दे दी और कहा : “मिश्र का भविष्य तुम्हारे हाथ में है सिन्धूदे! यह ठीक नहीं मालूम होगा कि फराऊन के ऊपर किसी का हाथ उठ जाय—परन्तु सोंगी में कुछ इतना अधिक बढ़ गया है कि शायद वह सोचने लग उठें कि फराऊन भी मृत्यु से घरे नहीं है और किसी का चाकू उसके बस में घुस कर उसका रक्त बाहर निकाल लाय। लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए क्योंकि इससे फिर भविष्य में फराऊन की शक्ति कम हो जायेगी—मिश्र का भविष्य तुम्हारे हाथ में है सिन्धूदे।”

मैंने शीघ्री अपनी पेटो के नीचे छिपाते हुए व्यंग से कहा : “जिस दिन मेरा जन्म हुआ था उस दिन मिश्र का भविष्य किन्हीं उँगलियों में खेल रहा था जब वह सरकण्डों के बीच सूत की गाँठें लगा रही थी। हिहीर—ऐसी-ऐसी बातें हैं जिन्हें तुम जान भी नहीं सकते—हालाँकि तुम अपने मन में अपने आपको सर्वशक्तिमान समझते हो। मैंने औषधि से ली है—पर याद रखो—मैं कोई वचन नहीं देता।”

वह मुस्कराया, उसने बिदाई में अपने हाथ उठा दिये और रीति के अनुसार कहा : “बहुत होया तुम्हारा पास्तोषक !”

फिर मेरी आँखें बाधकर मुझे बाहर छोड़ दिया गया। इतना मैं कह

सकता हूँ कि वह तैलाने अम्मन के मन्दिर के नीचे थे—परन्तु इससे अधिक उनमें घुसने की विधि और मार्ग मैं नहीं बतला सकता—क्योंकि वह मेरा अपना भेद नहीं है।

6789

कुछ दिन बाद राजमाता ताया की साँप के काटने से मृत्यु हो गई। जब मैंने जाकर देखा तो वह मर चुकी थी। काटने समय उसके अपने बच्चों में से वहाँ एक भी मौजूद नहीं था।

रीति के अनुसार मुझे उसके शव के पास तब तक बैठना था जब तक कि 'भूतक-भूह' से सोग आकर उसे न ले जाने और तभी मेरी मुठमेड वहाँ पुजारी 'आई' से हो गई। उसने राजमाता के मूत्रे हुए गाँवों को छुआ वहाँ :

“यह ठीक समय पर मर गई—क्योंकि यह एक धूमिल बुद्धिवादी थी जो मेरे विरुद्ध पड़्यन्न करने लगी थी। इसकी अपनी करनी ही इसे ले बैठी—मेरा विश्वास है कि अब जबकि यह मर चुकी है, सोपों में अशानि फैली हुई है वह दब जायेगी।”

पुजारी 'आई' ने ही उसकी हत्या की थी। ऐसा मेरा विश्वास नहीं है क्योंकि इकट्ठे किये हुए घुँस और एक-दूसरे के जाने हुए भेद किसी ब्रह्म से ज्यादा खतरा देने हैं।

जब मारे धीबिन्न में यह समाचार फैला तो जैसे लुशी की एक लहर फैल गई। लोगो ने अपने-अपने घर-घर सड़कों और बाजारों पर भाँड़ मगा भी और ध्यान-मनाने लगे। उनको गुग करने और अपनी ओर करने के लिए पुजारी 'आई' ने रानी-ताया की हड्डियाँ जादूगरानियों को बोले जादूगर मुखर्ज-भूत के तैयारों से बाहर निकाला दिया। वह चार थी और एक और बहुत ही मोटी और बुरा जादूगरनी भी उनके साथ थी जो दरिवासी बोले जैसा मगनी थी। पहरेदारों ने उन्हें दरिवासी द्वार में जब मानकर बाहर निकाला तो भाँड़ उन पर टूट पड़ी और उनके ऊँहोंने टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उनकी लमाम जादूगरनी भी उन्हें मारी बसा गयी। 'आई' ने उनकी लमाम और जियाँ, जहाँ-भूटियाँ सब जगह कभी

जितना मुझ पर बड़ा खेद बना रहा क्योंकि मैं उनकी परख करना चाहता था ।

महल में रानी की मृत्यु और उन जादूगरनियों के भाग्य पर रोने वाला कोई नहीं था । केवल राजकुमारी बँकेटैटोन ने अपनी माता के शरीर के पास आकर अपने सुन्दर हाथ उनके काले हाथों पर रखे और कहा - “मैं तुम्हारे पति ने बुरा किया कि तुम्हारी जादूगरनियों को लोगों के हाथों पूरी मौत मरवा दिया ।” उसने मुझसे कहा :

“यह जादूगरनियाँ तनिक भी बुरी नहीं थी—वह यहाँ अपनी इच्छा से रहना भी नहीं चाहती थी बल्कि जंगल में अपनी कुँस की सोंपड़ियों को लोट जाना चाहती थी । मेरी माता के बुरे कर्मों के लिए इन्हें इस भाँति दंड नहीं मिलना चाहिए था ।”

मैंने देखा वह मुन्दरी थी । जिसके व्यक्तित्व में ही गौरव प्रतीत होता था । उसने होरेमटेब के बारे में मुँह सिकोड़कर कहा -

“वह नीच जन्म का मनुष्य है—उसकी सोभी रुसी है परन्तु यदि वह विवाह कर ले तो निश्चय ही एक बचीसा खड़ा कर दे । बता सकते हो सिन्ग्रुहे, उसने विवाह क्यों नहीं किया ?”

मैंने उत्तर दिया : “साही बँकेटैटोन, इस प्रश्न को पूछने वाली केवल तुम ही नहीं हो, परन्तु तुम्हारी सुन्दरता को ध्यान में रखकर मैं केवल यह बात तुम्हें ही बताना चाहता हूँ क्योंकि हमें अन्य किसी को बताने का साहस देने अब तक नहीं किया है । जब लड़का होरेमटेब पहले-पहले मुवर्ण-गुह में आया था तो उसने चाँद को देग लिया था और बग़ तभी से वह उस पर मर मिटा और फिर वह किसी भी स्त्री के साथ घटा घोटने में अशर्मा हो गया । तुम्हें क्या लगता है राजकुमारी ? कोई वेद मदा फूलना नहीं रहता—उसे कभी न कभी तो फूलना ही पड़ना है - बँस होने के जाने मैं जो तुम्हारे उदर में गर्भ फूलना देगकर सन्तोष पाना चाहता हूँ ।”

उसने गर्व से अपना गिर उठाकर कहा :

“तुम तो जानते हो सिन्ग्रुहे, कि मेरा रक्त अमरुत पवित्र और मुक्त है—उत्तम तो यह होगा कि मेरा भाई मुझसे विवाह कर लेता जैसे कि होगा आया है । यदि मेरी आज्ञा चल जाय तो हम होरेमटेब की तो मैं

आँखें निकलवा लूँ—मुझसे जो उसने प्रेम करने की हिम्मत की है तो उसकी यही गति होनी चाहिए। अब तो मच बात यह है कि मुझे पुरुषों से घृणा-सी हो गई है। उनका स्पर्श ही कितना कठोर होता है और फिर उनसे प्राप्त आनन्द का बहुत बड़ा-चड़ा कर ही वर्णन किया गया है।”

परन्तु मैंने देखा उसकी आँखों में एक विचित्र उत्तेजना आ गई थी और उसकी साँसें भी भारी हो गई थी। यह देखकर कि ऐसी बातों से उसको मजा आता है मैंने और छेड़ा : “मेरे मित्र हौरेमहेव को मैंने बाँह पर तबि के कड़े को तोड़ते देखा है। उसकी भुजाएँ लची हैं और जब वह ओघ में अपने सीने पर मुट्ठी मारता है तो मीना मृदंग की भाँति बजता है। दरबारी स्त्रियाँ उसके पीछे बिल्लियों की भाँति लगी रहती हैं और वह स्वेच्छा से उन्हें ग्रहण कर सकता है।”

राजकुमारी बैकेटैटोन ने मुझे धूर कर देखा। उसका रेंगा हुआ मुँह कुछ काँपा और उसकी आँखों में चमक आ गई और वह गुस्से से कहने लगी : “सिग्यूहे, तुम्हारी बात मुझे कड़वी लगती है—मेरी समझ में नहीं आता कि तुम इस घृणित हौरेमहेव का वर्णन मेरे सामने क्यों करते हो? और फिर मुझे के सामने ऐसी बातें करने से क्या लाभ?”

मैंने उससे यह नहीं कहा कि हौरेमहेव का जिक्र तो उसने स्वयं ही किया था बल्कि क्षमा माँग ली फिर कहा :

‘हे राजकुमारी ! मैं तो यही चाहूँगा कि तुम सदा फलने-फूलने वाली सुन्दरी बनी रहो—और क्या तुम्हारी माँ के पास एक भी ऐसी विद्वस्त स्त्री नहीं थी जो इस समय यहाँ बैठकर रो सके ?। थम-से-कम उस समय तक तो यहाँ किसी को रोना ही चाहिए जब तक कि मृतक-गृह से लोग शरीर लेने न आ जाएँ ? रोने को तो मैं भी रो सकता हूँ पर मैं तो बैस हूँ जिसके आँसू मृत्यु के निरन्तर साय रहने से सूख गए हैं—जीवन एक गर्म दिन है जबकि मृत्यु ठंडी रात है—और बैकेटैटोन, जीवन उबलते पानी की झील है जबकि मृत्यु गहरा शून्य जल है।”

उसने कहा : “मुझसे मृत्यु के बारे में बात न करो सिग्यूहे, क्योंकि अभी जीवन मुझे अच्छा लगता है—यह सच ही शर्मनाक है कि मेरी माता के पास कोई रोने वाला नहीं है। मैं स्वयं तो भला किम प्रकार रो सकती

हूँ क्योंकि यह मेरी शान के विरुद्ध है। परन्तु मैं अभी किसी दरबार की स्त्री को भेजे देती हूँ कि वह आकर यहाँ रोने बैठ जाय,"

और मुझे उपहास मूझने लगा। मैंने कहा :

"देवी बँकेटंटोन, तुम्हारे सौन्दर्य ने मुझे बेहाल कर दिया है और तुम्हारी मधुर वाणी ने मेरे मन की आग में तेल डाल दिया है। किसी बुद्धिवादी को यहाँ भेजना जिससे मैं उसे धुमसाने का प्रयत्न न करूँ—और इस शोक-गूह को बदनाम न करूँ।"

उसने मुझे देखकर मुस्से से सिर हिलाया फिर कहा :

"सिम्यूहे, सिम्यूहे—क्या तुम्हें खरा भी शर्म नहीं आती? यदि तुम देवताओं से भी नहीं डरते, अर्थात् लोग तुम्हारे बारे में कहते हैं—तो कम से कम मृत्यु से लो डरो।"

वह स्त्री थी और उसे मेरी इस प्रकार की बातें बुरी नहीं लगी—और वह दरबारी स्त्री माने चली गई।

और जब शोक में रोने वाली आई तो उसे देखकर मैं थोका गया। क्योंकि वह मेरी आशाओं से भी अधिक क्रूर और बुद्धि थी। अब भी हरम में लाया के पति फराऊन महान् की स्त्रियाँ रहती थीं। वहाँ फराऊन एम्नैटोन की भी अनेक स्त्रियाँ और छावों की कमो नहीं थी। इस स्त्री का नाम जो रोने आई थी मेढ़नफर था। उसे देखकर ही पता चलता था कि उने पुरुषों और मदिरा से आथल्य प्रेम था। जाने ही उसने बायदे के अनुसार आज सोलहर रोना शुरू कर दिया। परन्तु थोड़ी देर बाद ही उसने मेरी दी हुई मदिरा को पीना स्वीकार कर लिया। फिर मैंने उने बानो-बातों में ही देरना शुरू कर दिया और उसके स्पर्शन दीवन और सौन्दर्य का मैं गुणगान करने लगा। फिर मैंने उससे फराऊन एम्नैटोन की बन्धियों का वर्णन किया और अन्त में भोजे बनकर पूछा

"क्या यह साम है कि मुझे हुए फराऊन की बिधो भी स्त्री के माफ़ासी लाया के अतिरिक्त, कुछ उत्पन्न नहीं हुआ?"

उसने मूक लाया की ओर तिरछी नजर से देखा फिर मेरी तरफ़ फिर ऐसे हिलावा जैसे चुप रहने का मनेन कर रही हो। परन्तु मैंने फिर उसकी स्तुति प्रारम्भ कर दी और अधिक मदिरा उसे दिखाई। वह अब रोना शुरू

कर मेरी बातों में आनन्द लेने लगी। स्त्रियों को ऐसी बातें प्रायः अच्छी लगा करती हैं और विशेषकर यदि वह बूढ़ा और कुरूप हैं तो और भी अधिक यह बातें सुनाती हैं। और हम मित्र बन गए।

जब मृतक-गृह से लोग आकर मृतक ताया के शरीर को उठा ले गए तो वह मुझे अपने कक्ष में लिवा ले गई।

वहाँ मैंने बातों-ही-बातों में सब कुछ उसके मुख से उगलवा लिया कि साम्राज्ञी ताया किस प्रकार नवजात शिशुओं को सरकड़ों की नावों में रख कर नील में बहा दिया करती थी। उसी के द्वारा मुझे मेरे जन्म के बारे में भी पता चला और उसके द्वारा बताये हुए समय के अनुसार मैं भी फराऊन का ही पुत्र था जो फराऊन एघनैटोन से कुछ ही महीने पहले पैदा होकर ताया द्वारा बहा दिया गया था क्योंकि मैं किसी अन्य रानी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। मेरा हृदय यह सुनकर मानो जम गया और मैं क्लिप्त-व्य-विमूढ़ सा रह गया। इस बीच मेहनेफर उत्तेजित हो उठी थी और उसने दहक कर कई बार मेरा आलिंगन कर लेना चाहा था परन्तु मैंने उसे किसी-न-किसी बहाने से अपने से दूर रखा। पर जब हृद हो गई और मुझमें लिपटने पर तुल गई, मेरे गालों पर हाथ फेरने लगी और जंघाओं में सिर घुसाने लगी तो मैंने उसे चुपचाप मदिरा में पीपी-रस पिला कर बेहोश कर दिया। फिर मैं वहाँ से उठकर चल दिया। जब मैं बाहर निरता तो रात हो चुकी थी और पहरेदारों व नौकरों ने जब मुझे देखा तो आपस में कुहनी चला कर कनखियों में हँसने लगे। मेरी समझ में उस समय कुछ नहीं आया कि वह ऐसा क्यों कर रहे थे।

घर पर मैरिट और मुती मेरी प्रतीक्षा कर रही थी, जब मैं पहुँचा उन दोनों ने मुझे देखते ही अपने हाथ उठाकर अपने मुँह पर लगा दिए और एक दूसरी की ओर देखा—

फिर मुती ने मैरिट से कहा :

“क्या मैंने तुमसे हजारों बार नहीं कहा है कि पुरुष सब एक ही हैं और कि इनका भरोसा नहीं करना चाहिये ?”

लेकिन मैं यका हुआ था और अकेला रहना चाहता था क्योंकि अपने जन्म के बारे में जो रहस्य मुझे पता चला था वह मेरे हृदय को लाये थे

रहा था। मैंने गुस्से से कहा, “क्कक्क मुझे बिल्कुल सहन नहीं होती—मैं थक गया हूँ।”

और तब मैरिट की आँखें कठोर हो गईं और उसने क्रोध-युक्त होकर मेरे सामने चाँदी का दर्पण लाकर रखकर कहा, “अपने आपको देखो तो सिंग्यूहे कि कैसे लग रहे हो—बैसे मैंने तुम्हें किसी भी स्त्री से मर्क रखने के लिए कभी मना तो किया नहीं है परन्तु तुम्हें कम-से-कम ऐसी बातें छिपाकर तो रखनी ही चाहिएँ जिससे मेरा दिल तो न दुखे। आज तो तुम झूठ बोल भी नहीं सकते कि तुम अकेले रहे रज में डूबे रहे और उदास रहे।”

मैंने जो दर्पण देखा तो चौंक गया क्योंकि मेरे चेहरे पर बस्त्रों पर मेढ़नेफर के मुख का रंग लगा हुआ था। मेरे गालों पर उसके होठों का लाल रंग लग रहा था—कनपटियाँ, गर्दन सभी चिकनी और रंगीन हो रही थी। मैं ताऊन का सताया हुआ सा लग रहा था—मैं धुरी तरह शेष गया और तुरन्त मैं अपना चेहरा साफ करने चल दिया और मैरिट तब भी दयाहीन होकर मुझे दर्पण दिखा रही थी।

जब मैंने मुँह धो लिया और तैल लगा लिया तो कहा, “तुमको सारी बातों में गलतफहमी हो गई है प्यारी मैरिट मुझे सफाई तो दे लेने दो।”

उसने कठोर दृष्टि से मेरी ओर देखकर उत्तर दिया, “सफाई की कोई जरूरत नहीं है सिंग्यूहे और फिर अब मैं तुम्हारे होठों को झूठ से भरना नहीं चाहती।”

मैंने उसे समझाने का बहुत प्रयत्न किया पर सब व्यर्थ। मुली मुँह ढँककर रोती रही और बारबार घुणा से घूकती रही। मैंने मेढ़नेफर से बच निवलने में जिन आपत्तियों का सामना किया था उनसे कहीं अधिक मुझे अब करना पड़ रहा था।

मैंने जब मैरिट की ओर हाथ बढ़ाकर उसे समझाना चाहा तो उसने बड़े स्वर से मुझे झिड़क दिया और कहा :

“अपने हाथ अलग रखो—सिंग्यूहे ! मुझे नहीं मालूम था कि तुम्हारे हृदय में इतनी खदकें हैं जहाँ तुम अपने रहस्यों को छिपाकर रक्ते हो। महलों में तो तुम्हें मेरी चटाई से भी नर्म चटाईयाँ और मुझे मे भी खदान

औरने मिली होगी—फिर तुम्हें मेरी क्या परवाह ?”

मैं 'मगर की पूछ' चला आया। मैरिट ने मेरे साथ जाने से इंकार कर दिया। रात को जब मैं घर सोटकर सोया तो मुझे नींद नहीं आई—जल घड़ी से जल बहता रहा—निरंतर अटूट धारा से और मुझे लगा कि मैं स्वयं से भी जाने कितनी दूर पहुँच गया था। और मैंने अपने हृदय से कहा :

‘मैं सिन्धुदे हूँ—जैसा मैंने किया है वैसा भोगा है—मैंने अपने माता-पिता को बुरी मौत मर जाने दिया है—वह भी एक निर्दयी स्त्री के साथ रमण करने के लिये !—मैंने यह धूमिल कार्य क्यों किया। मेरे पास मीनिया का चाँदी का पीता अब भी है—मीनिया मेरी प्यारी थी और मैंने उसे उस भीमशाय जलु के पास जल में साबुन देता है जहाँ उसके कोमल मुख को समुद्री कंकड़े कुदेद्वार सा रहेंगे। क्यों हूँ मैं फिर भी जीवित ? शामद यह सब मेरे जन्म से पूर्व ही निश्चित हो चुका था—कि मैं समाधि में जीवन भर अपरिचित के रूप में ही रहा आऊँ।”

भोर में झुपें अपने गुणधर्म रूप में बैठकर पूर्वी पहाड़ियों के पीछे से निकला और तब मैं हँस उठा। कैसा विचित्र होना है मनुष्य का हृदय कि मृत्यु के प्रकाश के आभाव में भीरु और निराश हो जाता है और जब वह उसे पा लेता है तो उसे स्वयं अपने आप पर तथा अपने विचारों पर हँसी आती है।

नहा धोकर मैंने नये वस्त्र पहिने और नव मुनी ने मुझे, मदिरा और नमकीन मछलियाँ लाने को दी। रात-भर रोने से उसकी आँखें सूख गई थी।

फिर मैंने एक कुर्मी किण्वे घर की और जीवनमृत्यु की ओर बना दिया। मेरे मुख के सामने होकर एक बिन्दिया उड़कर सामने एलीन के मंदिर की ओर उड़ गई और मैंने उसका अनुसरण किया। वहाँ अनेक व्यक्तित्व उद्गम्यन से और पुष्पांगी भांग एलीन का महात्म्य और कलात्मक के लक्ष्य का वर्णन कर रहे थे।

देर लट मैं वहाँ खड़ी हुई मुनिया का अवलोकन करती रहा। वह दिव्यता की सद्गुणों की भी कृति की दिव्यता के लक्षणों का एक ही दिव्य रूप।

किननी सुंदर थी वह—तो क्या मैं इसी का पुत्र हूँ ? मैंने स्वयं से पूछा पर दिलने यह बात नहीं मानी । परन्तु यह सत्य था और मैं इसे जानता था । किननी रोई होगी बेचारी होगी मे आने के बाद जब उसने मुझे अपनी बसल में गहरी धाया होना—ओफ ! किननी हत्थारी थी लाया जो उसने माँ में बच्चा छुड़ा कर नील में बहा दिया था । और मैं देर तक उस मूर्ति सम्मुख खड़ा रहा—और मुझे मितन्नी की बातें—वहो के सोगो, के वही के सवान-गुल भरी रातों सब याद आनी रही ।

गाम को मैं 'मगर की पूछ' पहुँचा तो मैरिट ने मेरा स्वागत ठीक उम प्रकार किया जैसे किन्ती अपरिचित से करती हो—जब मैंने सा-वी लिया तो उसने पूछा, "अपनी प्यारी से मिल लिये ?"

मैंने बिड़बुर उत्तर दिया "मैं औरतो के पीछे नहीं गया था बल्कि जीवन-गृह में काम करने गया था और एटोन के मंदिर में भी गया था"—और अपनी सफाई में मैंने उस दिन गुजरी हुई छोटी-से-छोटी बात भी उसे कह सुनाई । पर वह पूरे समय मुझे देखकर खग में मुग्धराती रही । फिर बोली—

"मैंने एक क्षण के लिए भी यह नहीं सोचा था कि तुम किन्ती स्त्री के पीछे गए होगे क्योंकि रात ही तुम इनने पक गए थे कि आज तुम किन्ती योग्य नहीं रहे—गन्ने और घुमघुम जो हो तुम, मैंने तो बेबस यह कहना चाहा था कि तुम्हारी प्यारी—कल रात वाली तुम्हें यही बूझनी हुई आई थी—मैंने उसे जीवन-गृह में गभी भेज दिया था ।"

मुनने ही मैं इनकी ओर में चौंकर उठा कि मेरी कुर्मी ओछी हो गई और मैं बिल्लाया, "क्या बकती है मूर्ख स्त्री ?"

"वह यहाँ तुम्हें घुलनी हुई आई थी—बिड़िया तो सजी हुई—चमकदार रस्मों में मुग्धगिर और बन्दर जैसी रसी पुनी—उमके-खग-लेप और उमके नैल की तो जैसे लदी तक छार भर रही थी—वह तुम्हारे लिए एक पक छोड़ गई है और सवाद छोड़ गई है कि तुम उसमें हर क्षण में मिलो जो कुछ भी हो यहाँ तो उसे मन माना क्योंकि यह एक मध्याह्न योकि-यो के आने का स्थान है और वह लगती है रोटी बेचने वाली—"

और फिर उसने मेरे हाथ में एक बिना मुरार मुला मुला पक पकड़ा

दिया। मैंने उसे काँपते हाथों से छोला और जब उम पड़ा तो मेरी वन-पटियो में रक्त भन्नाने लगा और मेरा सिर चकरा गया।

उसने एक प्रेमपत्र लिखा था—जिसमें इतनी वेशमी से मेरी चाहता की थी कि मैं स्वयं उसे पढ़कर तन्त्रित हो उठा। लिखा था कि वह घर-घर मुझे दूधती फिरी थी और मृत्ते बुलाया था—कि मैं चिटिया की भाँति उसके पास उड़ा चला जाऊँ। घमकी भी थी कि यदि मैं उसके पान न गया तो वह और भी तेजी से मेरे पास उड़ी चली आवेगी।

मैंने धबकाकर उसे कई बार पढ़ा और मेरा माहस एक बार भी मैरिट से आँख मिलाने का न हुआ। अन्त में उसने वह मेरे हाथ से छीन लिया। उसका डंडा तोड़ दिया जिस पर वह लिपटा हुआ था और उसे टुकड़े-टुकड़े करके पँरो से रूँध दिया फिर गुप्से से कहा :

“यदि वह सुंदरी और जवान होती तब भी सिन्धूदे, मैं तुम्हें क्षमा कर सकती थी परन्तु वह बुढ़ी है—उसके शरीर और चेहरे पर झुरियाँ पड़ रही हैं—मुझे तुम पर शर्म आती है।”

मैंने अपना सिर पीट लिया, कपड़े फाड़ डाले और बाल नोंच डाले और मैं चिल्लाया, “मैरिट मैंने भारी भूल की है—जल्दी मेरे नाविकों को बुलाओ कि मैं धीबीज से भाग जाऊँ इससे पहले कि वह चुईल मुझे घेरने का प्रयत्न करे—ओफो वह कबख्त लिखती है कि वह चिटिया की भाँति उड़ी चली आवेगी—मैंने उससे बात की यही क्या कम गलती हुई है।”

मैरिट ने मेरा भय देखा तो हँस पड़ी फिर चोट करती हुई बोनी :

“इससे तुम्हें सबक तो मिल जायेगा मेरे प्यारे सिन्धूदे !” फिर वह हँसती हुई और कहने लगी, “अच्छा ही तो है—वह मुझ से दुगुनी उम्र की है तो तुम्हें उसके साथ दुगुना ही आनन्द आता होगा—आखिर वह प्रेम के सभी क्षणों में दस तो होगी ही—फिर भला मैं तुम्हें क्यों पगन्द आने लगी ?”

और तब मुझे इतना अधिक दुःख हुआ कि मैं उठकर घर चला दिया और मैरिट को भी बलपूर्वक पकड़ लाया। घर आकर मैंने उसे मारा निस्सा वह सुनाया कि किस प्रकार मैंने अपने जन्म के बारे में जानने के लिए ही उससे बातें की थी—कि मैं मितन्नी की राजकुमारी—साम्राज्ञी

वह मुस्कराई पर उमकी उदासी बढ़ गई फिर बोली :

“यदि ऐसा है तो रहने दो—मैंने तो इसलिए कहा था कि बच्चे के लिए यह यात्रा सुखकर होगी। मुझ से वह काफी हिला हुआ है यहाँ तक कि मैं ही उसका खतना कराने ले गई थी—मैंने सोचा था कि मैं उसे लेकर तुम्हारे साथ चली चलती कि इस बात की भी देखरेख कर लेती कि मगर के मुँह में हाथ न डाल दे या पानी में न लुढ़क जाय और फिर तुम्हारे साथ जाने का मुझे एक बहाना भी मिल जाता—पर धैर्य अब रहने दो—तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध मैं कुछ भी नहीं करूँगी।”

मुनते ही मैंने हृष से ताली बजाई और कहा :

“आज का दिन सचमुच ही शुभ है। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि तुम एखनटौन की मेरी इस उदास यात्रा में इस प्रकार आनन्द ला सकोगी। सचमुच इस तरह बच्चे को साथ लाकर तुम्हारे नाम पर कोई उँगली भी नहीं उठा सकेगा।”

“बिल्कुल यही,” वह भुँसलाकर परन्तु मुस्कराती हुई बोली। प्रत्यक्ष था कि वह इन मामलों में पुरुषों की भूलतता पर हँस रही थी। फिर बोली : “बच्चे को साथ लाकर मेरी बदनामी नहीं होगी ? ओह ! पुरुष जितने भूलते होते हैं ! फिर भी चलो तुम्हें माफ़ किया।”

दूसरी भोर सूर्योदय से पहले ही हम जहाज में सवार होकर चल दिये क्योंकि डर था कि कहीं मेहनेफर आकर घेर ले। मैरिट बच्चे को कम्बलों में लपेट कर ले आई जो सो रहा था। उसकी माँ साथ नहीं आई थी। मुझे बच्चे का नाम सुनकर आश्चर्य हुआ क्योंकि कोई भी देवता का नाम अपने बच्चों का नहीं रखता था। उसका नाम था ‘धीय’ और वह आराम से औरत की भुजाओं में सोता रहा। जब धीवीज के शरवत बाल से सड़े पहरेदार वह तीन पहाड़ अतिरिक्त में डूब गए और सूर्य उग आया तब वह जागा। वह भूरा-भूरा कितना सुन्दर और प्यारा बच्चा था और वह बिना डरे हुए मेरी गोद में चढ़ आया। अपनी भोली आँखों से वह कैसे सभी चीजों को और मुझे टुकुर-टुकुर देखता था और रोता तनिक भी न था। और वह खेलने लगा तो मैंने उसे खेलने के लिए सरकंडों की नावें बना कर दीं और वह रेतमी वाले बालों वाला बच्चा उनसे खेलता रहा।

हमारी यात्रा सुखद थी। बच्चे ने मुझे तनिक भी परेशान नहीं किया— न वह जल में डूबा न मगर के मुँह में हाथ ही डाला। और हर रात मैरिट मेरे पास होती और बच्चा पास में सोता रहता—सब-कुछ कितना शांत और सुखद था मैं कैसे लिखूँ ? और तब मेरा हृदय प्रफुल्ल हो उठता था।

एक दिन मैंने मैरिट से कहा :

“मेरी प्यारी सहेली ! क्यों न हम मटका तोड़ लें ? हम हमेशा के लिए साथ रह सकेंगे और शायद तब इसी थोथ की भाँति हमारे भी एक बच्चा हो जाय !

उसने मेरे मुँह पर हाथ रखा दिया और फिर धीरे से कहने लगी :

“सिन्धूदे ! मूर्खता की बातें न करो। मैं तो शायद अब गर्भ भी धारण न कर सकूँगी—तुम जो अपने भाग्य को अकेले ही संभालने में असमर्थ हो भला तुम्हारे रास्ते में मैं क्यों आने लगी ? नहीं-नहीं मुझसे ऐसी बातें न करो, मैं सचमुच इन्हे मुनकर कमजोर हो उठती हूँ। तुम एकाकी हो और तुम्हारा भाग्य निश्चय ही बड़ा है—भला मैं तुम्हारे साथ कैसे निभा सकूँगी ? ...नहीं...नहीं...।”

तभी थोथ ने मुझसे तोतली बोली में कहा : “पिता” और मैं उस समय उस सुख को सहन नहीं कर सका और अज्ञात शका से मेरा हृदय काँप उठा। मनुष्य को निश्चय ही इतना सुखी कभी नहीं होना चाहिए क्योंकि सुख भला नव स्थायी रह सकता है ?

और मैं एखनटौन लौट आया। परन्तु अब की बार मुझे वह स्वर्गों का नगर अच्छा नहीं लगा—मैंने देखा कि सत्य वहाँ नहीं बल्कि वहाँ से बाहर रहता था—सत्य था भ्रूस, दाहण-यवणा और अत्याचार।

मैरिट और थोथ बीबीज लौट गए थे और साथ मेरा दिल भी ले गए और मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता था।

कई दिन गुजर गए और एक दिन फराऊन को सुवर्णगृह की विज्ञान छन पर वास्तविक सत्य में साक्षात्कार करना पड़ा। मैग्निफ से होरेमहेब ने सीरिया के कुछ पीड़ित लोग भेजे थे कि उनकी यवणा को स्वयं फराऊन

देख सके। उनको उसने मार्ग का स्वर्चा भी दिया था, इस स्वर्ग-नगर में वह विचित्र लग रहे थे। राज्य के उच्चपदाधिकारियों ने उन्हें देखकर घृणा से मुंह फेर लिए और सुवर्ण-गृह के दीर्घद्वार बंद कर दिये गए। पीड़ितों ने महल पर पत्थर फेंके और वह बुरी तरह चिल्लाये और तब फ़राऊन को उन्हें अपने सम्मुख बुलाना ही पड़ा। उन्होंने अपने कटे हाथ उठाकर कहा :

“कैम के देश में अब कोई व्यवस्था नहीं रही है—हमारी हालत देखो—देखो कि शत्रुओं ने हमारा क्या हाल किया है...!”

फ़राऊन ने देखा उनमें से कई की आँखें निवाल ली गई थी तो कई के हाथ-पैर काट डाले गए थे। उनके शरीर धावों से भरे हुए थे। दारुण थी उनकी व्यथा। वह चिल्लाये :

“फ़राऊन एखनैटोन ! हमारी स्त्रियों और बच्चों का क्या हाल है यह न पूछो—क्योंकि अजीरू के लोगो ने उनको हम से भी अधिक सताया है—उन्होंने हमारे हाथ काट डाले हैं क्योंकि हमने तुम पर विश्वास किया था...।”

फ़राऊन ने दोनों हाथों में अपना मुंह छिपा लिया और फिर वह उन्हें एटोन के बारे में समझाने लगा। मुनकर वह लोग हँस पड़े और फिर बोले :

“इस एटोन के चक्र को तुमने हमारे शत्रुओं को भी भेजा था और उन्होंने उन्हें अपने घोड़ों की धीवारों में लटका दिया—जैरुसलम में एटोन के पुजारी के पैर काट डाले गए कि वह जीवन-चक्र अपने पैरों के ठूठों पर लटका सके...।”

मुनकर शरोमे में ही एखनैटोन मूर्छित हो गया—उस पर उसकी वही पुरानी धार्मिक मूर्छा चढ़ आई थी। पहरेदारों ने तब उन लोगों को भगाना चाहा पर वह न हटे और उल्टे सामना करने के लिए अड़ गए। और तब उन गरीबों, पीड़ितों के रक्त से भीतरी प्रांगण भीग गया। उनके शरीर उठाकर नदी में फेंक दिये गए।

फ़राऊन की चिकित्सा मैनने सुरुत प्रारम्भ कर दी। वह देर तक बेहोश रहा। पर जब होश में आया तो उसने कराह कर कहा :

“जाओ सिम्पूहे ! जाओ मेरे मित्र ! अजीरू के पाग जाओ और उगे

घन देकर उससे शांति का सौदा कर लो—चाहे मुझे अपना समाम सोना दे देना पड़े—चाहे देश निधन हो जाय पर इस शांति को तो मोल लेना ही होगा ।”

मैंने जोरों से विरोध किया तो वह स्मिर अपने हाथों से पकड़कर बोला : “मेरा स्मिर दुःख से फटा जाता है—क्या तुम नहीं जानते कि घृणा से घृणा और शत्रुता से शत्रुता ही उत्पन्न होती है और रक्त से रक्त ही बहता है ? जाओ सिन्धूदे । फराऊन तुम्हें आज्ञा देता है, तुम्हें जाना होगा ।”

मैं हैरत में रह गया । पर वह अदा रहा । जब मैं वहाँ से बाहर आया तो मेरा अनुचर बाहर मेरी प्रतीक्षा में खड़ा मुझे मिला वह मुझे देखते ही बोला : “अच्छा हुआ मेरे स्वामी आप मुझे यहीं मिल गए क्योंकि अभी-अभी यीबीज से एक अहाज आया है जिसमें मैं हूँ फरनामक एक स्त्री उत्तरी है । वह अपने को श्रीमातृ की मित्र बताती है और आपके घर पर ही ठहरी हुई है । वह दुःखन की भाँति शृ गार किये हुए है और उसके अंग-लेपों से सारा घर महक रहा है ।”

सुनते ही मैं उल्टा भागा और फराऊन के सम्मुख जाकर बोला, “मुझे फराऊन की आज्ञा का उत्सङ्घन भला कैसे जीवित रख सकता है—यदि मैं अवज्ञा करूँ तो हत्याओं का अपराधी मैं ही कहाऊँगा—परन्तु यदि मुझे जाना ही है तो मुझे अभी भेज दिया जाय—अभी एकदम, मेरा दर्जा और अधिकार अभी प्रमाण-पत्र के रूप में तख्ती पर लिख दिया जाय—क्योंकि अभीरु तन्त्रिमों की गड़ी फट करती है ।”

और जब लेपक लोग प्रमाणपत्र इत्यादि तैयार करने लगे तो मैं अपने पुराने मित्र यीबीज की मूर्तिशाला में चला गया जो एखटैटोन में ही बस गया था और जिसकी नहीं बला अब वहाँ काफी फैल चुकी थी । उसने मुझे हौरेमहेव की एक मूर्ति दिखाई जो उसने मैम्फिस में लगाने के लिए बनाई थी । मूर्ति अत्यंत सुन्दर थी—अन्तर था तो केवल इतना कि इसमें हौरेमहेव की भुजाएँ वास्तविकता से कहीं अधिक बलिष्ठ दिखाई गई थी—यहाँ तक कि वह फराऊन का सेनापति दिखने के बजाय कोई मल्ल मालूम होता था । यीबीज ने कहा :

“तुम्हारे साथ मैम्फिस मैं भी चर्नुँगा ।”

मैं वही से सीधा नदी पर जा पहुँचा। अनुधर से मैंने कह दिया कि वह मैंहूँकर से कह दे कि मैं सीरिया के युद्ध में चला गया था और कि वह उसे मेरे घर से भगा दे। और भी कि यदि वह न जाय तो वह उसे मारकर निकाल दे। अन्त में मैंने यह भी कह दिया कि यदि सौटकर मुझे घर पर मैंहूँकर मिली तो मैं निश्चय ही उसकी नाक कटवा दूँगा।

१२

मैम्फ़िस में हीरेमहेब ने मेरे पद के अनुसार मेरा भारी सत्कार किया। परन्तु जब हम अकेले रह गए तो उसने अपनी जाँघ पर हथेली पीटकर पूछा : “अब फराऊन के दिमाग से कौन-सी नई उपज हुई है जो सीरिया दूत भेजा जा रहा है ?” उसका आशय मुझसे था।

परन्तु जब मैंने उससे सारी बातें कही तो वह क्रोध से होंठ काटने लगा और बोला :

“क्या मैं जानता न था कि वह (फराऊन) मेरी तमाम योजनाओं को अपनी भूलसँतता से बिखेर देगा ? भला हो अभी तक जो माझा हमारे अधिकार में है—और मैंने तरकीबों से थ्रीट की समुद्री शक्ति को सीरिया के विरुद्ध कर दिया है। और फिर अजीरू के सामने भी कम मुश्किलें नहीं हैं—अब जब कि वहाँ से तमाम मिश्री भगा दिये गए हैं तो वह लोग आपन में ही लड़ रहे हैं। सबसे मुख्य बात तो यह है कि हितैतियों ने मितन्नी पर भीषण आक्रमण कर दिया है—और अब मितन्नीयों का कोई साम्राज्य है ही नहीं। उधर बेबीलोन आत्मरक्षा की तैयारी कर रहा है और हितैतियों के हृदयों में अजीरू के प्रति कोई मित्रता बाकी नहीं रह गई है। अब अजीरू स्वयं पवरा रहा है—इस समय फराऊन की शान्ति को सुरन्त मान लेगा और धन लेकर आगे के लिए योजना बनावेगा—मुझे आने साल का समय दो—इससे भी कम सही और देखो कि मैं किस तरह अजीरू को

समाप्त कर देता हूँ।”

“परन्तु होरेमहेब ! तुम युद्ध कर ही कैसे सकते हो क्योंकि कराऊन तो युद्ध की आज्ञा नहीं देता ?”

और सब वह क्रुद्ध हो उठा और मुझसे बोला :

“सिम्पूहे ! यदि तुमने अजीरू के सम्मुख जाकर शान्ति की भोग माँगी और शान्ति मिल लेनी चाही तो समझ लो मैं तुम्हारी खाल खिचवाकर सुखवा दूँगा—चाहे तुम मेरे मित्र ही हो पर मैं इस तरह मिस्र को नीचा नहीं देखने दूँगा—तुम तो उससे आकर केवल एटोनकी बातें करना और कहना कि कराऊन उस पर मेहरबान है। वह कभी विश्वास नहीं करेगा क्योंकि वह अत्यन्त चतुर है। और फिर तुम झूठ बोलना और उसे दबाना...परन्तु याद रखना—गाजा किसी भी हालत में न छोड़ देना।”

मैम्फिस में मैं कई दिनों तक रुका रहा और होरेमहेब से संधि के बारे में बहस करता रहा। यहाँ मैं क्रीट और बेबीलोन से आये हुए दूतों से भी मिला और मितलनी से भागे हुए प्रमुख नागरिकों की जुबानी मैंने वहाँ के सारे हाल जाने और तब पहली बार घेने अनुभव किया कि उस सचमें मेरा कितना बड़ा हाथ था और मैं कितनी बड़ी जिम्मेदारियों से लदा हुआ जा रहा था।

मैंने स्थल यात्रा से ही अम्पूरू जाना पसन्द किया। अब तक मुझे अजीरू द्वारा किये गए भीषण अत्याचारों का पूरा हाल मालूम हो चुका था। होरेमहेब ने मेरे साथ थोड़े सैनिक रक्षार्थ भेज दिये। उसने कहा कि वह दैनिस और गाजा के बीच अजीरू से युद्ध करने की सोच रहा था। विदा होने समय होरेमहेब ने कहा :

‘मैंने अन्य घनाड्यों की भाँति बप्ताह से भी धन कृण में लिया है—तुम्हारा धन—तुम महान् हो—जाओ मेरा बाज तुम्हारी रक्षा करेगा मित्र ! तुम निश्चय ही बड़ा काम करने के लिए ही पैदा हुए हो—यदि तुम यहाँ बन्दी बना लिये गए तो मैं तुम्हारी स्वतन्त्रता का मोल करेगा और यदि तुम मारे गए तो मैं तुम्हारा बदला लूँगा—यदि कोई भाता तुम्हारा पैट फाड़ने लगे तो कम-से-कम यह बात याद रखना कि तुम्हारी चिन्ता भी करनेवाला कोई जीवित है।”

“व्यर्थ बदला लेकर समय नष्ट न करना होरेमहेब !” मैंने कहा : “क्योंकि यदि मैं मर गया तो उससे मेरा क्या भला हो सकेगा ? इससे बेहतर यह होगा कि तुम जाकर राजकुमारी बँकेटेटोन की देखभाल करना—क्योंकि वह अब भी अद्वितीय सुन्दरी है—राजमाता ताया की मृत्यु पर जब मैं सुवर्ण-गूह गया था तो वह मुझारे गारे में घूँस भी रही थी।”

होरेमहेब ने मुझे धूरकर देला और तब मैं वहाँ से चल दिया। मैंने रोगों को धुलाकर अपना बसीयतनामा लिखवा दिया। मेरे माद अपने धन को मैंने होरेमहेब, कप्ताह और मॅरिट के बीच बाँट देने को निगा दिया।

मुझे वहाँ से रथ में लड़े होकर यात्रा करनी पड़ी क्योंकि मार्ग निग-पद नहीं था—मेरे साथ हम रथ रक्षार्थ भेजे गए थे। उक्त ! रथ की वह भयानक यात्रा मैं कैसे बयान करूँ ? मैं ददं मे कराह उठा—बारम्बार पटक मुझे लगी, मैं लूब बिल्लाया पर मेरी थोला-मुकार सब रथ की गहगहाहट में दूब गई।

पूरे दिन रथ भागता रहा और जब रात हुई तो बन्द रहा और मैं निहाल होकर बोगियों पर गिर पड़ा। मैं उस समय अपने ज़म की घड़ी को बोग रहा था। दूसरे दिन रथ एक पत्थर से टकराकर उखट गया और मैं कौंटों में गिरकर बुरी तरह घायल हो गया। रथवान बूटू ने मेरी बाड़ी सेवा की और मेरे मूँह पर जल छिड़का हामीकि उसके नाम जल की इगनी बनी थी कि वह अपने आदमियों को प्यास बुझाने को भी पुरी मात्रा में उसे नहीं देता था।

सुबह फिर थोड़े आग बने और मैं जीवित मृतावस्था में घोरो पर सुरक्षा हुआ मे जाया जाने लगा। रथ के भारी बरतों की टक्कर से पत्थरों से आग की बिजलीगिरी निकलनी थी और भूख के आदमों में तो जैसे आकाश छा गया था।

बूले जब हाँस जाता तो मैंने देखा कि हमें जीवित रथों में रज निगा है। उस समय हम सोच गए बगारी के सीने लड़े थे। मैंने उठनी और देखकर लखर का लूह पला उठाकर लिपलाया तो मरिचगुवक बिजु का

प्य कर देता हूँ।"

"परन्तु हीरेमहेव ! तू न कुछ कर ही कैसे सकते हो क्योंकि कुलकुल
कुल की आत्मा नहीं देता ?"

और सब वह कुछ हो गया और मुझे बोला :

"मित्रगुरु ! यदि तुमने अहीन के सम्मुख बाकर प्रणति की हो
तो और शान्ति मीन लेनी चाही तो समझ लो मैं तुम्हारी बाहर निकल
सुखवा दूँगा—चाहे तुम मेरे निक ही हो पर मैं तुम को नहीं देकर
नहीं देखने दूँगा—तुम तो अपने बाकर केवल प्रणति की करते समझ
कहना कि कुराकुरल उस पर मेहमल है। वह कभी निकलने नहीं
या क्योंकि वह अन्यत्न चतुर है। और फिर तुम कुछ भी नहीं कर
ना... परन्तु याद रखना—सावा किसी भी हालत में न छोड़ देना।"
मैमिकम में मैं कई दिनों तक रहा रहा और हीरेमहेव के साथ ही
रह करता रहा। यहाँ मैं कौट और केवलेन के अन्दर कुछ दिनों के भी
और मितन्नी में जाये हुए अनेक राजाओं की कुलकुल की बातों के
हान जाने और तब पहली बार मैं अनेक दिनों के बाद हीरेमहेव के
तो बड़ा हाथ था और मैं किसी बड़ी दिक्कत में ही था।

मैंने स्वयं यात्रा से ही अनेक जगह पर रहने शुरू किया। यह सब मुझे
द्वारा किये गए मीनम अन्तर्गतों का कुछ ही हिस्सा था। मैंने
हीरेमहेव से मेरे साथ छोड़े मैमिकम के अन्दर हीरेमहेव के अन्दर
निय और यात्रा के बीच अहीन से कुछ बातें कीं। मैंने कहा कि
होने समय हीरेमहेव ने कहा :

मैंने अन्य घनाद्यों की मीन कुराकुरल के अन्दर रहने शुरू किया।
रा घन—तुम महान् हो—चाओ मेरा बाहर निकलने शुरू कर
तुम निरवय ही बड़ा बाव करने के लिए हीरेमहेव के अन्दर हीरेमहेव
ही बन्दो बना लिये गए तो मैं तुम्हारी अन्तर्गतों का अन्तर्गत
यदि तुम मारे गए तो मैं तुम्हारा बदला लेना शुरू कर दूँगा
य वेद पाड़ने लगे तो बस-से-बस यह बात कहना कि तुम्हारी
भी करनेवाला कोई जीवित है।"

दंड दो जिससे वह फराऊन के दूतों का सम्मान करना सीखे !”

मुनते ही वह व्यंग्यात्मक रूप से हँसा और बोला :

“तुम्हें तो सिग्यूहे ! अवश्य ही कोई दुस्वप्न हुआ है—भला मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ यदि तुम पत्थरों से टकराकर अपने हाथ-पैर तोड़ लो ? और फिर भला मैं अपने सर्वोत्तम सैनिकों को क्या मरवाऊँ ? रह गई फराऊन के दूत की धौंस की बात...” वह फिर हँसा और बोला : “वह तो मेरे कानों में मक्खियों की भिनभिनाहट जैसी सुनाई देती है।”

“अजीरु ! राजाओं के राजा !” मैं चिल्लाया : “कम-से-कम उस दुष्ट सैनिक को तुम्हें दंड देना ही होगा जिसने पीछे से मेरे शरीर में भाँसे छेदे थे—उसके कोड़ें लगवाओ जिससे मैं तसल्ली के साथ सीरिया और तुम्हारे लिए शान्ति की व्यवस्था कर सकूँ।

अजीरु हँसा और उसने अपनी छाती ठोकी और फिर कहा :

“यदि तुम्हारा फराऊन धूल में गिरकर संधि-मधि चिल्लाने लगे तो भला मुझे उसकी क्या चिन्ता ? पर तुम सिग्यूहे ! मेरे मित्र हो—तुमने मुझे संसार की सर्वश्रेष्ठ स्त्री दी है—तुम्हारी छातिर उस दुष्ट को दंड दिया जायेगा—तुम्हें प्रसन्न रखने के लिए—बस।”

और फिर वह सैनिक सबके बीच मगर की खाल से बने कोड़ों से पीटा गया—उसकी चीख-पुकार में सभी का हास्य मानो डूब गया। रक्त बहने लगा। वह उसे निश्चय ही मार डालते पर उसका रक्त देखकर मेरा हृदय पसीज उठा। और मैंने हाथ उठा दिये और उसके प्राण एक बार फिर उसे दिला दिये। बाद में मैं कह नहीं सकता किस बात से प्रेरित होकर मैंने स्वयं उसके पावों पर मरहम लगाया और उसकी सेवा-सुश्रूषा करने लगा—सैनिकों ने समझा कि इसमें भी मेरी कोई चाल थी जो मैं उसे बारम्बार अच्छा करके पिटवाना चाहता था। नन सैनिक ने स्वयं भी मुझ पर विश्वास नहीं किया।

रात को अजीरु ने बकरे का मांस और चर्बी में पके हुए चावल मुझे

और उत्तम मदिरा पिलाई। वहाँ सब कुछ भयानक था, डाल-
से गिबिर सज रहा था। अजीरु का मुख्य गिबिर खालों का बना

हुआ था और उसमें अनेक जल्काएँ जल रही थी। चाँदी के पात्रों में भोजन परोसा गया। वहाँ बहुत से लोग मौजूद थे जिनमें कई हितैषी हाकिम भी थे। वह सभी जोर-जोर से सीरिया की स्वतंत्रता के विषय में बातें कर रहे थे कि किस प्रकार उन्होंने अत्याचारी शासकों अर्थात् मिस्री लोगों को वहाँ से उखाड़ दिया था। बाद में जब सभी मदिरा अधिक मात्रा में पी गए तो वह आपस में झगड़ने लगे और तब जोप्पा के एक अधिकारी ने गुस्से में भर कर अम्भूरू के एक व्यक्ति की गर्दन पर चाकू से प्रहार किया। परन्तु वह शीघ्र संभाल लिया गया। मैंने देखा कि उसके गले की खून की नली नहीं कटी थी—और शीघ्र उसका उचित उपचार कर दिया। इस कारण से भी सब लोग मुझे कच्चे दिल का समझने लग गए थे।

खाने के बाद अजीरू ने सबको रुखसत किया फिर उसने मुझे अपना पुत्र दिखलाया जो उसके साथ युद्ध में जाया करता था हालाँकि वह उम्र समय केवल सात ही साल का था। वह अत्यंत सुंदर और स्वस्थ था जिसके बाल घुघराते और आँखें काली थी। वह अपनी माँ की भाँति गोरा था। अजीरू ने उसके सिर पर प्रेम से हाथ फेरते हुए कहा

“सिन्ग्रूहे, क्या तुमने ऐसा सुंदर बालक नहीं और देखा है? मैंने इसके लिये अभी से कई राजमुद्रा भी कर लिये हैं—निश्चय ही यह जबदस्त बादशाह बनेगा—इसने इस छोटी उम्र में ही एक बार चाकू से एक दाम का पैट फाड़ डाला था क्योंकि उसने इसका अपमान करने का दुस्ताहस किया था।”

इसके बाद अजीरू देर तक अपने परिवार और स्त्री बीज़ू के बारे में बातें करता रहा। उसने कहा कि वह उसे अम्भूरू में ही छोड़ आया था। वह आह भरकर बहने लगा :

“आह सिन्ग्रूहे ! बीज़ू के बिना मेरा जी नहीं भरता—मैंने अपनी वासना की बंदिनी स्त्रियों और मंदिर की बवारी पुजारियों के साथ समय-समय बिताकर बुझाने का निष्फल प्रयत्न किया है—बीज़ू के बिना सभी कुछ बुरा लग रहा है—उस स्त्री से एक बार के सहवास से फिर उसी की

याद आती रहती है" उसने यह की बतलाया कि दिनों के साथ-साथ वह और अधिक सुन्दरी हो गई थी।

और तभी पास कहीं से स्त्रियों की चीख-पुकार का स्वर सुनाई दिया। अजीरु उसे सुनकर अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और बोला।

"हितैती अधिकारी फिर अपनी स्त्रियों को यत्रणा दे रहे हैं.....उन्हें रोक नहीं सकता क्योंकि मुझे युद्ध-भूमि में उनके पौरुष का पूरा भरोसा है, लेकिन फिर भी मैं यह नहीं चाहता कि वह इन दुरी बातों को मेरे आदमियों को सिखाएँ।"

मैंने मौका देखकर कहा :

"राजाओं के राजा अजीरु ? हितैती मित्रता के योग्य नहीं हैं। इनसे सम्बन्ध इससे पहले ही तोड़ दो कि वह तुम्हें ही मार डालें या तुम्हारे राज्य को हड़प कर तुम्हें भगा दें—यह किसी के नहीं हुए हैं। क्रराऊन से मित्रता कर लो और वह भी अभी जबकि हितैती लोग मितल्ली के युद्ध में लग रहे हैं। तुम तो जानते ही हो कि वेबीलोन उनके विरुद्ध है और यदि हम इनके मित्र बने रहे तो वह तुम्हें भी अन्न नहीं भेजेगा—और तब जब जाड़ा आवेगा तो भुत्तमरी फैलेगी—अकाल ! भीषण अकाल जिसमें सब मर जायेंगे—अब भी समय है कि क्रराऊन से मित्रता करके तुम इस संकट को टाल सकते हो...."

वह बोला :

"तुम मूर्खता की बातें करते हो। हितैती लोग अपने शत्रुओं के लिए भयानक हैं—न कि मित्रों के लिये फिर भी मैं उनसे बंधा हुआ नहीं हूँ। जब तक वह मुझे मूल्यवान उपहार भेजते रहेंगे मैं भला उनसे क्यों बिगाड़ूंगा ? फिर मैं तो युद्धको संधि से अधिक प्यार करने वाला व्यक्ति हूँ। वैसे यदि क्रराऊन मुझे गाशा सोटा दे जो उसने मुझसे घोड़े से लिया था तो मैं संधि के लिये तैयार हूँ और इसके अतिरिक्त उसे सीरिया की सीमा के डावुओं को भी रोकना होगा और हमारे लिये यथेष्ट मात्रा में अनाज तेल और सुवर्ण भी देना होगा—सीरिया में अब तक दुध बाजारण फ़ऊन ही तो है।"

और वह मुंह पर हाथ लगा कर मुस्कराने लगा।

और मैं गुस्से से चिल्लाया : “अजीरू तू डाकू है, मवेशी-चोर है और निरपराधों का हत्यारा है। क्या मुझे इतना भी नहीं मालूम कि संपूर्ण निचले साम्राज्य में इस समय हर सुहसारी पर अगणित भाले बनाये जा रहे हैं ? होरेमहेब का नाम तो तूने अवश्य सुना होगा—उसके पास इतने रथ हैं जिसने पिस्तू और जूँ तेरे गधों में भी न होंगे—ओफ ! होरेमहेब निश्चय ही तुझे जीवित नहीं छोड़ेगा। क्योंकि अपार हैमिस्त्र की शक्ति। सधि तो फराऊन ने केवल अपने उस देवता के कारण चाही थी क्योंकि उसे रक्तपान मही भाता—मैं तुझे एक मौका और देता हूँ—सोच ले।”

और फिर मैंने ‘तू’ से ‘तुम’ की भाषा पकड़ ली और कहा। “गाजा नहीं दिया जा सकता—रह गए रेगिस्तान के लुटेरे। उन्हें तुम स्वयं सदेहो क्योंकि उनसे और मिस्त्र से कोई वास्ता नहीं है। बल्कि यह तुम्हारे अत्याचारों का ही नतीजा है कि सीरिया के यह लोग रेगिस्तान में भाग गए हैं और अब तुम्हारे ही विरुद्ध शस्त्र उठा रहे हैं—इसके अतिरिक्त तुम्हें तमाम मिस्री बंदियों को मुक्त करना होगा और सीरिया में रहनेवाले तमाम मिस्रियों को हर्जा-शर्वा भी देना होगा।”

सुनकर उसने अपने कपड़े फाड़ डाले, दाढ़ी नोच डाली, और वह चिल्लाया।

“नहीं, गाजा मुझे चाहिए, मिस्रियों का भारीसा भत्ता मैं क्यों करूँ ? और बंदियों को निश्चय ही दास बनाकर बेचा जायेगा—उन्हें छुड़ाने के लिए फराऊन को सोना देना होगा—सोना—”

और हम इसी भाँति कई दिनों तक दुर्जत करते रहे। अजीरू अपने कपड़े फाड़ डालता, बालों पर राख डाल लेता, रोता-चिल्लाता और मुझे डाकू कहता, एक बार तो मैं मन्नाकर बाहर चल भी दिया और मैंने अपनी कुर्सी मँगवाई पर तभी वह फिर मुझे अंदर लिवा ले गया।

और मैंने एक बार भी यह आह्विर नहीं होने दिया कि मुझे फराऊन ने किसी भी कीमत पर सधि करने के लिये भेजा था। अजीरू के पड़ाव में नित्य जगड़े बढ़ाते जाते थे। नित्य जितने लोग बाहर चले जाते उतने ही सोटने नहीं थे क्योंकि अभी उसका स्वामित्व जम नहीं पाया था। समय मेरी ओर था, यह प्रत्यक्ष था।

एक रात दो आदमियों ने अजीरु पर हमला किया और उस पर धाकू चलाये। वह जकमी हो गया पर उसने एक को फिर भी मार डाला। दूसरे को उसके लडके, उस बच्चे ने मार डाला। दूसरी सुबह उसने मुझे अपने मेम में बुलाया और वह मुझ पर भयानक अभियोग लगाने लगा जिसमें मैं डर गया पर बाद में वह मधि करने पर उतर आया और फराऊन के नाम पर उसने हमारी ही शर्तें मान लीं, गाजा मिया का ही रहा, रेगिस्तानी लुटेरों से मिया का कोई सम्बन्ध नहीं माना गया और बंदियों की स्वतंत्रता का मुख्य फराऊन को चुकाना पड़ा -- मिट्टी की तट्टियों पर मधि लिखी गई और उस पर दोनों देशों के हजार-हजार देवताओं की शपथें लिखी गई कि यह मधि शाश्वत कान के तिये की जा रही थी। अजीरु ने मुझे अनेकानेक उपहार दिये और मैंने भी उसे अमूल्य रत्न उपहार में भेंटने का वचन दिया।

जब मैं चला तो मैंने उसके लडके के गुलाबी शायों को चूम लिया। अजीरु मुझसे गले मिला और उसने मुझसे मित्र, कहा। फिर भी हम दोनों जानते थे कि वह मधि कितनी झूठी थी। उसने गाजा तब मेरे साथ मैनिफ भेजे।

परन्तु गाजा जो हमारा था, वही मुझे एक नई सुमीरन का सामना करना पड़ा। मेरे शान्ति भूषक पत्ने दृष्टाये गए पर मगर डार नहीं हुआ। उन्हें एक नीर धाया जिसमें हमारे साथ का एक मैनिफ गिर गया। मेरी आँखों के सामने मृगु नाचने लगी -- मय में मेरा रक्त तम मया और नीर पर नीर आने लगे। मैं मय में डायों के पीछे छिपकर बिगलाने लगा। परन्तु मिट्टी मैनिफ जब मुझे आँखों में व नीरों में न मार सके तो उन्होंने डार में मय में नैव फेंका -- मैं पत्थरों में छिपकर रोने बिगलाने लगा जिसे सुनकर अजीरु के आदमी उस भयानक निषादि में भी हमारे लूटने के न में सोच-सोच हो गये।

अन्त में जब मुझे मगर के अन्दर लिया तो मेरी जान में जान आई। वहाँ का मैनिफ अजीरु से भी ज्यादा शक्तिशाली था। मेरे निरुत्पन्न उत्पन्न में एक टाकरी लटका दी थी, डार मरी लोपा था।

अन्दर पहुँचकर मैंने वहाँ के मैनिफ को लूट करी, लूटकर

परन्तु वह भी शुष्क व्यक्ति था, बोला :

“सीरिया के लोगो ने मुझे इतना अधिक धोखा दिया है कि मुझे किसी का विदवासा नहीं हो पाना । यहाँ तक कि अब मैंने तय कर लिया है कि जब तक कि हौरेमहेब के हाथ का आशापत्र नहीं मिल जाता, मैं किसी के लिए द्वार नहीं खुलवाऊँगा ।”

गाथा से मैं मिस्र के लिए जहाज़ में बैठकर चल दिया । मैंने नाविकों से कहा कि यदि मार्ग में शत्रु मिलें तो सफेद पाल तान दें और मस्तूल पर भी मधि-भूषक झंडा उड़ावें । मुनकर उन्होंने घुणा से मुँह फेर लिये । पीछे से कोई एक बोला :

“इतना बड़ा रगा-पुना और जबरदस्त जहाज़ युद्धपोत न होकर बेज्या ही बना रहा, धिक्कार है इसे ।”

पर जब हम नदी में आ गये तो नदी-तटों के लोग खजूर के पत्ते हिला हिलाकर मेरा स्वागत करने लगे । मैं फ़राऊन का दूत जो था और सब वह नाविकगण मेरी इश्वर बनने लगे और घूम गए कि मैं ही था वह व्यक्ति जो इतनी बेधर्मी के साथ गाथा में उलिया में रखकर ऊपर लीखा गया था ।

मैम्फिस में बेबीलोन के सप्ताट बने मुरियात का दूत मुझे मिला जो मेरे लिए अनेकानेक उपहार लाया था । मैं उससे फ़राऊन के जहाज़ पर ही मिला । वह श्वेत दाढ़ी वाला बिडान व्यक्ति था और उसका साथ मुझे बहुत गृहाया । वह मेरे साथ ही गाथा रहा । हमने नक्षत्रों, भेड़ के शिगर को देखकर भविष्य जानने और अनेकानेक विषयों पर बातें कीं । वह मेरे ज्ञान से प्रभावित हुआ और उमने पर्वतीय-प्रदेश की सर्वोत्तम मदिरा पीने की दी ।

जब हम एनटेटीन लौटे तो मुझे लगा कि मैं बाली गमस्तदार हो गया था ।

मेरी अनुपस्थिति में फ़राऊन के मिर का दर्द बढ़ गया था । वह अत्यन्त चिन्तित रहता था, क्योंकि वह जान गया था कि जिन चीज में भी

वह हाथ लगाता था वही उल्टी पड़ जाती थी। 'आई' ने उसे सुत करने के लिए तीस-वर्षीय पर्व मनाने का प्रबन्ध कराया था। हालाँकि उसे राज्य करते हुए तीस तो क्या, बहुत ही कम वर्ष बीते थे, पर मिस्र में यह प्रथा प्रचलित हो गई थी कि इस पर्व को सातक चाहे जब मना लेते थे।

एलर्टेटोन में उत्सव की दावतें खाने के लिए बाहर से भीड़ें उमड़ पड़ी थी।

और तभी एक सुबह जब फ़राऊन एलर्टेटोन पवित्र झील के किनारे घूम रहा था तो दो व्यक्तियों ने उम पर चाकू से प्रहार किया। टोथिमोत्र का एक शिष्य वहीं झील के किनारे बैठा हुआ बत्ताखों के चित्र बना रहा था। उसने अपनी कुँची से उन दुष्टों के चाकुओं के प्रहार रोके और तब तक वह उनसे लड़ता रहा जब तक कि पहरेदार न आ गए और वह दोनों पकड़ न लिए गए। फ़राऊन के कंधे में एक हल्का सा घाव हो गया पर वह लड़का मर गया। उसके रक्त में फ़राऊन के हाथ भीग गए।

उस शिगिर शत्रु की बहार में फ़राऊन एलर्टेटोन ने इस प्रकार मृत्यु की दारुण-यज्ञशा इतने पास से देखी। उसके नेत्रों के सामने ही उम लड़के के जबड़े झीने पड़ गए और वह मर गया, उर्मी के लिए।

मैं गीघतापूर्वक मरहम-पट्टी के लिए बुलाया गया। घाव माथारण था। मैंने देखा कि हत्यारे घुटे मिर्चों वाले थे जिनके मिर्चों पर तेज लमबमा रहा था। जब पहरेदारों ने उनको पकड़कर कम लिया तब भी वह अम्मन का नाम मे-लेकर सबको शाप देने लगे और गानिया देने लगे। आगिर तब वह खुप हुए जब उनके मुँह पर भाँते मारे गए और रक्त बहने लगा। निश्चय ही अम्मन के पुत्रारियों ने उन पर कोई जादू कर दिया था।

परन्तु यह घटना भी भयानक थी। फ़राऊन पर आत्र तब कभी किसी ने हाथ उठाने का दुष्गाह्य नहीं किया था। फ़राऊनों की रहस्यमय मृत्यु तो हुई थी कि उन्हें बिध दे दिया गया हो, पत्थरों में धोड़ दिया गया हो, या उनकी मर्जी के बिनाक उनके मिर खोज दिये गए हों, पर इस प्रकार खुला प्रहार आत्र तक कभी नहीं हुआ था। यह एक ऐसी घटना थी जो छिपाई नहीं जा सकती थी।

फ़राऊन के सामने ही जब अरारियों में दूठा गया हो उन्होंने बोले

से इन्कार कर दिया। तब पहरेदारों ने भालों से उनके मुंह पर वार किये और तब वह अम्मन का नाम ले-लेकर शाप देने लगे। अम्मन का नाम सुनकर स्वयं फराऊन इतना क्रुद्ध हो उठा कि उसने भागने वालों को नहीं रोका—वह मारते गए, मारते गए—अपराधियों के मुख क्षत-विक्षत हो गए, दांत झड़ गए, रक्त बहने लगा और मांस के लोथड़े लटकने लगे और तब फराऊन का हाथ उठ गया। अपराधी अब और अधिक चिल्लाये :

“और झूठे फराऊन—उन्हें मत रोक हम मरना चाहते हैं—हमें पीड़ा नहीं होती—हमारे हाथ पैरों को भी तुड़वादे—”

उनके मुख भीमत्स हो गए थे और रक्त बुरी तरह बह रहा था। और तब फराऊन ने अपना मुंह हाथों में छिपा लिया और उसे घृणा और पश्चात्ताप होने लगा कि क्यों उसने भी उन्हें इस तरह पिटने दिया फिर उसने हाथ उठाकर कहा : “इन्हें छोड़ दो—यह नहीं जानते कि यह क्या कर रहे हैं।”

परन्तु जब अपराधी खुल गए और उन्होने देखा कि वह उन्हें छोड़ देना चाहता था तो वह बुरी तरह चिल्लाने लगे और उनके मुह से श्राव बहने लगा : “ओ नकली फराऊन ! हमें मरवा डाल—अम्मन के नाम पर हमें मरवा डाल जिससे हम अमरत्व के जीवन को प्राप्त कर सकें।”

फराऊन ने सुना और वह दारुण दुःख से छटपटाने लगा। और तभी वह अपराधी भागे और उन्होंने दीवार से अपने सिर दे मारे—उनके सिर फट गए, हड्डी चूर-चूर हो गई भेजा बाहर निकल आया और वह गिरकर मर गए। रक्त से सारा स्थान भीग गया।

और तब सुवर्णग्रह में सभी जाल गए कि फराऊन की ज़िदगी सतरे में आ गई थी। पहरेदार दूगने हो गए और अब फराऊन नहीं मनेला नहीं छोड़ा जाता, एटोन के भक्तों को अपने घन और जायदाद का इस्तेमाल करना और वह भी अधिक फराऊन की शुभ कामना करने लगे। और इस प्रकार दोनों साम्राज्यों में आपसी विरोध बढ़ने गए, बढ़ते गए—अब अम्मन और एटोन के दल बन गए थे।

तीस वर्षीय उत्सव धीबीज में भी मनाया गया। सोने का चूरा,

मनुमूर्गके पर चीने, जिराफ, छोटे-छोटे बंदर, तंजे और रंग-विरंगी चिट्ठियाँ वहाँ भी भंजी गईं कि लोग उन्हें देखकर फ़राऊन की महान् शक्ति और वैभव को पटवान गकें और फिर उसका गुणगान करें। परन्तु उस जन्म के देवद्वार धीवीज में कोई हलचल नहीं मची। सभी ने वह सब ठीक-थोड़ाई दृष्टि में देखा। फिर गडकों पर लड़ाई मुरु हो गई और एट्रीन के चक्र लोगों के दन्तों पर में फाट लिये गए। दो एट्रीन के पुत्रारी लोगों को जिन्होंने बिना रसकों को साथ लिये भीड़ में जाने का दुस्साहम किया था, लोगों ने मुगदरों से कूट-कूटकर मार डाला।

सब से भयानक और बुरी बात जो यह हुई कि इन सब चीजों को बाहरी देशों के दूतों ने भी देखा—क्योंकि उस समय वह वहीं थे। अजीरु के राजदूत ने भी वह सब अपनी आँखों देखा। मैंने उसी के हाथों अजीरु और उसके पुत्र के लिए अमूल्य उपहार भेजे।

और फ़राऊन एवर्नटोन की व्याघ्र बढ़ती गई। वह जितना सोचता उतनी ही समस्या और उलझ जाती थी। पर अबकी वह भी बड़ा पड़ गया। अम्मन का नाम लेने वालों को पकड़वाकर उसने खानों में काम करने के लिये दास बनाकर भेजने की आज्ञा दे दी—उधर अम्मन के पुजारियों की शक्ति दुर्दम्य थी जिनसे स्वयं फ़राऊन के अंगरक्षक डरते थे, और इस सब में गरीब पिस गए—उनकी यंत्रणा का बारापार न रहा, और घृणा बढ़ती गई और संपूर्ण साम्राज्य में अशांति फैल गई।

मैंने कप्ताह को लिखकर एक पत्र भंगवाया लिया जिसमें उसने मेरा धीवीज में व्यापार के संबंध में रहना अत्यंत आवश्यक लिख दिया था। उसे दिखाकर मैंने फ़राऊन से जाने की आज्ञा प्राप्त कर ली। जब मैं जहाज़ में बैठकर चला तो मुझे लगा मैं उस अभिशप्त स्थान से मुक्त हो गया था।

मनुष्य अपने विचारों के सम्मुख जितना निरीह होता है कि वह वास्तविकता से इसलिये मूढ़ चुराता है क्योंकि वह उसे नहीं भाती और

केवल उन्ही बातों का विश्वास करने लगता है जिनकी आशा में वह जिया करता है ! पिजड़े से निकली हुई बिडिया के समान उन्मुक होकर मैं भीबीज की ओर उड़ चला । मेरा मन कितना हल्का था उस समय ! मुझे लगा कि मैं, जो फराऊन का वैश था, उसका गुलाम था—कितना नीच था, बितने अकाट्य बधनों में बंधा हुआ था । मेरे लिये तो फराऊन केवल एक मनुष्य ही था, भले ही उसके भक्त उसे देवता मानते हों । मैं कितना उससे दूर होता गया उतना ही प्रफुल्लित रहने लगा—और मैं भीबीज—अपने प्यारे भीबीज में फिर आ रहा था ।

और जैसे-जैसे जहाज नदी में बढने लगा मैंने देखा कि एटोन का साम्राज्य कितना उजड़ चुका था । अब हालांकि फसल बोने का समय था पर भेत बजर पड़े थे । झाड़-झुआड़ सभी तरफ छड़े थे । मैं स्पष्ट देख रहा था कि अकाल पडने वाला था—और फिर दारुण दुःख मृत्यु और वही रक्तपात—अम्मन की शक्ति बढ रही थी—लोगों के दिलों में एक बार फिर अम्मन का भय बैठ गया था—

और मैंने देखा अम्मन द्वारा अभिशप्त एटोन की भूमि ऊसर पड़ी थी—भुखमरी का ताड़ब नृत्य प्रारंभ होने वाला था । मैंने मार्ग में जहाज खवाकर कई लोगों से पूछा :

“पागलो ! जब फराऊन ने तुम्हें भूमि मुफ्त दी है तो क्यों नहीं उसे जोतते ? क्यों भूखे मरते हो ?”

तो उन्होंने मुझे ईर्ष्या दृष्टि से देखा क्योंकि मेरे वस्त्र उत्तम मूल के और महीन थे और फिर कहा :

“हम क्यों जोतें जब कि यह भूमि ही अभिशप्त है ? जब इसमें से उत्पन्न अन्न को खाकर हमारे परिवार के लोग मर जाने हैं तो फिर हम इसे क्यों जोतें ?”

और मैंने देखा कि वास्तविक जीवन से एख्मैनटोन कितनी दूर था ।

फराऊन के स्वयं के कोई पुत्र न होने के कारण उसने उत्तराधिकारी प्राप्त करने के विचार से अपनी दो पुत्रियों, मैरीटोन और एख्मैनटोन के विवाह की खान सोधी । अपने ही दरबारियों के सहकों में से उसने जमात्रा

छाँटे। मैरिटेटोन का विवाह फ़राऊन के प्यालेबरदार जिसका नाम सेकेकरे था, के साथ हुई यह पंद्रह साल का लड़का था जो बात-बात में उत्तेजित होकर धवरा जाता था। फ़राऊन को वह बेहद पसंद आया और उसने उसे ही अपना वारिस बना दिया।

एल्लसर्नटोन का विवाह एक दस वर्षीय लड़के के साथ हुआ जिसका नाम टट था। इसे अश्वशाला के मालिक और शाही इमारतों के अफ़सर के खिलाफ़ दिये गए, यह भीमार सा, उदास और आज्ञाकारी बालक था जिसे मिठाइयाँ और खिलौने बहुत प्यारे थे।

एल्लसर्नटोन उन दोनों से खुश रहा करता था क्योंकि वह स्वयं तो कुछ सोच ही नहीं सकते थे—उनके लिये जो कुछ भी सोचना वह स्वयं फ़राऊन सोचना था—

बाहर से ऐसा लगता था जैसे राज्य में सभी कुछ ठीक-ठाक चल रहा था परन्तु फ़राऊन पर जो मूला हमला हुआ था सभी से ग़ुर्न साम्राज्यों में अपशकुन की सनसनी फैल गई थी।

सबसे भयंकर बात अब यह हो गई थी कि फ़राऊन ने जनगणके विरुद्ध छोड़ दिया था—अब वह किसी की आवाज़ नहीं सुनता था—केवल अपनी आत्मा की आवाज़ सुनता और उसीके अनुसार कार्य करता। एल्लसर्नटोन की लड़कें उदास रहने लगीं—लोगों के दिलों में भय गमा गया था। सब कुछ शांत लगता पर जैसे भीतर ही भीतर आग़ सुलग रही थी। मैं ज़ल्मर जल-थड़ी के पाम बैठा हुआ सोचा करता कि विस्फोट कब होगा। और तब एल्लसर्नटोन का यह स्वर्गदुस्मनगर निरा प्रकार बिगड़ कर गिर जावेगा—भयानक था वह विचार परन्तु वह दारुण सत्य जो था !

बढ़ाव आ रहा था और मरणाह भारी पड़चारे लगता रहे थे। अब वह जल को काटने तो उनके कंधे छूम आने और पीठ भीपी होकर फैल जाती। मैंने एक दिन सुना, एक मरणाह दुगने से बरबड़ला हुआ बच्चा

रहा था :

“इस मोटे सूअर के लिए हम क्यों पतवार चलाएँ ? एटोन के साम्राज्य में जब सभी समान हैं तो फिर यह खुद ही क्यों नहीं चलाता पतवार ?”

और मेरा हाथ स्वतः ढंडे पर गया कि उनकी पीठों पर बरसे, परन्तु हृदय उमड़ आया । मैंने सोचा, फिर कहा :

“नाविक ! मुझे भी एक पतवार दो ।”

और मैं खड़े होकर खेने लगा । मैंने खूब जोर लगाया, तब तक जब तक मुझसे लगाया गया । जब तक कि लकड़ी ने मेरी छाल न खींच ली और छाले न बना दिए ।

और तब वह बोले :

“मालिक हमें क्षमा करो, हमें ही खेने दो ।”

पर दूसरे दिन मैंने फिर पतवार चलाया । छाले खुल गए और रक्त बहने लगा । फिर पीठ अकड़ गई फिर कंधे फटते गए पर मैं न रुका और नाविक रोकर बहने लगे :

“आप हमारे मालिक हैं और हम आपके दास हैं । अब और सेहत न करे, क्योंकि हर एक का काम बँटा हुआ है । देवताओं का ऐसा ही न्याय है । भला आप नाव चलाते अच्छे लगते हैं ?”

पर मैं न माना और धीबीड़ तक नित्य नाव चलाता रहा । मैंने ऊँही का सा भोजन किया और ऊँही की लट्टी और कड़वी मदिरा पी परन्तु इनमें सब पर भी एक बात मैंने सीखी, मैं पहले से अधिक मुल का अनुभव करने लगा था । अब मैं अधिक घें सकता, हर दिन और ज्यादा और ज्यादा ।

मेरे अनुचर मेरे कारण व्यथित थे, वह आपस में बहते: “निश्चय ही हमारे मालिक को किसी बिच्छू ने काट खाया है अन्यथा यह एल्टेटोन रहकर पागल हो गया है, परन्तु खैर कोई मय की बात नहीं है, क्योंकि हमारे पास भी वस्त्रों के नीचे अम्पन का संस छिपा है ।”

और जब धीबीड़ आया तो मैंने अपने शरीर पर नाना सुगन्धित ते-

से मालिग कराई और स्नान किया और आम वस्त्र धारण करके मैं उतरा। मैं मल्लाहों को चांदी चाँटी और उन्हें सुवर्ण भी दिया और मैंने उनसे कहा :

“जाओ और आनन्द मनाओ एटौन तुम्हें सुख प्रदान करेगा, क्योंकि वह अमीरों से अधिक गरीबों को चाहता है। जाओ मीठी मदिरा पीओ और भर पेट भोजन खाओ।”

सुनकर उनके मूँह लटक गए, जो खुशी उन्हें इनाम पाकर हुई थी वह एकदम लोप हो गई और उन्होंने डरते-डरते पूछा :

“श्रीमान् बुरा न मानें पर यह बता दें कि क्या जो सोना और चाँदी आपने हमें दी है, अभिशप्त है, क्योंकि आप एटौन का नाम ले रहे हैं ? अगर ऐसा है तो हम इसे स्वीकार नहीं कर सकेंगे, क्योंकि यह तो हमारी उंगलियों को जला देगा और यह तो सभी को विदित है कि एटौन का धन मिट्टी के समान है।”

मैंने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा : “व्यर्थ मैं एटौन से मत डरो क्योंकि वह तो तुम्हारे भले के लिए ही है और फिर यह तो पुरानी छाप के असली सोने के सिक्के हैं जिनमें नए एखटैटौन में टुके सिक्कों की भाँति मिलावट भी नहीं है। जाओ और इन्हें मदिरा में परिणित कर लो।”

उन्होंने उत्तर दिया : “हम एटौन से बिल्कुल नहीं डरते, क्योंकि वह निर्वीर्य देवता है। पर जिससे हम डरते हैं उसे श्रीमान् भी खूब जानते हैं हालाँकि फराऊन के भय से हम उसका नाम लेने का साहस नहीं कर सकते।”

सुनकर मेरा मन जैसे छुटने लगा। पर वह शीघ्र चले गए और तब मैं सीधा ‘मगर की पूँछ’ की ओर चल दिया। यीबीज की गन्ध मेरे रोम-रोम में समा गई थी। मुझे वहाँ मँरिट मिली जो अब पहिले से भी सुन्दर लग रही थी हालाँकि अब वह युवती नहीं रही थी और पूर्ण तरुणी बन चुकी थी। पर वह मेरी सबसे प्यारी मित्र थी।

मुझे देखकर वह झुक गई और उसने अपने दोनों हाथ फैला दिए। फिर मुझे चकित नेत्रों से देखती हुई छूकर बोली :

“गिन्यूहे, गिन्यूहे ! तुम्हारे नेत्रों में इतनी चमक कहाँ से आ गई और तुम्हारी नींद बाध क्या हुआ ?”

मैंने उसे प्रेमपूर्ण दृष्टि भर कर देखा और कहा : “मेरी प्राणप्यारी ! मेरी आँखें तुम्हारे विषोय के श्वर में लपकर चमकने लग गई हैं और मेरी नींद तुमसे मिलने की भाणा-दोड़ी में दुख के समान गायब हो गई।”

और तब उसने अपने नेत्रों में अश्रु पोछकर कहा :

“ओह गिन्यूहे ! जब कोई अकेली रहती हो और उसके जीवन का समस्त निष्पन्न ही बीत गया हो तो उसे सत्य से झूठ बितना प्यारा लगता है ! जब तुम वापस आ जाते हो तो समस्त लौट आता है और तब मैं फिर पुरानी बानो पर विश्राम करने लग जाती हूँ।”

मैंने उसे हृदय से लगा लिया। उसका स्पर्श बितना सुन्दर था और बितना मुखर उस समय मैंने अनुभव किया था, यह मैं कैसे लिखूँ ?

रात्रि को जब बस्ताह आया तो उसे देखकर मेरे नेत्र कटे के कटे रह गए। कनादनों और पोंकों में, बड़ बड़ा हो मोटा आदमी, भारी सोने के कबजे पहने हुए था—उसके गले में मोने की बड़ी-बड़ी झलझल रही थी और अंगुष्ठियों में जेबलियाँ जगमगा रही थीं। उसकी बानी और अब एक मोने की मोल पत्नी से दर्दनी हुई थी। उसके शरीर के मुटारों का दर्शन करना मजबूत नहीं है और वह मुझे देखकर हृय से बिस्माया और उसने बड़ी बड़बड़ाई से झुककर मुझे हाथ पंजा कर अभिवादन किया। मुझे उसे देख-कर हँसी आ गई।

उसकी बड़बानी मुझे मातुम हुआ कि मैं अचानक धनी हो गया था। व्यापार में उसने मेरी बगई हुई बीजना के अनुसार दुगला एक कमा लिया था। उसने मुझे यह भी बताया कि अब जबकि भुवि बरत परी थी तो अविष्य में अकाल निरवय था और हमीनिदे वह अधिक से अधिक अनाज खरी के सीटवर रत मेरे का बिचार पर रहा था कि बाद में गहरे मुनाफे उठा सके। उसी ने मुझे बताया कि सीटवन लोग दुगले बिट्टी के पार कासी गाराद में लटिर रहे थे और वह दुगल में उन्हें मोलों के घरा में

एकत्रित करके उन लोगों के हाथों तबे घड़ों के मोल बेच रहा था। और इसका भेद मुझे बहुत दिनों बाद पता चला जब होरेमहंमद मुन्ने हिरतियों के साथ हुए युद्ध में ले गया। वहाँ मैंने देखा कि रेगिस्तान के मध्य इन्ही मिट्टी के अगणित पात्रों में उन्होंने सेना के लिए जल भर रखा था।

थीबीड में मेरा समय सुख से कटने लगा क्योंकि मेरे पास मेरी सँरिट थी, धन था, और कप्ताह के समान मित्र था। भला मुझे कभी किस बात की थी। सबसे बड़ी बात यह थी कि चौय—वह प्यारा-प्यारा बच्चा मेरी गोद में बैठकर मुझसे पिता कहा करता था।

उपसंहार

नील की नीली लहरें थोड़े ले रही हैं। कितना चौड़ा है इसका पाट—सूर्योदय हो रहा है। सिविल के उस पार जाते-जाते सूर्य की पीली धूप रंग की छानी पर स्वर्णमय उबाला फैला रही हैं—और मैं-मैं सिंगुले-सिंगुले का बंदा—अम्मन के मन्दिर का श्रेष्ठ पुजारी राजवंश, यहाँ अकेला बैठा हूँ। मेरे ऊपर पहरा रखने वाले ही मेरी सेवा करने हैं—सब कुछ है वही। मेरी स्वतन्त्रता मुझमें छीन ली गई है। मुली रसोई घर में आब भी करता रही है और खटखट की आवाजें उधर से आ रही हैं—मैं सोच रहा हूँ कि मैं क्या था और क्या हो गया हूँ—मैं बंदी हूँ फिर भी मेरे आगमन में बाधा नहीं है—मैं अब भी सुवर्ण के प्याले में सुवासित मदिरा पी रहा हूँ। अब भी मुनी मेरे लिए खर्ची में मुनी हुई बत्तन बनाती है—घन धान्य आता है—अब भी बाँट में मेरा बड़ा दासों की पीठ पर बरसाना है—अब मित्र व दासों साधारणों का फराकल है—कितना समय बदन गया है और मैं कितना बकाया ही बड़ा आता हूँ।

मूस पाट है अब उन दिनों मैं बीबीबू गया था तो कैसे अम्मन के पुजारीयों के बीचमें पहचान से बीबीबू में भयानक विद्रोह फूट पड़ा था और उसी क्षण में बीबीबू में भयंकर भूटमार, हत्या और बलात्कार का काम शुरू हुआ था। एटीन और अम्मन की सहाई में सहस्रों निरीह मनुष्यों का रक्त किन मानियों में बहने लगा था—घोरजंमे मेरे पास इतना काम पड़ गया था कि मुझे रात-दिन मरीजों से, पाषणों से, कुर्बत ही नहीं दिखनी दी। मरी दैर्घ्य मेरे माथ-माथ ऐसी लगी रहती जैसे मेरी छाया था।

और एक दिन मैनिंगो ने 'भगर की पूछ' में आग लगा दी थी और लोच का काम से देहकर ऊपर उठ दिया था। दैर्घ्य उसे अब बचाने भागी था—तब बकाया उसकी पीठ में लपका कर आगे निकल गया था—और इसमें था कि मैं बीबीबू का बकाया का इत्तल बर्त, मेरी छाँवों के आगने ही मेरी

दुनिया एक बार फिर उजड़ गई थी। और तभी कप्ताह ने मैरिट का बन्द रहस्य मुझे बताया था—उसने कहा था :

“मूर्ख ! यह तेरा ही बच्चा था—तेरा और मैरिट का पुत्र !”

काश वह मुझे उस भयंकर रहस्य को कभी न बतलाता। मेरा पुत्र—मेरी आँखों का तारा मेरा बग़ज, क्रूर मैनिको ने मार डाला—जिने घृणित होने हैं यह कल्पित देवता, जिनके नाम पर लाखों की हत्या कर दी जानी है। कितना उदास हो गया था मैं उन दिनों। क्यों ‘धा’ और ‘हू’ में इतना भयंकर और अभिघात कि मेरे गणक में आने वाले सभी मारे जाने थे।

अरीरू ने आक्रमण कर दिया था और होरेमहेव उसे दबाने गया था। अरीरू का बल अत्यधिक हो गया था। उसने फराऊन के मंघि-मन्त्र को कुचलकर मर-हत्या शुरू कर दी थी। होरेमहेव सिंह की भूमि ग्रहण करना हुआ उमने टक्कर लेने आगे बढ़ा था। कौन कह सकता है कि होरेमहेव कम धीर है ? निश्चय ही एक दिन उसका बाढ़ उसे मार्ग दिखाता हुआ इसीमिये उसे धीबीर साया था कि वह महान् योद्धा बन जाय—कि वह एक दिन दोनों साम्राज्यों पर शासन करे और सन् उगरी हुकार में घरी जायें।

मैंने देखा था रेगिस्तान का वह नरसंहार गीरियनों के अग्नित पानी के घटों पर होरेमहेव ने बाढ़ की भूमि ज़ादकर कड़ा कर दिया था। और फिर रथ आगे, आगे बढ़े, बाण टकारने लगे और सबड़े ऊपर मरने वालों की दाहण चीखारें आकाश में उठकर सूंखने लगीं और गारा आकाश धूर में छा गया था। स्त्रियों ग बग़ावतार दिया जा रहा था—बच्चे भागों पर उठा विवेक से और नरसंहार की ज़ेमे कोई भीषा ही नहीं रही थी। रेत में रक्त बहा नहीं था—जहाँ गिरा वहीं सोन दिया गया था। रक्त की चिपनी प्यारी थी वह भूमि !

और मुझे याद है जब अरीरू पकड़ लिया गया था तो मैरिटो ने प्रकार उसका सब कुछ मूट कर उमहे मूट के मोने के दौन की भी नयवाने से, मूट दिये थे। उसका ज़ब्र मीड़ दिया गया था—

जो मैदान में उसने बिज्जाकर कहा था :

"मिस्त्री कुत्तो ! सिहो का सिर कभी नीचा नहीं होता—मुझे तुम लोगो मे से बदलू आ रही है—तुम्हारी गंदी सूरत देखकर मैं घृणा से मर गया हूँ—शीघ्र करो मेरा अंत जो मुझे तुम्हारे सहवास का दुःख अधिक न झेलना पड़े ।"

मैं वहीं खड़ा था और मैंने होरेमहेव की ओर देखा था जो सुनने ही मेरी कल्पना के विलकुल विपरीत चित्ता उठा था :

"आवास अजीरु ! तुम निश्चय ही धीर हो ।"

फिर मैंने धार वाला खड्ग लेकर जल्ताद आगे बढ़ा । अजीरु के अपनी प्राण प्यारी स्त्री बीन्तू से कहा :

"मेरी कोमलांगी ! मेरी प्राण प्यारी ! तुम मेरे कारण मारी जा रही हो इसी का मुझे दुःख है—अभी तुम जवान हो, निश्चय ही जीवन में अभी तुम्हारे लिए बहुत कुछ भोगना बाकी है—।"

"नहीं-नहीं," बीन्तू चित्ता उठी थी, मेरे राजा ! मेरे सिंह ! तुम्हारा सहवास प्राप्त करने के बाद अब संसार में मुझे किसी भी वस्तु की चाह नहीं रह गई—तुम वृषभ के समान बली हो, भला अब मुझे तुम जैसा पुरुष-सिंह कहाँ मिलेगा ? मैं तुम्हारे साथ ही मरना चाहती हूँ । यदि महानृपणित मिन्दी मुझे छोड़ भी दें तो भी मैं किसी सगाकर मर जाऊँगी, मैं तो केवल एक सुच्छ दाम्नी थी जिसे तुमने रानी बना दिया ।"

और जब अजीरु जल्ताद के समाने सिर झुकाकर बैठ गया तो उसने अन्तिम दृष्टा बीन्तू से बरी :

"दिता दो मुझे अपने जीवन के उधार अन्तिम बार प्यारी ! जिससे मैं अपनी भूलद कल्पना में ही अमर यात्रा पर जा सकूँ ।"

बीन्तू ने अपने स्तन खोल दिये—जितने सुन्दर और जीवन में परिपूर्ण मांसम उम्मान थे वह ! और लम्बी खड्ग नीचे गिरा और राजा अजीरु का सिर बटकर उछला जिसे बीन्तू ने लपककर हृदय में सगाकर दबा लिया था—रक्त के पम्पारे छूट निकले थे जिनसे बीन्तू नहा गई थी—उस रक्त को देखकर अजीरु के दोनों बरखे सहम गए थे । और जब बीन्तू ने कहा :

"आगे बढ़ो राजकुमार ! जलो पिता के पास चलें ।"

दो बार 'धच्' 'धच्' की आवाज आई और अब बच्चों की कोम

गर्दन अलग होकर गिर पड़ी। क्या यही था अजीरू का स्वप्न? वह तो कहा करता था कि उसका पुत्र एक बहुत ही विस्तृत साम्राज्य का उत्तराधिकारी बनेगा—कहाँ था वह राज्य तब? और फिर जल्ताद का भारी खड्ग कीफतू की गोरी मांसल और मोटी गर्दन पर गिरा और वह दुहरे बदन की कमतुरा सुन्दरी अपने पति की लाश पर गिर गई। मेरी ही आँखों के सामने वह पूरा परिवार धूल में मिला दिया गया। हौरैमहेब की आज्ञा से उनके शरीर खाई में फेंक दिये गए जहाँ मुअरों, कुत्तों और कछुओं ने उन्हें नोच-नोच कर खा लिया।

मुझे याद आ रहा है कि थीबीज में फिर अम्मन के पुजारियों ने बग़ावत करा दी थी और शार्दानाओं और हव्वी सैनिकों ने एक बार फिर थीबीज की भूमि को थीबीज के रहने वालों के खून से रंग दिया था। और तब प्रत्येक शार्दाना और हव्वी उच्च नागरिकों की स्त्रियों के साथ उन्हीं की शैया पर सोया था। हौरैमहेब स्वयं भी उसे न रोक सका था।

उधर सीरिया में फिर उपद्रव शुरू हो गए थे और क्रराऊन था कि युद्ध की आज्ञा नहीं देता था। तब मैं फिर से हौरैमहेब के साथ एखर्टेटोन आया था और साथ में लाया था उस कुटिल 'आई' को जो शक्ति संचित करने के हेतु नीचे से नीचा कार्य करते हुए भी नहीं हिचकता था।

मैं, सिन्यूहे, कितना घृणित हूँ! मेरे सहवास में आया हुआ भला अब तक कोई बचा है? मैंने अपने पिता संगमट और माता कीपा को वेमोत मारा और उस दुष्टा नैफर-नैफर-नैफर के मोह में पड़कर उनकी कब्रों तक खेच डाली। मीनिया मेरी प्यारी थी जिसे मैं वहिन बहने लगा था और वह भी मेरी न हो सकी—उसे उसके देवता की थड़ा से बँटी और जब मैंने उसे पाया तब उसके मांस को कैंकड़े बुरेदकर खा रहे थे। मैरिट मुझे बितना चाहती थी मैं कैसे लिनू? आज दुःख से मेरा हृदय फटा जा रहा है। उसने मेरा गर्भधारण किया और इसलिये कि वह मेरे मार्ग में बाधा न बन जाय, उसने कभी मुझे नहीं पकड़ा और अपने भेद को रहस्य बना दिया—और वह भी मर गई और मेरा बच्चा—मेरी आँखों की पुनली, वह भी मारा गया—और तब जब क्रराऊन एखर्टेटोन नर-हत्या के लिए किसी भी प्रकार आज्ञा नहीं देता था—मैंने, हौरैमहेब और 'आई' ने उसे बिप देवर ममान

वे देवता मर गये

कर दिया। उसी फराऊन ने तो मुझे राजवंश बनाया था, मुझ एटोन के नये साम्राज्य का सिद्धांत सिखाया था कि मनुष्य से मनुष्य बड़ा नहीं होता। हत्या और घृणासे हत्या तथा घृणा ही पैदा होती हैं अतएव उनका अनुसरण नहीं करना चाहिए—उसे—उसके पागलपन को मैं कितना ज्यादा चाहता था और जब उसके सामने होता, उसकी बातें सुनता तो उसे कितना अधिक चाहने लगता था।

अम्मन के पुजारियों की दी हुई शहर की पुड़िया मैंने उसे मदिरा में धोलकर पिला दी जिसे पीकर वह सदा के लिये सो गया। अब सोचता हूँ, क्यों मारा मैंने उसे? हौरेमहेब के चाकू के भय से? नहीं। तो फिर? मिस्र की भलाई के लिए। कितनी बड़ी झूठ है यह! क्या भेद है भित्तनी, हितैषी और मिस्री में? भेद है केवल एक, और वह है धनवान और गरीबों का, जो सभी जगह है। क्यों है लोगों में देवताओं का इतना भय कि आपस में ही इतनी बड़ी दीवारें खड़ी कर लेते हैं? फिर क्यों मारा मैंने फराऊन को? निश्चय ही अपनी शक्ति और अपने पद का अनुचित लाभ मैंने उड़ाया था।

फराऊन एखनैटोन की मृत्यु के तीसरे दिन ही उसका बड़ा जमाता पवित्र तालाब में डूबा पाया गया। क्या मैं जानता नहीं कि उस बालक को बूढ़ 'आई' ने ही मरवा दिया था। क्यों? क्योंकि वह घृणित था—यदि पश्चिमी देश कही है तो मैं निश्चय पूर्वक कह सकता हूँ कि 'आई' वहाँ कभी सफल यात्रा नहीं कर सकेगा—और तब टट—फराऊन एखनैटोन का दूसरा जमाता—राजकुमारी एखनैटोन का पति फराऊन बना—जब उसकी पतली गर्दन दोनों साम्राज्य के दुहरे मुकुट के बोझ के नीचे झुक गई तो बूढ़ 'आई' ने कुटिल दृष्टि से हौरेमहेब की ओर देखकर दीर्घ स्वास छोड़ा था। उस फराऊन का नाम सूदनखामन था जो निरह्य अपनी कब्र के नये-नये नक्शे बनवाया करता था।

और एक दिन नैफरतीती, जो छह पुत्रियों को जन्म देने के बाद भी अद्वितीय सुन्दरी थी, हौरेमहेब के पास गई और उसने बातों ही बातों में उसके सामने अपनी जघा खोल दी और चक्ष खोलकर अपने रूप से उसे लुभाना चाहा। परन्तु वह कठोर सैनिक पहने से ही चाँद की ओर सपका हुआ

था—उसने उमपर आस नहीं मडाई। नैकरनीनी शक्ति बटोरना चाह रही थी परन्तु उसके कानों में शिकार जय नहीं फैला तो वह कुछ सन्तुष्टि की भाँति फुफ्फुस उठी। उसने दूसरा तीर अत्यन्त भयकर छोड़ा जो यदि सारा हो गया होता तो सायद मिय का भाग्य कुछ और ही होता और मैं इस निमेष में बैठ जाता—अपनी प्यया न भिगना। उसने राजकुमारी बैकटेटीन को गिराकर त्रिनिटियो के राजकुमार शबलू को एक पत्र लिखा—वादा कि वह आये और राज्य को हथिया ले और भी कि राजकुमारी उसके प्रणय के निवे लायाविन थी।

उग दिन मुनी ने मेरे लिए मोटी बल्ल भूतकर बनाई थी और मैं उसे लाकर सेटा ही रहा था कि गुमारी 'आई' और संतापनि होरेमदेव धधधधने हुए अन्दर आए। 'आई' सदा की भाँति भयभीत कुटिल वृष्टि से देख रहा था। होरेमदेव ने अपनी कटि में से एक पैनाईरंग पर लिखा हुआ पत्र मेरे सामने कर दिया उगमें लिखा था

"हिर्नीनी राजकुमार शबलू को राजकुमारी बैकटेटीन की ओर से—मिय का मित्रमन रिक्त है। आओ मेरे प्राणप्यारे और इसे मजान से। मुझसे होरेमदेव बनाकार बनना चाहता है। वह जो नील है, मन्दा है, जिससे मैं बुरा करनी हूँ। आओ नैकरनीनी मेरे साथ है।"

मैंने देवी नागी की प्रतिहिमा जिनकी भयानक थी। उन्होंने मुझसे कहा—

"सियुडे" यह राजकुमार यही न आने पावे, मुझ आओ और उगे मरने में ही मजान बन दो।"

परन्तु मैंने इकार कर दिया। जब होरेमदेव ने मेरे पास पर धरना करा बाहू उग लिखा और मैं टटटटट हूँ पड़ा। वह अतिशय रक्तमय नद दिने रहा।

"होरेमदेव बाहू से मैं प्रेम करने लगा हूँ क्योंकि वह दुःख और धन का मजान बन देता है।"

परन्तु फिर भी बाद में, मैं तुरन्त ही सन्तुष्टि में बैठकर बस बस का ओर मैंने धाँपे में उभर होकर और अतिशय राजकुमार को साथ में ही दिव इकर मरने इकर था। इन्हीं लड़ाई के साथ अहिमा में

विष मिलाया था। हितैतियों के बीच मुझ अकेले ने कि किसी को तनिक भी धोखा नहीं हुआ और राजकुमार मर गया। मैं भीबीज लौट आया।

और तब एक दिन सूतनखामन मर गया। ठीक होगा यदि कहूँ कि मार डाला गया। 'आई' ने होरेमहेब से कहा

"तुम राज्य संभाल लो।"

"मैं नहीं तुम!" उसने उत्तर दिया।

'आई' की आत्मा तृप्त हो गई और उसने होरेमहेब से कहा: 'बैकेटेटोन तुम्हारी होपी।'

'आई' फराऊन बन गया। होरेमहेब मैम्फिस में चला गया। उसे अब हितैतियों से मुक्त करना था। परन्तु इसके पहले जब वह बैकेटेटोन के पास जाकर बोला:

"राजकुमारी! मैं तुम्हारा प्रेमी हूँ—मिस्र का सेनापति, आओ मुझसे मिलकर मेरे जीवन की साध पूरी कर दो।"

तो वह छिटककर अलग खड़ी हो गई। उसने उस पर घूक दिया। होरेमहेब ने क्रुद्ध होकर खदग खींचा तो वह वक्ष खोलकर खड़ी हो गई और उसने कहा: "मारो" परन्तु तब भला वह उसे कैसे मार सकता था।

उसी शाम गरीबों की बस्ती में बने मेरे घर आकर होरेमहेब ने कहा: "सिन्धूहे! मेरे मित्र! कोई ऐसी औषधि मुझे दे दो कि जिसके प्रयोग से बैकेटेटोन मूर्छित की जा सके—मैं अब और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकता।"

परन्तु मैंने साफ मना कर दिया। परन्तु होरेमहेब बलिष्ठ पुरुष था। राज्य में उसका खोलबाला था। आखिर उसने जबरदस्ती बैकेटेटोन के साथ घड़ा फोड़ ही लिया। दो वर्ष व्यतीत हो गए और उसके गर्भ से उसके दो पुत्र भी हो गए परन्तु बैकेटेटोन की शूणा दिनों-दिन बढ़ती ही गई। उसने मरु में ही जिस दिन वह असहाय होकर गिर गई थी उससे कह दिया था, "मैं तुम्हारी ही शैया को यदि दूषित न कर दूँ तो मेरा नाम बैकेटेटोन नहीं।"

होरेमहेब हितैतियों के मुँह में चला गया था। जाते-जाते वह मुझसे बोला:

“मित्र के महान् क्रराऊनों ने कंस देश में अपने राज्य की सीमा के पथ पर गाड़े थे, और जब तक एक बार फिर मैं अपने रथ न दौड़ा सुना तब तक मेरा दिल न भर सकेगा सिन्धूदे ।”

एक दिन मुत्ती ने मुझसे कहा :

“कप्ताह को ह्यूयी मैनिकों ने पीट-पीटकर मार डाला ।”

कप्ताह मेरा मित्र था, परन्तु जाने क्यों मैं उस भयानक मवाद को सुनकर भी विचलित नहीं हुआ । मुझे लगा कि वह सब झूठ था । कप्ताह भला कभी इस तरह मर सकता था ?

बहुत बाद में जब मैं गाड़ा गया तो मुझे वही कप्ताह मिला । वह हीरेमहेव का मित्र बन गया था । उसी ने सीरिया की सेनाओं में शिपनी व्यास और विपला अनाज फेंकाया था—वही था जिसके कारण शत्रु की सेनाएँ तड़प-तड़पकर मर गई थीं । मैंने जब उसे देखा तो वह हँस में चिन्मा उठा । उस समय उसे गाड़ा के उसी गकबी सेनापति ने कारागार में बन्द करा रखा था जहाँ वह पहरेंदार को रिदवन देकर जीवित रह रहा था । जब मैंने उसे छुड़ाया तो पता चला कि तब तक वह सागो सुवर्ण मुद्राओं का ऋणी हो गया था । मैंने उससे कहा था : “क्या इस ऋण को तुम मन्-मुच ही उस पहरेंदार को चुकाओगे ?”

“निश्चय,” उसने उत्तर दिया, “अन्यथा व्यापार में मेरी जान जानी रहेगी ।”

परन्तु जब याद करता हूँ तो मुझे हँसी आती है कि वह मेरा बाला दास कितना चालाक था । उसने उस पहरेंदार से नृआ सेवा और उंग बड़े-बड़े दाँव लगाकर तीन-चार दिनों में ही चुका दिया । भला पहरेंदार उगवे नृए में जीवता—वह जो सम्पूर्ण मित्र के व्यापार को जीते हुए था ? अन्य में वह मित्र का सबसे बड़ा घनी बन गया था और वह विशाल मद्रम में रहता था जहाँ नाना बाटों पर मदीन छिदा करना और देव-देवताओं के मदीदी गई मदीदी दानियों के कोमल पदचारों में चूँचक ब्रज करने और चुर कट अनाज में लगे रहने । तब वह अपनी दानी अन्न पर हीरे का बरतन मटकाता और उसमें मौन और मदिता का मेहन करता । उसके हन की भीनों पर गद बिरने बिज बने थे । एक और उसका मन्त्र का विज

भी अंकित था। परन्तु तब अम्मन का साम्राज्य लौट आया था और टोयिमीज की वास्तविक कला का प्रचार वर्जित कर दिया गया था जहाँ चालीस सम्मों पर एस्नेटोन अपने असली रूप में खड़ा था, तो फिर भला टोयिमीज की कला का अस्तित्व ही क्या रह गया था? दीवाल पर कप्ताह की मूर्ति, उसके चित्र, सब कायदे के बने थे, उनमें उसकी दोनों ही आँखें दिस सकती थीं और वह बड़ा-मोटा भी नहीं दिखाया गया था। सबसे बड़ी बात यह थी कि कप्ताह ने अपना उत्तराधिकारी होरेमहेब को ही बनाया था। फ़राऊन 'आई' का शक बाद में इतना बढ़ गया था कि वह महल में हर किसी से भय करने लगा था। कोई विष न दे दे, कोई हत्या न कर दे! और वह नीच बूढ़ भूखा रह-रहकर, रात-रात जागकर तड़प-तड़पकर मर गया। उसके मरने के बाद ही होरेमहेब फ़राऊन बना था जिसे अपना उत्तराधिकारी बनाकर कप्ताह ने राज्य कर बसूल करने-वालों का और अपना मार्ग अलग-अलग कर लिया था। निश्चय ही कप्ताह बड़ा बालाक था।

और मैंने एक दिन सोचा कि मैं क्यों इतना निरीह था कि मेरे पास अपनी ध्वा बहने के लिए भी कोई नहीं था? क्यों है समाज में यह भेद कि जो गरीब है वह और गरीब होते चले जाते हैं? क्यों नहीं हो पाया फ़राऊन एस्नेटोन अपनी योजनाओं में सफल? तो क्या सचमुच ही मनुष्य का कर्म देवताओं द्वारा ही निर्धारित है? दिस इस बात की गवाही नहीं देता था। मुझे याद है कि जब होरेमहेब हितैतियों के युद्ध में जाने लगा था तो 'सैकमट' के मंदिर में उसका स्वागत किया गया था। वह रक्त से लहलाई हुई देवी की मूर्ति बिननी भयानक लगती थी। पुजारियों ने होरेमहेब का भव्य स्वागत किया था। जब बाहरी लोण के भारी ताबे के फाटक खरी-बर खोले गए थे तो भीड़ जगमे बाड़ की भाँति धँस गई थी और होरेमहेब की बीरगाथाओं से मंदिर गूँज उठा था। तो क्या होरेमहेब सैकमट की कृपा अपना दया से ही बिजयी होगा था? नहीं-नहीं, मैं इसे कभी नहीं मान सकता—मेरी आत्मा इसे स्वीकार नहीं कर सकती।

जब मैं यह सोचना हूँ तो मेरी आँखों के सामने वह तेजाब की दुमंग में सने बरंर सैनिक आ जाते हैं जो उन के लिए लड़ने थे—जो मुझे दंड

को भरने के लिए सड़ते थे—और जिनकी साशों के ढेर पर महान् साम्राज्यों की दीवालें खड़ी की जाती थी। ऐसा ही तो था हौरमहेव ! और ऐसे ही तो थेमिस्र के प्रचंड क़राऊन !

एक दिन मैंने दासों के वस्त्र पहने घोर मैं घीबीड़ में निकल गया। मुझे नहीं मालूम था कि मैं इतना प्रमुख व्यक्ति था क्योंकि मैंने देखा सभी मुझे पहचानने थे—उस वेश में भी पहचान गए थे। परन्तु मैंने कोई परवाह न की और महानगर में जाकर मजदूरों का काम करने लगा और फिर दासों के पास जाकर बैठ गया और उन्हीं का-सा रूखा सूखा भोजन मैंने किया। मैंने उनसे कहा : “मनुष्य मनुष्य में कोई अन्तर नहीं है क्योंकि सभी ममार में नगे आने हैं। मनुष्य की स्वभा के रंग से अथवा उसकी बोली में उसका दर्जा ऊँचा या नीचा नहीं हो सकता—न ही वस्त्रों और आभूषणों से उसकी परछ की जा सकती है—मैं तो केवल इतना जानता हूँ, बुरे आदमी से अच्छा नेक आदमी होता है और ग्याय, अग्यायमें अच्छा होता है।”

जय गरीब स्त्रियाँ अपनी बच्ची झोंपड़ियों के सम्मुख बैठकर साइक के बिनारे आग जला रही थी और उनके मदं उदाम थके-मति बैठे थे तब मैंने उनसे कहा, और उसे मुनकर वह उस उदासी में भी हँस पड़े। फिर एक ने उत्तर दिया :

“सिन्धू ! तुम निश्चय ही पागल हो गए हो कि दासों का काम कर रहे हो जब कि तुम लिख-पढ़ सकते हो और बड़े आदमी हो। बोन है जो तुम्हें घीबीड़ में नहीं जानता ? परन्तु हम जानते हैं कि तुम भले आदमी हो और दयालु भी हो। परन्तु फिर भी हम अब उस निरीयं देवता एटीन के मिडान्त नहीं सुनना चाहते। तुम शायद हमारा भेद मने आने हो। सब मनुष्यों की बराबर बहकर बस-मे-बस हमें उन गन्दे गीरियन और हगियों के समान तो न टहराओ ! गो हम कुर्सी हैं, दास है फिर भी हैं तो हम मियाँ हो।”

मैंने कहा : “यह सब बेकार बातें हैं, मनुष्य इन सब बातों में बड़ा नहीं होता—होता है तो केवल गुड हृदय के वाग्म होता है।”

मुनकर वह फिर हँस और अपने घुटने पीटने लगे पर मैंने अब अपनी

वात फिर दुहराई तो वह बोले :

“अच्छा क्या है और बुरा क्या है सिन्धूदे ? यदि हम किसी बुरे मालिक की, जो हमें धोखा देता हो और हमारी स्त्री व बच्चों को मार डालता हो, हत्या कर दे, तो क्या हमारा काम कोई बुरा होगा ? परन्तु जब हमें फराऊन के सैनिक पकड़ कर न्यायाधीश के सम्मुख ले जाएँगे, और हमारा जो कुछ होगा वह तुम नहीं जानते ?”

“जानता हूँ” मैंने कहा, ‘तब तुम्हारे नाक-कान काट दिये जाएँगे और तुम्हें नगरकोट से उल्टा लटका दिया जायेगा—परन्तु हत्या सबसे नीचा अभियोग है—इससे गिरा हुआ और कोई काम नहीं हो सकता—अतएव चाहे बुरा हो चाहे भला हत्या कभी नहीं करनी चाहिए—मेरी तो राय है कि मनुष्य की बुराईयों के कारण उसकी हत्या कभी नहीं करनी चाहिए बल्कि उसे सुधारने का प्रयत्न करना चाहिए।”

उन्होंने उदासी से उत्तर दिया :

“न हम किसी की हत्या करना चाहते हैं न करते हैं। यदि तुम बुराई का फल भलाई से देना चाहते हो तो अमीरों के पास जाओ, फराऊन के सरदारों और न्यायाधीशों के पास जाओ क्योंकि हत्या, और तमाम बुराईयाँ तुम्हें हमसे कहीं अधिक अमीरों में ही मिलेंगी,”

कितना भयानक सत्य कहा था उन्होंने। परन्तु जब मैं अमीरों के पास गया और उनसे मैंने वही सब कहा तो वह सतर्क हो गए, घनी व्यापारी-गण और उच्चाधिकारी लोगों ने आँखों ही आँखों में इशारे किए और पुसपुसाकर कहा :

“यह सिन्धूदे, राज्य का उच्चाधिकारी है—यह सर्वशक्तिवान है—यह निश्चय ही हमारी जाँच कर रहा है—कहीं भूलसे भी इसके सामने एक-श्राद्ध शब्द हमारी जुवान से ऐसा-वैसा निबल गया तो समझ लो मृन्मू अवश्य भावी है।”

जब मैं घर लौटा तो थका हारा हुआ था। परन्तु मेरा मन उत्सुकित था क्योंकि मैंने सत्य का प्रचार किया था—चाहे उसे कोई मानना चाहे नहीं मानता।

इधर मैं इन्हीं विचारों में लीन रहता था राजकुमारी बेंकेट्टीन की

प्रतिहिंसा जागृत हो रही थी, मुझे तो वह सब बहुत बाद में मालूम हुआ था। मजदूरों ने तो ठीक ही कहा था कि प्रतिहिंसा और पाप अमीरों में ही पाया जाता था—

एक दिन वह शृंगार करके नाव में बैठी और नील पार करके पीबीच के एक गधे वाले को इशारा कर के काँस की झाड़ियों में बुलाया। पहले तो गधे वाला घबराया परन्तु फिर जब उसने उसके रूप को देखा तो वह उसके पीछे चला गया। काँस की झाड़ियों में राजकुमारी बैकटेटीन ने अपने वस्त्र उतार दिए और गधे वाले से लिपट गई। उसके उस विचित्र अभिसार से गधे वाला चकित रह गया। जब वह चलने लगा तो बैकटेटीन ने अपने जीवन का मूल्य माँगा, वह बोली : “मुझे अपनी याद में एक पत्थर ला दे”

गधे वाले ने उसे मूर्ख समझा। झट से जाकर फराऊन की पुरानी इमारत में से एक पत्थर उठा लाया और उसे दे दिया। बैकटेटीन उसे ले आई।

दूसरे दिन वह कोयले वालों के बाजार में गई। आज वह बड़ी नाव से गई और लौटने समय कई पत्थर लाई क्योंकि उसने आज कई लोगों से अभिसार किया था।

सारे नगर में सतमनी फैल गई कि एक देवी आती है जो गरीबों को गरीर देकर प्रमत्त किया करती है परन्तु किसी को पता न चला कि वह राजकुमारी थी।

इसी भानि वह नित्य निकसती और कभी मछली बागों के बाजार में तो कभी मजदूरों में संयोग करती और पत्थर इकट्ठे कर लाती। एक माह में उसने बहुत से पत्थर इकट्ठे कर लिए। फिर उसने राज्य के गिल्ली को बुलाया और उसमें बोली :

“तुम इन पत्थरों में से मेरे लिए एक बड़ा कस बना दो और तुम ही जानते हो कि मेरा धनि बेरी उलझा करता है—मेरे पास तुम्हें देने के लिए धन तो नहीं है परन्तु....”

गिल्ली ने अर्धे उठाकर देना। वह बुझ पा। और सभी बैकटेटीन ने अपना बस मोल दिया और कहा :

“यदि तुमने मेरे लिये उत्तम ब्रह्म बना दिया तो मैं इसी ब्रह्म में तुम्हें मुक्त दूँगी—यह शरीर तुम्हारा होगा।”

जब ‘आई’ के मरने पर होरेमहेब खुद में विजयी होकर सौटा तब तक वह ब्रह्म बन चुका था—और सारा महानगर जान गया था कि वह बाजारों में घूमने वाली देवी कौन थी।

बकेटेटीन उसे उसी ब्रह्म में बड़े प्रेम से लिबा से गई और वह भी उस परिवर्तन को देखकर चकित हो गया। वहाँ पहुँचकर उसने कहा : “देखो प्रियतम ! इन पत्थरों को देखो, मैंने एक-एक पत्थर अलग-अलग व्यक्ति से कमाया है—इस ब्रह्म में जिसके पत्थर लगे हैं उतने ही पुरुषों से मैंने संपर्क किया है—गता नहीं वह कौन थे परन्तु उनकी मादगार अवस्था मेरे पास है, बाण तुम भी मुझे एक पत्थर दे सकते, तो मैं उसे इन सबके ऊपर लगवा देती,।”

ऐसा था उसका प्रतिशोध, होरेमहेब ने उस पर तलवार तानी तो वह बोली :

“मारो,” और उसने अपना ब्रह्म फिर खोल दिया : परन्तु इस बार होरेमहेब उसे देखकर न रुका, तब वह बोली :

“मारो होरेमहेब मारो—क्योंकि मैं भी यही चाहती हूँ कि फराऊन की और उसकी पुत्री की हत्या करने के उपरांत ग्याय की दृष्टि से तुम फराऊन न बन सको।”

मनुष्य की तृष्णा का कोई अंत नहीं है। फराऊन का सिंहासन ! भला होरेमहेब उसे कैसे छोड़ सकता था—वह बाइ का पुत्र, मिस्र का सेनापति, वह जिसके भय से दूर-दूर तक के संपूर्ण राज्य काँपते थे, चुप रह गया—उसका हाथ उठा हुआ ही रह गया। फिर वह धटे पेट की तरह झूल गया। वहाँ था उसका वह क्रोध व प्रतिहिंसा जो उसने भूखे सखीरियों पर निराली थी। जब उसने लाखों धीवीज मार डाले थे, जब लाखों ही सीरियन, मितन्नी और हितती उसके बाणों से मिर गए थे तब वहाँ थी उसकी यह दया ? दया ? तो क्या वह दया थी जो उसने राजकुमारी को नहीं मारा था ? नहीं, वह थी राज्य की लिप्ता—ईकेटेटीन की हत्या करके वह फराऊन नहीं बन सकता था, यह वह जानता

था। उसकी स्त्री ने उसकी नाक सारे धीवीज के बीच काटली थी परन्तु कराऊन का पद ? जहाँ बात-बात पर हौरेमहेव का चाबुक मीन उभेड़ लेता था, मैं सोचता हूँ, हम अपमान को कैसे पी गया ? क्या वह कायर नहीं था ?

परन्तु उसका न्याय प्रसिद्ध था। उसके राज्य में एक बार फिर व्यवस्था स्थापित कर दी गई थी। वही जो पहले से, शाश्वतकाल से स्थापित थी। अब उसके राज्य में अम्न पुजता, परन्तु शक्ति उसके हाथ में थी।

और अन्त में वह बुरा दिन भी आया था जब उसने मुझे बुलाकर कहा था :

सिन्यूहे ! तुम निश्चय ही पागल हो और जो कुछ तुमने हाल ही में किया है उसका दृढ़ मृत्यु होना चाहिए। तुम नहीं जानते कि राज्य में तुम्हारा व्यक्तित्व कितना प्रभावशाली है, लोग तुम्हें कितना मानते हैं और इसीलिये मैं सोचता हूँ कि जो दुष्ट प्रयास तुमने किया है वह ठीक नहीं है। क्या मैं पूछ सकता हूँ कि तुमने दासों का सा भेष बनाकर धीवीज में सभानता का प्रचार क्यों किया था ? क्या तुम नहीं जानते थे कि उससे प्रजा भटक सकती थी अन्यथा राज्य की व्यवस्था में खलबली मच सकती थी ? बोलो सिन्यूहे ! तुमने ऐसा क्यों किया ?”

वह कराऊन था और मैं केवल एक बंदी। वह देश-देशांतरो में प्रसिद्ध योद्धा था और मैं भला उसके सामने क्या था ? मैं चुप रहा परन्तु फिर मुझे न जाने क्या सूझा कि मैं हँस दिया जबकि मुझे रीति के अनुसार घुटनों के बल झुककर हाथ फैलाकर उसके सामने क्षमा की याचना करनी चाहिए थी। और तब उसने मुझ से कहा :

‘तुम मेरे मित्र रहे हो इसी कारण मैं तुम्हें प्राणदण्ड नहीं देता—तुम्हें मैं देश निकाला देता हूँ’। तुम ऊपरी साम्राज्य में रहने घोष्य नहीं हो। मैं तुम्हें अन्य स्थानों में भी नहीं भेज सकता। क्योंकि वहाँ तुम वही अपनी मूर्खतापूर्ण बातें करके लोगों को पथभ्रष्ट करोगे—तुम बासों को गोरों के विरुद्ध भड़काओगे—अतएव जाओ तुम निचले साम्राज्य के जंगल में रहो—नदी के किनारे तुम्हारे लिये घर बना दिया जायेगा जहाँ

तुम केवल हवा को मनुष्य की समानता का भाषण सुना सकोगे—नील के जन को एटोन के साम्राज्य की गाथाएँ सुना सकोगे—जाओ—वही रहो—तुम पर पहरा रहेगा इतना कि तुम वहाँ से कही जा न सको—वैसे तुम्हें मैं कोई कष्ट देना नहीं चाहता—तुम्हारे पास-दास रहेंगे, पहरेदार होंगे। उत्तम भोजन होगा, मीठी मदिरा होगी और तुम्हारा असज्जन घन। तुम सुवर्ण के प्याले में मदिरा पी सकोगे।”

और जब मैं चलने लगा तो वह बोला :

“एकाकी।”

कराऊन एम्बरनटोन ने मेरा नाम एकाकी रखा था—और अब मैं सब-कुछ ही एकाकी बन गया हूँ। मुत्ती सीबीज छोड़कर मेरे पास आ गई क्योंकि वह लौटकर कहीं जाना नहीं चाहती। मैं हूँ मुत्ती और है वह दास जो मेरी सेवा करते हैं।

मैं हमेशा अकेला रहा हूँ। कभी भी तो मुझे किसी का साथ नहीं मिला। दूर नील पर मैम्किस आने हुए जहाज दिख रहे हैं परन्तु मैं उन पर नहीं जा नहीं सकता। मेरे इशारा करने पर कोई जहाज लगर नहीं शालता—

मैं अपनी गाथा लिख रहा हूँ। मेरे हृदय में बितनी व्यथा है इसे कौन जान सकेगा—मुझे पता नहीं कि यह पैपाईरस के पत्ते वहाँ उड़ जायेंगे यानी नील के प्रवाह में बह जायेंगे, परन्तु मैं लिख रहा हूँ अपनी व्यथा कम करने के लिये क्योंकि कहते हैं कि किसी से बहने से व्यथा कम हो जाती है। अब जब मुनने वाला कोई नहीं है तो लिख ही लूँ। सहानुभूति से ही तो मनुष्य को सात्वना मिलती है। पता नहीं किस दिन मुझे परिक्रमी देम की यात्रा पर जाना पड़ जाय—तब मैं ठड़ी-ठंडी रेत में पड़ा रहूँगा—ठंडी क्या? यदि दिन हुआ तो गर्म रेत पर मेरा शरीर पड़ा रहेगा—क्या यही है मेरे जीवन का अन्त?

मैंने अपना दुख सामने की छाल पहाड़ियों को सुनाया है। मैंने बिरुडुओ, सपों तक से अपनी व्यथा कही है। परन्तु सब व्यर्थ। नील का जल गर्जन कर रहा था, परन्तु उसने भी भयानक सूखाने मेरे हृदय में सब-कुछ रखा है। दूर रेगिस्तान में ऊँटों का कारवां जा रहा है, परन्तु उससे मैंने

क्या ? मैं तो कही नहीं जा सकता ।

मैं, सिन्यूहे ! मनुष्य हूँ । मुझे एक ही सन्तोष है और वह यह कुछ तो ऐसे हैं ही जिनके आँसुओं, जिनकी आहों में मैं रहा हूँ और रहूँगा... मुझे इच्छा नहीं है कि मेरी मृत्यु के बाद मेरी कब्र बनाई जाय और मेरा शरीर शाश्वत काल तक के लिए मसाले बना कर रखा जाय क्योंकि मुझे देवताओं पर अब बिल्कुल विश्वास नहीं रहा है, क्योंकि अब मैं उनसे ऊँच चुका हूँ ।

